CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1978

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1978

Contents

31 January 1978 Vol. 6: No. 6

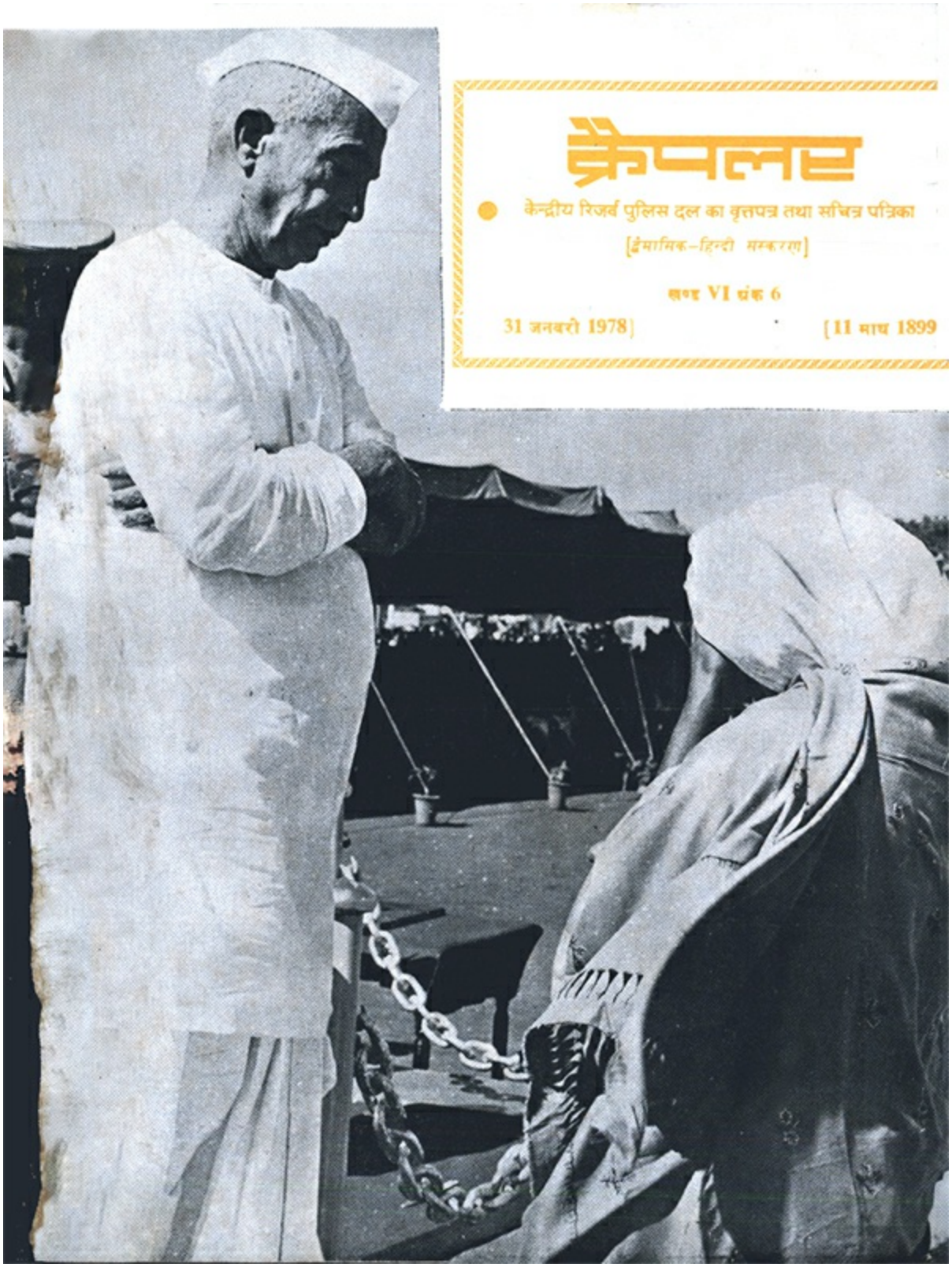
31 March 1978 Vol. 7: No. 1

31 May 1978 Vol. 7: No. 2

31 July 1978 Vol. 7: No. 3

30 September 1978 Vol. 7: No. 4

30 November 1978 Vol. 7: No. 5



कैपलट

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका

[द्वैमासिक–हिन्दी संस्करण]

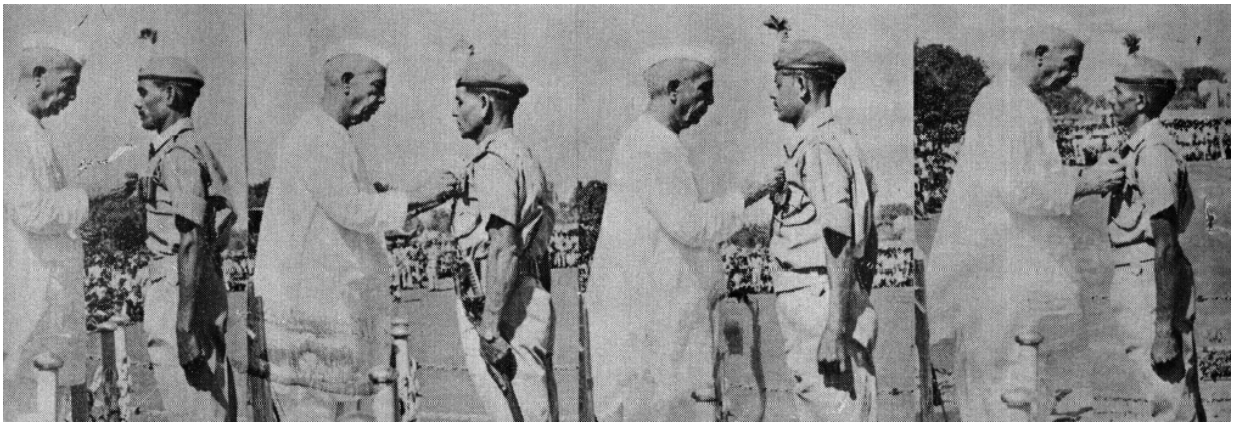
खण्ड VI अंक 6

31 जनवरी 1978] [11 माघ 1899



31 अक्तूबर 1971 को नीमच में के० रि० पु० दल के 38वें वार्षिकोत्सव पर **श्री एस० एम० घोष** महानिदेशक के साथ **सम्मान गारद** का निरीक्षण करते हुये केन्द्रीय गृहमंत्री **श्री चरण सिंह**।

पदक प्रदान करते हुये केन्द्रीय गृहमंत्री श्री चरण सिंह



बायीं से दायीं ओर : (पुलिस शौर्य पदक) कां० पारस नाथ, स०इ० टी.एस. नेगी व हे० कां० अम्बिका नाथ तथा (जीवन रक्षा पदक) कां० सुगन सिंह



क्रै प ल र

[हिन्दी संस्करण द्वैमासिक]

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस का वृत्तपत्र

तथा

सचित्र पत्रिका

खण्ड VI
अंक 6

31 जनवरी, 1978
11 माघ, 1899

मुख्य सम्पादक :
एच० एस० सेठी

हिन्दी सम्पादक :
जे० एस० शर्म्मा

मुख पृष्ठ पर:

एक मर्मस्पर्शी क्षण : कां० हृदयनारायण की विधवा पत्नी को राष्ट्रपति का शौर्यपदक प्रदान करते हुये गृहमंत्री श्री चरण सिंह।

अन्तिम पृष्ठ पर :
नीमच में शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि चढ़ाते हुये गृहमंत्री चरणसिंह।

सम्पादकीय कार्यालय :

द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-111422

प्रकाशक : महानिदेशक, के० रि० पु० दल की ओर से **एच० एस० सेठी**

I. नव वर्ष की शुभकामनायें- महानिदेशक तथा हिन्दी सम्पादक की ओर से

II. रिपोर्ताज :

(i) राष्ट्रीय पुलिस आयोग का गठन

(ii) केन्द्रीय गृहमंत्री द्वारा दल की सराहना

(iii) **कमांडेंट सम्मेलन** -दल के कल्याण की प्राथमिकता पर बल

(iv) 7 बटालियन का वार्षिकोत्सव

III. लेख:

(क) सिनेमा और सशस्त्र दल, ले०–श्री गजिन्दर सिंह

(ख) पुलिस और क़ानून-पालन, ले०-श्री ई. एल. स्ट्रैसी, महानिरीक्षक तमिलनाडु

(ग) क़ानून, अपराध और दंड-व्यवस्था, ले०-श्री एस. वेणुगोपाल राव

IV. कविता :

(i) जय जय जय नव भारत वर्ष, र०–श्री जे.एस. शर्मा, हिन्दी सम्पादक

(ii) कैसे कर दूं मैं इन्कार, र०-श्री कृष्ण कुमार शर्मा, मेल नर्स, बेस अस्पताल, दिल्ली

V. गौरवगाथा- पदक, प्रशंसा तथा पुरस्कार

VI. कहानी- तिलकी बाबा, ले०- का० सुशील चन्द चौहान, 2 बटा०

VII. स्वास्थ्य संदेश- चुम्बक-चिकित्सा, ले०-श्री जे. एस. शर्मा, हिन्दी सम्पादक

VIII. विज्ञान के चढ़ते चरण :

IX. क्रीडा-क्षेत्रे- 11वीं दौड़कूद प्रतियोगिता में अजमेर फिर सिरमौर, ले०-श्री० एच. एस. सेठी जन सम्पर्क अधिकारी

X. विविध :

(i) विविध वृत्त

(ii) पहेलियाँ

(iii) सूक्तिसुधा

(iv) दल में कुछ प्रचलित-गप्प, प्रस्तोता-रे० आ० पुण्य देव प्रसाद राय 47 बटालियन

यह सस्करण 27-1-78 को प्रकाशित हुआ है। यदि यह बटालियनों/ग्रुप केन्द्रों की रेल-सीमाओं पर दो सप्ताह के बाद पहुँचे, तब उपनिदेशक (सभरण) को पत्र द्वारा सूचित करना चाहिये।

महानिदेशक की ओर से—

मंगलमय नव वर्ष सभी को

नव वर्ष की पूर्व सन्ध्या को भेजे गये निज सिगनल में, **श्री एस० एम० घोष, महानिदेशक, के० रि० पु० दल** दल ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को नव वर्ष की शुभकामनायें तथा वर्ष भर उत्तम कार्य कुशलता बनाये रखने के लिए बधाइयाँ दी हैं। जनवरी 78 के अपने मासिक पत्र में, उन्होंने ऐसी आशा भी कि है कि इस नये वर्ष में सभी अपनी सेवा-भक्ति से दल की उच्च परम्परायें बनाये रखेंगे।

1977 में, लोक सभा तथा विधान सभाओं के चुनावों में हमारा योगदान प्रशंसनीय रहा, जिसके उपलक्ष्य में केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों से 177 प्रशंसा पत्र तथा 28,140 रु० के नक़द पुरस्कार प्राप्त हुये।

क्रीड़ा क्षेत्र में, दल ने निरन्तर छठी बार **अखिल भारतीय पुलिस दौड़कद प्रतियोगिता 1977** में जीती। हमारी जिम्नास्ट टीम ने भी निरन्तर तीसरे वर्ष **अखिल भारतीय पुलिस चैम्पियनशिप** जीती। हमारी तैराकी टीम ने **अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता** में पिछले अगस्त, सिरमौर जीता। उसने **अखिल भारतीय डालमिया तैराकी चैम्पियनशिप** भी तभी जीती। विगत सितम्बर में, **दिल्ली राज्य तैराकी तथा जल पोलो की चैम्पियनशिप** जीतने का श्रेय भी दल को मिला। इसी प्रकार हाकी, फुटबाल, बास्केट बाल, वालीबाल आदि खेलों में दल ने अच्छा नाम कमाया।

पिछले दिसम्बर में, दल की क्रिप्टोग्राफी (गुप्त लेखन) टीम ने जलंधर में अखिल **भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता** में प्रथम स्थान पाया। **हे० का० अशोक कुमार** को निजी कुशलता में तृतीय स्थान मिला तथा **ना० एम० अशोकन** ने बेतार टीम में निजी सफलता में द्वितीय स्थान पाया। महानिदेशक ने उन्हें बधाइयाँ दी हैं।

जन सेवा के क्षेत्र में बाढ़, अग्निकाँड तथा अन्य प्राकृतिक प्रकोपों के समय, दल के जवानों ने तुरन्त सहायता देकर राज्य अधिकारियों तथा स्थानीय जनता का मन जीत लिया। दिल्ली की बाढ़ में तथा केरल के पालीघाट की घनघोर वर्षा तथा भूस्खलनों में, दल के योगदान की बड़ी प्रशंसा हुई। 17-9-77 को अरुणाचल के जैरामपुर में कई दुकानों में आग लग गई। 25-11-77 को मुकामाघाट के पास एक मकान आग की लपेट में आ गया। दल के जवानों ने तत्काल उन दोनों जगह पहुँच कर आग बुझाने में बड़ी सहायता की।

इस प्रकार, दल ने पिछले वर्ष सभी क्षेत्रों में अपनी कीर्तिध्वजा फहराई।

हिन्दी सम्पादक की ओर से-

जय जय जय नव (भारत) वर्ष

लाता शुभ सन्देश देश को, यह अठहत्तर का नव वर्ष।
बरसे शान्ति-समृद्धि जगत में, छाये अगजग में सुख-हर्ष॥
अंग-अंग में अब शासन के, मिले सभी हैं पाँचों तत्व।
मनों **'पंच परमेश्वर'** आये, करने भारत का नेतत्व।
जय-ध्वज फहरा **'जय प्रकाश'** ने, किया प्रकाशित है सब लोक,
खेल प्राण पर महाप्राण ने, फूँका जन-जन में अपनत्व।
चला क्रान्ति का जिधर मसीहा, उधर छिड़ा भीषण संघर्ष।
लाता शुभ सन्देश देश को, यह अठहत्तर का नव वर्ष॥
'बंसी' की वंशी नहिं बजती, अब **'मुरारि'** की गूँजी तान।
कान की **'रणचण्डी'** भर खप्पर, करे रुधिर प्रब अपना पान।
लखे पराजय का मुख **'संजय'**, **'भडुओं'** के बदले सुर-ताल,
चरण चूम सब **'चरण सिंह'** के, जोहें अब उसकी मुस्कान।
'अटल' छत्र की छायां सब पर, **'जगजीवन'** है मूर्त अमर्ष।
लाता शुभ सन्देश देश को, यह अठहत्तर का नव वर्ष।
बहा सकेगा अब न **'आंसुका'**, जनता में आँसू की धार।
बुल डोज़र कर नहिं पायेंगे, लोगों के घर-ज़र विस्मार।
मूल्य नहीं बढ़ने पायेंगे, पाप-अराजकता-अपराध,
कर न सकेंगे भारत गारत, काले धन्धे-भ्रष्टाचार।
अब न करेंगे मंत्री-जज के, अधरतलक मदिरा-संस्पर्श।
लाता शुभ सन्देश देश को, यह अठहत्तर का नव वर्ष।
छिन्न-भिन्न अब ताने-बाने, टूटा तानाशाही-यंत्र।
रहा दमन में नहीं तनिक दम, भय का नाम हुआ छू-मंत्र।
मरी स्वयं **'यह-मर-एजेंसी'**, जिसने मारे अगणित व्यक्ति,
आज देश के दिग्दिगन्त में, छाया सचमुच में जन-तंत्र।
कोटि-कोटि कह रहे कण्ठ यह, **'जय जय जय नव भारत वर्ष'।**
लाता शुभ सन्देश देश को, यह अठहत्तर का नव वर्ष॥
बरसे शान्ति-समृद्धि जगत में, छाये अगजग में सुख-हर्ष॥

<u>कविता—</u>

कैसे कर दूं मैं इन्कार

रचयिता—**श्री कृष्ण कुमार शर्मा**

घिरा देश संकट में हो जब,
रिपु हो करता सतत पहार।
सीमा पर जाने को बोलो,
कैसे कर दूं मैं इन्कार?
सिर्फ अकेला सुत जननी का,
प्राण प्रिया का मोहक प्यार।
सन्तति-उपवन का मैं माली,
कुल-जन के कराठों का हार।
पर इन सब से भी भारी है,
मातृ-भूमि के ऋण का भार।
सीमा पर जाने को, बोलो,
कैसे कर दूं मैं इन्कार?
नहीं उचित आराम कभी भी,
खड़ा शत्रु हो जब तैयार।
एक बने सब हम मिल कर,
दुर्जय लोहे की दीवार।
प्राणों से बढ़ कर है हमको,
निज भारत-माता से प्यार।
सीमा पर जाने को, बोलो,
कैसे कर दूं मैं इन्कार ?

<u>गौरव गाथा</u>

राष्ट्रपति का शौर्य-पदक

दिनांक 26 नवम्बर 1976 को, भारतीय उच्चायुक्त को छह मनुष्यों ने घेर लिया और गोली चलाई। सुरक्षा गारद के सिपाही **जयभगवान** (40 बटा०) ने जान जोखिम की बिना चिन्ता किये हुये, उन गुंडों में से एक को तुरन्त धर पकड़ा। उस जवान की जाँघ में गोली लगी; किन्तु वह आक्रमणकारी से पिस्तौल छीन लेने में सफल हो गया;

तब उसने इन बन्दूकवाले गुंडों पर गोली चलानी शुरू की। तभी, उच्चायुक्त के निजी सुरक्षक श्री शरणाकर ने भी उन गुंडों पर फायर किया। स्थानीय पुलिस ने भी सहायता की। फलस्वरूप, उन छहों में से चार वहीं ठौर हो गये और दो बन्दी बना लिये गये। इस प्रकार, उच्चायुक्त को मार डालने का प्रयत्न विफल हुआ।

अपनी अपूर्व वीरता के लिये, का० जय भगवान को राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्निसेवा पदक 10 अक्टूबर 77 को विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने प्रदान किया।

वीरता के लिए पुरस्कार

दिनांक 2 सितम्बर 1977 को सदर बाजार में डाकुओं से निबटने में अदम्य साहस तथा वीरता दर्शाने के उपलक्ष्य में, पुलिस महानिरीक्षक (दिल्ली) ने 21 बटालियन के का० सुधीरचन्द तथा ला० ना० ठाकुर बहादुर को 500-500 रु० का नक़द पुरस्कार दिया है।

बिहार में प्रशंसा व पुरस्कार

दिनांक 13 अक्टूबर 1977 को, कुछ गिरफ्तारियाँ करने के लिए, बिहार के भागलपुर जिले के नवादा गाँव में एक सहायक पुलिस अधीक्षक के साथ ज़िला सशस्त्र पुलिस के सात सेक्शन तथा 10 बटालियन (के० रि० पु० दल) की एक प्लाटून गई। बंदियों के साथ लौटते समय, इस पुलिस-टुकड़ी पर गोलियों तथा ईंट पत्थरों की बौछार हुई। फलस्वरूप, के० रि० पु० दल के दो सिपाही (का० बनवारी लाल और का० नाथूराम) को गम्भीर छुर्रे लगे तथा अन्य जवान भी जखमी हुये। उस मैजिस्ट्रेट की आज्ञा पर, जो टुकड़ी के साथ था, पुलिस द्वारा लाठी-प्रहार तथा गोली चालन किया गया।

बिहार सरकार ने के० रि० पु० दल के जवानों के साहस तथा सेवा-निष्ठा की बड़ी प्रशंसा की। का० बनवारी लाल व का० नाथूराम को दो-दो हजार रुपये का, का० आर. एस. पाठक तथा स. इ. ईश्वरी दत्त को एक-एक हजार रुपये का तथा हे० का० इन्दर सिंह, का० पूनाचा, का० बनवारी लाल, का० मीमलधन, का० केसरीमल, का० धल्लाराम, का० डी. जार्ज और का० थुल्लाराम को 500-500 रुपये का नक़द पुरस्कार तथा प्रशंसा-प्रमाणपत्र देने की बिहार सरकार ने सिफ़ारिश की है।



कां० जयभगवान को बधाई देते हुये विदेशमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी

पालघाट में दल को सहायता

दिनांक 7 नवम्बर 77 की रात से लगातार तीन दिन तक, केरल के पालघाट के जिले के कुछ भाग में मूसलाधार वर्षा, बाढ़ और भू स्खलनों की भरमार रही। लगभग 33 मनुष्यों के डूबने की आशंका है और कितने ही घायल हुये। लाखों रुपये को फसलें तथा सैकड़ों जानवर मारे गये। कितने नष्ट-भ्रष्ट स्थानों पर तो पहुँचना कठिन हो गया।

राज्य सरकार ने मीनकारा बाँध (पालघाट) पर निरत 28 बटालियन से 9 नवम्बर 77 को सहायता के लिये प्रार्थना की। अतएव, 9,11 और 12 नवम्बर को बटालियन के जवानों ने बचाव तथा राहत कार्रवाइयों में स्थानीय अधिकारियों की भरसक मदद की। सब से अधिक नष्ट भ्रष्ट मुंडीपट्टी, और चेनामपट्टी नामक गांवों के चारों ओर तथा अन्दर, दल के जवान मुख्यकर लगाये गये। दलदली चट्टानों पर जवानों को 6 कि० मी० चलना पड़ा। उन्होंने कितने ही शव निकाले। श्री राधाकृष्णन, पुलिस उपमहानिरीक्षक (उत्तरी रेंज) ने स्वयं इनके काम देखे । केरल के हरिजन कल्याण मन्त्री श्री के० के० बालकृष्णन ने हमारे ज़बानों की सराहनी लिखी है।

आंग्ने -शमन

6 अक्टूबर 1977 को, श्रीनगर के पुलिस नियंत्रण कक्ष में भयानक आग लग गई। निकटवर्ती 36 वटालियन की चौकी से जवान दौड़ आये और रेडियो, सामान व फर्नीचर आग की लपेट से बचा लिया। क्या स्थानीय प्रशासन और क्या जनता, सभी ने इस सामयिक सहायता की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

20 अक्टूबर 1977 की रात को, दिल्ली के किशनगंज में आग लग गई। पाशर्ववर्ती 21 बटालियन की चौकी से जवानों ने दौड़ कर निकट के मकानों को आग लगने से बचाया। सब ने दल की बहुत तारीफ की।

30 अगस्त 1977 की जम्मूकश्मीर के अनन्तनाग ज़िले के पेंगलियाही गांव में 40 बटालियन की चौकी के पास आग भड़क उठी । दल के जवान तुरन्त दौड़ पड़े और आग बुझा दी। ज़िले प्रशासन तथा जनता ने इस कार्य की बड़ी सराहना की।

सिनेमा और सशस्त्र-दल

लेखक : श्री गजिन्दर सिंह

जहां तक मनोरंजन की विविधता का प्रश्न है, हमारे समाज में चुनने को बहुत कम क्षेत्र है और उससे भी कम क्षेत्र, सैन्य तथा सैन्यतुल्य दलों को मिलता है, क्यों कि उन्हें हिमाच्छादित पर्वतों, सघन वनों तथा सुदूर भीतरी क्षेत्रों में काम करना पड़ता है।

जब हम सशस्त्र दलों की बात करते हैं, तब हमारा ध्यान सदा-सतर्क वीर जवानों और सिपाहियों की ओर साधारणतया जाता है, इसलिये कि हमारे दलों को प्रामोद - प्रमोद का सुअवसर ही कहाँ मिल पाता है ? संध्या उनकी खेल में बीतती है, जिसके बाद वे खाना खाते है; गप्प-शप्प हाँकते हैं और फिर एक नयी प्रात से जूझने के लिये सो जाते हैं।

नीरस संध्यायें साँस्कृतिक कार्यक्रम तो विरले ही होते हैं, जो विशेष अवसरों पर आयोजित किये जाते हैं।

नित्य के कार्यचक्र में वे बैलों की भांति पिलते हैं और उससे नीरसता आती है और नीरसता की चिरसंगिनी अयोग्यता होती है। इस लिये, उनके मन को सन्तुलित तथा सतर्क रखने के लिये, नीरसता को तोड़ना होगा। उनके हास्य-विनोद के शौक़ को पूरा करने में हमारे त्योहार तथा उनके मनाने में चहल पहल तथा हर्षोल्लास बड़ी सहायता करते हैं; किन्तु त्योहार लम्बे समय के बाद आते हैं और सामूहिक माध्यम से प्रस्तुत कार्यक्रमों पर ही अधिकतर निर्भर रहना पड़ता है। दूरदर्शन के तो कुछेक ही केन्द्र हैं

और सशस्त्र दलों को बहुत ही कम संख्या उनसे लाभ उठा पाती है । रेडियो से तो एक से घिसे-पिटे कार्यक्रम चलते हैं और कुछ हद तक मनुष्यों का रुझान उनसे हटता जा रहा है। पचास वर्ष पुराने संस्थान होते हुये भी इसके कार्यक्रमों में कोई अच्छा-सुधार नहीं हुआ है। वास्तव में, यह उस खच्चर की याद दिलाता है, जो लाख कितकिताने पर भी नहीं बढ़ता है।

सिनेमा- तब मनोविनोद का सब से बड़ा साधन सिनेमा ही रह जाता है। यद्यपि पश्चिमी देश उससे अघा गये हैं, और उसे आनन्द का निम्न कोटि का साधन समझते हैं, किन्तु हमारे जैसे देश में सिनेमा बहुत ही लोक-प्रिय है और जनता को तो वास्तव में उसके लिये एक सनक सी सवार है।

जब से बोलते सिनेमा का चलन हुआ है, सशस्त्र दलों के समेत सभी लोग इससे बड़े आकर्षित हुये हैं। इस सोने की मुर्गी को हड़पने में व्यापारी समुदायः पीछे नहीं रहा है, जो अब भी अण्डे दे रही है। आज विश्व में सिनेमा-निर्माण करने में, भारत सबसे बड़े देशों में दूसरे नम्बर पर है। इस तरह, मनोरंजन के एक प्रधान साधन के रूप में यहाँ सिनेमा का स्थान है।

आम तौर पर, हमारे जवानों को अपने परिवारों से दूर रहना पड़ता है और घर की सुख-सुविधा से वे वंचित रहते हैं। ऐसेजीवन में, अक्सर उनकी भावुकता को ठेस पहुँचती है और मन में घूटन पैदा होती है। तब सिनेमा ही उनकी मदद करता है और उनकी कुंठाओं की दूर करता है। बुरी भाँति जकड़ी हुयी जीवात्मक व्याकुलताओं को भी यह शान्त करता है।

वीर पुंगव सैनिक—जोश और शशोपंज से तथा हिंसा और कामुकता से परिपूर्ण नाटक, जवानों को उन चलचित्रों में ऐसी भावना पैदा करता है कि मानों वे ही उनके कोई अंग हैं और साहस तथा रोमांचकता दिखाने की लालसा को वह तृप्त करता है। हमारा जवान तुरन्त ही चलचित्र के नायक से (हीरो से) अपना तादात्म्य स्थापित कर लेता है, क्योंकि विचारों में वह स्वयं वीरपुंगव होता है और वैसी ही भावमयता रखता है। वह हीरो के साथ कूदता-ठुकराता है और कहानी के साथ साथ, वह भी प्रेम में फँसता और निकलता है और अन्त में, जब खलनायक पकड़ा और दण्डित किया जाता है, तब वह भी हीरो के साथ आनन्द लेता है। इस प्रकार, उसकी न्याय-निष्ठा को समर्थन मिलता है तथा कानून में उसकी आस्था दृढ़ होती है।

इससे समाज में न्याय-व्यवस्था कायम करने वाली अपनी भूमिका में भी उसे गर्व की भावना मिलती है। भगवान, सरकार तथा मनुष्य जाति की उत्तमता की उस आस्था में भी (जो नित्य प्रति के जीवन में सामाजिक अन्याय देखकर डगमगा जाती है) फिर से दृढ़ता आती है। पुण्य की अन्त में पाप पर विजय से उसे बड़ा सन्तोष तथा उसकी प्रात्मा को सुख मिलता हैऔर यह अनुभव करता हुआ कि संसार में अब भी कुछ अच्छाई बाक़ी है। वह खुशी-खुशी घर लौटता है।

गिद्ध और रिंगते जन्तु-धनी लोग तो शानदार होटलों और बड़े क्लबों में जाते हैं, जहाँ वे सब उस प्रकार की कारगुजारियाँ करते हैं, जिसे अपनी सन्तान को करने से

मना करते हैं। वहाँ से लौटते हुये, द्रुतगामी मोटर कारों से उन सामान्य पुरुषों पर नाकचढ़ा कर दृष्टि डालते हैं, जो सिनेमा-थियेटरों से निकलते होते हैं। वे उन रिंगते जन्तुओं पर गिद्धजैसी घिनौनी नज़र डालते हैं।

(अपने वस्त्रफेंकती और गलबहियां बदलती कैवरे बालाओं वाले) शानदार होटलों में जाना धनाभाव के कारण जिन्हें नसीब नहीं है, वे सिनेमा के रजतपट पर देख कर आधापरता तो सन्तोष कम से कम पा ही लेते हैं। गर्मागर्म कैवरा देखने तथा क्लबों के उन्मत्त परिसर में उन धन्ना सेठों के उच्छखल जीवन की रंगरेलियाँ जानने की उत्कट लालसा हमारे जवानों में होती है, जिनके द्धार (सौभाग्य या दुर्भाग्य से) उनके लिए बन्द रहते हैं। समाज के इन रंगीले स्यारों के सच्चे रूप-रंग को देखने के लिए, हमारे दलों को सिनेमा झरोखों का काम देता है।

जवान का चयन : चल चित्र नाना प्रकार के होते हैं, जो भाँति-भाँति के स्वादों तथा सनकों को तृप्त करते हैं।लीक से हटे छिपे अर्थों वाले तथा सामाजिक व्यंग्य से भरे चलचित्र हमारे जवानों को पसन्द नहीं होते; उन्हें तो साहस,रूमानी प्रेम तथा मारपीट से भरे चलचित्र चाहिए।

हिन्दू पौराणिक कथाओं पर आधारित भी चलचित्र होते हैं। हमारे जवानों की बड़ी संख्या इन्हें देखने जाती है; क्योंकि वे साधारणतया धर्म-प्राण तथा ईश्वर से डरने वाले होते हैं। हिन्दू देवताओं को असम्भव कामों को करते देखकर उनमें बड़ा जोश आता है और अपनी कपोल-कल्पनाओं के प्रति प्रेम जागृत होता है। मुस्लिम लोग भी अन्य दर्शकों की भाँति प्रभावित होते हैं। ऐतिहासिक चलचित्रों का भी जवानों में बड़ा बोलबाला रहता है, क्यों कि उनमें वे अपने पूर्वजों को घटिया किस्म के हथियारों द्वारा बड़े खूखार तथा विकराल शत्रुओं से खूब ही घमासान युद्ध करते पाते हैं। इससे उनमें युद्ध करने की इच्छा उत्पन्न होती है।

सैद्धान्तिक चलचित्र : किन्तु सब से अधिक चलचित्र, सशस्त्र दलों के सहित हमारी जनता के कण्ठहार जो बनते हैं, वे हैं सिद्धांत पर आधारित चलचित्र । उनमें मिलाजुला मसाला होता है, भयंकर अपराधी खलनायक होते हैं जो एक असंदिग्ध सती को फुसलाते हैं; एक अजेय नायक (हीरो) होता है जो दर्जनों दुष्टों से बिना खरौंच भी खाये अन्त तक लड़ता रहता है; कुछ दीवारें, नंगी पीठे, कुछ बल खाती हुयी दिखाई देती हुयी चोलियां, हालीवुड से उधार ली हुयी लोकप्रिय धुनें, किसी लोकप्रिय अभिनेत्री के साथ किसी पेड़ के चारों ओर चकफेरी, तथा अन्त में पर महत्वपूर्ण परिचित दृश्य; हीरों की खुली बाहों के लिए दौड़ती हुई अभिनेत्री का चिरमिलन के लिए आलिंगन, जबकि उन सब दुष्टचरित्रों को हथकड़ियाँ पड़ना, जो मारधाड़ में प्राण नहीं गवाँ पाये हैं।

मनोबल-वर्द्धक–पश्चिम देशों के से हमारे यहाँ सुखान्त चलचित्र नहीं बनते। शायद, हम लोग सारे नाटक में हँस-हँस कर पेट में बल नहीं डालना चाहते हैं या हमारे सिनेमा-निर्देशकों में हमें लगातार हँसाने की क्षमता नहीं है। 'हकीकत' 'फौजी', 'आँखें' या 'हिन्दुस्तान की आवाज़' जैसे देशभक्ति या संग्राम वाले चलचित्र

यद्यपि जवानों में मनोबल बढ़ाते हैं,किन्तु वे बहुत ही कम बनते हैं, क्योंकि ऐसे चलचित्र अच्छी आय नहीं बटोर पाते हैं, जब कि चलचित्र का निर्माण मुख्यकर एक व्यवसायी धंधा है। सरकार को यह उचित होगा कि हमारे जवानों के मनोबल-वर्द्धक चलचित्रों के निर्माण के लिए कुछ नये प्रोत्सा हनों की घोषणा करे।

सिनेमा मूलरूप में एक कला है और कोई भी कला तब तक पूर्ण नहीं कहला सकती, जब तक उसमें जीवन के सुन्दर तथा भयंकर, अच्छाई तथा बुराई के सभी पहलुओं का चित्रण नहीं होता है । परन्तु कला के नाम पर हिंसा तथा कामुकता को बेचने वाले सिनेमा-उत्पादकों का बहिष्कार होना चाहिए । जितनी कथावस्तु को आवश्यक है, उतनी ही हिंसा तथा कामुकता का समावेश होना चाहिए । अन्यथा, उस में आनन्द नहीं आता। फिर कौन नीरसता के लिए पैसे फेंकना चाहेगा ?

पुलिस और क़ानून-पालन

ले०—श्री इ० एल० स्ट्रेसी आई. पी.

पुलिस द्वारा क़ानून के पालन या उल्लंघन की समस्या उन्हीं दिनों जनमानस के पटल पर खूब उभर कर आयी है और यह ठीक ही हैं।

यदि पुलिस अपना कर्त्तव्य ठीक रूप से करती है, तब तो केवल हमें इतनी चिंता हो सकती है कि उस से और अधिक अच्छी भाँति कैसे काम कराया जाये। किन्तु जब ऐसी आशंका होने लगती है कि बाढ़ ही फसल को खाये जा रही है, तब जनता को घबड़ाने का सही कारण है और उसे यह जानना ज़रूरी हो जाता है कि यह समस्या कितनी व्यापक है; इसके मूल कारण क्या हैं और इसके विषय में क्या किया जा सकता है।

आरंभ में आइये, चित्र सीधा प्रस्तुत किया जाए। जिस समाज के पुलिस जन स्वयं भाग लेते हैं और जिसकी वे सेवा करते हैं, वे अपनी सेवाभार उठाने में साधारणतया अन्य सदस्यों की भाँति क़ानून का पालन करते हैं । बड़े बड़े वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अधिकतर ऐसा ही यत्न करते हैं । दुर्भाग्य से, उनके जीवन, सेवा तथा साथ में कल्याणकारी कामों का यह पक्ष, कुदरतन ही, बहुत कम या कतई नहीं नाम कमा पाता है। दूसरी ओर, नामतः वे अवसर जब मुख्य कर अपनी सेवा निबाहते हुये पुलिसजनों से क़ानून टूट जाता है, जनता का ध्यान अपनी ओर बहुत खींच लेते हैं और पुलिस विभाग को कलंकित कर देते हैं। किन्तु सदा ऐसा नहीं होता, क्यों कि अधिकांश लोग किसी पुलिस जवान को रात में बिना बत्ती के साइकिल चलाते हुये देख कर या तो ध्यान ही नहीं देते हैं या क्षमा कर देते हैं, हालांकि उसे दूसरों के लिये

दृष्टान्त उपास्थित करना चाहिये था अथवा आप में से अधिक उदार चित्त वाले व्यक्ति तो किसी ऐसे सिपाही से हमदर्दी तक दिखाते हैं, जो अवैध शराब के एक-दो प्याले पीने के कारण नौकरी से हाथ धो बैठता है, यद्यपि शुरू-शुरू में दीखने वाले परिणामों से कहीं अधिक गम्भीर सचमुच में नतीजे हो सकते हैं। क्षमा नहीं किये जाने वाले तकनीकी या छोटे-मोटे क़ानूनों को तोड़ने से साधारणतया समाज की तौहीन नहीं समझी जाती है। किन्तु किसी अपराध को स्वीकार कराने के लिये पुलिस के अत्याचार या दण्ड दिलाने के लिये झूठी गवाही बनाने के जब प्रमाण आप को मिलते हैं, तब सदा अपने व्यवहार को उच्चस्तर पर रखने की ज़िम्मेदारी के प्रति चिन्तित पुलिस जन जितने निराहत स्वयं को समझते हैं, उतना अन्य कोई नहीं। सचमुच में, अपराधी को तुरन्त दंड दिलाने के लिये हर कोई क़ानून की सीमा का उल्लंघन करना चाहता है ।

इसलिये, क़ानून तोड़ने वाले पुलिस जन के प्रति हमारे दृष्टिकोण में कोई असहमति नहीं होते हुये भी यहां पर ठहर कर यह जानना लाभदायक होगा कि साफ़-साफ़ हिदायतें होने पर भी, पुलिस-नियमों के होते हुये भी तथा वरिष्ठ अफसरों द्वारा स्पष्ट और क़ानूनी ढंगों को अपनाने के लिये प्राग्रह करने पर भी, क्यों पुलिस जवान आपत्तिजनक, बल्कि अपमानजनक ढग अपनाते हैं।

सर्वप्रथम, यह याद रखना होगा कि पुलिस जनों की बहुत भारी संख्या का न तो ऐसा स्वभाव और न ही ऐसा झुकाव होता है कि वे दमन तथा यातना देने में आनन्द लें। कुछ इनेगिने ब्यक्ति ही ऐसे होते हैं, जो इस प्रकार का व्यवहार कभी कभार कर बैठते हैं । द्वितीय, जो ऐसा करते भी हैं उनमें से बहुत से तो उससे दूर ही रहना चाहते हैं; किन्तु चाहे विभाग हो या राजनीति दोनों के बुरे बड़े लोग ऐसा करने का दबाव उन पर डालते हैं । मैं कभी भी यह बात दुर्व्यवहार को उचित ठहरने के लिये नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि कोई सरकारी नौकर क़ानून तोड़ने के लिये वरिष्ठ आदेशों की प्रोट नहीं लेता है। यह मुख्य रूप से उन वरिष्ठ अफसरों पर लागू होती है, जो क़ानून तथा उसके पालन के विषय में थोड़ा बहुत जानते हैं; जिन्हें ऊँच-नीच समझने के लिये काफी शिक्षा एवं विवेक है तथा ऐसे दबावों से चुनौती लेने के लिये, जिनसे चारित्रिक बल की उम्मीद की जा सकती है। तौभी, कुछ दबावों में आ ही जाते हैं।

दबावों को सीधा तथा व्यक्तिगत होना चाहिये। क़ानून और दस्तूरों को तोड़ने के समर्थन में, स्थितियों की मज़बूरियों को प्रायः बताया जाता है । उदाहरणार्थ, जासूसी और राजद्रोह-उन्मूलन के धुंधले क्षेत्र में या छापामार युद्ध के क्रूरक्षेत्र में, जो कुछ भी होता है उसे बताने में लज्जा आती है, किन्तु राष्ट्रीय सुरक्षा या तथाकथित 'स्थितियों की आवश्यकताओं के आधारों पर उसे उचित ठहराने की कोशिश होती है। इन क्षेत्रों तक में, शूरवीरता तथा शिष्टाचार को तिलांजलि देने की कभी कोई आशा नहीं करता; किन्तु जिस पर सचमुच में दया आती है (क्यों कि इसको इतना सरलतापूर्वक पास नहीं फटकने दिया जा सकता है) वह है अधीनस्थ कर्म चारी, जो कार्य-क्षेत्र के वातावरण के कारण ग़लती कर बैठता है और जिसकी जाँच नादान स्तरों द्वारा की

जाती है। किसी हस्तक्षेप्य अपराध को लिखने के नियम को तोड़ना किसी थानाध्यक्ष को कोई बिरली बात नहीं है, जब वह यह समझता है कि उसका पता वह नहीं लगा सकता है और उसके कारण वह दोषी ठहराया जा सकता है। उसके इस काम को समझा जा सकता है या हमदर्दी तक पैदा हो सकती है। किन्तु यदि अपराध स्वीकार कराने के लिये वह बर्बरता और यातना पर उतारू हो जाता है, तब उसकी कार्रवाई की जितनी निन्दा की जाए, वह थोड़ी है। यदि आप क्षति ग्रस्त व्यक्ति नहीं हैं या उस मामले में बड़ी हानि आपने नहीं उठाई है, तब आप मुझसे अवश्य सहमत होंगे। तब जैसा कि अनेकों ने मझे सुझाव दिया है, शायद वह आप भी सुझावें कि यदि केवल थानाध्यक्ष अपराधी की अच्छी पिटाई करे, तब वह चुराये हुये जेवरात फिर बरामद करने में सफल होगा ! गुँडों से त्रस्त लोग भी, ऐसी ही कार्रवाही करवाने में रुचि प्रायः दिखाते हैं। उनकी एक ऐसे पुलिसजन पाने की प्रार्थना होती है, जो अपनी लाठी उस वक्त तक उनके साथ में लिये रहे, जबतक कि उपद्रवी को सबक नहीं पढ़ा दिया जाये। यह सब कुछ उस दुर्व्यव हार के समर्थन हेतु नहीं कहा जा रहा है; किन्तु यह कहना ज़रूरी यों हो जाता है कि क़ानून की कुछ टूट-फूटों को सही रूप में समझना या उन पर हमदर्दी तक लाना पड़ जाता है। और जब किसी साधारण सिपाही की घंटों की सेवा, अत्यधिक तनाव, जनता की उदासीनता तथा तुनुकमिजाजी का ध्यान आप करें; तब उस सिपाही की चिड़चिड़ाहट को आप शायद क्षमा करना चाहेंगे, जिसके कारण किसी ऐसे व्यक्ति के कान पर सिपाही से तमाचा या कटुशब्द मिलते हैं, जो उसके लिये उचित ही थे।

किन्तु यह मैं स्वीकार करता हूँ कि किसी पुलिस जन के द्वारा क़ानून भंग करने के समर्थन में ये सब बातें कभी उसके अपराध को धो नहीं सकती हैं और यह आप पूछ सकते हैं कि इस प्रकार दुर्व्यवहार से अधीनस्थ लोगों को बचाने के लिए वरिष्ठ अधिकारी क्यों नहीं पर्याप्त अनुशासन स्थापित करने में सफल हुए हैं। जहाँ तक नित्य के काम का सम्बन्ध है आप को यह याद रखना होगा कि पुलिस, दल साधारणतया दूर-दूर छितरा रहता है, जहाँ व्यक्तिगत देख-रेख रखना कठिन है। सुदूर गांवों और अकेले मार्गों पर तो सिपाही तक अपनी मनमानी करते हैं और वह उनका आत्म-अनुशासन ही है, जिसके द्वारा उनसे सद व्यवहार की उम्मीद की जा सकती है। एक ओर उपदेश और दूसरी ओर दण्ड का भय, ये दोनों काफ़ी नहीं हैं।

आप प्रशिक्षण के विषय में भी पूछ सकते हैं। क्या हम अपने पुलिसजनों के मनों में अनुशासन की भावना, क़ानून के प्रति श्रद्धा तथा सामान्य शिष्टाचार नहीं बिठाने में सफल हो सके हैं, जो उनकी सेवा के शेषभाग में मार्गदर्शी सिद्धान्तों का कार्य करेंगे ? मेरे विचार में, इस प्रश्न से समाज की कुछ अपनी त्रुटियों का पर्दाफ़ाश होता है। माता-पिता होने के नाते, यदि आपने अपनी सन्तान का पालन पोषण सही ढंग से नहीं किया है और यदि (सद्व्यवहार के ये सब ज़रूरी आधार) चारित्रिक बल, नैतिक साहस, हमदर्दी, सामान्य दयाभाव, अच्छी विनोदप्रियता तथा खिलाड़ी-योग्यता जैसे गुण उसमें नहीं भरे हैं और यदि उसके धर्म और स्कूल ने आपकी कोशिशों में कारगर समर्थन नहीं दिया है, तब पुलिस-प्रशिक्षण के स्कूलों और कालेजों से आप उस

सफलता को एक वर्ष में कैसे आशा कर सकते हैं, जो अपनी सन्तान के सारे प्रारम्भिक जीवन में आप नहीं प्राप्त कर पाये। अतएव, जब कि हम यह सुनिश्चित करने का वचन देते हैं कि पुलिसदल के वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते, हम अपने पुलिसजनों के मन में चरित्र नामक उस महत्त्वपूर्ण गुण को कूट कूट कर भरेंगे, जिससे अन्य सभी उत्तम गुणों का प्रादुर्भाव होता है, मेरा आप से भी यही अनुरोध है कि इतने लम्बे-चौड़े बाल्यकाले में जब आपका बच्चा आपके साथ रहता है तब आप अपने कर्त्तव्य से मुंह नहीं मोड़ें और उसमें वह मजबूत आधार शिला रखें, जिस पर हम अच्छी मंजिल बना सके । अपनी ओर से, हम अपने प्रशिक्षण को सुधारने और आपकी मदद से, अपने कार्य क्षेत्र के वातावरण को उत्तम बनाने की निरन्तर चेष्टा करते रहेंगे, जिससे आपको सन्तोष मिले।

विज्ञान के चढ़ते चरण

● काकेशस के पर्वतों में एक ऐसी शक्ति शाली अजीमुथ दूरबीन स्थापित की है, जो मास्को से व्लादीवोस्तोक तक की दुगनी दूरी 25,000 कि० मी० पर जलती मोमबत्ती को देख सकती है। इस दूरबीन के शीशे का बज़न 42 टन है। इसे पालिश करने के लिए जो यंत्र बनाये गए, उन्होंने एक माइक्रोन के 10,000वें अंश तक की बारीकी से काम पूरा किया।

● भारत में उन गरीब किसानों के लिए कूड़े-कचरे से ईंधन गैस तैयार की गई है, जो गोबर-गैस के लिए काफी गोबर नहीं जुटा पाते हैं।

● कैलीफोनिया की एक कम्पनी ने एक उठा ले जाने वाला टेनिसकोर्ट बनाया है, जिसे 10 मिनट में लगाया और हटाया जा सकता है। यह कंकरीट या कोलतार वाले स्थान पर लगाया जा सकता है । इसके स्टील-फ्रम में नाइलोन के जाल को एल्यूमी नियम के खम्भों पर लगाया जाता है।

विविध वृत्त

● ग्रु० के० जम्मु का नाम अब ग्रु० के० बनतालाब हो गया है और 2, 6, 20, तथा 22 बटालियनों का मुख्यालय भी बनतालाब वन गया है।

● भारत सरकार ने 57 और 59 बटालियनों को 31-3-78 से तोड़ने का निर्णय किया है। इन दोनों बटालियनों के सेवीजन अन्य रिक्त स्थानों में खपाये जायेंगे, फिर भी यदि कुछ बच रहे, तो उनको भी दल में में रखे रहने की सरकार से अनुमति मांगी जायेगी।

● श्री के. दादा भाय (गुजरात काडर) 5 को उपमहानिरीक्षक दिल्ली नियुक्त किया व गया है और ब्रि० पी० एन० ख़ंडूरी ने महानिदेशालय में उपनिदेशक (प्रशिक्षण) के | पदभार को संभाला है।

राष्ट्रीय पुलिस आयोग का गठन

भारत में अखिल राष्ट्रीय स्तर पर पुलिस प्रशासन से सम्बन्ध रखने वाले सभी बड़े-बड़े मुद्दों की जाँच करने के लिये औरपरिपालन के वास्ते, ऐसे उपाय बताने के लिए कि जिनसे कार्य कुशलता ही केवल नहीं बढ़े, बल्कि वे लोक-सेवा के संलेख का रूप ग्रहण करें, केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री चरणसिंह ने 15 नवम्बर 1977 को एक राष्ट्रीय पुलिस प्रायोग के गठन के निर्णय की घोषणा की है।

उस दिन इस विषय में श्री चरणसिंह ने लोक सभा में वक्तव्य दिया। इसी प्रकार का विवरण राज्य सभा में श्री धनिकलाल मंडल, गृह राज्य मन्त्री ने दिया।

श्री धर्मवीर, भूतपूर्व राज्यपाल इस आयोग के अध्यक्ष होंगे। गुप्तचर विभाग के वर्तमान निदेशक श्री सी० वी० नरासिंहम (वर्तमान पद छोड़ने पर) इस आयोग के पूर्णकालिक सचिव-सदस्य होंगे। आयोग के अन्य सदस्य हैं-श्री एन० के० रेड्डी, मद्रास उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्याय मूर्ति; श्री के० एफ० रुस्तमजी, गृह मंत्रालय के भूतपूर्व विशेष सचिव; श्री एन० एस० सक्सेना (के० रि० पु० दल के भूतपूर्व महानिदेशक तथा संघ लोक सेवा आयोग के वर्तमान सदस्य) और प्रो० एम० एस० गोरे, समाज शास्त्रों के टाटा संस्थान, बम्बई के प्राध्यापक ।

राष्ट्रीय पुलिस आयोग को विचारार्थ विषय ये हैं :

(i) लोक-व्यवस्था को बनाये रखने तथा अपराध के नियंत्रण तथा रोकथाम को विशेष ध्यान में रखते हुए, पुलिस की भूमिका, कर्तव्य, अधिकार तथा ज़िम्मेदारियों को फिर से स्पष्ट करना;

(ii) मैजिस्ट्रेटी देख-रेख के सहित, वर्तमान पुलिस-तन्त्र के आधारभूत सिद्धान्तों के विकास का अध्ययन करना, इस तन्त्र की कुशलता को आंकना, उसकी मौलिक कमियों तथा कमजोरियों का पहचानना, तथा इस तन्त्र में और इसके मौलिक नियमों में उपयुक्त परिवर्तनों के सुझाव देना;

(iii) यह विचार करना कि प्रशासन, अनुशासनिक नियन्त्रण तथा जिम्मेदारियों की वर्तमान प्रणाली में क्या कोई परिवर्तन आवश्यक है;

(iv) छानबीन तथा अभियोजन की पद्धति की, देर तथा विफलता के कारणों की; गलत ढंगों का प्रयोग तथा उनकी व्यापकता की सीमा की जांच करना तथा इस पद्धति को कैसे सुधारा या बदला जा सकता है और किस प्रकार इसे कुशल, वैज्ञानिक तथा मानवप्रतिष्ठा के मुताबिक ढाला जा सकता है और किस भाँति इससे सम्बद्ध कानूनों को बदला जा सकता है;

(v) अपराध के अभिलेख तथा आँकड़े रखने के ढंगों पर विचार करना तथा उनको एक समान तथा क्रमबद्ध रखने के लिये उपाय बताना;

(vi) ग्रामीण-क्षेत्रों में पुलिस की कार्य प्रणाली की समीक्षा कराना; नये प्रयुक्त प्रबन्धों की महत्ता आँकना और जरूरी परिवर्तनों की सिफारिश करना;

(vii) महानगरियों के समेत, शहरी तथा गैर ग्रामीण क्षेत्रों में पुलिस की कार्य विधि की जांच करना और सर्वोत्तम ढाँचे का सुझाव देना;

(viii) क़ानून पालन कराने के लिये आधुनिकीकरण के उपायों की जाँच करना; पुलिस-संचार, संगणक-जाल, वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं तथा अनुसंधान एवं विकास के विभागों के कामों का मूल्य आंकना और यह अध्ययन करना कि आधुनिकीकरण को क्या जल्दी किया जा सकता है तथा यह जाँच करना कि पुलिस दलों के आधुनिकीकरण तथा उनकी कार्रवाइयों तथा पुनर्गठन को ठीक करने के फलस्वरूप, क्या उनकी गति विधियों के विविध क्षेत्रों में जनशक्ति कम की जा सकती है।

(ix) समाज के कमजोर वर्गों के प्रति पुलिस की खास जिम्मेदारियों की प्रकृति तथा सीमा की जाँच करना तथा उनके हितों तथा अधिकारों को सुरक्षित रखने के विषय में शिकायतों के ऊपर तुरन्त कार्रवाई करने के उपायों को सुझाना;

(x) इन उपायों तथा संस्थानात्मक प्रबंधों की सिफारिशें करना :

(1) पुलिस को अपने अधिकारों के दुरुपयोग से रोकना तथा यह जांच करना कि पुलिस की हमदर्दी, व्यवहार, दृष्टिकोण, तथा निष्पक्षता सही स्तर पर बनी हुयी है और यदि नहीं है, तब भर्ती तथा प्रशिक्षण आदि के विषय में उन्हें सुधारने के उपायों को सुझाना;

(2) प्रशासनिक या कार्यकारी निदेशों, राजनीतिक या अन्य दबावों अथवा कानुन के खिलाफ़ किसी भी मौखिक आदेशों द्वारा पुलिस के दुरुपयोग को रोकना;

(3) पुलिस-अधिकारों के दुरुपयोग के विषय में शिकायतें दूर करने की तत्काल निष्पक्ष जांच कराना;

(4) पुलिस कर्मचारियों की शिकायतों को तुरन्त दूर करना तथा उनके कल्याण और मनोबल पर ध्यान देना; तथा,

(5) महानगरी/जिले/राज्य में पुलिस के कामों का समय-समय पर ऐसे निष्पक्ष ढंग से मूल्यांकन करना, जिससे जनता में उसके प्रति प्रास्था जमे;

(xi) समाज-रक्षा तथा कानून-पालन कराने वाले सेवाभारों को उठाने में जनता का तत्काल इच्छापूर्वक सहयोग पाने के ढंग और परिणाम की जाँच करना तथा ऐसे सहयोग पाने के लिए संस्थानात्मक प्रबन्धों का सुझाव देना और स्वस्थ तथा स्नेहपूर्ण पुलिस-जनता सम्बन्ध के विकास के लिये उपाय बताना;

(xii) पुलिस के प्रशिक्षण, विकास तथा अधिकारियों के उज्ज्वल भविष्य के उपायों की जाँच करना तथा कभी भी सेवा में अपने दृष्टिकोण को आधुनिक बनाने तथा दल के नेतत्व को प्रभावी और प्रात्मबली बनाने के लिये प्रावश्यक परिवर्तनों की सिफ़ारिश करना;

(xii) भविष्य में पुलिस से जझने वाली समस्याओं की प्रकृति का अध्ययन करना तथा उनसे निबटने और निरन्तर अध्ययन तथा मूल्यांकन करते रहने के लिये जरूरी

उपायों को बताना;

(xiv) जिस किसी अन्य मामले को सरकार आयोग को सौंपे, उस पर सोच विचार कर सिफारिशें तथा सुझावों को देना; तथा

(xv) इस विषय से सम्बन्धित कोई भी सुसंगति तथा महत्तापूर्ण मामले का अध्ययन करना;

<u>कहानी :</u>

तिलकी बाबा

ले०—का० सुशील चन्द चौहान

अनगिनत झुर्रियों से परिपूर्ण बूढ़ी ताई के द्वार पर कुछ चहल पहल सुनाई दी। विमल ने अपने घर की दीवार से झाँक कर जो देखा, तो उस गाँव की ढेर सारी औरतें और उनकी छोटी-बड़ी रेजग़ारी वहाँ खड़ी पायी । वहाँ उनके बीच कोई सफेद पोश तिलकधारी बाबा सा दिखाई दिया। विमल की उत्सुकता का कोई ठिकाना नहीं रहा —"बाप रे—इतने बड़े ज्योतिषी—सारा गाँव ही टूट पड़ा"—बुद-बुदाते हुये विमल के कदम बरवश उस ओर बढ़ चले।

"अरे भइया, पहले मोय तो पूछने दे ओ" कहते हुए ताई अन्य औरतों को बूढ़ी बाहों से हटाती हुयी इस तिलकी बाबा के पास जा सिरकी। भीड़ में कुछ अजीब सी उत्कंठा थी; सब को अपने हाथ दिखाने की बड़ी बेचैनी थी। उधर वह विशाल मस्तक तिलकधारी ताई के हाथों की रेखायें पढ़े जा रहा था; फिर उसने गम्भीर मुद्रा बनाई, मानों किसी भयंकर दुर्घटना की आशंका से घबड़ा रहा हो । ताई भी घबड़ाई "अरे बताओ तो महाराज।"

"बताने की बात हो तो बताऊँ माई।" कह कर साधू मौन हो गया। फिर नेत्र मूदें हुये धीरे-धीरे कहने लगा—"शनि बड़ो टेढ़ो चल रहो है—" विमल ने मजाक़ किया 'कहीं मारकेश तो नहीं आयो—।'

साधु ने नेत्र खोले; पहले तो विमल को देख कर कुछ वह झिझका; परन्तु फिर महात्मापन ग्रहण किया "कुछ ऐसा ही समझो बाबा।"

"या मारकेश क्या होता है छोरा" बुढ़िया ने उत्सुकता से विमल की ओर नेत्र गुढ़ाये।

"बस समझ लो दुनिया से छुट्टी" चुटकी बजाता हुआ विमल मुस्काया।

"भाग कलमुँहे"

"तो क्या काले कौवे खा कर आई हो ताई । ज्योतिषी बाबा तो आज यह बता रहे हो; पर ये झुर्रियाँ तो रोज सिकुड़-सिकुड़ कर तो यही जताती हैं।"

'कभी नहीं, ज्योतिषी ने कड़क कर कहा "आखिर तन्त्र-जन्त्र बेकार थोरे ही बने हैं।"

सब औरतों ने स्वीकारात्मक मुद्रा में गरदने हिलाईं। ताई के तब पौ बारह हो गये; उसकी बूढ़ी नसों में फिर जान फुँक गई— "महाराज ठीक कहत हैं। उपाय से सब को काट हो जात है।" फिर वह तिलकधारी के चरण पकड़ कर बोली—"मरनो तो है ही एक न एक दिन । पर इतना चाहूँ कि इस मंझले पोते को ब्याह और देख लेती" कहते हुये पास खड़े नन्हे बालक के सिर पर हाथ फेरा और मटमैले गालों का चूम लिया और निराशा से दो बड़े-बड़े आँसू गिराये।

बाबा ने तभी बुढ़िया के सफेद बालों पर हाथ फेरा "अरे हम ऐसे वैसे साधू नहीं हैं। सीधे हरद्वार से चले आ रहे हैं" । फिर चारों ओर महत्व से बडे-बड़े नेत्र घुमाये; सभी स्त्रियों के सिर श्रद्धा से झुक गये। उसी समय बाबा ने अपनी झोली से एक थाली निकाली और कहा "तू नहीं जानत माई। शनि सूरज को बेटो है। वह उसके आगे झुकत है और यह थरिया भी सूरज की है; जादू से भरी।"

तब उस तिलकी बाबा ने थाली झटफट खड़िया से कोई तंत्र बुदबुदाते खींचा और तीन बार 'छू छु छ' उच्चारा; फिर थाली को बुढ़िया के आगे सरकाते हुये वह बोला "रख माई दस रुपये की दच्छिना।"

दस रुपये का नाम सुनते ही ताई का मुँह एक क्षण को फक पड़ गया । अन्य स्त्रियों में भी खुसर-फुसर हुई। पर उस बाबा की भावभंगिमा को देख कर सब सहमी रह गयीं । ताई ने दुर्वासा ऋषि की कोप कहानियाँ सुन रखी थीं; उसका दिल सिहरा —"ये साधू बड़े गुस्सेले होते हैं; महा अनर्थ कर देते हैं" सोचते हुये अपनी लकुटिया उठायी और कठिनता से दुहरी कमर खड़ी की और लड़खड़ाती घर में घुसी।

इतनी देर से हाथ पर हाथ बढ़ गये; सब अपने अपने 'नसीबो' को जगाने कब से बैठी थीं। "महाराज-मेरो हाथ !" "नहीं महाराज, पहले मेरो हाथ" कहते हुये एक के ऊपर दूसरी स्त्री चढ़ी जा रही थी। पर बाबा मौन बैठा ताई की प्रतीक्षा कर रहा था। "पहले बूढ़ी माई का काम कर लेन दो। खलल मत—।"

तब तक बुढ़िया दस का नोट लिये नमूदार हुयी और लठिया टेकती आगे बढ़ी। "ठीक तो कहत है बाबा, मेरो काम तो हो जान दो" कहते हुये बुढ़िया ने दस नोट आगे बढ़ाया। साधू ने उसे लेकर फिर मंत्र पढ़ा और नोट में एक आलपीन लगाई। "अब देखो चमत्कार ! यदि यह नोट थरिया के बीचोंबीच चल कर आ जाये तब समझ लेना कि काम बन गये।"

बाबा ने ताई के हाथ से नोट को थाली में फिर रखवाया। सभी स्त्रियाँ नोट को चलते हुये देखने को आतुर थीं। उनके लिये वह साधू की दिव्य शक्ति थी; सब नेत्र

फाड़ फाड़ कर नोट को चलता देख रही थीं। पर ताई की बुरी दशा थी। नोट चक्कर काट कर अपनी पूर्व स्थिति में आ गया था; वह बीचोंबीच जाने का नाम न लेता था।

"मान जाओ सूरज देवता"—कहते हुए साधु ने फिर मंत्र की छु छु करी । इस बार नोट फिर खिसका और थाली के केन्द्र में आ गया। सब हक्के बक्के रह गये; स्त्रियाँ बाबा के चरण पकड़ने दौड़ पड़ी।

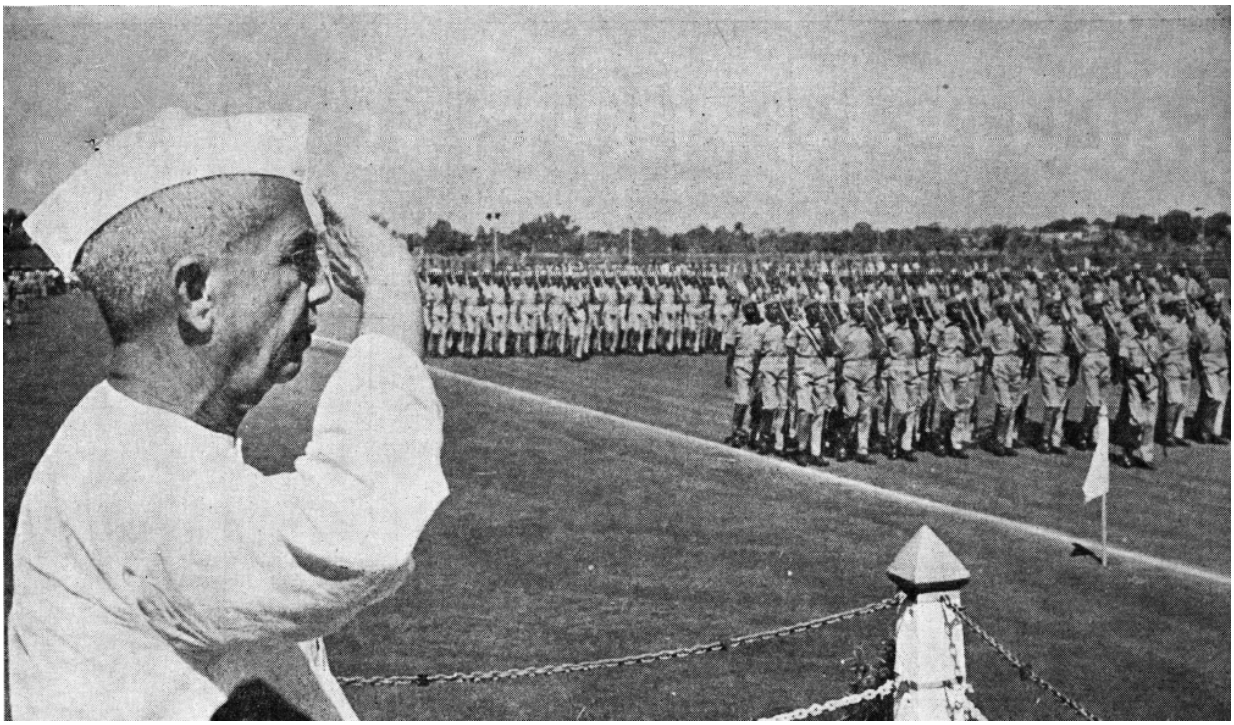
"बस कर, गुरू घण्टाल।" तभी एक स्वर गूंजा। यह स्वर किसी अन्य का नहीं हो कर विमल का था, जिसने आगे बढ़ कर बाबा के हाथ से थाली छीन ली—"तिलक तो दुर्वासा का सा बड़ी लम्बो लगाय रखो है।"

थाली छीनते ही साधू ने मुट्ठी मींच ली, परन्तु विमल ऐसे नहीं मानने वाला था; उसने तिलकी बाबा से झट झपट्टा मार कर मुट्ठी से कोई वस्तु छीन ली, फिर सब उपस्थित महिलाओं को उसे दिखाया। "माताओं, यह चमत्कार इन तिलकी बाबा का नहीं होकर इस लोहे के टुकड़े का है। इसमें चुम्बक भरा है और यह नीचे से आलपीन को मन चाहे ढंग से खींच रहा था और आलपीन नोट को।" इतना ही नहीं, विमल ने प्रयोग कर के भी दिखाया। तिलकी बाबा के काटो तो रक्त नहीं था। सब महिलाओं ने बाबा के ही चिमटे से बुरी तरह उसकी पिटाई की। हल्ला-गुल्ला सून कर, गाँव के सब लोग भी काम छोड़ कर आ गये। सारा कैफियत सुन कर उन्होंने उस जादुई तिलकी को तुरंत पुलिस के हवाले किया।

जब कि सब लोग विमल की सूझ-बूझ के गुण गा रहे थे, बूढ़ी ताई का पोपला मुंह विमल को सौ सौ गालियाँ दे रहा था—'या गांव के छोरे में घमंडई घमंड है। तब मालूम पड़ेगो, जब बाबा की भख्या फलैगी।"

विमल तब भी मुस्काराये जा रहा था "ताई, एक तो तेरो दस को नोट बचा दीन्हो।"

"इस काले कौवाँ खाने वाली को मारकेश तो नाहीं खतम करायो" एक बूढ़े ने फबती कसी। फिर क्या था ? कहकहे के फुव्वारे फूट पड़े।



केन्द्रीय गृहमंत्री द्वारा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल की सराहना

दिनांक 31 अक्टूबर 1977 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल के 38वें वार्षिकोत्सव का उद्घाटन करते हुए, श्री चरण सिंह, केन्द्रीय गृहमंत्री ने नीमच में सामारोहिक परेड में सलामी ली। उन्होंने दल के 35 सदस्यों को पदक प्रदान किए । असम में बोदो जाति द्वारा भाषायी दंगों में शहीद कां० हृदय नारायण सिंह की विधवा-पत्नी को राष्ट्रपति का शौर्य-पदक देते समय, उनका दिल भर आया। पदक पाने वालों में पुलिस के वीरता पदक पाने वाले थे—कां० पारस नाथ यादव, स० इं० टी. एस. नेगी और हे० कां० अम्बिका नाथ तथा जीवन-रक्षा-पदक पाने वाला का० सुगन सिंह।

अपने भाषण में, गृहमन्त्री ने बताया कि उनके हृदय में पुलिस के लिए बड़ी जगह है। बिना कुशल पुलिस संगठन के, देश कोई प्रगति नहीं कर सकता। यदि पुलिस कारग़र नहीं होगी या वह भेदभाव बरतेगी—तब चाहे खेत हों, उद्योग हों या दफ्तर हों —कोई भी सुचारु रूप से काम नहीं कर पायेंगे । उनके मत में, पुलिस संगठन को सक्षम बनाना हरेक सरकार का कर्त्तव्य है।

पुलिस जनों से और इस विषय में, हर किसी वर्दीधारी से उनके मन में बड़ी आकाँक्षायें पैदा होती हैं; ऐसे पुरुष सेवा-भक्ति, बलिदान तथा ईमानदारी की आशाओं के बड़े-बड़े दीप जलाते हैं । पुलिस पर बारम्बार कीचड़ उछालने की भी उन्होंने चर्चा की; किन्तु यह उनके विश्वास से बाहर की बात थी कि पुलिस दल में भर्ती होते ही हर कोई भ्रष्ट हो जाता है।

श्री चरण सिंह ने बताया कि जब वह उत्तर प्रदेश के गृहमन्त्री थे, तब उन्होंने पुलिस को अधिक से अधिक सुविधायें दिलाने के लिए यत्न किए। चिलचिलाती धूप, किटकिटाती ठन्ड तथा मूसलाधार वर्षा में पुलिस जनों को सेवाभार उठाते हुए उन्होंने देखा है।

आन्तरिक धमकियों से ही नहीं, बल्कि बाहरी चुनौतियों से जूझने के लिए के. रि. पु. दल की उन्होंने भूरि भूरि प्रशंसा की। **उन्होंने कहा कि इससे अधिक सराहना के० रि०पु० दल की और क्या हो सकती है कि जब-जब देश के किसी राज्य पर संकट आया है, तब-तब उसने इस दल के आगे सहायता के लिए हाथ पँसारे हैं।**

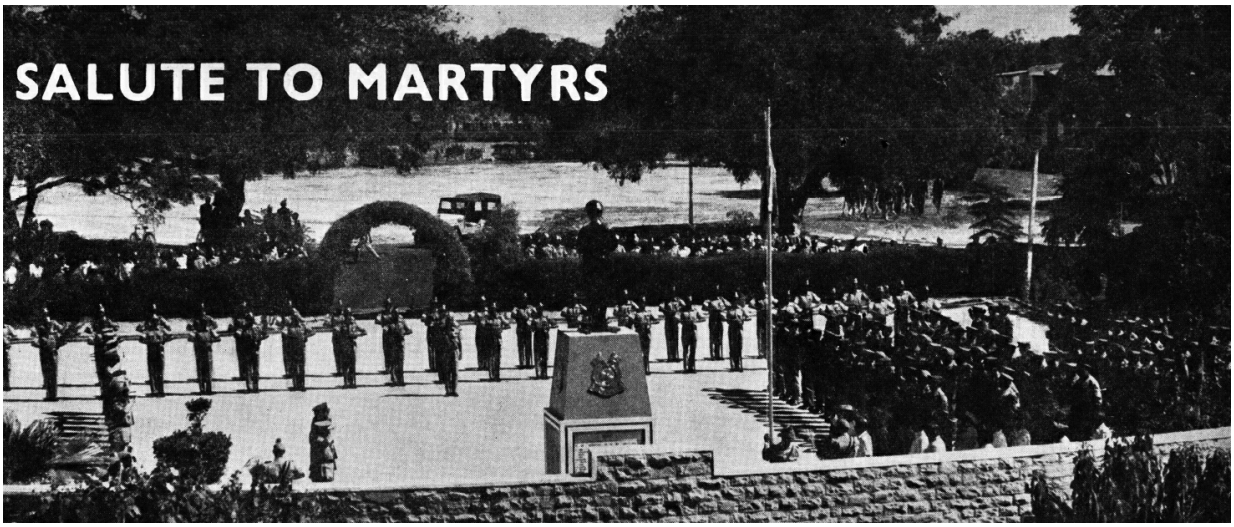
गृह मन्त्री दल की परेड से बड़े प्रभावित हुये; उन्होंने तरंगों तथा मशीन की नियत चाल से उसकी तुलना की। उन्होंने पदक-विजेताओं को बधाई दी और यह आशा की उनकी संख्या हर वर्ष बढ़ेगी। उन्होंने सरदार पटेल की तुलना अशोक महान से करते हुये कहा कि सरदार पटेल का नाम देश के इतिहास में सदा जगमगाता रहेगा।

गृह मन्त्री का स्वागत करते हुये, श्री एस. एम. घोष, महानिदेशक के. रि. पु. दल ने कहा कि यह दल देश के कोने-कोने में न्याय-व्यवस्था वाली चुनौतियों से लोहा ले रहा है और इसकी अनेकों बटालियनें पूर्वोत्तर में राजद्रोह से निबट रही हैं। विधान सभाओं के पिछले चुनावों को शान्तिपूर्वक सम्पन्न कराने में, इस दल की तारीफ विभिन्न राज्यों के मुख्य मन्त्रियों तथा महानिरीक्षकों आदि ने की है ; देशसेवा की वेदी पर दल के 207 जवान प्राण बलिदान कर चुके हैं और अन्य भी ऐसे बलिदान को सदा तैयार रहते हैं। महानिदेशक ने गृहमन्त्री से दल की इन दो विकराल समस्याओं को सुलझाने का निवेदन किया : (i) पारिवारिक आवास की कमी; तथा (ii) जवानों के बच्चों के लिये शिक्षा-सुविधाओं का अभाव ।

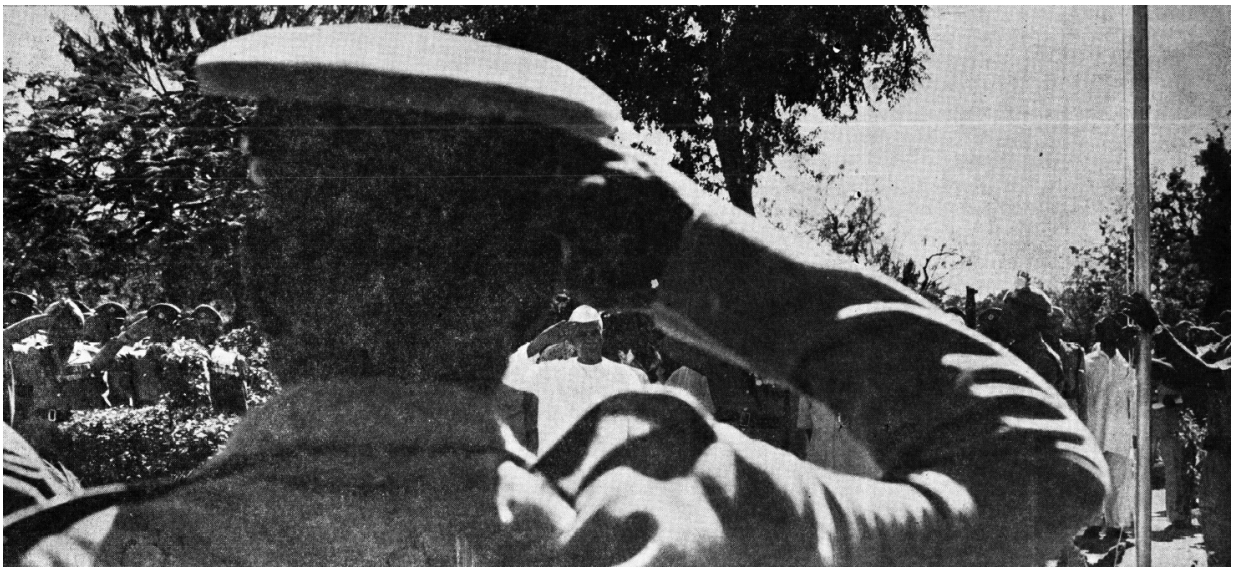
तदुपरान्त, शहीद-स्मारक पर गृह मन्त्री ने पुष्पान्जलि चढ़ाई व तीसरे पहर, 11वीं अन्तर्रेज खेल-कूद प्रतियोगिता का उद्घाटन किया।

उन्होंने केन्द्रीय विद्यालय की भी आधारशिला रखी। उन्होंने खेद प्रकट किया कि जब कि अन्य देशों ने स्वतन्त्रता पाने के बाद दस वर्षों में 100 प्रतिशत साक्षरता पा ली है, तब भारत में स्वाधीनता के 30 वर्ष बाद भी 1947 से कहीं अधिक निरक्षरता है। शिक्षा के क्षेत्र में सिर्फ सरकारी यत्न ही काफी नहीं हैं; ग़ैर-सरकारी संस्थानों तथा सारी जनता को जुट कर सरकार का हाथ बटाना चाहिये।

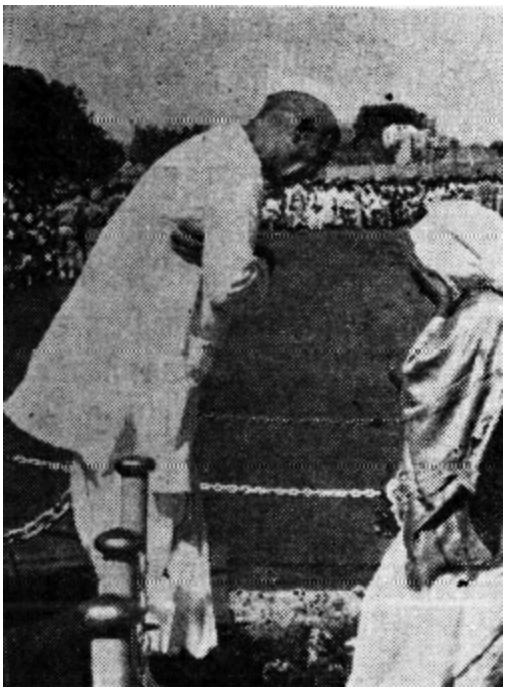
नीमच में 38वें वार्षिकोत्सव की कुछ झलकियाँ



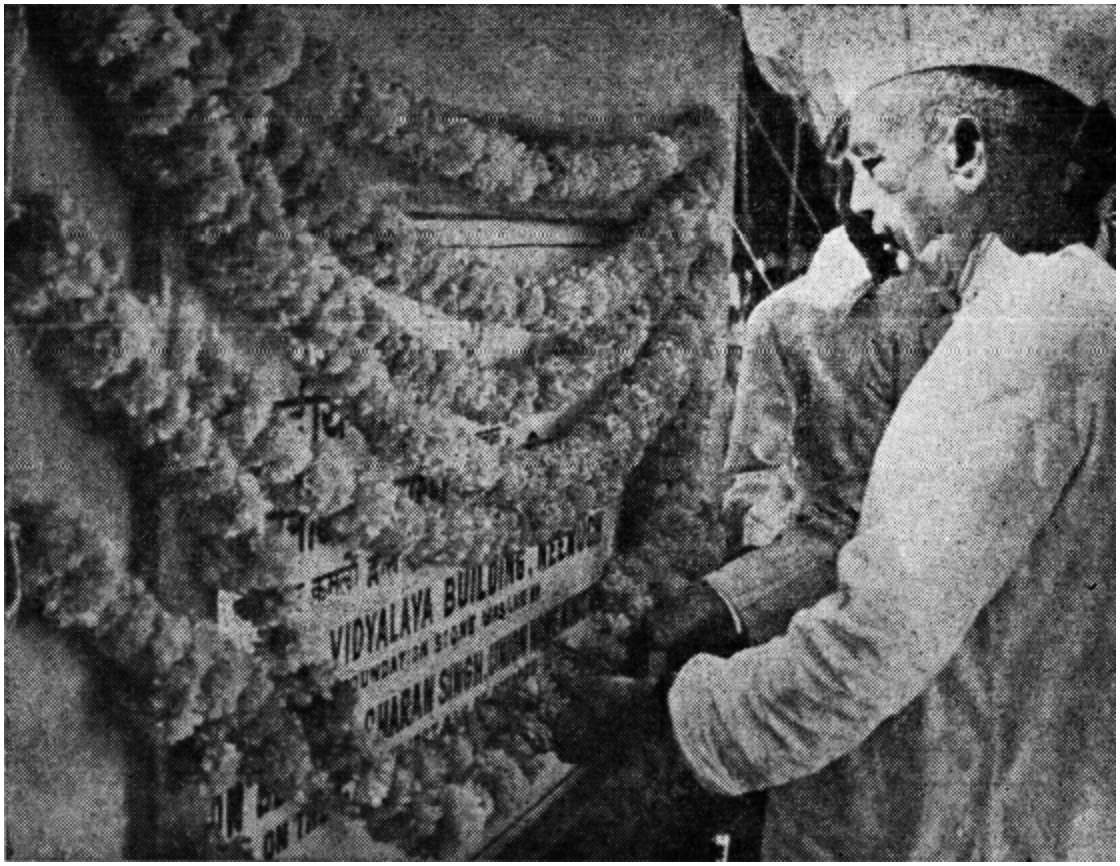
कोटि-कोटि प्रणाम शहीदों !



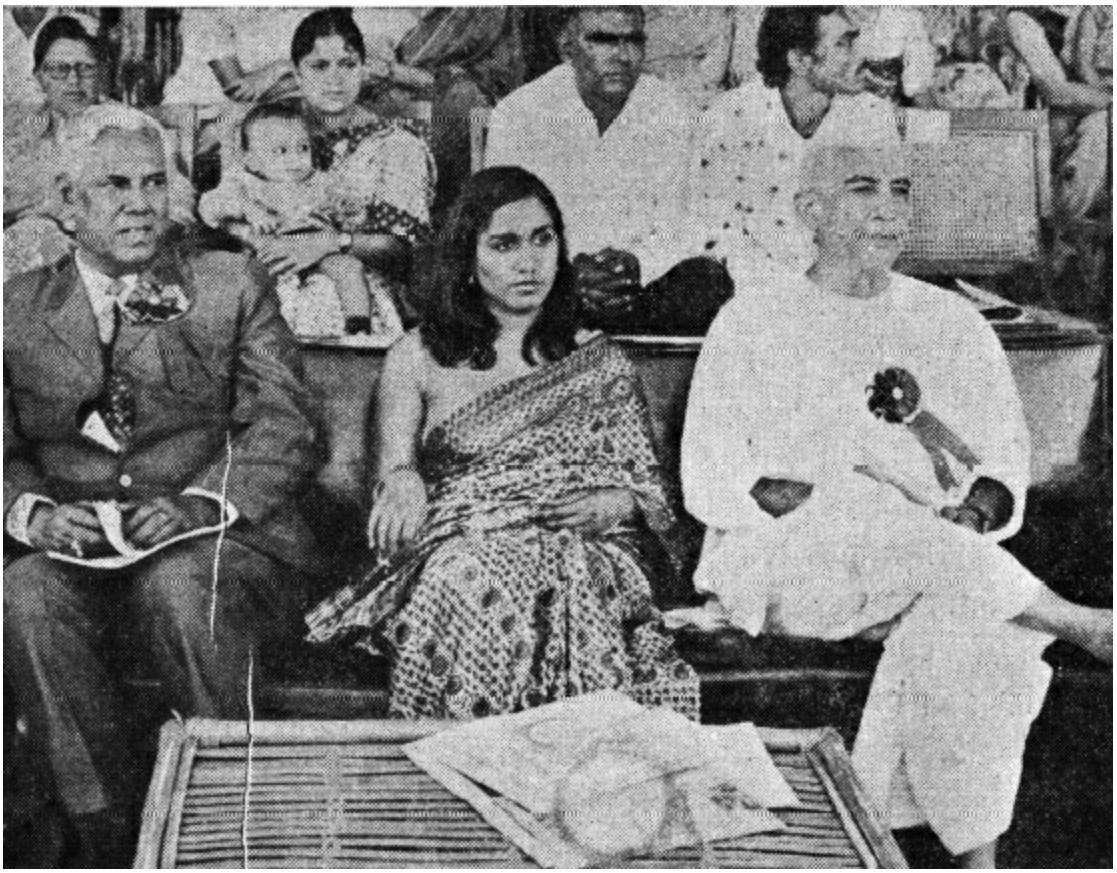
शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुये दल के सदस्यों के साथ श्री चरणसिंह।



कां० हृदय नारायण सिंह की विधवा-पत्नी को शौर्यपदक देते समय शोकाकुल श्री चरणसिंह।



केन्द्रीय विद्यालय की आधारशिला रखते हुये श्री चरणसिंह।



खेलकूद प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुये महानिदेशक के० रि० पु० दल और अपनी पुत्री के साथ श्री चरणसिंह।



<u>कमांडैंट-सम्मेलन :</u>

दल के कल्याण की प्राथमिकता पर बल

नीमच में 1 नवम्बर 77 को हुये कमाँडैंटों तथा पुलिस उपहानिरीक्षकों तथा महानिरीक्षकों के सम्मेलन में निम्नलिखित निर्णय लिए गये :

1. यह तय हुआ कि पदोन्नति की वर्त्तमान पद्धति को नहीं छोड़ा जाए; किन्तु पुलिस महानिरीक्षक ऐसे मामले महानिदेशक को बता सकते हैं कि रिक्त स्थानों के अभाव में किसी खास वरिष्ठता के लोगों को पदोन्नति नहीं दी जा रही है। ऐसी स्थिति में, कुछ अधिकृत सूचियों को रोकने या ऐसे आदेश देने के लिए कि अमुक वरिष्ठता के ही लोगों पर पदोन्नति वाले कोर्सों के लिए विचार किया जा सकता है, महानिदेशालय निदेश भेजेगा।

2. स्नातकों की कान्स्टेबिल के पद पर भर्ती करने को बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए। अच्छे पढ़े लिखे कान्स्टेबिलों को सीधी भर्ती के लिए स्पर्धा करने की अनुमति दी जानी चाहिए।

3. प्रशिक्षण संस्थानों में 'प्रशिक्षण' तथा 'प्रशासनिक' कर्त्तव्यों का साफ़-साफ़ विभाजन होना चाहिए और उन विशेष कर्त्तव्यों के लिए विशिष्ठ व्यक्तियों का चयन उपनिदेशक (प्रशिक्षण) को करना होगा।

4. रेंजों के कोटा में सेवारत कर्मचारियों की सन्तानों को भर्ती करते समय, उनकी आयु, ऊँचाई, शिक्षा आदि में कोई छूट नहीं दी जानी चाहिए। किसी सेवारत कर्मचारी के निधन पर उसके आश्रित व्यक्ति को भर्ती करते समय ऐसी छूट पर अलबत्तः विचार किया जा सकता है।

5. सूबेदारों की वार्षिक गोपनीय रिपोर्टें कम्पनी कमांडरों से नहीं लिखी जाकर कमांडैंटों से लिखी जानी चाहिए ।

6. उपमहानिरीक्षकों के कार्यालयों के लिपिक वर्ग के कर्मचारियों की वार्षिक गोपनीय रिपोर्टें स्टाफ अफसरों द्वारा लिखी जानी होंगी।

7. ग्रुप केन्द्र के क्वार्टरों को ग्रुपकेन्द्र में कर्मचारियों के रहने की अवधि या तीन वर्ष (जो भी कम हो) के अनुसार आवंटित किया जायेगा।

8. धोबी को नहीं देकर जवानों को सीधा साबुन दिया जाना चाहिए। मांड दिये जाने पर, सोडा एश (भस्म) देने की ज़रूरत नहीं है।

9. किसी ड्यूटी बटालियन का सहायक कमांडैंट, मुख्यालय (हैडक्वार्टर) कम्पनी का प्रभारी होना चाहिए।

10. किसी ड्यूटी बटालियन के कमांडैंट को भविष्य में अपने हेड (मुख्य) लिपिक की वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट लिखनी होगी।

11. हेड कान्स्टेबिल तथा नीचे के पद वाले निष्पादन कर्मचारियों को छात्रवृत्ति का 65 प्रतिशत आरक्षित रखना होगा और शेष 35 प्रतिशत, अधीनस्थ अधिकारियों तथा कार्यालय कर्मचारियों (दोनों को मिला कर) देना होगा। 50 प्रतिशत अंक पाने की सीमा सब पर लागू रहेगी । यदि प्रथम वर्ग में पर्याप्त प्रत्याशी नहीं होंगे, तब दूसरे वर्ग के लोगों को वे छात्रवृत्तियाँ दे दी जायेंगी।

12. दसवीं कक्षा की परीक्षा निजी रूप से (प्राइवेटली) उत्तीर्ण करने के लिए जवानों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

13. झड़ोदा कलाँ के होस्टल (छात्रावास) में और अधिक बच्चे भर्ती करने के लिए, यह ज़रूरी है कि केन्द्रीय स्कूल में इनको भर्ती कराया जाए। I स्टैंडर्ड में प्रवेश पाना कठिन नहीं है, किन्तु उच्च कक्षाओं की प्रवेश-परीक्षायें उत्तीर्ण करना बच्चों को कठिन लगता है। अतः सभी ग्रुप केन्द्रों में स्कूल के समय से बाहर बच्चों को पढ़ाना होगा। जो इस सुविधा का लाभ उठाना चाहते हैं, वे अपने बच्चों को छात्रावास में भर्ती करा सकते हैं। ग्रुप केन्द्र की प्राथमिक पाठशालाओं में केन्द्रीय स्कूलों की पुस्तकें लगायी जाना चाहिए। झड़ोदा कलाँ के केन्द्रीय स्कूलों में दल के कर्मचारियों के और अधिक बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिए, कमांडैंट ग्रु० के० झड़ौदा कलाँ और उपमहानिरीक्षक दिल्ली को केन्द्रीय विद्यालय अधिकारियों से प्रार्थना करनी चाहिए।

14. कमांडैंट, ग्रु० के० दिल्ली तथा मुख्य चिकित्साधिकारी बेस अस्पताल I को ऐसे प्रशासनिक प्रबन्ध करना चाहिए कि जो रोगी मुफ़्त पथ्य के अधिकारी नहीं हैं, उन्हें भी कोई असुविधा नहीं हो।

15. महानिदेशक तथा महानिरीक्षकों के ही केवल फोटो को सजावटी रूप में प्रदर्शित किया जाए। रेजीमेंट फंड से उन्हें खरीदा जाए।

16. स्नाकोत्तर पढ़ाई के लिए डाक्टरों को अध्ययनार्थ छुट्टी (स्टडी लीव) देनी चाहिए। एक बार में एक सेक्टर से एक ही डाक्टर को छुट्टी देनी चाहिए।

17. आंतरिक सुरक्षा अकादमी में सूबेदारों को रेफ्रेशर (पुनश्चर्य्या) कोर्स चलाया जायेगा, जिसके लिए नया पाठ्य विवरण और अवधि, महानिदेशक आंतरिक सुरक्षा अकादमी को तय करनी होगी। डी० वाई० एस० पी० (उप पुलिस अधीक्षक) बनने के लिए, हर सूबेदार को यह परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी। इसका माध्यम, हिन्दी व अंग्रेजी, दोनों में से कोई एक हो सकता है। यदि कोई सूबेदार परीक्षा में पहली बार असफल रह जाता है, तब उसे अपने खर्चे पर दो अवसर और मिलेंगे।

18. करुणाजनक मामलों को छोड़कर एक बटालियन से दूसरी बटालियन में ट्रांसफर (स्थानांतरण) को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए। पिछले परिपत्रों में क्षेत्रीय कोटे (नियत संख्या) को ध्यान में रख कर, आवश्यकता होने पर, ग्रुप केन्द्रों को ही अधिकांश रूप में ट्राँसफर किए जाना चाहिए। ऐसे मामलों में वर्तमान पद्धति चालू रहेगी।

19 अपने परिचालन क्षेत्रों में, क्षय-अस्पतालों/आरोग्य आश्रमों (सैनाटोरियम) में के० रि० पु० दल के कर्मचारियों के लिए कुछ बिस्तर रिजर्व करवाने के लिए सेक्टर के महानिरीक्षकों को उपाय करने चाहिए। वे या तो स्वयं राज्य सरकारों से प्रार्थना कर सकते हैं या महानिदेशालय के द्वारा करा सकते हैं, जो इस मामले को स्वास्थ्य मंत्रालय से तय करायेगा। क्योंकि इस में खर्चा होगा, इसलिए रिजर्व किए जाने वाले बिस्तरों की संख्या को महानिदेशालय से स्वीकृत करानी होगी। के० रि० पु० दल के दोनों बेस अस्पतालों में पुरुष तथा महिला क्षय रोगियों के लिए अलग-अलग वार्ड (कक्ष) का प्रबन्ध करना पड़ेगा।

20. उच्च श्रेणी के लिपिक पद के लिए योग्यता दिलाने वाली परीक्षा बिल्कुल

समाप्त कर देनी चाहिए। निम्न श्रेणी लिपिकों को वरीयता के साहेत योग्यता के आधार पर अर्थात् अप्रवरण पद मानकर पदोन्नति देनी होगी। ये आदेश चालू पैनल के खत्म होने पर ही लागू होंगे।

21. मुख्य लिपिक (हेडक्लर्क) की पदोन्नति के लिए अनुत्तीर्ण उच्च श्रेणी लिपिकों पर लगी रोक तत्काल हटा दी गई है।

22. क्षेत्रीय स्टोर डिपो तथा ग्रुप केन्द्रों से सम्बद्ध अन्य मामलों की जाँच करने के लिए, श्री बी० वर्मा की अध्यक्षता में श्री डबल्यू० जी० जे० मुदालियर तथा ब्रिगेडियर पी० एन० खन्डूरी को सदस्य-रूप में गठित एक समिति अपनी रिपोर्ट तीन मास में देगी, जिससे आगामी महानिरीक्षक/उपमहानिरीक्षक कांफ्रेंस में उस पर विचार किया जा सके।

23. कार्यालय तथा परिचालन कार्रवाई नियंत्रण कक्ष की देखरेख के लिये, हरेक रेंज उपमहानिरीक्षक को एक स्टाफ-अफसर, सहायक कमांडैंट के पद का मिलेगा। महानिरीक्षकों की अनुमति से, इस अफसर को किसी एक बटालियन में से निकाल कर यहाँ नियुक्त किया जायेगा।

24. नागरिक पुलिस की कार्यप्रणाली जानने के लिये सहायक कमांडैंटों को मुख्य ज़िलों में अटैचमेंट (संलग्नता) पर भेजने का प्रयोग चालू रहेगा । किन्तु उन्हें वहाँ भेजने से पूर्व, महानिदेशक, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी सहायक कमांडैंट कोर्स में पढ़ रहे अफसरों को राज्य पुलिस की कार्य-प्रणाली के विवरण से जानकारी करायेंगे और ज़िला पुलिस मुख्यालय या थानों में प्रशिक्षार्थियों के निरीक्षणों का भी वह प्रबन्ध करायेंगे, जिससे वे अफसर उन महत्वपूर्ण बातों से परिचित हो जायें, जिनकी जानकारी ज़िलों में अटैचमेंट (संलग्नता) के समय वे पायेंगे। हर सप्ताह अर्जित किये हुये ज्ञान की साप्ताहिक रिपोर्ट स्थानीय पलिस अधीक्षक के द्वारा, रेंज उपमहानिरीक्षक को वे अफसर भेजेंगे, जिनसे डायरी में अपनी टिप्पणियाँ भी भेजने की प्रार्थना की जायेगी।

7 बटालियन का वार्षिकोत्सव

दिनांक 17 सितम्बर 1977 को, **7 बटालियन ने अपना 18वाँ जन्मदिवस** मनाया। इसने देश की आन्तरिक सुरक्षा तथा कानून-व्यवस्था बनाये रखने में स्थान-स्थान पर बड़ी सुन्दर सेवा की है।

इस बटालियन तथा सारे दल को जिन शहीदों ने गौरव दिलाया है, उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी। कार्यक्रम में सिनेमा-चित्र, बालीवाल बास्केट वाल की मैचें, तम्बोला; विविधविनोद 'अपनी याद की जाँच' खेल आदि शामिल किये गये थे।

मिजोरम के उपायुक्त श्री एस. के. छिव्वर तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने पधार कर इस अवसर की शोभा बढ़ाई।

स्वास्थ्य संदेश :

चुम्बक चिकित्सा

ले०—श्री जे० एस० शर्म्मा

आधुनिक युग में, जब कि विज्ञान ने आशातीत उन्नति की है, नये-नये भयानक रोगों ने भी मनुष्यों को ग्रस्त कर रखा है। इधर आकाश से छूती हुयी मँहगायी जनता की वैसे ही कमर तोड़ रही है, उधर किसी भी रोग-निदान के लिए, डाक्टर लोग एक्सरे, थूक-मल-मूत्र-रक्त आदि के महँगे परीक्षणों की भरमार बता देते हैं, जिनपर खर्चा करना साधारण जन के वश की बात नहीं होती है। फलस्वरूप, चिकित्सा दिनों दिन बड़ी महंगी होती जा रही है और भारत की अधिकांश निर्धन जनता को अपनी जीवन नैया भाग्य के सहारे ही केवल छोड़नी पड़ती है ।

प्रशासन की बागडोर बदलते ही, जनता पार्टी के स्वास्थ्य मंत्री ने इस ओर गम्भीर चिन्ता प्रकट की है तथा ग्रामों में सुगम तथा सस्ती चिकित्सा उपलब्ध कराने की बात कही है। इसी कारण स्वमूत्र-चिकित्सा पद्धति पर भी अनुसंधान करने पर उन्होंने बल दिया है; किन्तु उसके प्रति जनमानस की स्वाभाविक अरुचि तथा घृणा के कारण, उसको लोकप्रियता पाने में सदा ही बड़ा संदेह है । ऐसी स्थिति में, 'चुम्बक-चिकित्सा' रोगियों के लिए बड़ी सस्ती तथा सुलभ सहारा बन सकती है ।

इतिहास—वैसे तो यह चिकित्सा-पद्धति पुराने समय में प्रचलित थी; किन्तु काल के अन्धकार में यह विलीन हो गई। कुछ समय पूर्व, इसका फिर उद्धार हुआ है । जो डाक्टर हाहनेमैन होमियोपैथी के जनक कहलाते हैं, उन्होंने चुम्बक चिकित्सा के विषय में गहरा अध्ययन किया और उसकी तीन औषधें भी बनायीं। उन्होंने उत्तरी ध्रुव चुम्बक से **मैग्नेटिस पोलस अर्टिक्लस** दवा बनायी, जो लगभग 497 लक्षणों में काम आती है। साथ ही, दक्षिण ध्रुव चुम्बक से **मैग्नेटिस पोलस आस्ट्रेलिस** तैयार की, जो 387 लक्षणों में प्रयुक्त होती है। इसके अतिरिक्त दोनों ध्रुवों से तीसरी औषध **मैग्नेटिस पोली एम्बो** बनायी जिससे 497 लक्षणों को लाभ पहुँचता है।

विशेषतायें—जैसा नाम से ही प्रकट है, चुम्बक-चिकित्सा में भांति-भांति के रोगों की चिकित्सा चुम्बक द्वारा होती है । इसमें ना तो कोई और औषध दी जाती है और ना ही कोई जादू टोटके की आवश्यकता है; परन्तु इससे चमत्कारी लाभ रोगियों को हुए हैं। यह बड़ा सीधा-साधा, सुगम तथा शीघ्रलाभकारी है। इसकी कोई प्रतिकूल प्रतिक्रिया, फल या चोट नहीं लगती। इसको अन्य दवायें खाते हुए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। यह तो प्रकृति की देन है, और यह बड़ा ही सस्ता उपचार है। सैकड़ों रोगों

के असंख्य व्यक्तियों की चिकित्सा एक ही धातुमिश्रित चुम्बक से हो सकती है और उसमें कभी चुम्बकीय शक्ति का नाश हो भी जाए, तो उस में फिर से सरलतापूर्वक चुम्बकीय आकर्षण भरा जा सकता है और अगणित रोगियों को स्वास्थ्य लाभ वह एक बार फिर दे सकता है।

सिद्धान्त—इस चिकित्सा के सिद्धान्त बहुत साफ़ हैं, जिनको इस प्रकार संक्षेप में समझाया जा सकता है —

(i) क्यों कि रक्त में लोहा होता है, इसलिए चुम्बक-प्रभाव क्षेत्र से इस पर असर पड़ता है। रसविद्युतधनाग्र के कारण रक्त आसानी से चलता है जिससे ठीक प्रकार से रक्तसंचार होता है और कहीं भी वह जम नहीं पाता। अधिक चूने, पित्त तथा धमनियों में अन्य अशुद्धियों को भी यह ठीक करता है।

(ii) शिराओं में चुम्बकीय तरंगें पैदा होने से गर्मी मिलती है तथा पीड़ा और सूजन कम होती है।

(iii) नयी कोशिकायें बनती हैं; रक्त-कणों में बढ़ोत्तरी होती है और नव चेतना सी मिलती है । रक्तचाप ठीक होता है और स्नायुदौर्वल्य दूर होता है।

(iv) स्मरण शक्ति तेज होती है; सब मानसिक अवरोध हटते हैं । देह की आन्तरिक रचना स्वस्थ तथा संयत होती है।

(v) अपने आप सन्तुलित समस्थिति पैदा होती है और खूब काम करने की रुचि बढ़ती है।

लक्षण—यह तो सब जानते हैं कि चुम्बक में उत्तर और दक्षिण नामक दो ध्रुव हैं, जो पृथ्वी तक में फैले हैं तथा जिनकी सहायता से पृथ्वी की दिशाओं तक का ज्ञान होता है। लम्बे अनुभवों से यह पता लगा है कि उत्तरी ध्रुव में जीवाणु-कीटाणुओं को मारने की शक्ति होती है तथा दक्षिणी ध्रुव में पीड़ा कम कर नयी ऊर्जा देने का गुण होता है। इसी आधार पर चिकित्सकों ने मिश्रधातु के दो गोल चुम्बक बनायें, जिनमें एक उत्तरी ध्रुव और दूसरा दक्षिणी ध्रुव होता है। उत्तरी ध्रुव का चुम्बक फोड़े-फुन्सी दाद-खाज, ग्रंथि आदि में उपयोगी है और दक्षिणी ध्रुव का चुम्बक सूजन, सुस्तीपन तथा दर्द दूर करता है।

उत्तरीध्रुव के चुम्बक को सीधे हाथ और सीधे पैर पर लगाना चाहिये और दक्षिणी ध्रुव के चुम्बक को बायें हाथ और बायें पैर पर लगाना चाहिये। किन्तु जब नाभि के नीचे के अंग रोगग्रस्त हों, तब उत्तरी ध्रुव के चुम्बक को नंगे सीधे पाँव के तले और दक्षिणी ध्रुव के चुम्बक को नंगे बायें पाँव के तले रखना चाहिये । उन पर कोई दबाव डालने की ज़रूरत नहीं है; किन्तु उन चुम्बकों से सम्पर्क लगाये रखना चाहिये अर्थात् शरीर के अंगों से उन्हें सटा होना चाहिए । यह प्रक्रिया **10 से 15 मिनट तक एक बार** में होना चाहिये। यदि कष्ट हो, उन्हें हटा देना चाहिये और चैन और स्वास्थ्य मिलने पर 20 से 30 मिनट तक उन्हें लगाये रखना चाहिये।

इस प्रक्रिया को सुबह तड़के और शाम को (दिन में दो बार) साधारणतया करनी

चाहिये और खाने के कम से कम दो घंटे बाद करनी चाहिये। इस प्रक्रेया के तुरन्त बाद, गर्म पेय और खाना लेना चाहिये। जब पेट खाली हो, तभी भारी चुम्बक का प्रयोग करना चाहिये।

निषेधात्मक चेतावनियाँ—इन मनाहियों पर विशेष ध्यान देना ज़रूरी है—

(i) इन चुम्बकों के प्रयोग के आधे घंटे के उपरान्त तक, कोई ठण्डा पेय या ठण्डा भोजन नहीं लेना चाहिये।
(ii) इन प्रयोगों के दो घण्टे के पश्चात् तक, स्नान नहीं करना चाहिये।
(iii) भोजन के दो घंटे से पूर्व, कभी भारी चुम्बकों का प्रयोग नहीं करना चाहिये।
(iv) आँख, सिर, मस्तिष्क, हृदय आदि नाजुक अंगों पर, भारी चुम्बकों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। इसी प्रकार गर्भवती स्त्री और मुख्यकर उसके उदर और पैरों पर भारी चुम्बकों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। (हल्के चुम्बक प्रयुक्त किये जा सकते हैं)
(v) भारी चुम्बकों को दिन में दो से अधिक बार प्रयोग नहीं करना चाहिये।
(vi) चुम्बकों को आपस में मिलाकर किसी भाँति भी नहीं रखना चाहिये और ना ही कभी दोनों चुम्बकों के बीचोबीच अंगुलियाँ रखनी चाहिये।

चुम्बकित जल : चुम्बक से प्रभावित जल के प्रयोग से बड़े लाभ होते हैं। ऐसा जल बनाने के लिये, दो शीशे या स्टेनलेस स्टील के दो गिलास लीजिये। उनमें स्वच्छ जल भर लीजिये और ठीक प्रकार से ढक दीजिये। एक गिलास को उत्तरी ध्रुव के चुम्बक पर और दूसरे को दक्षिणी ध्रुव के चुम्बक पर रख दीजिये। इन्हें कम से कम 24 घंटे रखे रहने देने चाहिये। फिर एक बर्तन में दोनों गिलासों के जल को मिला दीजिये। यह जल अब औषध बन गया। इसको नीहार मुँह सुबह, दोपहार और रात्रि को भोजन करने के बाद लेना चाहिये। एक बार में करीब दो औंस (50 मिली लीटर) जल की मात्रा लेना उपयुक्त रहेगा। बच्चों को मात्रा से आधा जल पिलाना चाहिये। इस जल को अन्य औषधों को लेते हुये भी पीने में कोई हानि नहीं होगी। किन्तु इसके ये अर्थ कभी नहीं हैं कि साधारण जल की भाँति इसे हर समय पियें।

चुम्बकित खाँड : खाँड को दो स्टेनलेस कटोरियों में अलग अलग उत्तरी तथा दक्षिणी दोनों ध्रुवों के चुम्बकों पर कम से कम एक सप्ताह भर रखे रहने देना चाहिये; फिर दोनों कटोरियों की खाँड मिला लेना चाहिये। इसी मिली खाँड को कहीं भी प्रयुक्त कर सकते हैं। बस, रेल, जलयान, वायुयान आदि द्वार लम्बी यात्राओं में यह खांड अत्यन्त सुविधाजनक तथा उपयोगी रहती है।

चुम्बकित तेल : इसी प्रकार सरसों के तेल की दो शीशे की बोतलें उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों के चुम्बकों पर अलग अलग कम से कम दो सप्ताह तक रखें और रोग के अनुसार दक्षिणी ध्रुव का तैल सूजन, कठोर अंगों, ओर पीड़ित अवयवों आदि पर लगायें जबकि उत्तरी ध्रुव का तेल दाद, खारिश, खुजलीन फोड़े फुंसी आदि पर लगाना चाहिये।

उपसंहार—इस प्रकार, चुम्बक-चिकित्सा सब रोगों को, सब जगह, सस्ते दामों में सम्भव है। एक बार चुम्बक खरीद लेने पर वर्षों तक अनेकों रोगियों के काम आ सकते हैं। और चुम्बकीय शक्ति क्षीण होने पर उनमें फिर शक्ति भरी जा सकती है। राजधानी में, दो स्थानों पर (दरीबा कलाँ और रामकृष्णपुरम में) यह चिकित्सा की जाती है। रामकृष्णपुरम के डा० बंसल ने तो इस विषय पर एक पुस्तक भी लिखी है। जिसकी प्रशंशा स्वर्गीय राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने की है तथा जिसका विमोचन उपराष्ट्रपति श्री जत्ती ने किया है।

क़ानून, अपराध और दण्ड-व्यवस्था

लेखक—श्री एस वेणुगोपाल राव

जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्र शेखर जब उस जेल को फिर से देखने गये, जिसमें वह 18 मास कैद रहे थे, तब उन्होंने वहाँ इस आधार पर प्राण दण्ड समाप्त करने की ज़ोरदार अपील की कि 'कोई व्यक्ति भी दूसरे को मृत्युदण्ड देने का अधिकारी नहीं है।' जिस समाचार पत्र ने यह खबर छापी, उसने सीमा पार का यह समाचार भी प्रकाशित किया कि पाकिस्तान में मार्शल ला प्रशासन ने चोरी और डकैती के अपराधियों के हाथ काटने के दण्ड देने का निर्णय किया है। हमें अंग-विच्छेद 'क्रूर और असाधारण' प्रतीत हो सकता है, किन्तु पाकिस्तानी यह दलील पेश कर सकते हैं कि जब सभ्य समाज मनुष्य के प्राण छीन लेना वर्बर या क्रूर नहीं समझते हैं, तब जेलों या अस्पतालों में कड़ी डाक्टरी देख-रेख में अंग-विच्छेद को असभ्य तथा घिनौना समझना कहाँ की तुक है । इस प्रकार ये दोनों खबरें दो पड़ोसी देशों की प्रचलित विचारधाराओं तथा इस समय की राजनीतिक मजबूरियों का दिग्दर्शन कराती हैं और साथ में, आधुनिक दण्ड-विधानता के मौलिक मुद्दे को उजागर करती हैं।

यद्यपि प्राण-दण्ड साधारणतया हत्या के अपराध से जुड़ा हुआ है, तद्यपि भारतीय दण्ड-संहिता में कुछ और अपराधों में भी मत्यु दण्ड देने का विधान है और वे हैं ये—भारत सरकार के विरुद्ध युद्ध छेड़ना (121 धारा); राज्य विप्लव होने पर उसका समर्थन करना (133 धारा); तथा ऐसी झूठी गवाही देना जिससे निरपराधी को फाँसी लग जाये (194 धारा)। यह उल्लेखनीय है कि 1975 में संसद द्वारा गठित संयुक्त समिति ने नर-हत्या से सम्बन्धित धाराओं के सुधारने वाले प्रस्तावों पर बड़ा समय तथा ध्यान दिया, किन्तु अन्य धाराओं पर उसने हाथ तक नहीं लगाया।

प्राण दण्ड से सम्बद्ध मुददों पर सारे संसार भर में समय-समय पर प्रचण्ड विवाद उठे हैं और बहस अभी जारी है। ऐसा मालूम पड़ता है कि प्राण-दण्ड के समर्थकों

और विरोधियों के सच्चे मतभेदों में समझौते की कोई गुंजायश नहीं है, किन्तु इसी को करने की संयुक्त समिति ने चेष्टा की थी। 29 जनवरी 1976 को संसद में भेजी गयी अपनी रिपोर्ट में, उस समिति ने प्राणदण्ड को बिल्कुल बन्द करने की कोई इच्छा नहीं दिखाई थी; किन्तु यह सुझाव देकर वह संतुष्ट हो गई थी कि नर-हत्या के लिए दण्ड साधारणतया आजीवन कारावास होना चाहिए, जब तक कि वह अपराध किसी पूर्व बनी योजना का परिणाम नहीं हो या उसमें नृशंसता नहीं भरी हो, अथवा उस अपराध में **असाधारण** नीचता नहीं दिखाई हो (असाधारण पर जोर मेरा है)। इस प्रकार घोर वर्बरता तथा असाधारण नीचता के अभियोगों में प्राणदण्ड देने की कसौटी, निर्णय देने वाले जज के विवेक पर छोड़ी गई है, जिसकी ऊँची न्यायिक जांच अलबत्तः हो सकती है । ऐसी ठीक-ठीक आशा की गई थी कि इस परिवर्तन से फाँसियों की संख्या में जबरदस्त कमी आयेगी। कुछ असाधारण मामलों तक सीमित रखते हुए प्राणदण्ड को बहुत ही घटे हुए रूप में रखने का समर्थन संयुक्त समिति के सामने करने वालों में से एक मैं भी था; क्योंकि मुझे तब पूर्ण विश्वास था और यह अब भी है कि दण्ड की प्रक्रिया और सम्बन्ध में रोकथाम का महत्त्व है और होना भी चाहिए, चाहे वह कितना ही कम-से-कम और कमज़ोर क्यों नहीं हो।

वास्तव में यह तर्क दिया जा सकता है कि यदि कोई दण्डात्मक क़ानून अत्यन्त अनिच्छापूर्वक काम में लाया जाता है और वह भी बहुत ही नगण्य अभियोगों में, तब उसे अधिनियम-ग्रंथ में स्थान देने का कोई औचित्य नहीं है । अत्यन्त ही सीमित रूप में प्राणदण्ड रखने की व्यवस्था का बड़ा गुण केवल यह है कि यह दो परस्पर विरोधी मतों को मिलाने की सच्ची कोशिश का द्योतक है और उससे भी बढ़कर बात यह है कि चाहे प्रतीकात्मक ही स्वीकृति हो, किन्तु दण्ड की रोकथाम की प्रवृत्ति में आस्था को यह अवश्य दिखाता है।

ऐसे बहतेरे व्यक्ति मिलेंगे जिनका यह सच्चा विश्वास है कि 'अमुक' व्यक्ति को दण्ड देने पर भी वह अपराध करने से नहीं बाज आयेगा। इस दलील के समर्थन में यह कहा जाता है कि सैकड़ों और सहस्त्रों अपराधी (जो जेलों में सड़ रहे हैं या जो क़ानून की कठोर चक्की में पिस रहे हैं) दंड के भय से बाज नहीं आये हैं। परन्तु यह चित्र अधूरा हैं । इसमें उन लोगों को ध्यान में नहीं रखा गया है जिन्हें दण्ड के भय ने सचमुच में सुधार दिया है, क्यों कि हम उन्हें जानते ही नहीं हैं, और समाजशास्त्रीय जाँच तथा अनुसंधान में उनको ख्याति नहीं मिल पायी है । हत्या से मृतक तथा उसके परिवारों को मर्मान्तक वेदना तथा पीड़ा मिलने के कारण तथा इस खूंखार जुर्म के फलस्वरूप समाज को उत्तेजनात्मक धक्का मिलने के हेतु, उतने ही ज़ोर से यह दलील भी दी जा सकती है कि यदि प्राणदण्ड का भय केवल एक व्यक्ति को भी अपराध करने से रोक देता है, तब चाहे वह एक क़ानूनी कल्पना मात्र क्यों न हो, फिर भी उसे अधिनियम-ग्रंथ में स्थान देना सार्थक है ।

कुछ दिन पूर्व हुई एक विचारगोष्ठी में वाद विवादों की गर्मागर्मी मुझे याद है, जिसमें कुछ, भाग लेने वालों ने यह सुझाव दिया कि बर्बरता तथा जानबूझ कर

हत्याओं के असाधारण मामलों में प्राणदण्ड के स्थान पर आजीवन कारावास दिया जाना चाहिए। माजीवन कारावास के मामूली मायने हैं बीस वर्ष की क़ैद, जो माफ़ होते-होते 12-14 वर्ष रह जाती है। दूसरी ओर, कुछेकों के मतानुसार, प्राणदण्ड की तुलना में बिना मुक्ति के यावज्जीवन कारावास कहीं अधिक बर्बर तथा अमानुषिक है।

प्रसिद्ध वेस्सेरिया से संकेत लेकर, कुछ अपराध-विज्ञान-शास्त्रियों का यह कहने का फैशन सा हो गया है कि यह सुरक्षा नहीं हो कर दण्ड की निश्चयात्मकता है, जो अपराधियों को अपराध करने से रोकती है। सिद्धान्त रूप से, इसके अर्थ ये हुए कि जब कभी कोई अपराध किया जाए, तब अपराधी को खोजा जाये, उस पर सफलतापूर्वक मुकदमा चलाया जाए, और उसे दंडित किया जाए, यद्यपि इनमें का अन्तिम उपचार (दंड) हल्का और सुधार करने वाला है। व्यवहार में, यह सिद्धान्त एक अमान्य स्थिति पैदा कर देता है, क्यों कि दण्ड की निश्चयात्मकता के झूठेमठे और धोखेबाज ध्येय की माँग करते हुए हम अनजाने में व्यावहारिक सच्चाई और कल्पित आदर्श को उलझा रहे हैं।

हमारी भावी दण्ड नीति पर प्रभाव डालने वाली एक नयी बात यह हुई है कि पंजाब सरकार ने यह घोषणा की है कि पैंसठ और उससे अधिक आयु के बन्दी तुरन्त छोड़ दिये जायें और ऐसी ही छूट कमजोरों को भी दी जायेगी। दन्ड प्रशासकों के लिये सज़ा में छूट कोई नई बात नहीं है और न्याय दृष्टि से असाधारण भी नहीं कही जा सकती है। किन्तु कुतूहल तो माफ़ी के लिये 65 वर्ष की आयु को मनमाने ढंग से निर्धारित कर योग्यता दायी तत्व बताने का है। यह मालूम नहीं है कि यह छूट उन्हीं बन्दियों को दी गयी है जो पंजाब के मुख्य मन्त्री द्वारा जेल के निरीक्षण के दिन जेल में उपस्थित थे या यह नीति न्यायसंगत रूप से आगे भी चलायी जायेगी और जब-जब कोई बन्दी पैंसठ वर्ष का होता जायेगा, तब-तब उसे यह माफ़ी मिलती जायेगी।

यदि यह निर्णय प्रथम श्रेणी के कुछ चुने हुये व्यक्तियों तक ही सीमित रहेगा, तब यह समानता के नियम की जड़ काटेगा, जिसके अनुसार क़ानून लागू करने में मनुष्य-मनुष्य में कोई भेदभाव नहीं बरतना चाहिए। दूसरी ओर, यदि दूसरा विकल्प सोचा जाये, तब आपराधिक जिम्मेदारी की आयु से सम्बन्धित महत्वपूर्ण मुद्दे उठ खड़े होंगे।

हत्या तथा उसके ढंग पर मेरे द्वारा किये गये एक पथ प्रदर्शक अध्ययन में, यह पाया गया कि नरहिंसा का उन्माद सब से अधिक रखने वाला वर्ग 10-40 आयु वाला होता है और ऊँची आयु वाले वर्ग में इस उन्माद की धीरे धीरे कमी होती जाती है। निश्चय ही, साठ वर्ष से ऊपर वाले मनुष्य द्वारा नर हत्या जैसे जघन्य अपराध करने की सम्भावना युवकों की तुलना में कम होती है, किन्तु यदि और कभी वृद्ध मनुष्य यह कर बैठता है, तब उसकी आपराधिक ज़िम्मेदारी किसी भी भाँति कम नहीं होती है। बल्कि ऐसे मामलों में, चाहे वे कितने ही कम क्यों नहीं हो, आयु और अनुभव के नाते, आपराधिक ज़िम्मेदारी और बढ़ी हुयी समझी जाती है। पैंसठ या उसके लगभग आयु वाले अपराधियों के अभियोजन तथा दण्ड देते समय एक उच्च आयु की मनमानी सीमा बना कर दण्ड में कुछ कमी करने का यत्न एक नया तत्व पैदा करेगा तथा दण्ड

विधेयक में बारह वर्ष से कम आयु वाले बच्चों तथा विक्षिप्त व्यक्तियों को दिये जाने वाले जैसे अपवादों का एक नया सूत्रपात करेगा । अपराधी के प्रति समझने योग्य अपने नैतिक रोष तथा फिक्र में, हमें विचारणीय उपायों का पूरा-पूरा प्रभाव तथा गहरा महत्व जानना होगा। दण्ड-विधान में सुधार की आवश्यकता पहले ही अपेक्षित है; किन्तु सामाजिक न्याय से ऐसे सुधार का तालमेल सही-सही होना चाहिए।

इस विषय में दो मत नहीं हैं कि अपराधों को जड़—(समाज की कमज़ोरी और उसके शोषण करने की स्थितियों) को दूर करने की परम आवश्यकता है। परन्तु अन्तिम विश्लेषण में, दण्ड की आवधारणा में ही सामाजिक व्यवस्था की जड़ जमी है। शब्दकोष के सीधेसाधे इस अर्थ में कि 'अपराध के लिये यातना देने' में बदले के प्रतिदण्ड देने की भावना अन्तर्निहित रहती है, परन्तु इसे संशोधनात्मक आदर्शवाद तुरन्त अस्वीकार कर देता है। हमारी इच्छा तो यह रहती है कि क़ानून तोड़ने वाले अभागों को सुधारने के लिये ही पहले और पूर्ण रूप से दण्ड प्रयुक्त किये जाते, किन्तु जीवन की वास्तविकता कुछ और ही है। समाजों ने सदा यह मांग की है और यही करते भी रहेंगे कि अपने सामाजिक तथा व्यक्तिगत अपराधों के लिये अभियुक्तों का दण्ड मिलना ही चाहिए। दण्ड देने की इस भावना में सदा सुधारवादी दर्शन का पुट नहीं रहता है। यदि दण्ड देने से सुधार लाया जाना है, तब तो अत्युत्तम है; किन्तु हमें यह मानना पड़ेगा कि दण्ड की अवधारणा में बदले की कुछ रंगत और रोकथाम की झिलमिल झलक सदा ही रहती है और सदा ही रहेगी, जिससे हम नेत्र नहीं मूँद सकते और ना भाग सकते।

सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने का सब से बड़ा साधन दण्ड है और जो इसे, उपयुक्त और न्याय संगत ढंग से प्रयुक्त करने में हिचकिचाते हैं, सब मामलों को ठीक-ठीक तथा प्रतिष्ठित ढंगों से चलाने के अपने मौलिक अधिकार से समाज को वे वंचित करते हैं। जबकि आपराधिक न्याय के प्रबुद्ध तथा मानवीय प्रशासन में क्रूर तथा असाधारण दण्डों को कोई स्थान नहीं है, तब साथ में यह भी बड़ा ज़रूरी है कि कहीं एक इस वांछित उद्देश्य की खोज में दूसरी अति सीमा पर घड़ी का लटकन नहीं चला जाये, जहाँ रोकथाम को छोड़ कर दण्ड अपना सारा सामाजिक महत्व ही खो बैठे।

के.रि.पु. दल में प्रचलित कुछ गप्प

अपनी गाड़ी मार्ग में रुकते हुये देखकर **सूबेदार :** क्या हो गया ?

ड्राइवर : सर, पेट्रोल खत्म हो गया; गाड़ी अब आगे नहीं जा सकती।

सूबेदार : कोई बात नहीं; फिर पीछे ले चलो।

हवलदार मक्खन सिंह को आराम करते देख कर एक **अफसर :** हेलो, आर यू रिलैक्सिंग?

मक्खन सिंह : नहीं हुजूर, मैं मक्खन सिंह हूं रिलैकसिंह नहीं।

डाक्टर के कमरे के सामने जाकर **सूबेदार :** सर ! क्या मैं अन्दर आ सकता हूं

डाक्टर : वेट प्लीज़।
सूबेदार : अस्सी किलो ग्राम, कल ही वज़न कराया है सर।

[प्रस्तोता-रे० आ० पुण्य देव प्रसाद राय]

॥ पहेलियाँ ॥

लोग कहें बेटे से प्यारा।
पर वह साफ करे घर सारा॥
काम पड़े, जग मल मल धोये।
फिर कोने में पड़ वह रोए॥ 1
ऊपर एक लगूँ क्या खाक।
पड़ी हुयीं दिल में जब फाँक॥
मुझ में गंध रूप औ' रंग।
उलट कहे जग करता तंग॥ 2
रखूँ नाम में मैं दो अक्षर।
चाहें मुझको सब नारी-नर॥
जदपि बनूं उल्टा मैं रज।
भजें सभी मुझ को सब तज॥ 3
तीन लफज का जलता नाम।
आदि कटे, पर्दे का काम।
मध्य छँटे, तो बनते कुँतल।
अन्त कटे, तो लप-लप केवल॥ 4

उत्तर : 1. पोता 2. नारंगी 3. जर 4. लपट

॥ सूक्ति सुधा ॥

ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो अभ्यास करने पर भी दुष्कर हो।

—बोधचर्यावतार

स्वामी का आदेश पालन करने में सेवक सदा निर्दोष होते हैं।

—कल्हण

उत्साह विहीन लोगों से भाग्य दूर भागता है।

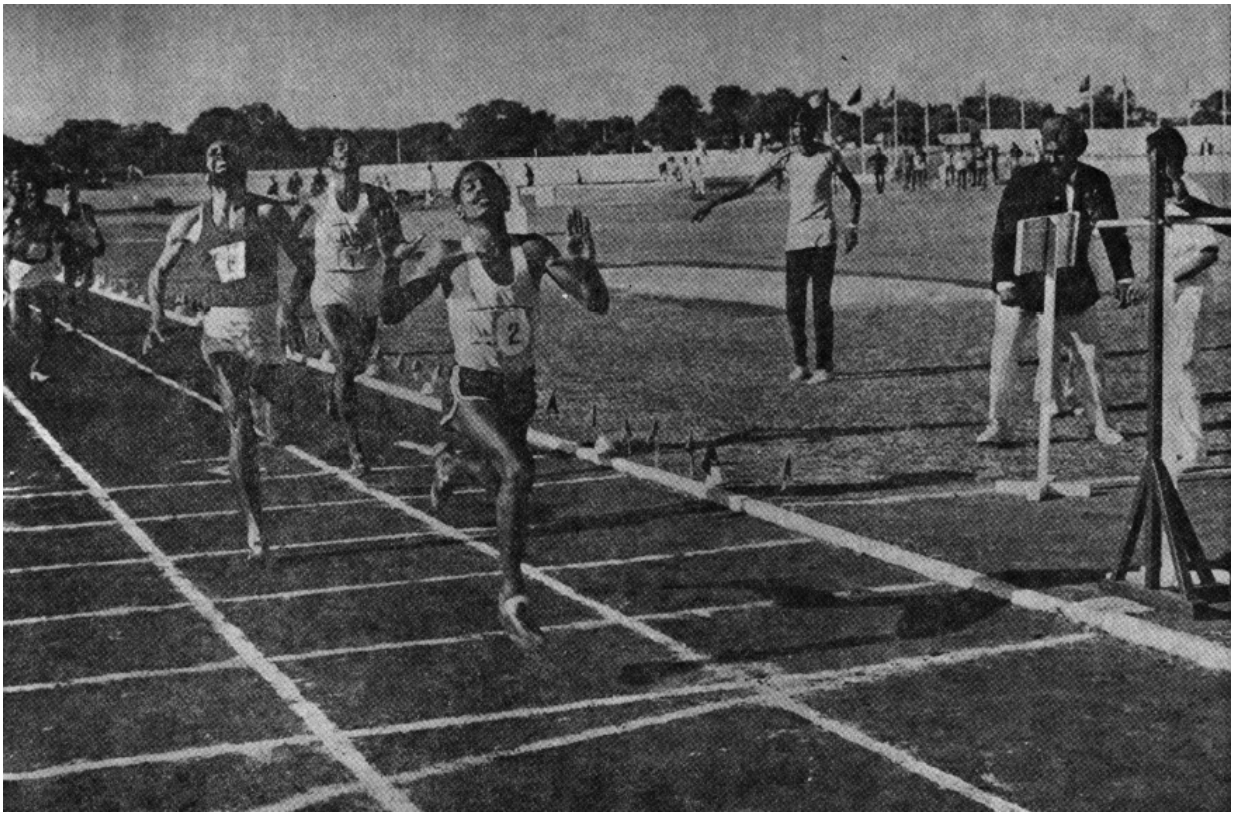
—कोटिल्य

उत्साह ही बलवान होता है, उत्साह से बढ़कर कोइ दूसरा बल नहीं है; उत्साही के लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

—वाल्मीकि

मनुष्य के लिए निराशा के समान कोई दूसरा पाप नहीं है। इसलिए, पाप रूपणी निराशा का समूल नाश करके मनुष्य को आशावादी बनना चाहिए।

—मंगल देव



1,500 मीटर दौड़ में नया कीर्तिमान बनाता हुआ हरीचन्द

<u>क्रीड़ा क्षेत्रे :</u>

11 वीं दौड़कूद प्रतियोगिता में अजमेर फिर सिरमौर

ले०—श्री एच. एस. सेठी

दिनांक 31 अक्टूबर से 4 नवम्बर 1977 तक खेली गयी 11वीं अन्तर्रेंज दौड़-कूद

प्रतियोगिता में 206 अंक पाकर अजमेर रेंज ने चैम्पियनशिप जीती। नीमच रेंज (187) और हैदराबाद रेंज (113) क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय रही।

अजमेर रेंज ने सर्वोत्तम खिलाड़ी की ट्राफी भी जीतने का सौभाग्य पाया, जब पी. कंजम्बू तथा हरीचन्द उस ट्राफी के संयुक्त विजेता घोषित हुये। दोनों को तीन-तीन सिरमौर बँधे :—जब कि पी. कंजम्बू 100 मी०, तथा 200 मी० तथा 400 मी. की दौड़ों में फर्राटे का धावक घोषित हुआ, तब ओलिम्पिक हरीचन्द ने 1,500 मी., 5,000 मी० तथा 10,000 मी० की दौड़ों में दूरधावक नामक गौरव को बनाये रखा।

प्रतियोगिता में कम से कम 9 कीर्तिमान स्थापित हुये, जिनका श्रेय (i) हरीचन्द को (1,500 मी० तथा 5,000 मी० में); (ii) प्रभातीलाल को (डेक्थलन में); (iii) एम. एम. पाटिल को (800 मी० में) (iv) आदर्शपाल सिंह को (शाटपुट में) (v) रासदेव सिंह को (मराथान में) (vi) राम गोपाल को (पोलवाल्ट में); (vii) डी. मुजावर को (3000 मी० स्टीपिलचेज़ में) तथा नसीब सिंह को (ऊँची कूद में) है।

5,000 मी० दौड़ में, 14 मि० 33.8 से० वाले अपने ही रिकार्ड को 14 मि० 31 से० में दौड़ कर हरीचन्द ने पहले दिन ही सुधारा।

तीसरे दिन, प्रभातीलाल ने अपने ही पिछले 6191 अंकों की तुलना में 6384 अंक पाकर अपना रिकार्ड सुधारा तथा 1968 के अखिल भारतीय पुलिस खेलों में आर. एल. पांडे द्वारा प्राप्त 6271 अंक वाले रिकार्ड को भी संभाला। एम. एमः पाटिल (पटना रेंज) ने 800 मी० दौड़ को 1 मि० 55.1 से० में पूरा कर नया कीर्तिमान स्थापित किया । 1 मि० 56.5 से० वाले पिछले कीर्तिमान को तो, द्वितीय स्थान पाने वाले एम. वी. वर्गीज़ ने भी भंग किया । 3 नवम्बर 77 को, हरीचन्द ने 1,500 मी० दौड़, 3 मि० 56.9 से० में पूरा कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया तथा 1974 का चन्दर प्रकाश द्वारा 3 मि० 58.4 से० वाला पिछला रिकार्ड सुधारा । आदर्श पाल (नीमच रेंज) ने शाट पुट में 14.40 मी० वाला पिछला रिकार्ड 14.58 मी० दूर फेंक कर संभाला।

अन्तिम दिन, 4 और रिकार्ड तोड़ गये। **मराथान दौड़ को,** 2 घं० 26 मि० 7 से० में रासदेव सिंह (नीमच रेंज) ने पूरा कर 1973 का एम. डी. फजल द्वारा स्थापित 2 घं० 31 मि. 14 से० वाला पुराना रिकार्ड तोड़ा। राजदेव सिंह (श्रीनगर रेंज) ने 2 घं० 29 मि० 20 से० में और सूरत सिंह (हैदराबाद रेंज) ने 2 घं० 30 मि० 37 से० में दौड़ कर पिछला रिकार्ड भंग किया । (रासदेव सिंह इसी कारण कान्स्टेबिल से लांस नायक बना दिया गया)।

पोलवाल्ट में, 1976 का बालगोपालन द्वारा स्थापित 3.70 मी० वाला कीर्तिमान, रामगोपाल (नीमच रेंज) ने 3.75 मी० फेंक कर तोड़ा। प्रेम चन्द्रन (हैदराबाद रेंज) ने भी 3.75 मी० और पी. गोपालन (हैदराबाद रेंज) ने 3.70 मी० फेंका।

3,000 मी० स्टीपिल चेंज़ में, अपना 9 मि० 27.4 से० वाला पिछला रिकार्ड, डी मुजावर (अजमेर रेंज) ने 9 मि० 20.6 से० में पूरा कर के भंग किया। गुरबचन सिंह (कलकत्ता रेंज) और सी. बी. एस. राठौड़ (नीमच रेंज) ने क्रमश: 9 मि० 35.1 से० तथा 9 मि० 35.5 से० में पूरी कर दूसरा व तीसरा स्थान पाया।

ऊँची कूद में, (1976 का प्रभाती लाल द्वारा) स्थापित 1.95 मी० वाला विगत कीर्तिमान, नसीब सिंह (श्रीनगर रेंज) ने 1.96 मी० दूर छलांग से तोड़ा। प्रभाती लाल (श्रीनगर रेंज) 1.90 मी० और सतदेव सिंह (गौहाटी रेंज) 1.80 मी० कूदे।

अन्तिम परिणाम इस प्रकार रहे :

100 मी० दौड़ : पी. कंजम्बू (अ० रेंज) 11.01 से0 I, के. जी. जोज़ेफ (है० रेंज) 11.02 से० II तथा मिठाईलाल (अ० रेंज) 11.04 से० III.

110 मी० ऊँची बाधा : नजर सिंह (अ० रेंज) 15.4 से० I, भँवर सिंह (नी० रेंज) 15.8 से० II तथा बल्देव राज सिंह (गौ० रेंज) 16 से० III.

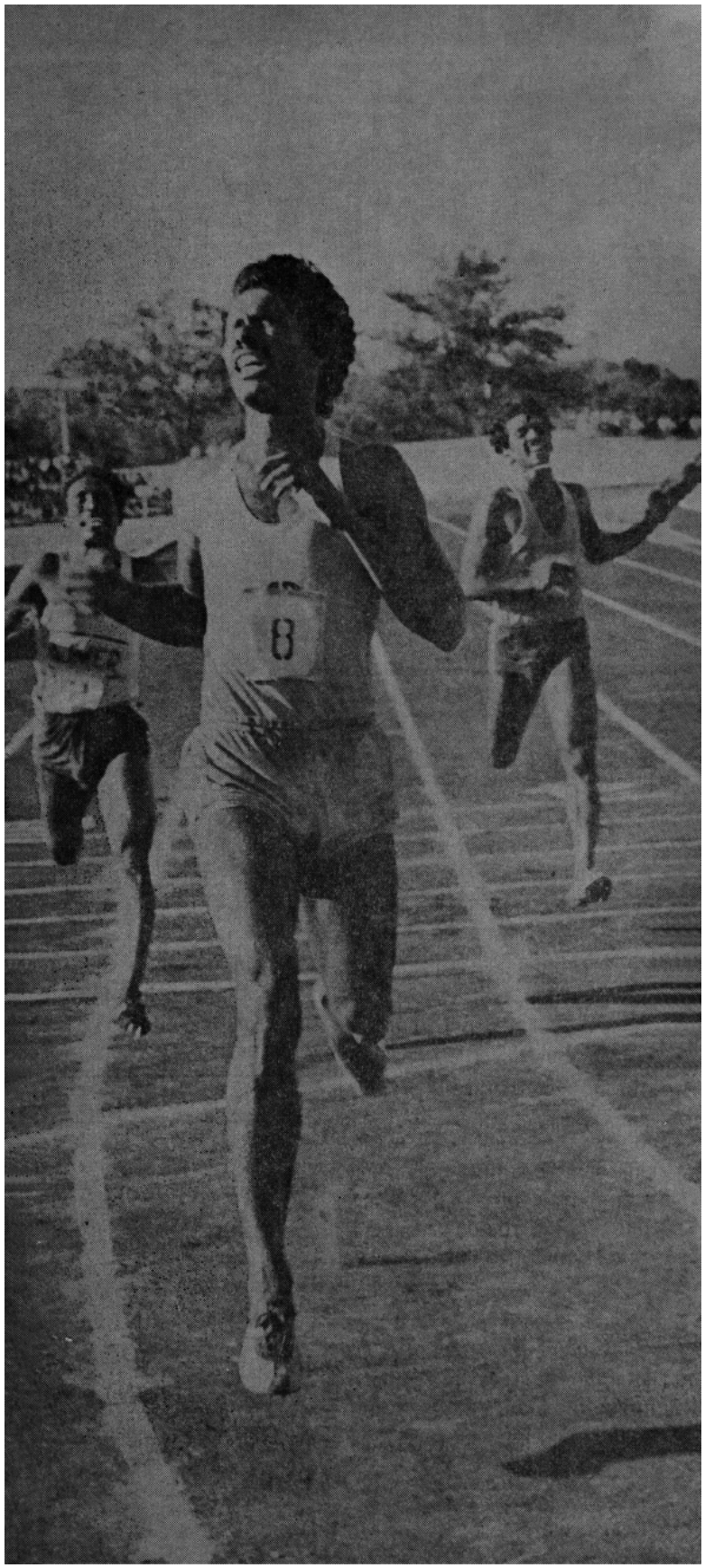
200 मी० दौड़ : पी. कंजंबू (अ० रेंज) 21.8 से० I, मिठाईलाल (अ० रेंज) 22.2 से० II तथा के. जी. ज़ोज़ेफ (है० रेंज) 23.4 से० III.

400 मी० दौड़ : पी. कंजम्बू (अ० रेंज) 50.1 से० I, राजदेव सिंह (अ० रेंज) 51.0 से० II तथा तेजाराम (है० रेंज) 51.8 से० III.

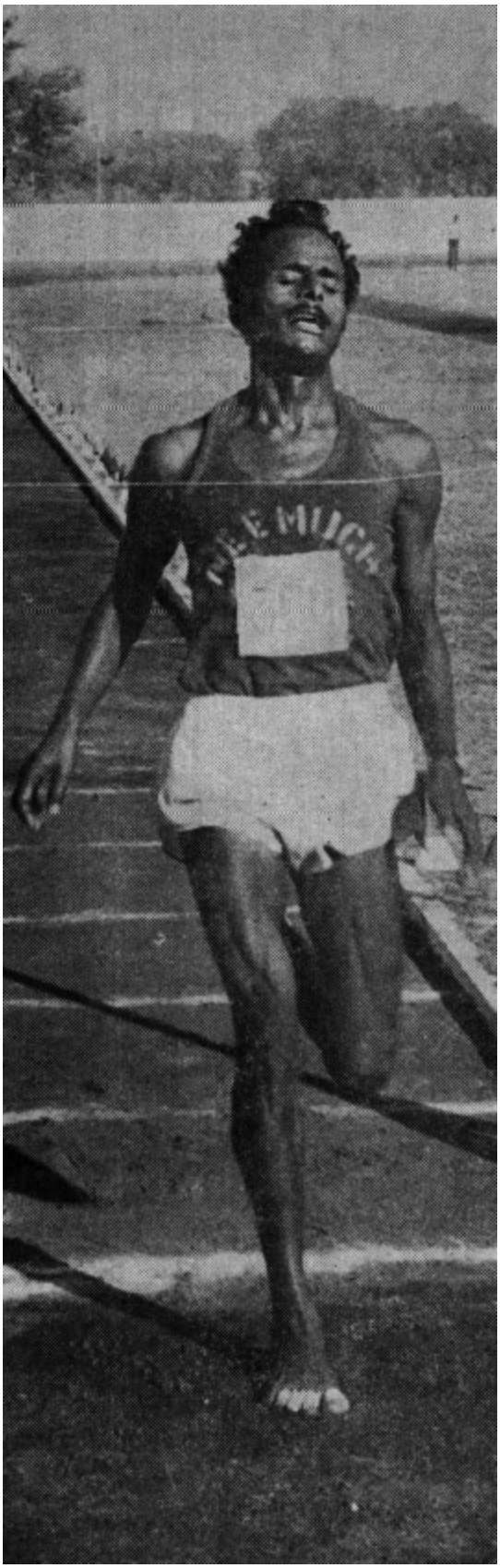
400 मी० बाधा : नजर सिंह (अ० रेंज) 54.0 से० I, भँवर सिंह (नी० रेंज) 54.9 से० II तथा दीदार सिंह (श्री० रेंज) 55.4 से० III.

800 मी० दौड़ : एम० एम० पाटिल (प० रेंज) 1 मि० 55.1 से० I, एम० वर्गीज़ (दि० रेंज) 1 मि० 53.3 से० II तथा चन्दर प्रकाश (नी० रेंज) 1 मि० 57.3 से० III.

1,500 मी० दौड़ : हरीचन्द (अ० रेंज) 3 मि० 56.9 से I, एस० पी० सिंह (नी० रेंज) 3 मि० 57.6 से II तथा डी० मुजावर (अ० रेंज) 3 मि. 58.2 से० III.


8

200 मी० दौड़ में भागता पी. कंजंबू


MEMUCK

3,000 मी० स्टीपिल चेज़ : डी. मुजावर (अ० रेंज) 9 मि० 20.6 से० I, गुरवचन सिंह (क० रेंज) 9 मि० 35.1 से० II तथा सी. बी. एस. राठौड़ (नी० रेंज) 9 मि० 35.5 से० III.

5,000 मी० दौड़ : हरीचन्द (अ० रेंज) 14 मि० 31 से० I, डी. मुजावर (अ० रेंज) 15 मि० 5.6 से० II तथा सी. बी. एस. राठौड़ (नी० रेंज) 15 मि० 10 से० III.

10,000 मी० दौड़ : हरीचन्द (अ० रेंज) 30 मि० 55.1 से० I, सी. बी. एस. राठौड़ (नी० रेंज) 31 मि० 28.5 से. II तथा रासदेव सिंह (नी० रेंज) 31 मि० 45.8 से० III

4×100 मी० रिले दौड़ : है० रेंज 43.8 से० I, अ० रेंज 44.2 से. II तथा नी० रेंज 44.9 से० III.

4×400 रिले दौड़ : अ० रेंज 3 मि० 22.2 से० I, नी० रेंज 3 मि० 25.2 से० II तथा श्री० रेंज 3 मि० 27.3 से० III.

मराथान दौड़ : रासदेव सिंह (नी० रेंज) 2 घ० 26 मि० 7से० I, राजदेव सिंह (श्री० रेंज) 2 घ० 29 मि० 20 से० II तथा सूरत सिंह (है० रेंज) 2 घ० 30 मि० 37 से० III.

ऊँची कूद : नसीब सिंह (श्री० रेंज) 1.96 मी० I, प्रभातीलाल (श्री० रेंज) 1.90 मी० II तथा सतदेव सिंह (गौ० रेंज) 1.80 मी० III.

चौड़ी कूद : प्रभातीलाल (श्री० रेंज) 6.89 मी० I, के. सुधाकरन (दि० रेंज) 6.86 मी० II तथा मखन लाल (है० रेंज) 6.61 मी० III.

तिगुनी कूद : के. सुधाकरन (दि० रेंज़) 14.58 मी. I, बी. दत्ता (प० रेंज) 13.87 मी० II तथा राम प्यारे यादव (अ० रेंज) 13.53 मी० III.

घन फेंक : आर. एस. बाल (नी० रेंज) 56 मी० I, जे० एस० भुलर (दि० रेंज) 49.56 मी० II तथा रमाशंकर राई 46.63 मी० III.

चक्का फेंक : आदर्श पाल सिंह मान (नी० रेंज) 43.88 मी० I, एस. एस. बाल (है० रेंज) 43.64 मी. II तथा रघुवीर सिंह बाल (नी० रेंज) 43.50 मी III.

नेजा फेंक : नदराजन (है० रेंज) 62.36 मी० I, डी. सुशीलम (नी० रेंज) 60.18 मी० II तथा भगवान सिंह (दि० रेंज) 57.56 मी० III.

शाटपुट : आदर्शपाल सिंह मान (नी० रेंज) 14.58 मी० I, एस. एस. बाल (है० रेंज) 14.08 मी० II तथा एच. एस. भुलर (दि० रेंज) 13.84 मी० III.

पोलवाल्ट : रामगोपाल (नी० रेंज) 3.75 मी० I, प्रेमचन्द्रन (है० रेंज) 3.75 मी० II तथा पी. बालगोपालन (है० रेंज) 3.70 मी० III.

डिकथलन : प्रभाती सिंह (श्री० रेंज) 6384 अंक I, जनक चन्द (नी० रेंज) 5753 अंक II तथा राधाकृष्णन (नी० रेंज) 5700 अंक III.



शाटपुट और चक्का फेंक का विजेता आदर्श पालसिंह मान

भारत-श्री लंका तैराकी प्रतियोगिता

नवम्बर 1977 में भारत-श्री लंका तैराकी प्रतियोगिता श्री लंका में आयोजित हुयी। के० रि० पु० दल के इन खिलाड़ियों ने खूब नाम कमाया—(i) स० इं० पी. वी. पिल्ले 200 मी० बैकस्ट्रोक में स्वर्ण पदक तथा 100 मी० बैकस्ट्रोक में रजत पदक पाया; (ii) हे० कां० सोम शेखरन ने 100 मी० फ्रीस्टाइल में रजत पदक जीता; तथा (iii) हे० कां० एलोसियस ने जल-पोलो में प्रथम स्थान पाया।

इस प्रतियोगिता में इन्हीं तैराकों ने 4×100 मी० रिले में भी प्रथम स्थान पाया।

क्रीड़ा क्षेत्रे :

अंतर्रेंज दंगल में पटना विजयी

ग्यारहवाँ अन्तर्रेंज दंगल 5 से 16 सितम्बर 1977 तक ग्रुपकेन्द्र II अजमेर में आयोजित हुआ। सभी रेंजों ने भाग लिया। प्रथम चार स्थान पाने वाली रेंजों की स्थिति इस प्रकार रही—पटना (34 अंक); अजमेर (29 अंक); दिल्ली (29 अंक) तथा नीमच (29 अंक)।

विविध भारों में पहलवानों की स्थिति निम्नलिखित रही :—

पिनभार : का० श्री राम (अ०) I; ना० रामकुमार (दिल्ली) II तथा का० रामचन्दर (है०) III.

वेल्टर भार : का० झट्टनसिंह (प०) I, ना० मुनिराम (नी०) II तथा हे० का० खड़कसिंह (अ०) III.

फ्लाईभार : का० सन्तराज (प०) I, ना० जीतन यादव (गौ०) II तथा ला० ना० डी. डी. बालेश्वर (गौ०) III.

मिडिल भार : स० इ० रघुबीर सिंह (दि०) I, ला० ना० केदारनाथ (अ०) II तथा हे० का० ज़िलेसिंह (नी०) III.

बन्टन भार : का० आजादसिंह (दि०) I, का० शिवनाथ (को०) II तथा हे० का० दादा कंसे (नी०) III.

लाइट भार : हे० का० बैजनाथ (नी०) I, ला०ना० राधेश्याम (गौ०) II तथा का० इन्दरसिंह (क०) III.

लाइट हेवीभार : इ० ओम प्रकाश (प०) I, ना० रामराज (प०) II, तथा का० रामानुज (अ०) III.

फेदर भार : हे० का० धर्मदेव यादव (प०) I, का० रतीराम (नी०) II तथा ला० ना० बुधरन्म (गौ०) III.

हेवीभार : इ० ईश्वरसिंह (दि०) I, ना० गोरखनाथ (क०) II तथा हे० का० गिरराज (है०) III.

सुपर हेवी भार : श्री सुखवन्त सिंह (श्रीनगर) I, इ० दीवानसिंह (है०) II तथा का० बन्नूसिंह (प०) III.

दल के हरीचन्द को पोर्टोरिको से निमंत्रण

आगामी 5 फरवरी को पोर्टोरिको में होने वाली वार्षिक सन ब्लास मराथान दौड़ में भाग लेने के लिये भारत के लम्बी दूरी के धावक हरीचन्द और शिवनाथ को आमंत्रित किया गया है



दंगल के तीनों उप-विजेताओं को ट्राफी देती हुई श्रीमती सूर

राष्ट्रीय (नेशनल्स) जिम्नास्ट चैम्पियनशिप में दल की धाक

19वीं वरिष्ठ राष्ट्रीय (सीनियर नेशनल्स) जिम्नास्ट चैम्पियनशिप 1 से 5 अक्टूबर 1977 तक चंडीगढ़ में चण्डीगढ़ जिम्नास्ट एसोसियेशन द्वारा आयोजित की गई। मध्य प्रदेश राज्य की ओर से खेलनेवाले के० रि० पु० के इन जिम्नास्टों ने अपना उत्तम खेल दिखाया और 2 स्वर्ण, 3 रजत और 2 काँस्य पदक पाये : —

I, पैरेलल बार : (i) इ० एन. बी. भोसले (स्वर्ण) व (ii) हे० का० एस. भट्टाचार्य

(कास्य)

II. रोमन रिंग : (ii) स० इ० चमू सिंह (स्वर्ण) व (ii) हे०का० एस. भट्टाचार्य (रजत)

III. वाल्टिंग हार्स : इ० एन. बी. भोसले (कांस्य)

IV. फ्लोर एक्सरसाइज़ : स० इ० वी. के. भोसले (रजत)

V. होराइज़न्टल बार : इ० एन. बी. भोसले (रजत)

इस दल की टीम 173.90 अंक पाकर द्वितीय स्थान पर रही।

शर्मा बास्केटबाल प्रतियोगिता

नई दिल्ली में आयोजित मास्टर पृथ्वीनाथ बास्केट बाल प्रतियोगिता में के० रि० पु० दल की 'ए' बास्केटबाल टीम ने उपविजेता ट्राफी जीती। कुमायूँ रेजीमेंट, डी. सी. एम., आई. एन. एस. और दिल्ली पुलिस को हराकर, के० रि० पु० दल ए. एस. सी. से (65-99) पराजित हो गया। दल का पी. पी. सिंह प्रतियोगिता का सर्वोत्तम खिलाड़ी माना गया।

वालीबाल टूर्नामेंट में दल चैम्पियन

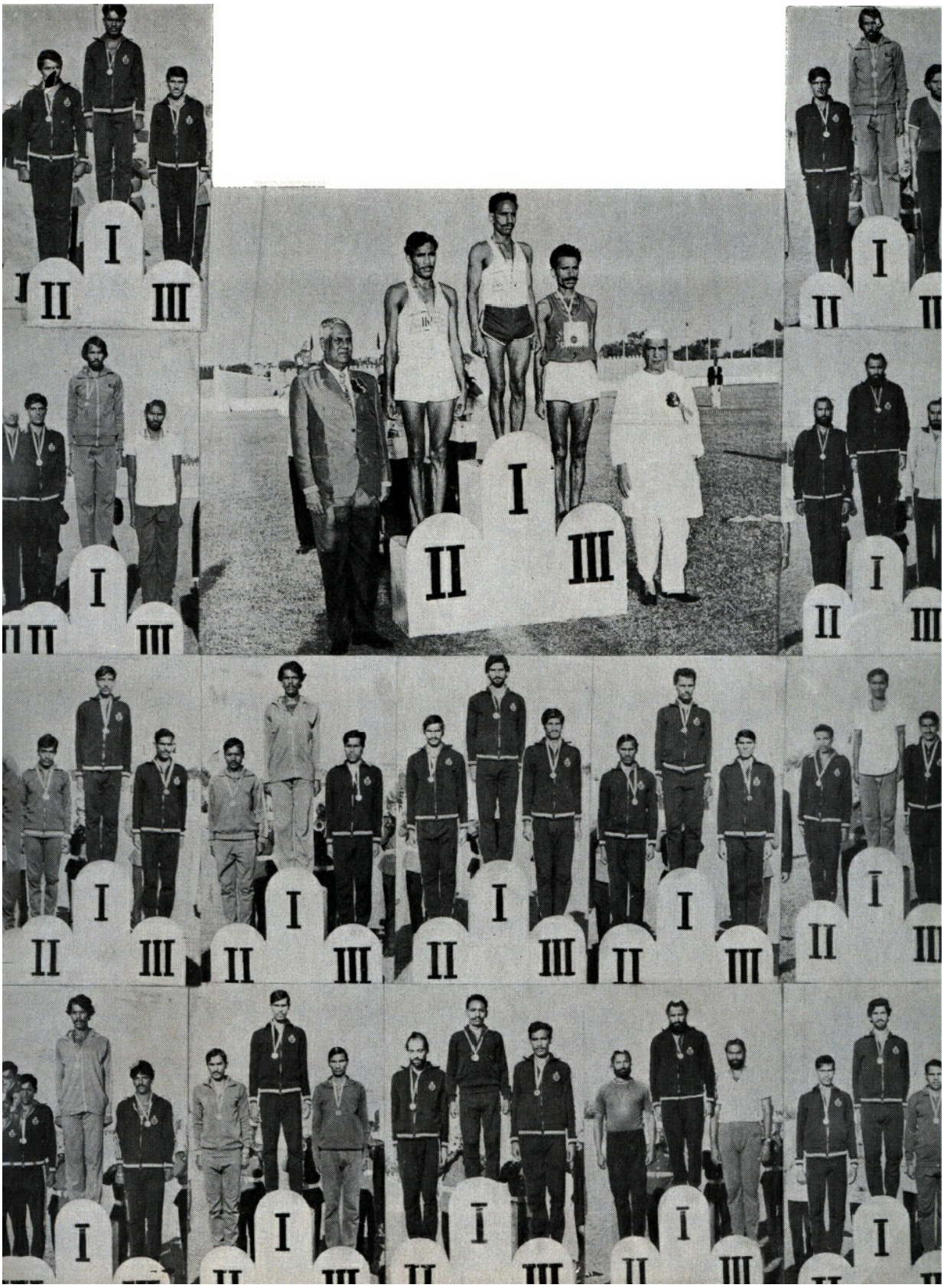
फाइनल में भिलाई इस्पात को हराकर, के० रि० पु० दल ने श्री रामचन्द्र नीमा स्मति अखिल भारतील वालीबाल टूर्नामेंट, इन्दौर (म० प्र०) में चैम्पियनशिप जीती।

बड़े निर्माण कार्यों के लिये वित्तीय अधिकार

प्रत्येक बड़े निर्माण-कार्य के लिये महानिदेशक के० रि० पु० दल का वित्तीय अधिकार रु० 2 लाख से बढ़ा कर अब सरकार ने 5 लाख रु० कर दिया है।

विजय सोपान पर

11वीं अन्तरेंज दौड़कूद प्रतियोगिता में—



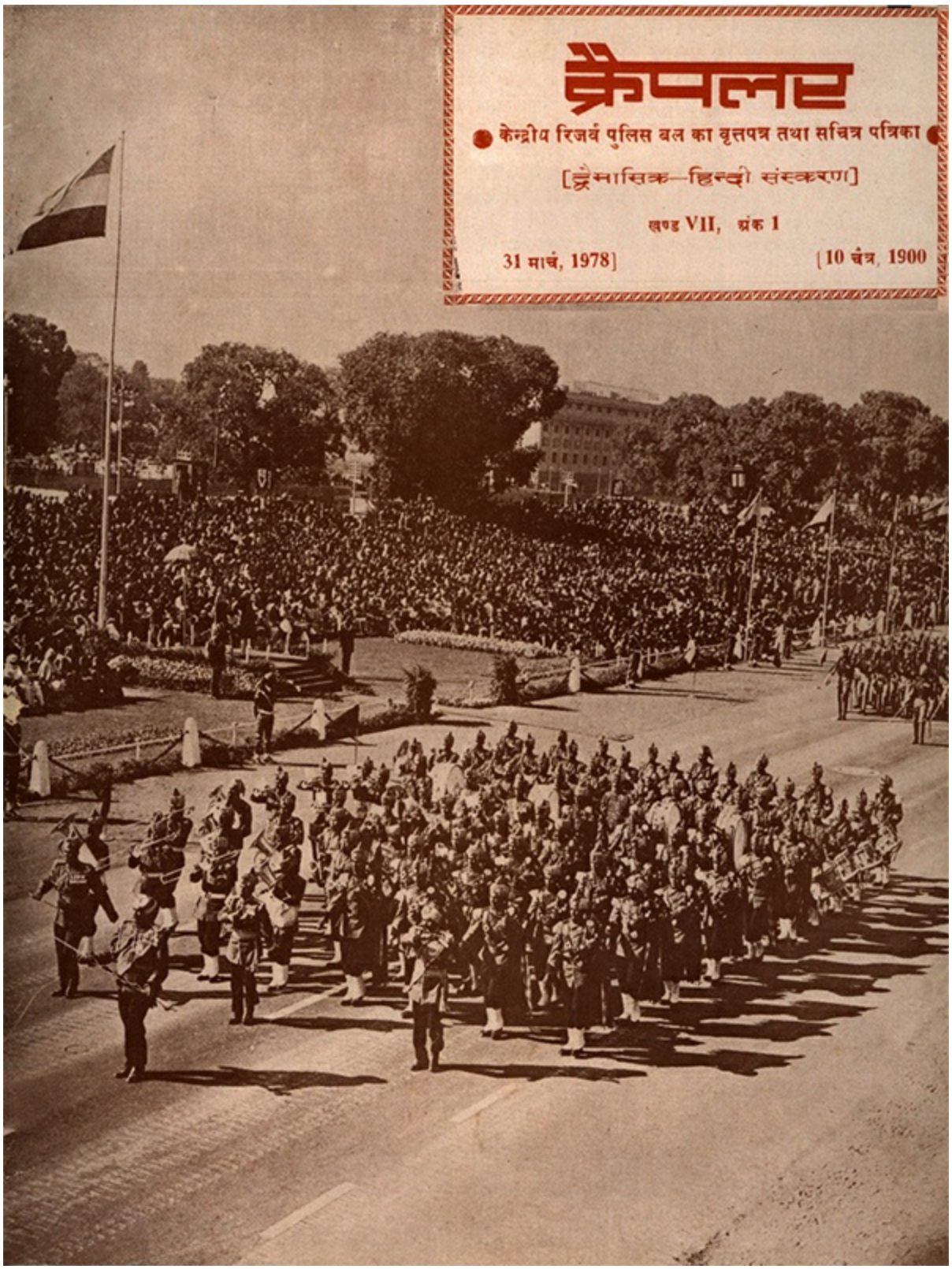
मध्य—गृहमंत्री और महानिदेशक के साथ 5000 मी० के विजेता।

बायीं से दायीं ओर :

विजेता : (पहली पंक्ति) : 400 मी० बाधा व नेजा फेंक, **(दूसरी पंक्ति) :** शाटपुट व 100 मी० बाधा, **(तीसरी पंक्ति) :** 800 मी०, मराथन, डेकथलन, 400 मी० तथा पोलवाल्ट **(चौथी पंक्ति) :** चौड़ी कूद, चक्का फेंक, 1500 मी०, त्रिकूद व 200 मी० दौड़।



रजिस्टर्ड नं०
25627/74



क्रैपलाइट

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका

[द्वैमासिक—हिन्दी संस्करण]

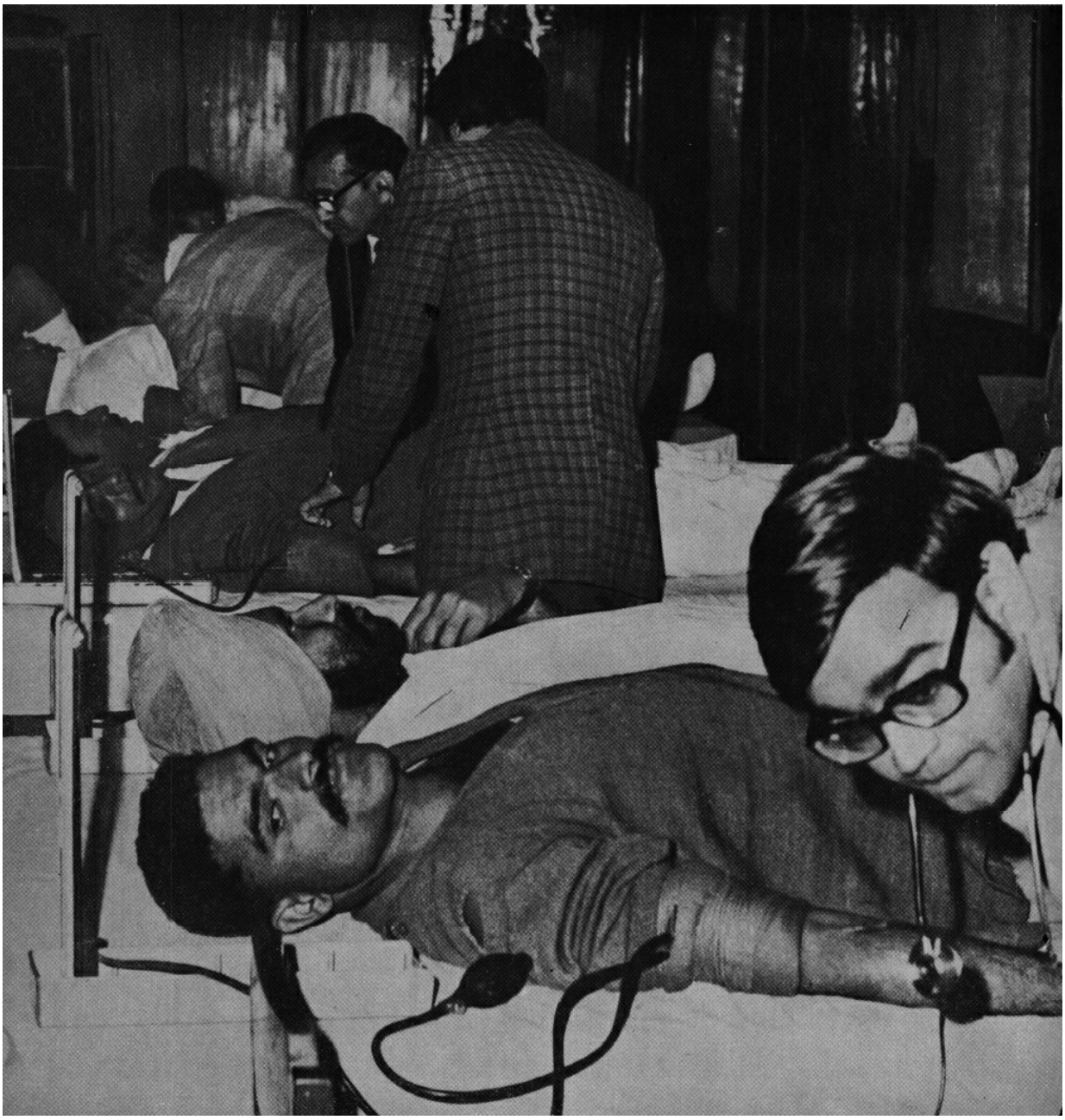
खण्ड VII, अंक 1

31 मार्च, 1978] [10 चैत्र, 1900

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा भारी रक्त दान

ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलाँ में भारतीय रेड क्रास द्वारा आयोजित शिविर में ही के० रि०पु० बल के 150 जवानों ने 29 दिसम्बर 1977 को रक्त दान किया जब कि कुल मिलाकर दिल्ली स्थित इस बल के 257 सदस्यों ने इस वर्ष अपना रक्त प्रदान किया।

श्री सी० एम० पांडेय, कमांडेंट ग्रुप केन्द्र के समेत सभी अधिकारियों ने रक्त दान किया और उनके चरण-चिह्नों पर ग्रुप केन्द्र, 1 सिगनल बटालियन तथा 54 बटालियन के जवानों का ताँता लग गया और सब में अधिक से अधिक रक्त देने की होड़ सी लग गई। 54 बटालियन की 'बी' कम्पनी से सब से अधिक 46 जवानों ने रक्त दान किया। उनमें अनेकों के लिए यह दान कोई नई चीज़ नहीं थी। इ० परमेन्दर सिंह तथा का० ऋषिकुमार शर्मा ने चौथी बार रक्त दिया; स० इ० एस० जी नय्यर तथा ह० विजय किशोर ने तीसरी बार दिया और सहायक कमांडेंट एस० ए० खान ने तो बारहवीं बार रक्तदान किया। बारम्बार रक्तदान करने का कारण पूछे जाने पर, दुबले-पतले विजय किशोर का यह सीधा-साधा उत्तर था—"संकट में पड़े किसी मनुष्य के काम तो यह पा सकेगा।"



(रक्त देते हुये बल के जवान)



क्रै प ल र

[हिन्दी संस्करण द्वैमासिक]

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस का वृत्तपत्र

तथा

सचित्र पत्रिका

खण्ड VII
अंक 1

31 मार्च, 1978
10 चैत्र, 1900

मुख्य सम्पादक :
एच० एस० सेठी

हिन्दी सम्पादक :
जे० एस० शर्मा

छायाचित्रकार : शिवकुमार

मुख पृष्ठ :
राजपथ (दिल्ली) में गणतन्त्र दिवस परेड में के. रि. पु. बल को टुकड़ी।

23 पृष्ठः
अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता में इस बल की विजेता टीम के साथ महानिदेशक श्री एस. एम. घोष ।

सम्पादकीय कार्यालय :
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-111422

प्रकाशक : महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से एच० एस० सेठी

I. रिपोर्ताज :

(i) केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा भारी रक्तदान

(ii) दुर्गापुर और नागपुर ग्रुप केन्द्रों में अस्पताल

(iii) बाढ़-पीड़ितों को के.रि. पु. बल द्वारा आर्थिक सहायता

(iv) ग्रुप केन्द्र अजमेर में पार्क

(v) सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की 16वीं दीक्षान्त परेड

(vi) गणतंत्र दिवस परेड में के. रि. पु. बल की टुकड़ी

(vii) भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिये गहमंत्री का आह्वान

(viii) धमकियों से निडरतापूर्वक निपटने की प्रधान मंत्री द्वारा घोषणा

III. लेख :

(क) अज्ञानता से भारी गलतियाँ, ले० श्री निगमेन्द्र सेन सक्सेना, भू० पू० महानिदेशक

(ख) मजार, ले० श्री निर्मल सिंह ढिल्लों, डीवाई०एस०पी० 45 बटालियन

(ग) अपराध और दण्ड-विधि, दि ट्रिब्यून, चंडीगढ़ के सौजन्य से

(घ) पुलिस आयोग के लिए कार्यभार, ले०श्री टी० नाथ (रिटा०) आई. पी.

III. कविता—आकांक्षा, रचयिता स० इ० लल्लनसिंह यादव, 3 बटालियन

IV. गौरव गाथा—पदक, प्रशंसा तथा पुरस्कार

V. कहानी—अनोखा बदला, ले०--श्री जे० एस० शर्मा, हिन्दी सम्पादक

VI स्वास्थ्य संदेश—(व्यंग्य) आप क्या खाते हैं, ले०—ह० शिवदत्त शर्मा महानिदेशालय

VII. विज्ञान के चढ़ते चरण :

VIII. क्रीड़ा क्षेत्रे :

IX. विविध :

(i) हैदराबाद ग्रुप केन्द्र में गिरजाघर

(ii) छात्रवृत्तियाँ

(iii) सूक्तिसुधा

(iv) पहेलियाँ
(v) यह भी खूब रही

यह संस्करण 31-3-78 को प्रकाशित हुआ है। यदि यह बटालियनों/ग्रुप केन्द्रों की रेल-सीमाओं पर दो सप्ताह के बाद पहुँचे, तब उपनिदेशक (संभरण) को पत्र द्वारा सूचित करना चाहिये।

गौरव गाथा :

पदक, प्रशंसा तथा पुरस्कार

गणतंत्र दिवस पर 15 पदक

भारत के गणतन्त्र दिवस 1978 के अवसर पर के० रि० पु० बल के इन 15 सदस्यों को पुलिस के विशिष्ट सराहनीय सेवा पदक दिये गये :—

I. राष्ट्रपति का पुलिस विशिष्ट सेवा पदक (1)

II. श्री अरुण चटर्जी, डीवाई० एस० पी० (4 बटा०)

पुलिस सराहनीय सेवा पदक (14)

1. श्री एम. एस. बावा, उपनिदेशक (परिचालन) 2. श्री आई. जयसिंह, कमांडैंट (26 बटा०) 3. श्री एस. पी. गोइराला, सहायक कमांडैंट (56 बटा) 4. श्री सुल्तानसिंह, डीवाई० एस०पी० (55 बटा०) 5. सू० विधिसिंह, सिंग० ग्रुप केन्द्र (नी०) 6. सू० ज्ञानसिंह, ग्रुपकेन्द्र (दिल्ली) 7. स० इ० प्रतापसिंह (41 बटा) 8. स० इ० राम सरूप, ग्रुपकेन्द्र (नी०) 9. स० इ० जौहरसिंह (36 बटा०) 10. हे० का० रमाकान्त राई (46 बटा०) 11. हे० का० कर्त्तारसिंह (6 बटा०) 12. हे० का० पी. आई. जान (5 बटा) 13. हे० का० बोधूराम (60 बटा०) 14. सू० धर्मनाथ सिंह (31 बटा०)।

दो डूबते परिवारों को प्राणरक्षा

दिनांक 16 अगस्त 77 को, भारी वर्षा के कारण नामचिक नदी में अचानक बाढ़ आ गई। उसके दोनों किनारों से पानी बाहर बह चला और जंगल समेत-सारा नामचिक क्षेत्र डब जाने से जानोमाल को भय उत्पन्न हो गया। के० रि० पु० बल के जवानों ने समय पर पहुँच कर डूबते लोगों को बचा लिया और उनको सुरक्षित स्थानों पर पहुँचा दिया।

नामचिक नदी के दूसरे तट पर दो परिवारों को उमड़ती धार बहा ले जाने वाली थी कि 42 बटालियन के इन तीन जवानों की दृष्टि उन पर पड़ी; तुरन्त एक छोटी देशी नौका पर सवार होकर अपने प्राणों से खेलते हुए उन्होंने नदी पार की और उन दोनों परिवारों का उद्धार किया— 1. ना० विशनदास 2 का० एस. सोमन तथा 3. का० शशिधरन ।

अरुणाचल प्रदेश की सरकार तथा नागरिक प्रशासन ने इन वीर बाँकुरों की की भूरि भूरि प्रशंसा की है।

नागालैंड चुनाव में हमारा योगदान

दिनांक 18 नवम्बर 1977 को, नागालैंड में 32 मास के राष्ट्रपति-शासन के

उपरान्त, 60 सदस्यों वाली विधान सभा के आम चुनाव हुये । यह पहला मौका था, जब वहाँ चुनाव इतने शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुये, यद्यपि 70 प्रतिशत वोट पड़े। इस सफलता का श्रेय बहुत हद तक के० रि० पु० बल को जाता है।

नागालैंड में स्थित 5 बटालियनों के अतिरिक्त, 12 कम्पनियाँ बाहर से ला कर तैनात की गईं। नागालैंड के सारे जिलों में आधे-आधे सेक्शन लगाये गये। उनको भीतरी, दूरदराज के तथा बर्मा सीमा के क्षेत्रों में निरत किया गया। माँन, त्वेंगसांग, जुन्हेबोटो तथा वोखा जिलों में मतदान-अधिकारियों तथा उनकी सामग्री की रक्षा करते हुये हमारे जवानों को अपने विस्तर बोरिओं के साथ, दो दिन पैदल चलना पड़ा।

कुछ स्थानों पर मतदान शत-प्रतिशत रहा और अनेकों जगहों पर 80% से अधिक हुआ। दीमापुर में, हमारे दल को मतदाताओं की लम्बी पंक्ति में बनाने में सफलतापूर्वक लगाया गया ।

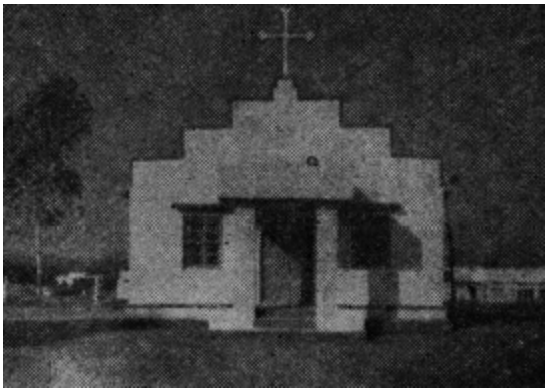
मतदान के पश्चात्, मतदान-टुकड़ी तथा मतपेटियों को जिला/उपमंडल मुख्यालयों में सुरक्षापूर्वक ले जाने के लिये हमारे जवान निरत किये गये; पर कोई दुर्घटना नहीं हुई । अन्तिम मतपेटी 20 नवम्बर 77 को पहुँचायी गई। दिन में मतदान केन्द्रों पर सेवा करने के बाद, हमारे जवान नागालैंड को सभी बाहरी चौकियों पर नियमित रूप से पहरा तब तक लगाते रहे, जब तक कि मत गणना पूरी नहीं हो गयी।

भारत के निर्वाचन आयोग की ओर से श्री आई० शशिमेनन अय्यर, मुख्य चुनाव अधिकारी नागालैंड ने उपमहानिरीक्षक कोहिमा को लिखे अपने पत्र में, निर्वाचन के समय हमारे बल द्वारा शान्ति बनाये रखने की प्रशंसा की है।

पूर्वोत्तर अंचल में अफसरों की बदलियाँ

यह निर्णय लिया गया है कि कोई भी अधिकारी छह वर्ष से अधिक लगातार पूर्वोत्तर अंचल में नहीं रहेगा तथा इम्फाल और गौहाटी के ग्रुप केन्द्रों में निरत अधिकारी तीन वर्ष पूरा करने पर अवश्य बदल दिये जाया करेंगे।

हैदराबाद ग्रुप केन्द्र में गिरजाघर



ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में उसकी संलग्न बटालियनों की आर्थिक सहायता से एक

गिरजाघर का निर्माण हुआ है जिसका उद्घाटन 24 दिसम्बर 1977 को पादरी श्रद्धेय पोइतकर ने किया।

सतर्क प्रहरी

श्रीनगर की सेंट्रल जेल के बाहरी रक्षा में निरत 3 बटालियन के का० टी. एस. बेलन ने 2-3 जून 77 की रात को 12.45 बजे एक पत्थर गिरते देखा। उसने तुरन्त ताड़ लिया और साहसपूर्वक चेतावनी दी, जिससे जेल में से बचभागने का यत्न विफल हुआ। इस चतुराई के लिए, का० वेलन को राज्य सरकार ने प्रशंसापत्र के साथ 300 रु० का नकद पुरस्कार दिया है।

जवानों की सन्तानों को छात्रवत्तियाँ

नीमच में नवम्बर 1977 वाले कमांडैंट-सम्मेलन में लिये गये निर्णय के अनुसरण में, जवानों के बच्चों को छात्र-वत्तियाँ देने के विषय में नये निदेश बनाये गये हैं।

इनके अनुसार, हरेक रेंज डी० आई० जी को प्रति वर्ष तीन विद्यार्थियों केवल छात्र-वृत्तियाँ देनी होंगी। प्रत्येक छात्रवृत्ति 75 रु० प्रति मास की होगी और पहली बार एक वर्ष के लिए दी जायेगी। ये छात्रवृत्तियाँ दो श्रेणियों की होंगी। प्रथम श्रेणी में दी जाने वाली दो छात्र वृत्तियाँ होंगी, जो हेड कान्स्टेबल के पद तक के कर्मचारियों के लिये होंगी; दूसरी श्रेणी की छात्रवृत्ति एक होगी, जो अन्य सभी सदस्यों के लिये होगी। प्रत्येक श्रेणी के छात्र को कम से कम 50 प्रतिशत अंक लेना ज़रूरी हैं।

राजपत्रित अधिकारियों की सन्तानों को छात्रवृत्ति केवल विरली ही स्थितियों में दी जा सकेगी।

अज्ञानता से भारी ग़लतियाँ

ले०—श्री निगमेन्द्र सेन सक्सेना

इस लेख में उस ज्ञान की मात्रा के विषय में चर्चा की गई है, जिसकी आवश्यकता राष्ट्रीय नेताओं और उद्योगों तथा प्रशासन में चोटी के व्यक्तियों जैसे नीतियां निर्धारण करने वाले मनुष्यों को है। उद्देश्य की ईमानदारी इसमें सबसे अधिक ज़रूरी है। यदि इसकी कमी है, तब ग़लत प्रेरणा के कारण, कोई नीति सही निर्धारित नहीं हो सकती। इसलिये, हमें यह अनुमान लगा कर चलना पड़ेगा कि हरेक नीति-निर्धारक अपने हिसाब से ईमानदार है।

प्रत्येक नीति निर्धारित करते समय अनेकों विचारों को ध्यान में रखना पड़ता है,

जिनमें से कुछेक तो परस्पर विरोधी तक होते हैं। किसी भी नीति-नेणायक को यह सम्भव नहीं है कि वह सब ज्ञान अपने मस्तिष्क में रखे रहे। अतएव उसे कितने ही विशेषज्ञों से परामर्श लेना पड़ता है। 2,000 वर्षों से पूर्व, सुकरात, प्लैटो, अरस्तू तथा कौटिल्य जैसे सर्व ज्ञाता विद्वानों का मिलना सम्भव था; किन्तु विज्ञान के बड़े विकास होने के कारण, ऐसों का मिलना 18वीं शताब्दी तक में असम्भव हो गया। अब तो ज्ञान इतनी जल्दी जल्दी बढ़ रहा है कि हमारी अज्ञानता उससे भी तेजी से बढ़ रही है। ऐसी गणना हुई है कि आजकल तकनीकी तथा वैज्ञानिक साहित्य के 6 करोड़ पृष्ठ प्रति वर्ष छप रहे हैं ।

यद्यपि विशेषज्ञों की ज़रूरत आज अपरिहार्य है, किन्तु वे तभी लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं, जब वे इन शर्तों को पूरी करते हैं :—

1. विशेषज्ञ सचमुच में विशेष ज्ञाता होना चाहिये, ना कि बड़ों की चापलूसी करके उच्च श्रेणी पर कोई पहुँच गया हो।

2. उसमें कटु सत्य कहने का साहस हो। यह पहली शर्त से जुड़ी है, क्योंकि एक सच्चा विशेषज्ञ में ही आत्मविश्वास के साथ बोलने की हिम्मत हो सकती है।

3. उसमें अपनी अज्ञानता के व्यापक क्षेत्रों के जानने की विनम्रता हो । कुछ भीषण सर्वनाश केवल इसी कारण हुये हैं कि किसी एक क्षेत्र के विशेषज्ञ अपने आप को उन क्षेत्रों के भी विशारद समझ बैठे, जिन में वे अविज्ञ थे।

4. विशेषज्ञ तभी उपयोगी हो सकता है, जब नीति-निर्धारक में (I) सच्चे विशेषज्ञ के परखने की मौलिक जानकारी हो; तथा (II) सत्य को पहचानने की नैतिकता हो ।

जितना ही ऊँचा निर्णय लेना हो और जितना (लड़ाई की तैयारी जैसा) अधिक गुप्त विषय हो, उतने ही कम लोगों को विश्वास में लिया जाना चाहिए। यदि इस सर्वोच्च परिषद के कुछ लोगों में जानकारी या उद्देश्य की ईमानदारी में कमी होगी, तब राष्ट्रीय सर्वनाश तक हो सकता है जिसमें करोड़ों जानों की बर्बादी तक हो सकती है।

चाहे विशेषज्ञ महत्वपूर्ण हैं, किन्तु आधी दर्जनों के सम्मेलनों तक से किसी उत्तम फल की प्राप्ति नहीं हो सकती है; क्योंकि कुछ ऐसे विषयों में भी निर्णय लेना पड़ जाता है, जिनका किसी को ध्यान भी नहीं आया हो । ऐसी दशा में, या तो नीति-निर्धारक के पास ज्ञान की व्यापक पृष्ठभूमि हो अथवा किसी विशेषज्ञ पर अपने संकीर्ण क्षेत्र के प्रकाण्ड पंडित होने के साथ-साथ, यह पृष्ठभूमि भी हो। सच्चे विशेषज्ञ तो विरले होते हैं, परन्तु ज्ञान की ऐसी व्यापक पृष्ठभूमि रखने वाले विद्वान तो इतने दुर्लभ होते हैं कि बड़े-बड़े देशों में अँगुलियों पर गिने जा सकते हैं। यदि किसी नीति-निर्धारक को ऐसा कोई विशेषज्ञ मिल जाये, तब उसकी कितनी ही समस्यायें हल हो सकती हैं।

ये उपर्युक्त सैद्धान्तिक बातें कुछ अस्पष्ट सी लगती हैं जब तक कि ऐतिहासिक उदाहरणों द्वारा इन्हें सिद्ध नहीं किया जाये। आइये, कुछ इनका विवेचन कर लिया जाये—

भौगोलिक शिक्षायें—यह सामान्य बुद्धि की बात है कि जिस क्षेत्र में सेना को अपनी कार्रवाई करनी है, उस क्षेत्र के भूगोल की पूरी-पूरी जानकारी उसे होनी चाहिए, किन्तु सदा ऐसा नहीं होता है और भूगोल की जानकारी के अभाव के कारण ही, कितनी ही सेनाओं का सर्वनाश हुआ है, जिनके कुछ ये उदाहरण प्रस्तुत हैं—

(I) असम की प्राकृतिक तथा भौगोलिक स्थितियों की अज्ञानता के ही कारण, 1250 ईस्वी से लेकर 17वीं शताब्दी में औरंगजेब के काल तक, असम पर कम से कम 17 बार आक्रमणों को पराजय का मुख देखना पड़ा। जब वर्षा ऋतु आयी, तब आंत्रज्वर और पेचिश से सेनायें की सेनायें स्वर्ग सिधार गयीं।

(II) 27 नवम्बर 1941 को, जब नाज़ी सेनायें मास्को के निकट पहुँच चुकी थीं और मास्को का पतन कुछ ही दिनों की बात समझा जा रहा था, तभी सहसा 40° सेंटीग्रेड से 20 सेंटीग्रेड तापक्रम गिर गया। जो जर्मनी उच्च समादेशाधिकारी अपनी सुझबूझ तथा प्रभावी योजनाओं के लिये प्रसिद्ध थे, वे इसका पूर्व अनुमान नहीं लगा सके थे। अधिकांश जर्मनी सैनिकों को पाले ने लूलालंगड़ा कर दिया तथा संघातक वेदना से पीड़ित बना दिया । तेल जमने से रायफलों ने चलना बन्द कर दिया; मशीन गनें और स्वचालित हथियार जम गये व टैंक हिलडुल नहीं सकें। जब जर्मनी सेना और मशीनों को फालिज मार गया था, तभी साइबेरिया से नये आये दस्ते ने उन पर धावा बोल दिया। इस दस्ते के सिपाही गर्म कपड़े पहने थे, उनके हथियारों में जाड़ों का विशेष तेल लगा था और उसकी मशीनगनों तथा इन्जिनों को खूब ढक कर रखा गया था।

(III) 1942 में, ब्रिटिश सेना ने जापान से एक कष्टप्रद पाठ सीखा। ब्रिटेन वासियों ने मैदानों में युद्ध करना सीखा था, और जहाँ तक मोटर वाहनों तथा भारी आवाजाही का प्रश्न था पूर्वोत्तर भारत, बर्मा, मलाया आदि के वनों को उन्होंने अभेद्य मान रखा था तथा उनके जवान एक सभ्य जीवन के आदी हो गये थे। इधर ये वन जापानियों के गुप्त सैन्य चालों और छापों के लिये पाँवड़ें विछाये पड़े थे। असम, वर्मा आदि के वनों के भूगोल का पूरा पूरा अध्ययन तब मित्रशक्तियों ने किया और उन्होंने जान लिया कि सैनिक वहाँ रह सकते हैं और पशु तथा कीटाणुओं से वे अपनी रक्षा कर सकते हैं।

दूसरी ओर, रणनीतिज्ञ चंगेज़ खाँ ने 13वीं शताब्दी में अपना एक विशाल साम्राज्य इस कारण से मुख्यकर स्थापित किया कि उसने भूगोल की आवश्यकताओं को जाना था। यह साम्राज्य प्रशान्त महासागर से डैन्यूब नदी और बाल्टिक सागर तक फैला हुआ था। इस क्षेत्र की खास भौगोलिक बात यह थी कि उसमें चरागाहों का सपाट मैदान था। उस समय, संचार, यातायात तथा युद्ध का सर्वोत्तम साधन घोड़ा था। घोड़ों के प्रजनन तथा प्रशिक्षण में जितना चंगेज खा ने ध्यान दिया, उतना इतिहास में शायद ही किसी सेनापति ने दिया हो। इसका फल भी उसी ने पाया, इतिहास में इतने थोड़े समय में उसने सब से विशाल साम्राज्य स्थापित किया। वह सारा साम्राज्य घोड़े की पीठ पर स्थापित हुआ था।

ऐतिहासिक शिक्षायें : इतिहास की अज्ञानता ही के कारण कई विश्व जनीन नेताओं का अधःअतन हुआ है। थोथी परिभाषाओं के अनुसार, इतिहास मनुष्य का का

अध्ययन है जबकि भूगोल पृथ्वी का अध्ययन। इन दोनों के बीच लक्ष्मण-रेखा नहीं खींची जा सकती, जैसा कि उपर्युक्त परिभाषाओं से भ्रम होता है। नाटक और उसके मंच की तरह मनुष्य और उसके वातावरण को अलग नहीं किया जा सकता।

इतिहास की शिक्षाओं से अधिनायकगण अत्यन्त ही अविज्ञ रहे हैं और उन्होंने वे ही ग़लतियाँ बारम्बार दोहरायी हैं, नामतः—

(I) शान्ति के लिये जनता की जन्मजात इच्छा को शालीनता तथा अत्याचार एवं अपमान के लिये सहनशीलता कह कर ग़लत पुकारना;

(II) किसी राष्ट्र के आन्तरिक कलहों तथा संघर्षों के यह ग़लत अर्थ लगाना कि लोग विदेशी राज्य को सहन करने के इच्छुक हैं;

(III) वरिष्ठ परामर्शदाताओं की चमचागीरी को स्वामीभक्ति समझ बैठना; 400 वर्षों से पूर्व, तुलसीदास अपने रामचरित मानस में लिख गये हैं—

'भय के कारण या पुरस्कार की आशा से, यदि मंत्री, वैद्य तथा धर्मगुरु मधुर बचन बोलता है, तब राज्य, शरीर तथा धर्म का शीघ्र ही अधःपतन अवश्यम्भावी है।"

(IV) अधकचरे विशेषज्ञों को मुंह लगाना और सच्चे विशेषज्ञों का तिरस्कार करना और उनके स्वाभिमान तथा व्यावसायिक गर्व को दम्भ समझना।

रामायण और महाभारत में ऐसे दृष्टान्त भरे पड़े हैं, जिनमें रावण तथा दुर्योधन ने सच्ची मंत्रणा की उपेक्षा की तथा मज़ाक़ उड़ाई थी। 1939 से पूर्व, विंस्टन चर्चिल अनुदार दल का सब से घृणित सदस्य था। हिटलर ने सेनाध्यक्षों का अपमान किया और उन्हें बदल डाला। स्तालिन को कई वरिष्ठ सेनाधिकारों को जेल से निकाल कर युद्ध क्षेत्र में भेजना पड़ा।

ज़ार अलेग्जेंडर; 1812 में नेपोलियन के दाँत खट्टे करने वाले रूस के परित्रायक कूटोजोव से घृणा करता था। इसी प्रकार कैसर, जर्मन फील्ड मार्शल हिन्डनवर्ग से घृणा करता था, जिसने 1915 में रूसी सहारकों के पंजों से पूर्वी जर्मनी को छुड़ाया था। जर्मनी इतिहास को सब से अधिक योग्य महामन्त्री विस्मार्क को कैसर घृणा की दृष्टि से देखता था और उसको दूध में मक्खी की तरह उसने निकल फेंका था।

'ब्रिटेन के युद्ध' के सूचक : एक सच्चे विशेषज्ञ द्वारा अपने शक्तिशाली स्वामियों का विरोध करने तथा उनकी मंत्रणा अस्वीकार करने का उल्लेखनीय दृष्टान्त 'ब्रिटेन के युद्ध' में मिलता है। ब्रिटिश की ओर से वायु सेनापति डाउडिंग था और वह जानता था—कि (i) जर्मनों की तुलना में उस पर कम वायुयान हैं; तथा (ii) उस पर प्रशिक्षित विमान चालकों की बहुत ही कमी है।

तब भी वह जीता और जर्मनी हारा। अपनी पुस्तक "इंगलिश हिस्ट्री 1914-1945" में ए. जे. पी. टेलर ने संक्षेप में इस जीत के दो कारण बताये हैं—(i) रडार; तथा (ii) वह स्वयं।

दूसरे कारण का स्पष्टीकरण करते हुये, टेलर लिखते हैं—उसने और उसके अधीनस्थ एयर वायस मार्शल पार्क, 11 ग्रुप के कमांडैंट, ने अपने शक्ति को मज़बूत

करने तथा अच्छी हो परिस्थितियों में जर्मनी से मुठभेड़ करने का निश्चय किया था। चर्चिल और वायु सेनाध्यक्ष समेत सर्वोच्च अधिकारियों ने उन्हें अचानक धावे को प्रायः प्रेरित किया; पर वे दृढ़ रहे । ब्रिटिश-विजय का स्पष्टीकरण करते हुये एक इतिहासकार ने लिखा है—'जब कि डाउडिंग और पार्क ने ग़लत काम कराने वालों का डट कर मुकाबिला किया, तब जर्मनी अधिकारी, गोयरिंग के विरुद्ध काम करने की क्षमता नहीं रखते थे।"

सरकारों के प्रमुखों के विषय में जानकारी : जिन सरकारों से किसी राष्ट्र के प्रमुखाधिकारी को निबटना होता है, उनके प्रमुख सत्ताधीशों के विषयों में जानकारी रखना अत्यन्त जरूरी है । युद्ध तथा शान्ति के विषय में ग़लत निर्णय ग़लत जानकारी के कारण लिया जा सकता है। आधुनिक युग में ऐसी ग़लती का ज्वलन्त उदाहरण मिलता है—चैंबरलेन द्वारा हिटलर को ग़लत समझना। चैम्बरलेन मूलरूप से व्यापारी-बच्चे थे और उनकी धारणा थी कि संधियों की पवित्रता रखने के लिये हिटलर भी व्यापारी नैतिकता को निभायेंगे। म्यूनिख से लौट कर चैम्बरलेन ने डाउनिंग स्ट्रीट में खड़ी भीड़ से यह घोषणा की—'बंधुओं ! हमारे समय में अब शान्ति है । और अब मैं पाप से घर जाने और अपनी शय्याओं पर आराम से सो जाने की सिफ़ारिश करूँगा।' अंग्रेज तब सोने चले गये; उधर हिटलर ने अगले आक्रमण की योजना बनाई।

इसी प्रकार हिटलर को समझने में स्तालिन भी ग़लती कर गये। प्रशान्त तथा प्रबुद्ध स्तालिन को स्वप्न में भी यह विश्वास नहीं था कि हिटलर अक़्लमन्दी को ताक़ पर रख कर, रूस पर धावा बोलने की सोचेगा। हिटलर के सुयोजित धावे की चेतावनियाँ उन्हें बारम्बार दी गई। इस चेतावनी की उपेक्षा के ही कारण हजारों विमान, टैंक आदि का धरती पर विध्वंस हुआ और लाखों रूसी सैनिकों को बंदी बनना पड़ा। युद्ध में पराजय उठानी पड़ी तथा बाद को, भीषण आँसुओं और रक्तधारों के बहने पर तथा देश के एक बड़े भाग के नष्ट-भ्रष्ट होने पर ही, विजयश्री प्राप्त हुयी।

ख्रुश्चेव केनेडी के चरित्र को बिल्कुल नहीं समझ सके और इसी के कारण अक्टूबर 1962 में क्यूबा पर तोपें तन गईं। दो वर्ष के उपरान्त, अक्टूबर 1964 में उनके अधः पतन का यही मुख्य कारण हुआ।

हँसमुख, मधुर, शिष्टभाषी चाऊ-एन-लाई के सच्चे चरित्र को नहीं समझने से भारत को भीषण परिणाम उठाने पड़े। इधर तो भारत सरकार से लगातार यह कहा जाता रहा कि सीमा-समस्या पर चीन ने अभी ध्यान ही नहीं दिया है, उधर चीनी बच्चों को उनके स्कूलों में भूगोल उन मानचित्रों से पढ़ाया जाता रहा, जिनमें भारत का बड़ा भाग चीन वालों का दिखाया गया था।

अपनी मातृभाषा का प्रेम : अपनी मातृभाषा से भावात्मक प्रेम स्वाभाविक ही होता है। किन्तु, इस मौलिक ज्ञान की कमी कितने ही ऐसे बड़े नेताओं में रही है, जिन्होंने यह सोचा कि किसी विदेशी भाषा को, सरकारी तंत्र तथा शक्ति द्वारा दूसरों पर सफलतापूर्वक थोपा जा सकता है।

रूसियों के प्रति पोलैंडवासियों की घृणा का मुख्य कारण यह है कि रूसियों ने पोलिस भाषा को पोलैण्ड से मिटाना चाहा । ज़ार निकोलस इस दारुण मूर्खता का ज़िम्मेदार था। 1830 में जब सारे योरुप में क्रान्ति छिड़ी, तब पोलैंडवासियों ने रूसी गवर्नर को खदेड़ फेंका और स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। यह तो समझने योग्य बात थी कि ज़ार ने पोलैंड पर फिर अपना अधिकार जमा लिया और वहाँ के उदार संविधान को रद्द कर दिया; किन्तु जिस कारण पोलैण्डवासियों ने रूसियों को कभी क्षमा नहीं किया वह था रूसी भाषा को पोलैण्ड में एक मात्र सरकारी भाषा बनाना। यह मूर्खता रूस को बड़ी मँहगी पड़ी और रूस के प्रति घृणा प्रत्येक पोलैण्डवासी की रग रग में भर गयी। उन्हें अपनी भाषा इससे पूर्व कभी इतनी मधुर नहीं लगी थी। ब्रिटिश राज्य में, उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी के विरुद्ध रवैया रखा गया। इसका उल्टा फल लोगों के दिल पर पड़ा और उनमें अपनी सन्तान को हिन्दी तथा संस्कृत पढ़ाने की उत्कट इच्छा जाग्रत हो गयी।

पूर्वी पाकिस्तान मुस्लिम लीग की जन्म-भूमि थी। यही क्षेत्र था; जहां देश विभाजन से पूर्व ही मुस्लिम लीग सरकार स्थापित थी और 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग की सीधी कार्रवाई को यहीं सर्वप्रथम क्रियान्वित किया गया था। सब से बढ़ कर बात यह थी कि यहाँ अधिकांश वे ही नागरिक रहते थे ; फिर भी, एक चमत्कार घटा, अर्थात् बहुसंख्या ने अल्पसंख्या से नाता तोड़ना चाहा। इसका प्रधान कारण था उनकी मातृभाषा बंगाली का अनादर होना । 1948 में, जिन्ना दीक्षान्त-भाषण देने ढाका आये । वहाँ के छात्रों द्वारा उर्दू के बराबर बंगाली भाषा को राज्यभाषा बनाने की माँग पर वह रुष्ट हुये और उन्होंने यह दो टूक जवाब दिया कि उर्दू ही पाकिस्तान की मातृभाषा रहेगी तथा साथ में, यह भी जोड़ दिया कि इस नीति का विरोधी पाकिस्तान का शत्रु समझा जायेगा। उस समय के छात्रनेता मुजीब ने जिन्ना तथा उर्दू के विरुद्ध और बंगाली भाषा के समर्थन में प्रचण्ड प्रदर्शन किया। सभी प्रदर्शनकारी तुरंत पकड़े गये और जिन्ना जब तक ढाका रहे, उन्हें जेल में बन्द रखा गया। यह भाषा-विवाद पूर्वी पाकिस्तान में दबा नहीं। अपनी भाषा को उचित मान्यता दिलाने वाले फरवरी 1952 के आन्दोलन में (जो 1947 के बाद पहला भाषायी उपद्रब हुआ था) लगभग दो दर्जन छात्रों को अपने प्राण गँवाने पड़े। पश्चिमी पाकिस्तान के विरुद्ध बंगालियों के संघर्ष में ऐसे उपद्रब युगान्तकारी घटनायें समझी जाने लगी और मरने वाले शहीद पुकारे जाने लगे । बंगाली भाषा को एक सरकारी भाषा घोषित करने की माँग के लिये, इस बलिदान ने पूर्वी बंगाल की लीगी सरकार तक को बाध्य किया। यह माँग 3 वर्ष के पश्चात् मानी गई, जब 1956 के संविधान ने यह घोषणा की—"पाकिस्तान की सरकारी भाषायें उर्दू और बंगाली होंगी।" बंगाली भाषा के पक्ष में जोरदार ज़ज्वात होने के कारण ही, 1954 के प्रान्तीय चुनावों में उर्दू का समर्थन करने वाली मुस्लिम लीग की बुरी तरह हार हुयी। फ़जलुल हक़, एच. एस. सुहरावर्दी तथा मौलाना भासानी बाले संयुक्त मोर्चे ने (जो बंगाली भाषा को समुचित स्थान के लिये संघर्ष कर रहा था) 309 स्थानों में 209 पा लिये और वह मोर्चा सत्ता में आ गया। यह उस संघर्ष का श्रीगणेश था, जिसने 14 दिसम्बर 1971 को लेफ्टीनेन्ट जनरल नियाज़ी के आत्मसमर्पण पर

बंगलादेश का निर्माण कराया।

जन्ममरण विशारदों की चेतावनियों की उपेक्षा के भीषण परिणाम : जनविद्या काफी पुराना विज्ञान है । "जनसंख्या के सिद्धान्त" पर अपने लेख में, **माल्थस** (1766-1834) ने ज़ोरदार शब्दों में कहा था कि जीवन-निर्वाह के साधनों की तुलना में जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ती है और इस वृद्धि को नैतिक नियंत्रणों से नहीं रोका गया, तो रोग और युद्ध इस की रोकथाम करते हैं। बाद में, कुछ लेखकों ने इस सिद्धान्त के विवरणों में दोष पाये; किन्तु इसके व्यापक निष्कर्षों पर आज तक किसी ने अगुंली नहीं उठाई है। इन्हीं दिनों जन विद्या ने दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति की है। 1951 वाली जनगणना पर दी गयी रिपोर्ट की खुली चेतावनी पर ध्यान नहीं देकर, हम भारतवासी एक राष्ट्रीय सर्वनाश के उत्तरदायी हैं। हम साम्यवादियों के इस प्रौपेगंडे में फँस गये कि गरीबों को जनसंख्या को नियोजित करने की शिक्षा देना धनी पूंजीवादी राष्ट्रों का षडयंत्र है, जिससे वे ख़ून चूसते रहें। जिस पर भी इस प्रश्न को अध्ययन करने को समय तथा सामर्थ्य थी, उसे हमारे जनगणना विभाग की चेतावनी को स्वीकार करना पड़ा। 1976 में हुये, 20 वर्ष की असावधानी से निबटने के लिये ज़ोर-जबरदस्ती के उपाय करने पड़े ।

प्रगति के सिंहद्वार—तकनीक और विज्ञान—किसी भी देश का भविष्य, उस पर उपलब्ध तकनीक तथा विज्ञान की कुल जानकारी पर निर्भर करता है। 16वीं शताब्दी तक, स्पेन और पुर्तगाल योरुप के अगुआ देश थे। एक ही सदी में, तकनीक तथा विज्ञान के उच्च स्तर पाने पर ब्रिटेन और फ्रान्स ने उनका स्थान छीन लिया । इन्हीं विज्ञान और तकनीक में तुरत-फुरत प्रगति करने पर, उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यान्तर में, जर्मनी एक विश्व शक्ति बनने का स्वप्न देखने लगा । तत्पश्चात्, दूसरे विश्व युद्ध में गम्भीर हानि उठाने पर भी, जर्मनी और जापान ने स्वयं को शीघ्र संभाल लिया और फिर समृद्धिशाली बन गये, जब कि विज्ञान और तकनीक की कमी के कारण, भारत और पाकिस्तान उनकी तुलना में चौथाई भी उन्नति नहीं कर पाये। किसी भी राष्ट्र की असली दौलत तो अपनी जनसंख्या के ज्ञान की स्थिति है। जो भी राष्ट्र विज्ञान तथा तकनीक की संभाव्यताओं के प्रति उदासीन और असावधान रहेगा, वह सदा पिछड़ा रहेगा।

हमें यह जानना चाहिये कि पिछले सौ वर्षों में संसार इतना बदल गया है, जितना वह 50 शताब्दियों में नहीं बदला था। साधारण मनुष्य के जीवन में 1877 और 1977 के बीच की खाई कहीं अधिक उस अन्तराल से चौड़ी है, जो 1877 के तथा ईसा से पूर्व मानव-जीवन में थी। इसको प्रोफेसर एस. सम्पथ ने इन सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्त किया है—"आज जिन जटिलताओं में हम फँसे हैं, उन्हें एक सौ वर्ष कोई जानता तक नहीं था। बिजली के जेनरेटर (जनित्र) और लैम्प नहीं थे; बाइसिकल और स्वचालित वाहन नहीं थे; टेलीफोन, फोनोग्राफ या चलचित्र नहीं थे; एक्सरे और सम्वेदनहारी दवायें नहीं थीं; फ्रिज या धूल साफ़ करने के पम्प नहीं थे; प्लास्टिक्स या काष्ठ से अख़बारी कागज नहीं मिले थे; डाइनेमाइट या अणुबम नहीं देखे थे । गगन चुम्बी

अट्टालिकायों को बनने में वर्षों की देर थी, निर्माणक इस्पात और लिफ्टों के बनने की वे बाट जोह रही थीं। जीवाणुओं के विषय में डाक्टरों को जानकारी नहीं थी और इसी कारण रोगाणुरोधक दवाइयों का चलन नहीं था।"

फिर भी आगामी एक सौ वर्षों की तुलना में ये परिवर्तन बहुत कम माने जायेंगे। 2077 के मनुष्य हमें बहुत ही पिछड़े हुये मानेंगे। प्रो० सम्पथ के शब्दों में—"मात्रा के अनुसार यह विदित है कि जिस गति से ज्ञान बढ़ रहा है । उससे जब कोई मनुष्य 50 वर्ष का होगा, तब उस समय ज्ञान उसके जन्मकाल से 32 गुणा अधिक हो जायेगा। दूसरे शब्दों में, जन्म लेने के समय से उसने जो ज्ञान विश्व में प्राप्त किया है, उसका 97 प्रतिशत ज्ञान वह है, जो उसके जीवनकाल में विकसित हुआ है।"

उपसंहार : केवल उत्तम वैज्ञानिकों से ही कोई राष्ट्र महान नहीं बनता । पच्छिमी जर्मनी, पूर्वी जर्मनी, बर्लिन तथा आस्ट्रिया—सभी जर्मनी भाषा भाषियों का संयुक्त राष्ट्र कई विषयों में अमेरिका और रूस से सफलतापूर्वक होड़ कर सकता है; किन्तु कैसर और हिटलर जैसे राजनीतिज्ञों के कारण ऐसा कभी हो नहीं पाया। कठोर परिश्रम का पाठ भूल जाने से, ब्रिटेन पिछड़ा जा रहा है। जिस जापान में शिक्षा का निम्नतम स्तर ऊँचा होने से व्यक्तिगत निपुणता पहले ही ऊँची है, वहाँ कठोर परिश्रम के कारण आर्थिक प्रगति सातवें आसमान पर चढ़ी जा रही है। निद्रा से झकझोर कर एक राष्ट्र फ्राँस को उन्नति के चार चाँद लगाने वाला एक महान नेता दिगाले ही पर्याप्त हुआ। उत्तम शिक्षा के फलस्वरूप ही, रूस ने काकेशिया, मध्य एशिया तथा साइबेरिया के विशाल क्षेत्रों को मध्यकालीन युग से निकाल कर आधुनिक युग की पंक्ति में बिठा दिया। उत्तम संचार-व्यवस्था के कारण, अमरीका में एक नये विचार को साधारण जन तक पहुँचाने में रूस से भी कम समय लगता है। परन्तु निहित स्वार्थों के शक्तिशाली प्रभाव के कारण अपराधों और दवाइयों की बहुलता से अमरीका मानव जीवन की मान्यताओं से विमुख होता जा रहा है।

यह सब हमें यही बताता है कि किसी राष्ट्र की महानता, सब क्षेत्रों में उसके ज्ञान और सक्षमता पर निर्भर करती है । जैसा कि एम. जान. डबल्यू गार्डनर ने कहा है —"चाहे मुख्य डिज़ाइनर की गलती हो या कोई तकनीकी कर्मचारी ठीक से पेंच नहीं कस पाया हो, मिसाइल मार्ग में नहीं उड़ सकती है। दोनों ही प्रकार से, परिणाम एक ही जैसा होता है। हमें सभी स्तरों पर उत्तम कार्य चाहिये । हमें कुशल वैज्ञानिकों के साथ कुशल बढ़ई भी चाहिये; निपुण अध्यापकों के संग निपुण नलसाज़ भी चाहिये तथा चाहिये उत्तम काबीना मंत्रियों के सहित उत्तम बस-चालक भी।"

ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर में अस्पताल

केवल ढाई वर्ष पहले ही, ग्रुप केन्द्र दुर्गापुर गठित किया गया था। आज, वह देश में के० रि० पु० बल के सर्वोत्तम ग्रुप केन्द्रों में से एक है।

2 दिसम्बर 1977 को, श्री एस० एम० घोष ने इस ग्रुप केन्द्र का निरीक्षण किया। श्री एन० स्वेन, महानिरीक्षक सेक्टर II, श्री आर० के० त्रिवेदी, उपमहानिरीक्षक, कलकत्ता

रेंज तथा कर्नल (रिटायर्ड) पी० के० जैन उपानेदेशक (निर्माण) उनके साथ गये । उस समय, सघन छायावाले वृक्षों, पुष्पों तथा हरीभरी घास से परिपूरित इसका परिसर बड़ा सुहावना लग रहा था। महानिदेशक के पहुँचने पर, 41 बटालियन के पुलिसजनों ने सम्मान-गारद दी।

10.5 लाख रुपयों की लागत वाले 30 बिस्तरों के अस्पताल के भवन का उद्घाटन, महानिदेशक श्रीघोष के निरीक्षण-काल का सबसे महत्वपूर्ण समारोह रहा । अपने भाषण में, श्री घोष ने उन सभी लाभों का वर्णन किया, जो इस नवनिर्मित अस्पताल भवन से अधिकारियों तथा जवानों को प्राप्त होंगे, क्योंकि उसका निर्माण चिकित्सा के सब पहलुओं को ध्यान में रख कर किया गया है। उन्होंने इस अस्पताल के निर्माण में कठोर परिश्रम करने वाले सभी लोगों को धन्यवाद दिया।

महानिदेशक ने **अफसर मेस** के भवन का भी उसी समय उद्घाटन किया। उन्होंने जवानों के साथ बड़ा खान खाया । तब एक सुखद वातावरण छा गया। वह जवानों के बीच घूम-घूम कर बातचीत करते रहे।

उन्होंने एक दरवार भी लगाया, जिसमें 41 बटालियन और इस ग्रुप केन्द्र के सभी सदस्य उपस्थित थे। उन्होंने जवानों तथा उनके परिवारों के लिए किये गये विविध कल्याणकारी कार्यकलाप भी देखे।

ग्रुप केन्द्र नागपुर में अस्पताल

दिनांक 7 दिसम्बर 1977 को; ग्रुप केन्द्र नागपुर में , निर्मित अस्पताल का उद्घाटन श्री एच. बीरभद्रैया महानिरीक्षक से० I ने किया। इससे पूर्व 'पूजा' की गई, जिसमें ग्रुप केन्द्र, 29 बटालियन तथा केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अस्पताल में बहिरंग कक्ष के साथ, 10 संक्रामक रोगों के बिस्तरों तथा 20 साधारण रोगियों के विस्तरों की व्यवस्था है। उसकी लागत 12.50 लाख रुपये आई है।

रेल में स्थान रिजर्व कराने के खर्चें की अदायगी

भारत सरकार ने यह निर्णय लिया है कि 1 जनवरी 1978 से निश्शुल्क छुट्टी (फ्री लीव) पास या विलग सैन्यदल निश्शुल्क छुट्टी (डिटैचमेंट फ्रीलीव) पास पर रेलवे वारण्ट का प्रयोग करने वाले सभी सरकारी कर्मचारी (दिन यात्रा में) एक सीट (बैठने का स्थान) तथा (रात्रि यात्रा में) एक वर्थ (शयन स्थल) को रिजर्व कराने के व्यय की प्रतिपूर्ति सरकार से करा सकते हैं।

॥ सूक्तिसुधा ॥

उद्दण्डता सम्पत्ति को उसी प्रकार नष्ट कर देती है, जैसे बुढ़ापा सुन्दर रूप को।

—वेदव्यास

क्रोध साक्षात् यमराज है।

—चाणक्य।

दुर्भाग्य को लाने वाले ये पाँच लक्षण हैं— मूर्खों से मंत्रणा 2. दुष्टों से प्रीति 3. पथ्य आहार से द्वेष 4. समर्थ व्यक्ति से विरोध तथा 5. आलस्य

—क्षेमेन्द्र

उत्तम चरित्र मनुष्य रूपी वृक्ष का सुगन्धित पुष्प है, जो सब को आकर्षित करता है और सब को प्रसन्न करता है।

—मंगलदेव।

उत्तम चरित्र ही कुलीन पुरुषों का परम धन होता है।

—बाल्मीकि।



दुर्गापुर ग्रुप केन्द्र अस्पताल उद्घाटन करते हुये महानिदेशक श्री एस०एम० घोष

मज़ार

शहीदों के मज़ारों पर लगेंगे साल भार मेले । वतन पर मरने वालों का यही अंजाम होता है।

भारत के छोटे से राज्य मणिपुर की सुन्दरता के बारे में जितना भी कुछ लिखा जाए, शायद वह कम होगा। यह राज्य बर्मा, नागालैंड, उत्तरी कच्छार तथा मिज़ोरम के पर्वतों के बीच स्थित है। इसके पर्वतों की ऊँची-ऊँची हरीभरी चोटियाँ आसमान से बातें करती हैं, जो अपनी सुन्दरता का उदाहरण आप ही हैं । इम्फाल मणिपुर की राजधानी है, जो एक मनोहर घाटी में स्थित है। उसको देखने के बाद, कश्मीर घाटी की शोभा भी मन्द पड़ जाती है । इम्फाल पहुँचने पर ऐसा लगता है, मानों टोकियों में पहुँच गये हैं।

यों तो द्वितीय विश्व युद्ध से लेकर आज तक, भारत के वीर जवानों ने मणिपुर का कोई स्थान नहीं छोड़ा है, जहां उन्होंने अपनी कुर्वानी की अमर कहानी नहीं लिखी हो; पर जिस स्थान का इस लेख में वर्णन है, वह है तमिंग लांग का ज़िला । द्वितीय विश्व युद्ध में ही, एक सड़क आई. टी. रोड. (इम्फाल तमिंग लांग मार्ग) बनायी गई थी, जो इम्फाल से तमिंगलांग तक जाती है। इस सड़क के हर मोड़ पर हमारे जवानों ने कोई न कोई अमिट याद छोड़ी है। इसलिये, हमारे फोर्स के लिये इसका बड़ा महत्त्व है।

यदि तमिंगलांग से उत्तरी कच्छार की तरफ मुँह करके खड़े हों, तो सामने बैराक नदी बहती है। नदी के उस पार, पहाड़ियों की एक श्रृंखला है, जिसके ऊपर आजकल सुरक्षा दलों की दो चौकियाँ हैं । दाहिनी चौकी का नाम आजूरम है तथा बायीं चौकी का नाम जोती पवरम है। अगर नज़र को थोड़ा और आगे बढ़ायें, तो ठीक उसी के पीछे एक दूसरी श्रृंखला है। इन दोनों श्रृंखलाओं के बीच में मकरू नदी नागिन की तरह बल खाती हुई बहती है। इस दूसरी श्रृंखला के ऊपर भी दो चौकियाँ हैं। इनमें दाहिनी चौकी का नाम तोसम खुलीन तथा बायीं चौकी का नाम अबिन है। इस श्रृंखला के पार, फिर एक नदी जरी बहती है, जिसके उस पार उत्तरी कच्छार है। वैसे तो ये चारों चौकियाँ तमिंगलाँग से भली भाँति नज़र आती हैं; पर ऊबड़-खाबड़ पर्वत तथा बलखाती नदियों के कारण, इन चौकियों पर जाना काफी मुश्किल होता है। खासकर, वर्षा के दिनों में । इसीलिये, ये चारों चौकियाँ वायु सेवा से जुड़ी (एयर मेन्टेंड) हैं। आज कल बराक नदी पर एक पुल भी बना दिया गया है; उस पुल तक तमिंगलाँग से अब जीप भी आती-जाती है।

चौकी तोसम खुलीन पर पहुँचते ही, गेट (द्वार) के पास दाहिनी तरफ एक सुन्दर मज़ार है। मज़ार पर्वत की तरह ही शान्त है; बिल्कुल शान्त; इसके पत्थर हर आने-जाने वाले को अपनी कुर्बानी की कहानी पुकार-पुकार कर कहने के लिये क्षण-प्रति-क्षण व्याकुल हैं—वह कहानी, जिसको कोई लेखक कितना भी चाहे उसे पूरा नहीं कह सकता । हमेशा हँसता रहने वाला वह चेहरा, जिसके ऊपर कभी भी परेशानी

का चिह्न नहीं था, आज बिल्कुल शान्त मज़ार का रूप धारण किये बैठा है। पंजाब की पावन भूमि पर जन्म लेने वाला यह वीर अपने वृद्ध माता-पिता के सैकड़ों वचन देकर यहाँ आया था। यही नहीं, बल्कि आते समय, अपनी अर्धांगिनी को भी यह विश्वास दिला कर आया था कि यहाँ आते ही अपने कमांडैंट से आज्ञा लेकर अपने साथ इस स्वर्णभूमि पर उसे ले आयेगा, जहां पर कृष्ण भगवान तथा अर्जुन ने भ्रमण किया था। नन्हीं बहिन को राखी के बदले में मणिपुर से वह क्या-क्या सौगातें भेजने के वचन दे आया था ?

उस चौकी पर पहुँचते समय, उसके दिल में सैकड़ों अरमान तथा हसरतें अगड़ाइयाँ ले रही थीं। पर शोक आज वह सारे वचन भूल कर, सब कसमें तोड़ कर तथा अपने संगी साथी, रिश्ते-नातेदारों को तड़पता छोड़कर अपनी कर्त्तव्य की वेदी पर एक मज़ार-सिर्फ एक मज़ार बन कर रह गया है । यह मज़ार है 44 वाहिनी के वीर सिपाही निर्मल सिंह का। जीवन और मृत्यु प्रकृति की देन है; कहने का मतलब है कि जो भी जीव जन्म लेता है, उसकी मृत्यु भी निश्चित है। इसी विषय में, श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को गीता का जो उपदेश दिया था; उसका गुणगान सभी धर्म करते हैं। वे पुरुषधन्य हैं, जो देश तथा धर्म के लिये अपने प्राण भी अर्पण कर दें। हमारा इतिहास ऐसे ही की वीरपुंगवों की गाथाओं से भरा पड़ा है, जिन्होंने अपने देश की रक्षा के लिये, अपने माता-पिता, स्त्री-सन्तान तथा संगी-सम्बन्धियों को त्याग कर मातृभूमि की सेवा की है और इसके गौरव को बढ़ाया है।

हमारे देश के जवान आदि काल से दूसरों के लिये अपने शरीर का बलिदान करते आये हैं। किसी ने इसी सम्बन्ध में सच कहा है—

विचार लो कि मृत्यु है,
तो मत्यु से डरो नहीं।
मरो परन्तु यों मरो,
कि याद जो करें सभी॥
हुयी न यों सुमृत्यु तो,
वृथा मरे, वृथा जिये।
मरा नहीं वही कि जो,
जिया न आपके लिये ॥

मरना तो सब को है, चाहे वह खाट पर मरे या रणभूमि में देश रक्षा के लिये प्राण दे। परन्तु दोनों की मृत्यु में अन्तर यह है कि जब कि औरों को कोई जानता भी नहीं है, तब एक शहीद का गुणगान देश के सभी निवासी मस्तक ऊँचा करके गाते हैं। उसके मज़ार पर, हर वर्ष फूल और मालायें चढ़ायी जाती हैं और वहाँ पर मेला लगता है। उसका नाम इतिहास के पृष्ठों में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता हैं, जिनकों पढ़ कर आने वाली पीढ़ियों में उसंग और उत्साह हिल्लोरें मारने लगते हैं।

॥ विज्ञान के चढ़ते चरण ॥

वियना टेकनीकल विश्वविद्यालय ने क्रोमियम, निकल और कोबाल्ट से कृत्रिम घुटने तैयार कर चिकित्सा में क्रान्ति ला दी है। वृद्धावस्था के गठिया आदि रोगों तथा दुर्घटनाओं सम्बन्धी पीड़ा को ये घुटने वरदान सिद्ध हुये हैं, क्योंकि बिना झटकों और कष्ट के इन घुटनों की सहायता से मनुष्य प्राकृतिक चाल चल सकता है।

रूस ने सूती, ऊनी, कृत्रिम और काँच के धागे बनाने के लिये ऐसी मशीन तैयार की है, जो मानव श्रम को आधा कर देती है।

शैबाल घास में एक द्रव्य क्लोरल होता है जो पानी से मिल कर क्लोरल हाइट्रेड बनाता है; इससे खाद्यसमस्या हल हो सकती है। साथ में, इस घास को तेल या गैस में भी बदला जा सकता है।

दिल्ली में इन्हीं दिनों हुये अन्तर्राष्ट्रीय सौर ऊर्जा सम्मेलन में सौर ऊर्जा से बनाई गई एक झोपड़ी थी। जिसमें पंखा, ट्यूब लाइट और पानी का पम्प सौर ऊर्जा से चल रहा था। वहाँ, हालैंड मे एक ऐसा टी० बी० (दूर दर्शन) सेट का भी प्रदर्शन किया, जो सौर ऊर्जा से चलता था।

अपराध और दण्ड-विधि

वर्ष में किये गये अनेकों अपराधों के अभियुक्तों को पता लगाने के लिये राष्ट्र की वर्तमान मनोवृत्ति को देखते हुये, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अपराधियों के साथ किये जाने वाले व्यवहार पर पिछले दिनों में महत्वपूर्ण घोषणाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। एम्नेस्टी इन्टरनेशनल (अन्तर्राष्ट्रीय क्षमादान) नामक लन्दन में स्थापित मानव अधिकारों के संगठन ने (जिसको 1977 में शान्ति के लिये नाबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था) स्टाकहोम पर मृत्युदण्ड जैसे क्रूर, अमानवीय तथा अपमानजनक दण्ड को राज्यों द्वारा समाप्त करने के लिये एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया। कई उदार लोकतन्त्रीय देशों के सरकारी प्रतिनिधियों ने उसमें भाग लिया । और इस मूर्द्धन्य दण्ड को समाप्त करने की मांग की। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति वी० आर० कृष्णाय्यर ने अन्य भाग लेने वालों के साथ अपने 'दण्ड सम्बन्धी विचार' प्रकट करते हुये कहा—"नरहिंसा बर्बर है और सोही उसका निबटाना"। इसी बीच में, सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्णय लिया है कि अपराधियों को कठोर और दीर्घकालीन दण्ड बहुधा आत्मविनाशी हो जाता है, और इस लिये कारागार में प्रतिशोधात्मक दण्ड देने के स्थान पर, अपराधियों को फिर से समाज में प्रतिष्ठा दिलाने पर अधिक बल देना चाहिए—अन्यथा न्यायालयों द्वारा दण्ड के माध्यम से सुधार लाने का सारा ध्येय नष्ट हो जायेगा।"

दण्ड व्यवस्थात्मक विचारधारा में ऐसे स्वागत योग्य सुझावों को मजबूत बनाना

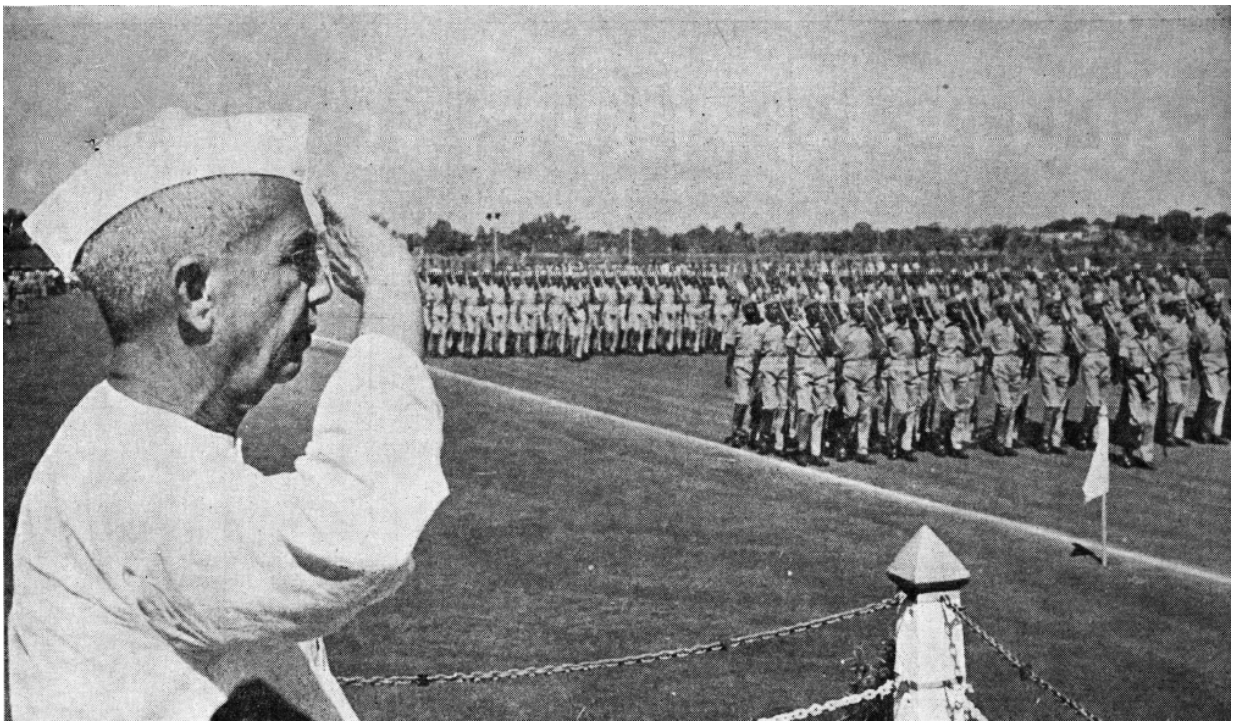
पड़ेगा, क्योंकि अपराध और दण्ड व्यवस्था के समूचे विकल्प के एक नये मानवीय आयाम का सूत्रपात ये करने जा रहे हैं। इस संदर्भ में, दण्डशास्त्रियों को यह अध्ययन करना जरूरी है कि हालैंड के न्यायालय और जनसाधारण, कारागार को सब से आखिरी उपाय क्यों मानते हैं। यदि एक राष्ट्र मनुष्य के सद् विवेक पर विश्वास कर सकता है, तब अन्य देश ऐसा क्यों नहीं कर सकते हैं ? विश्वविख्यात अपराधशास्त्री सर लियोन रेडज़ीनोविक्ज ने कहा है कि दण्ड तो वह क़ीमत है, जिसे कुछ सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्थाओं के लिये संसार को चुकानी पड़ती है और नियंत्रण तथा निरंकुशता, (आक्रमक या बलि के रूप में) व्यक्ति तथा राष्ट्र, इन दोनों के बीच में एक संतुलन बनाये रखना जरूरी है। "अनेक कमियों के होते हुए भी आपराधिक क़ानून केवल शक्तिशालियों के विशेषाधिकारों को सहारा नहीं है, बल्कि बलवानों और धोखेबाजों के चंगुलों से बचाने के लिये, वह निर्धन तथा कमजोर वर्गों की मानवीय स्वतन्त्रताओं के लिए एक ढाल है। इस सन्दर्भ में, कानून की कठोरता को, सामाजिक चिन्ता की अभिव्यक्ति का रूप मानना पड़ेगा। जानबूझ कर बर्बर अपराध के लिये क़ानून की कठोरता की उपयुक्तता तो समझी जा सकती है; किन्तु इसके अर्थ ये नहीं है कि अपराधियों से निपटने के समय आपराधिक न्याय की समाप्ति को या सोची समझी अमानवीयता को, भी हम स्वीकार करलें' एक दीर्घकालीन कमी लाने के लिये अन्य उपायों की भाँति ऐसा भी करना सम्भव नहीं है। इससे अपराध के पापी सिर पर तो और पापों का ढेर लगेगा।"

इस सिद्धान्त के सर्वोत्तम पक्ष को स्वीकार करते हुए भी, कुछ प्रख्यात अपराध-शास्त्री यह पूछते हैं कि क्या वास्तव में कठोरता का कोई औचित्य है, जिसको कुछ मत्युदण्ड का पर्याय मानते हैं। उदाहरणार्थ एक आजीवन बन्दी की सच्ची कहानी "लाइफ" नामक पुस्तक के लेखक जेनों ने 1958 में एक मनुष्य को मार डालने का अपराध इस विश्वास पर स्वीकार किया कि इस अपराध को सोच समझ कर करने के कारण उसे प्राण दण्ड मिलेगा। उसे यह याद् रहा ही नहीं कि गोली से भूनने के स्थान पर छुरे मे मार डालने के कारण, उसके जैसे अपराध के लिये 1957 के नर हत्या अधिनियम ने मत्यु दण रद्द कर दिया है। तब जेनो को दिया गया आजीवन कारावास का दण्ड उसके अपराध के हिसाब से क्या ज्यादा कठोर नहीं था ? मत्यु दण्ड पर शाही आयोग (1949-53) के सामने ब्रिटिश गृह कार्यालय के स्थायी अवर सचिव ने कहा था—"हत्यारे बुरे आदमी नहीं होते हैं।" उसके कहने का तत्पर्य यह था कि वे अपराध करने के आदी नहीं होते हैं और जेल में दिक़ नहीं करते । ऐसी ही डगलस कर्टिस की प्रसिद्ध कथा है, जिसकी पुस्तक 'एक कैदी स्नातक की आत्मकथा' (आटोबाइग्राफी ऑफ ऐ प्रिजन ग्रैजुयेट) ने क़ानून के समक्ष जब यही पहले पहल प्रकट किया कि उसकी निर्धनता ही उसका अपराध मात्र थी, तब ब्रिटिश के अपराधिक शास्त्र वाले संसार में तहलका मच गया। अपनी पत्नी का पालन-पोषण नहीं कर पाने के कारण, उसे जेल में ठूँस दिया गया और इसी ने उसके अन्दर समाज और उसके नियमों के विरुद्ध घृणा की ज्वाला जगा दी।

आधुनिक रुझान यह है और यह सही भी है कि हरेक अपराध को मनोवै ज्ञानिक,

न्यायसंगत तथा नैतिक आधार पर परखना चाहिए। अपराधी अब यमदूत नहीं हो कर, रोग विज्ञान का विषय बन गया है। और इसके स्वाभाविक परिणाम स्वरूप, दंड अपराध की चिकित्सा है। दंड की कठोरता की अपेक्षा धरपकड़ की तहकीक पटसन की रस्सी के छोर पर तड़पती हुयी मृत्यु का डर-अपराध रोकने का सच्चा उपाय माना जाता है। अपने अपराधियों के व्यवहार करने की रीतियों से ही आज नागरिकता का स्तर मापा जाता है। कुछ दिनों पहले तक, बदला लेने का नकारात्मक कार्य ही केवल दण्ड-व्यवस्था का ध्येय समझा जाता था। समाज में अपराध को फिर से प्रतिष्ठित करने के विचार को मौखिक सहायता जरूर दी जाती थी, किन्तु अपराधी की बुराई की मात्रा से सरकार का कोई सरोकार नहीं था तथा इस से भी कम था दण्ड के परिणाम में; बल्कि यह तो दूसरों के ऊपर पड़ने वाला असर पर छोड़ा जाता था। परन्तु कुछ भी हो, प्रबुद्ध राष्ट्रों अब विचार बदले हैं। उदाहरणार्थ, ग्रेन्डन के प्रथम ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक जेल में उद्देश्य यह रखा गया है कि बन्दी अपने सुधार की जरूरत को समझे और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी महसूस करे। ग्रेन्डन वह स्थान है, जहां किसी भी बन्दी में वहाँ के अपेक्षाकृत स्वतंत्र वातावरण के कारण आत्म-सुधार अधिक करने की तथा इस मनोवैज्ञानिक चिकित्सा-प्रणाली की सफलता में स्वेच्छापूर्वक सहयोग देने की सच्ची इच्छा देखी जाती है और देखी जानी भी चाहिए। किन्तु दुर्भाग्य से अनेकों, अन्य देशों में, जानबूझ कर या वैसे भी अपराधियों में पाप की स्थायी भावना तथा समाज के प्रति घृणा की दुर्बुद्धि उत्पन्न की जाती है, जिससे उसके प्राण वज्र पापी बन जाते हैं। अतएव, अब समय आ गया है, जब अपराध तथा अपराधी के प्रति दृष्टि कोरण के बदलने की जरूरत पर भारत सरकार को गम्भीरतापूर्वक सोचना चाहिए।

[ट्रिब्यून (चंडीगढ़) के सौजन्य से प्राप्त]



गृहमंत्री को चेक दान के समारोह में दिल्ली स्थित के० रि० पु० बल की सभी इकाइयों के जवान

बाढ़ पीडितों की आर्थिक सहायता :

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के विरुद्ध शिकायतें केवल राजनीति-प्रेरित

दिनांक 2 फरवरी 1978 को रवीन्द्र रंगशाला नई दिल्ली में, जब श्री एस. एम. घोष महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने तूफान पीड़ित देशवासियों की सहायता के लिये स्वेच्छा से इस बल के सभी सदस्यों द्वारा दिये गये एक दिन के वेतन वाला रु० 7,92,191 का चेक प्रधानमंत्री राष्ट्रीय सहायता कोष के हेतु श्री चरण सिंह, गृहमंत्री को भेंट किया, तब इस बल के सभी उपस्थित अधिकारी तथा जवानों के सम्मुख बोलते हुये, तूफान पीड़ितों के प्रति अपना कर्तव्य निबाहने के लिये, के. रि० पु० बल के सदस्यों को गृह मंत्री ने शाबाशी दी। उनके कथनानुसार, दान की मात्रा की तुलना में उसको प्रेरित करने वाली भावना का महत्त्व है । उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की कि के० रि० पु० बल अन्य संकटों के समय भी जनता की सहायता करता रहा है।

श्री चरण सिंह ने कहा कि सभी राज्यों से के० रि० पु० बल की माँग रही है; किन्तु कुछेकों की ऐसी भावना रही है कि उपद्रवों में के० रि० पु० बल ने कुछ कठोरता से काम. लिया है। इस पर उन्होंने यह जोड़ दिया कि उपद्रवों से निपटने में पुलिस को कठोर बनना ही पड़ेगा; किन्तु कितना अच्छा हो कि ये शिकायतें कम मिलें।

गृहमंत्री ने स्पष्ट किया कि के० रि० पु० बल के विरुद्ध शिकायतें राजनीति से प्रेरित

हैं। "जवानों की कांठेनाइयों की तो किसी को चिन्ता नहीं है; पर उनकी कार्यकुशलता का स्तर, लोग बड़े-बड़े विकसित देशों के स्तरों के बराबर देखना चाहते हैं।"

इससे पूर्व, इस बल के सदस्यों द्वारा तूफान पीड़ितों की स्वेच्छापूर्वक सहायता देने की चर्चा श्री एस. एम. घोष महानिदेशक ने की तथा विशेष रूप से मुख्य चिकित्साधिकारी आर. एल. सरकार और क्लर्क गुजराल द्वारा बड़ी धनराशि दान करने का उन्होंने उल्लेख किया।

वर्षों से तम्बुओं में रहते चले आने वाले जवानों की तक़लीफों की ओर भी, महानिदेशक ने गृहमंत्री का ध्यान आकर्षित किया और उनको स्थायी आवास की सुविधा देने की ज़ोरदार शब्दों में अपील की।

स्वतंत्र और सही चुनाव कराने वाली इस दल की भूमिका का भी उन्होंने उल्लेख किया। आगामी राज्य चुनावों तक में, बटालियनों की अच्छी अधिक संख्या देश के विभिन्न भागों में भेजी जा रही है-छै बटालियनें महाराष्ट्र को, चार प्रांध्रप्रदेश को, एक कर्नाटक को, तीन असम को और दो प्ररुणाचल प्रदेश को जा रही हैं। पहले ही, आंध्रप्रदेश, असम तथा मेघालय में एक-एक बटालियन निरत है और अरुणाचल प्रदेश में तो पाँच बटालियनें हैं। संभाव्य घटना से सुलझने के लिए तीन बटालियनों को अलग तैयार रखा जा रहा है।



तूफान पीड़ितों की सहायता के लिए श्री चरणसिंह, गृहमन्त्री को रु० 7.92 लाख का चेक अर्पित करते हुए

अनोखा बदला

लेखक—श्री जे० एस० शर्मा

वह मरी हुयी जिन्दा इन्सान थी या कोई ज़िन्दा लाश थी–इसका पहचानना कठिन था। उसके सड़े शरीर पर छाले पड़े हुए थे और उनसे मवाद बुरी तरह बह रहा था, जिससे दूर-दूर तक दुर्गन्ध फैल रही थी। तो भी उसके मुख पर ग्लानि की कोई टीस, चिन्ता का कोई उच्छवास तथा पीड़ा का कोई प्रात नाद नहीं था; बल्कि उसके नयनों में सन्तोष की कुछ चमक दीख रही थी। उसके मुख पर शान्ति की कुछ झलक दिखाई पड़ रही थी और हो भी क्यों न ? **अन्ततः उसने इस लम्पट-लिम्पाक समाज से बदला** ले लिया था। फिर आज तो उसकी चिर अभिलाष पूर्ण हुई थी। अपने अनन्य प्रियतम की गोद में उसके प्राण निकल रहे थे। उसका सिर अपने प्रेमी की जंघा पर रखा था; अपना एक हाथ उसकी चिबुक पकड़े हुए था और वह टुकुर-टुकुर उसके नेत्रों में अपने नेत्र डाल कर पागलों की तरह कह रही थी "ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद है कि अन्त समय में नरेन्द्र, मुझे तुम से मिला दिया।"

"अजीब इत्तिफाक़ है। मैं तो अपने मित्र के रोगी पिता की तबियत पूछने यहाँ अस्पताल आया हुआ था कि डाक्टर के कमरे से कोई जानी पहचानी छाया सी निकलती दिखाई पड़ी। पहले तो अपने नेत्रों पर विश्वास नहीं हुआ; किन्तु दिन दहाड़े ये इतनी दग़ा तो नहीं दे सकते । फिर भी पुष्टि के लिए मैंने आवाज लगाई। किन्तु तुम तो ऐसी बन गई मानों हो ही नहीं रागिनी।"

"तब तुम मुझे अब भी रागिनी समझते हो। छिः कंकालिनी-चंडालिनी-" कहते हए वह उठने की चेष्ठा करने लगी। परन्तु नरेन्द्र ने फिर लिटा लिया –"ऐसा मत कहो रागिनी। तुम आज भी मेरी हत्तंत्री में वैसी ही रागिनी बज रही हो।"

"यदि यह बात है, तब मुझे भी सन्तोष हैं कि ये नयन चकोर आज अपने मनोवांछित मुख-चन्द्र को देखते हुए सदा को मुंद जायेंगे । अब मैं निश्चिन्त होकर मर..."

नरेन्द्र ने तुरन्त रागिनी के मुख पर हाथ रख दिया "बस करो, बस करो, रागिनी, अभी तुम्हारी अवस्था ही क्या है ?"

"मेरी अवस्था हो या नहीं हो। किन्तु मेरी रोग की तो विषमावस्था है। देखते नहीं ये छाले, यह मवाद, यह बदबू-बस घड़ी दो घड़ी की मेहमान–"

नरेन्द्र ने फिर रागिनी के मुख पर हाथ रख दिया। वह यह मान्तेक बात सुनने को तैयार नहीं था। तभी उसने ढाढ़स बंधाया –

“क्यों निराश होती हो रागिनी। यह सब से बड़ा दिल्ली का अस्पतोल है। अब तो कैंसर टी० बी० तक के इलाजं निकल आये हैं।”

“निकल आये होंगे; परन्तु मैंने तो खुद इस रोग को इस हद तक बढ़ाया है। मेरे नरेन्द्र ! बोलो, कौन साधारण जन मौत चाहता है ? किन्तु किसी-किसी को मौत कभी ज़िन्दगी से अधिक सुन्दर लगती है।”

“मैं इसे कभी मानने को तैयार नहीं हूँ।”

“क्यों कि तुम्हें तलख तजुर्बा नहीं है । जिसने इस अधम समाज का नंगा रूप देखा है, व्यभिचार का दूधारा सहा है, जलालत की जिन्दगी बिताई है, उससे मौत की उत्तमता पूछो।”

“भावुकता में मत बहो रागिनी”

“कदापि नहीं। मैं बिल्कुल होश हवाश में हूँ। मैंने जीवन की विभीषिका देखी है; समाज की गन्दी गलियों की खाक छानी है; ऊँची-ऊँची कोठियों में बदचलनियों की वैतरणी बहती पायी है। छिः मैं अब एक क्षण और जिन्दा रहना नहीं चाहती।” फिर उसने घणा से नाक सिकोड़ी, प्रतिहिंसा से भौहें चढ़ायीं। “पर मुझे भी यह बदकार दुनिया खूब याद रखेगी। और तू मुझे धोखा देकर सता, मैंने भी सड़ा सड़ा तुझे मारा है। और तुम से पंच मकार वालों पंचजनों, मेरे क़ारेपन से खिलवाड़ करने का और मज़ा उठाओ । नरेन्द्र , सच कहती हूँ उन पाँचों में, तीन तो वे मेरी तरह सड़ गल कर मर चुके हैं और अन्य दो भी इसी असाध्य रोग में दम तोड़ रहे हैं।”

तभी रागिनी को हिचकी आई। नरेन्द्र ने घबड़ा कर डाक्टर बुलाना चाहा। परन्तु रागिनी ने तुरन्त हाथ से मनाह कर दिया – “मैंने तो खुद मौत को बुलाया है। वही मुझे अब निजात दिला सकती है। वरना जलील ज़िन्दगी की दर्दनाक दास्तान दुनिया के दिल को दहला देगी”

नरेन्द्र के मुख पर जिज्ञासा का चिह्न अंकित हुआ। उसकी भौंहें पूछने को ऊपर उठी; तभी रागिनी एक घिनौनी हँसी हँसी "इसे मैं विधि की विडम्बना कहूँ या लुच्चे समाज की काली करतूतें-मेरी समझ में नहीं आता। पहले तो पिताजी की अच्छी खासी सरकारी नौकरी को यह नीच समाज हड़ताल करवा कर खा गया। दादा लोग तो अपने हत्थकंडों से फिर बहाल हो गए; किन्तु मारे गए पिताजी जैसे निर्दोष बलि के बकरे !”

“सो क्यों कर?”

“छि: तुम तो ऐसी बात पूछते हो मानो मंगल ग्रह से उतर कर इस दुनिया में आये हो । दिन रात यही होता है–पाप करे पापी, भोगे पुण्यवान । उफ़, मध्यम श्रेणी के मेरे परिवार को दिन तारे दीखने लगे। एड़ी से चोटी तक का पसीना जब कहीं एक किया, तो जाकर इस दिल्ली के एक प्रेस में पिताजी को प्रूफ-रीडरी की नौकरी मिली और

वह भी किसी प्राइवेट प्रेस में । तुम तो खुद प्राइवेट नौकरी करते बताते हो । क्या नहीं जानते कि व्यापारी कितना खून चूस कर दमड़ी हाथ में पकड़ाता है। पर वह दो जून की रोटी भी इस दुर्दैव को खली । एक दिन रेल दुर्घटना में उन्हें वह जिन्दा खा गया। तब रोटी तक के लाले पड़ गये।"

"यह तुम मुझे क्या बताती हो ? तब तो मैं तुम्हारे सम्पर्क में आ चुका था। बल्कि कहीं न कहीं से, कुछ न कुछ जुगाड़ कर ही रहा था।"

"ठीक है। परन्तु तुम खुद बेरोज़गार थे। जो कुछ भी करते थे, घर वालों से लुक. छिप कर करते थे। मां को यह कभी पसन्द नहीं था कि तुम पर नाजायज भार डाला–"

"तुम कैसी बात करती हो। जब हम दोनों ने जीवन भर साथ निभाने का संकल्प कर लिया था—फिर नाजायज क्या बला"

"कुछ भी हो; जब तक कोई रस्म से नहीं बँधे थे, वह सरासर अन्याय था। इधर दो दिन से पेट में एक दाना नहीं पड़ा था। अन्त में, लाचार होकर मां ने मुझे कुछ जोवर बेचने के लिए भेजा"

"ओफ़।" नरेन्द्र ने दीर्घ श्वास ली।

"तुम अभी से ओफ़ कर बैठे । आगे सुनोगे तो रोमांचित हो उठोगे। जैसे ही बाहर निकली, हाथ में बैग हिलाती रोमा मिल गई"

"कौन रोमा ?"

"तुम भूल गए, जो थोड़े दिनों से मेरी सहेली बन गई थी, और जिसे एक दिन तुम भी ललचाई दष्टि से देखने लगे थे, तब मैंने बड़ी खरी खोटी तुम्हें सुनाई थी।"

"पर बोलो उसमें मेरा क्या दोष था ? वह बनी ही फिरती थी तितली।"

"तितली नहीं; वह नीली नागिन निकली; बड़ी विषैली गांठ"

"सो कैसे ?"

"वही मुझे बहका कर ले गयी कि मुझे रुपये उधार दिलवा देगी; साथ में कहीं नौकरी का प्रबन्ध भी करा देगी; अन्धे को क्या चाहिये ? दो आँखें । वह मुझे दरिया गंज के एक रेस्तराँ में ले गई; वहां चाय पिलाई और तलाऊपर दो फोन किये। फिर हँस कर बोली। "रागिनी, तू है बड़ी तकदीर की सिकन्दर । एक सेठ ने फौरन नौकरी की हामी भरली।"

"मैं फूली नहीं समाई। मैंने तहे दिल से रोमा को धन्यवाद दिया । उसने तुरन्त एक पाटोरिक्शा की और कनाट सरकस जा पहुँची । वहाँ वह किसी की बाट जोहने लगी। इधर देरी होने पर मुझे माँ की चिन्ता सताये जा रही थी। मैं घबड़ा कर लौटने लगी। तभी रोमा ने रोका–"अरे छुरी तले कुछ दम तो ले । देखना, सेठ ऐसे काम पर लगायेंगे कि तेरा सब दुःख-दैन्य दूर हो जायेगा।

इतने में ही, एक बड़ी कार रुकी और हार्न बजा। कार चालक सेठ ने आँख मारी;

रोमा हँसी। मुझे यह हरक़त बुरी लगी; परन्तु रोमा ने आग्रहपूर्वक कार में बिठा लिया–'अरे तू जानती नहीं। मालामाल हो जायेगी' कहते हुये अपने पाप सेठ से सट कर बैठ गई।

अब मेरा माथा ठनका; परन्तु तब बहुत देर हो चुकी थी। कार हवा से बातें कर रही थी। तुरन्त वह एक नयी बस्ती में चौमंज़िली बिल्डिंग के सामने रुकी। वे दोनों मुझे लिफ्ट से ऊपर ले गये। रोमा ने एक फ्लैट की चाभी अपने पर्स से निकाल कर दरवाजा खोला और मुझे अन्दर ले गई। उस समय मेरे नेत्र चकाचौंध हो गये; मेरा मस्तिष्क चक्कर खाने लगा। मुझे यह पता नहीं रहा कि मैं किस परीलोक में हूँ। इतना सुसज्जित, इतना सुगंधित, तथा इतना कामो द्दीपक था वह फ्लैट।

"पहले तो रोमा से सेठ रोमांस करता रहा। मेरे अचरज का कोई ठिकाना नहीं कि स्वयं को शील-संकोच की पुतली बनने वाली रोमा कैसी तितली सी सेठ पर मँड़रा रही थी। तभी मेरा दिवा-स्वप्न टूटा-कारण; कि रोमा ने मुझ से छेड़कानी शुरू की। मैंने तुरन्त भौंहें चढ़ायीं और डाटा--फटकारा "तुझे इस प्रकार निर्लज्जता करते शर्म नहीं आती। परन्तु वह तो नीच थी, उसके इरादे नीच थे। फौरन सेठ से कहने लगी-'नयी मैना डोरे डालते फुदकती ही है।'

तब मेरी आँखें खुलीं कि किस गन्दे जाल में मैं फाँसी गई हूँ। पहले तो मैंने रोमा के हाथ जोड़े और जाने की आज्ञा मांगी; परन्तु रोमा कच्ची गोली नहीं खाये थी। उसने दरवाजा रोक लिया–"अरे अनुराग से ही रागिनी का महत्व है"। इस पर मैं आगबबूला हो गई और रोमा को धक्का देकर वहां से बच भागने लगी। तभी सेठ ने मेरी बाहें पकड़ ली और दूसरे कमरे में खींच कर ले जाने लगा। रोमा सेठ की बराबर सहायता करती रही। मैं चीख चीख कर चिल्लाती रही और रोमा से यही पूछती रही–'अरी चुड़ैल की जनी। बता मैंने तेरे साथ कौन सा गुनाह किया है, जो तू मुझे यह दगा दे रही है।'

परन्तु वह तो थी पूरी कुलटा। वह स्वयं वेश्यावृत्ति करती थी और मुझे फंसाकर इसी काम के लिये लायी थी। सहायता के स्थान पर रोमा स्वयं सेठ के साथ मेरा वस्त्र खींचने लगी। मुझे उस समय द्रौपदी हरण की याद आयी।-परन्तु कलियुगी द्रौपदी की पुकार कौन कृष्ण सुनता !

रोमा की सहायता से, वह वृद्ध काम पिपासु भेड़िया, मेरे अरण्यरोदन पर अपनी वासना का अकांड तांडव करता रहा।

"आखिर वह कौन था पापी पुचल" नरेन्द्र ने दांत किट किटाये।

"जिसको समाज 'सेठ-साहूकार' 'धर्मावतार' मानता है उसकी कॅनाट प्लेस में जौहरी की दुकान है, यही नहीं, तीन चार और शाखायें भी दिल्ली में ही हैं"

"हूँ, तब भी तुम आ जाती रागिनी। मैं बाहें पसार कर अंगीकार कर लेता। तुम्हें नहीं मालूम कि तुम्हारी बेचारी मां घबड़ायी हुयी दौड़ी दौड़ी मेरे पास आई। हमने नगर के अस्पताल छानें, थानों में पूछताछ की। परन्तु तुम्हारा पता नहीं चला"

“पता चलता भी कैसे ? मुझे तो वहीं बन्दी बना लिया गया। राक्षसी रोमा मेरी पहरेदार बनी और मेरे–“कहते हुये रागिनी बिलख-बिलख कर रोने लगी। नरेन्द्र ने उसके अश्रु पोंछते हुये सान्त्वना देने का यत्न किया” “सब्र करो”-सब्र का शब्द सुनते ही, रागिनी नागिनी सी फुत्कारने लगी। “तुम कहते हो सब्र करो। छिः एक वही ही नहीं; और भी चार संभ्रान्तशठ मेरी लाश का सौदा करके मनमानी क–”

“ओफ! नीच अपने पर ही कनात कर लेता” नरेन्द्र ने प्रक्षुब्ध स्वर में कहा।

“उसे मुझ से नहीं, मेरे यौवन से प्यार था; मेरे रूप से आसक्ति थी, वर्ना तुम्हें जान कर आश्चर्य होगा कि तुम जैसे तो बड़े बेटे-भतीजे उसके थे, जो दुकानों को संभालते थे, जब वह दुष्ट हुस्न का बाजार गर्म करता था”

“छिः छिः”

“वही नहीं; और भी जो चांडाल चौकड़ी थी, वह भी उसी की आयु वाली ही थी और उसी की भांति संभ्रान्त, सभ्य तथा सम्मानित। उनमें एक था गज़ टेड अफसर, दूसरा था नामी वकील, तीसरा था एक्सपोर्ट इम्पोर्ट कम्पनी का मैनेजर तथा चौथा तो वह था, जिसको तुम स्वप्न में भी नहीं सोच सकते–”

“आखिर ऐसी कौन हस्ती ?”

“वह था एक बड़े मंत्री का प्राइवेट सेक्रेटरी”

“हे प्रभो, जिनको समाज में पूजा जाता है, सफेद पोश सद्वशंज समझा जाता। है तथा जिनको समाज की बागडोर दी जाती है।”

“तुम नहीं जानते नरेन्द्र। समाज में जितना जो ऊँचा बनता है, मन से उतना ही नीच होता है। भगवान के लिये मँगाये फूल, तवायफ़ों के गले की शोभा बढ़ाते हैं। यह समाज व्यभिचार, बलात्कार तथा भ्रष्टाचार की वेदी है, जहाँ लम्पट, लिम्पाक तथा लुटेरों की पूजा के लिए निस्सहाय, निष्पाप तथा निर्बल भेंट चढ़ाये लाते हैं।”

नरेन्द्र सुनते सुनते पागल सा हो गया। बह फिर बोला “और तुम्हारी माँ इधर–”

“हाँ, हाँ इधर क्या हुआ” कहते कहते रागिनी ने नरेन्द्र को आवेश में झकझोर डाला “बोलो-नरेन्द्र। मेरी माँ कहाँ हैं ? कैसी है ?”

नरेन्द्र को काटो तो खून नहीं था : उसके नेत्रों से अविरल गंगा जमना बह रही थीं। बारम्बार रागिनी के अनुरोध पर, नरेन्द्र ने साहस बटोरा तथा बताया कि उसकी माँ उसका नाम रटते-रटते बावली हो गयी थी। परन्तु स्वार्थी विश्व पर कहाँ इतनी सहानुभूति थी और कहाँ इतना अवकाश। पहले तो कुछेकों ने दौड़धूप की भी; परन्तु धीरे धीरे सब भूल गये और उस बेचारी को उसके भाग्य पर छोड़ दिया। कहते हैं कि वह तुम्हारी याद में बिल्कुल पागल हो गई।’

यह सुनते ही मृतप्राय रागिनी की रगों में खून खौल गया। उसने भूखी बाघिनी की भांति नरेन्द्र के गले को दबोच लिया “मुझे तुम से ऐसी आशा नहीं थी–”

“मुझे स्वयं भी ऐसी आशा नहीं थी। परन्तु दुर्दैव ने मेरे साथ भी क्रूर खेल खेला।

मुझे दिल्ली से निकाल कर गाज़ियाबाद में नौकरी दिलाई; बोलो, रागिनी। पापी पेट के कारण क्या नहीं करना पड़ता है।" नरेन्द्र ने निश्वास ली और फिर धीमे से बोला "मैंने 'माँ' से अपने साथ चलने को कहा; परन्तु उसने मेरी एक नहीं मानी। वह यही चीख-चीख कर मर गयी-दुनिया वालो, मुझ पर जुल्मोसितम ढाह लो; पर मेरी मासूम रागिनी को मत छेड़ो-उसे । भैरवी में मत बदलो।"

कहते कहते नरेन्द्र का कण्ठ अवरुद्ध हो गया। वह दिङमूढ़ सा रह गया। इधर रागिनी दारुण दुःख से पत्थर सी मौन हो गयी। इस प्रकार वातावरण में कुछ देर भैरव नीरब छाया रहा। फिर नरेन्द्र का ध्यान रागिनी पर गया "–क्रूर समाज ने तुम्हारे साथ खिलवाड़ किया तो किया, पर तुमने अपने साथ यह क्रूर खिलवाड़ क्यों किया पगली।"

"बदला-प्रतिहिंसा-वैरशोधन–मैंने तीन मास के उस रौरव नरक में सिर्फ एक संकल्प किया और वह था उन दुराचारियों से मय व्याज के प्रतिकार लेना"

"पर इस प्रकार तो तुमने स्वयं को सड़ा गला डाला। उन सामर्थ्यवालों का इससे क्या बिगड़ा"

"बिगड़ा और खूब बिगाड़ा। अभी कहा ना तीन को तो मैं मौत के घाट उतार चुकी हूँ और बाकी दो भी अन्तिम सांसें ले रहे हैं।"

"क्या सच ?" नरेन्द्र ने आश्चर्यान्वित नेत्रों से देखा।

"क्या मैं तुमसे झूठ बोलूँगी? पहले तो घोर निराशा में मैंने आत्महत्या की ठानी। परन्तु तुरन्त उन पापिष्ठों के दुर्दान्त रूप सामने आये। उनसे बिना बदला लिये मरना मेरी अन्तरात्मा ने कबूल नहीं किया। तब मैंने उनको गला घोटकर मारना चाहा। पर वे सब मुझ से अधिक बलवान थे। रात्रि को सोते हुये भी, मैं एक का ही वध कर सकती थी। तदुपरान्त, बाक़ी मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेंगे । यह सोच कर मैं सिहर गयी। मेरा मस्तिष्क सुन्न पड़ गया। मैं लेट गयी; तभी पलंग पर पड़ी एक यौनाचार सम्बन्धी पत्रिका दिखाई दी। छिः कैसे अश्लील चित्र; कितनी गन्दी बातें उसमें थीं कि उसे बन्द करने को मन हुआ। पर तभी एक विचित्र प्रकार की हत्या की कथा पर मेरी दृष्टि गयी। मैं एक बार में ही सब पढ़ गयी और उसी प्रकार प्रतिशोध लेने का मैंने संकल्प कर लिया।"

नरेन्द्र उत्सुकता से रागिनी की ओर निहारता रहा "तुम तो अलिफलैला की तरह ससोपंज में डाल रही हो"

"कदापि नहीं। मुझे अपनी दुर्योजना पर स्वयं क्षुब्धता-स्तब्धता आ रही है । तो भी मुझे शान्ति है कि मैंने अपनी साधना में सिद्धि पाली है; मैं मंजिलें-मक़सूद पर पहुँच चुकी हूँ।" उस समय उसके मुख पर व्यंग्यात्मक क्षीण हँसी दौड़ गई, तब उसने धीरे धीरे कहना प्रारंभ किया "अपना उल्लू सीधा करने लिए, मैंने उनसे मिलनसारिता बढ़ाई और खुल कर गन्दे से गन्दा मजाक करने लगी। उनके अश्लील व्यवहारों में मैं मज़ा लेने लगी। रोमा ने उसे अपनी जीत समझा—"देखा ना जनाबेआली, मैं क्या

कहती थी? धीरे धीरे जंगली हाथी तक सध जाती है। फिर यह तो—"

"पद्मिनी ठहरी" सब कुकर्मियों ने ठहाका लगाया और दाद में रोमा पर नोटों की बौछार कर दी। मैंने भी ऐसे ही मधुर छलकपटों से उनसे रुपया ऐंठना सीख लिया और कुछ ही दिनों में अच्छी राशि जमा कर ली। साथ ही, उनका विश्वास भी जीत लिया। अब वे समझ गये कि मैं 'परकटी मैना' कहीं भाग कर नहीं जाने की। ठीक तभी मैं सब से लुकछुप कर मौक़ा पाते ही वहां से भाग निकली।"

नरेन्द्र को हँसी आ गई—"तुमने तो घरेलू नौकरों जैसी हरक़त की"

"मैं मजबूर थी"

"तब तुम घर पर पहुँच कर माँ को नहीं देख कर बड़ी दुःखी हुयी होगी"

"छिः ऐसी मूर्ख नहीं थी। उन घाघों के साथ रहते हुए मुझे बड़ी चालाकी आ गई थी। घर जाना तो स्वयं को पकड़वाना था।"

"फिर?"

"तुम्हें सुन कर अचम्भा होगा कि मैं वहाँ से सीधी वेश्यालय पहुँची।"

"वेश्यालय और आजकल ? अब तो वेश्यावृत्ति पर प्रतिबन्ध है"

'क़ानूनी प्रतिबन्ध तो नहीं जाने किन-किन बातों पर है। बाल-विवाह; बहुपत्नी-प्रथा, चोर बाजारी, मुनाफाख़ोरी, मिलावट सभी पर क़ानूनी शिकंजे हैं । पर वे सब खुल्लमखुल्ला हो रहे हैं। कौन सा राज्य, कोन सा नगर ऐसा है, जहाँ वेश्यावृत्ति नहीं चल रही है। नाम अलवत्तः बदल गये हैं—पर धन्धे में कोई कमी नहीं आई है। आज भी मीना बाजार लगते हैं, अनेकों अकबर काम तृष्णा के लिए लाशों के सौदा करते हैं। उन लाशों को स्वयं को भांति-भाँति से सजाना पड़ता है। वहां भी बड़ी जद्दोज़हद करनी पड़ती है; तब कहीं हुस्न की दुकान चल पाती है । मैं भी उसका अपवाद नहीं थी। कठिनता से एक वृद्धा ने मुझे पनाह दी। दूसरे दिन से मैं बाजारू वेश्या बन गयी। नामी गुन्डों और दलालों से मैं रिलमिल गई। उनसे एक हजार पर सौदा तय हुआ। दूसरे ही दिन, मेरे कमरे में एक युवती पड़ी सिर धुन रही थी। और एक मैं थी जो उस पर दया नहीं खा रही थी। जब उसने ज्यादा चीख पुकार की, तब मैंने हन्टर हाथ में थपथोड़ते हुये उससे कहा "बन्द कर बकबाद रोमा। उस दिन तेरी बारी थी; और आज मेरा मौक़ा है। अब तू कहीं नहीं जा सकती। तेरे पीछे ये सब सामने खड़े हैं, जो आक़वत तक तेरा पीछा नहीं छोड़ेंगे। और उन्होंने उसे वाक़ई में नहीं छोड़ा। उनमें सभी को सूजाक़ जैसी भयंकर गुप्त बीमारियाँ थीं। बस फिर क्या था? कुछ ही समय में, रोमा इन घातक रोगों से भयावह रूप में ग्रस्त हो गई और तड़प-पड़प कर एक दिन इस दुनिया से कूच गई"

"मुझे तुम्हारी बुद्धि पर तरस आता है। असली पापी तो वे पंच कामेश्वर थे। उस रोमा को तुम्हारी तरह ही उन्होंने बर्बाद किया था" नरेन्द्र ने नुक्ताचीनी की।

"तुम शायद ठीक कहते हो। पर मेरी बर्बादी का कारण तो वही राक्षसी थी । यदि खुद बिगड़ी थी, तो दूसरों को भी बिगाड़ना कहाँ की इन्सानियत थी । फिर मैंने उन

कामुक कौचकों को भी तो नहीं छोड़ा।" कह कर रागेनी मुस्कायी "रोमा को ही नहीं, मैंने स्वयं को भी वे ही संघातक रोग खरीद लिये और डाक्टरों से जाकर परीक्षा कराई। सच जानों, डाक्टर लोग मेरे रोग को देख कर पसीने-पसीने हो गये। उनके हौंसले पश्त पड़ गये— "अरर जल्दी इलाज कराओ; वर्ना हाथ धो बैठोगी।"

"मैं वही चाहती हूँ डाक्टर" मैंने मन में कहा और चैन की साँस ली। डाक्टर से लौट कर, यहीं दिल्ली में मैंने एक होटल किराये पर लिया। और सब से पहले उस नराधम जौहरी को फोन किया। मेरी आवाज सुनते ही, वह मुझसे मिलने को पागल हो गया। होता भी क्यों नहीं ? मैंने उसकी कोठी से भागने की क्षमा जो माँगी थी। फिर यह भी तो जताया था कि मैं उसके अतिरिक्त अन्य चारों को कतई नहीं चाहती हूँ। प्रेमी को इस आश्वासन से बढ़ कर अन्य कौन सी वस्तु अधिक प्रिय हो सकती है ? मुख्यकर जब प्रेयसी स्वयं अन्यों से इस बात को गुप्त रखने का प्रेमी से अनुरोध करती है । बस मेरी बातों का जादू उस पर ऐसा चढ़ा कि शाम होते ही मदोन्मत्त वह मेरे कमरे में आ धमका। यद्यपि अब मुझ में वह यौवन सुषमा नहीं रही थी, परन्तु वेश्याओं की संगति से रूप शृंगार बनाने में माहिर हो चुकी थी। अपने कमरे में इत्र फुलल की इतनी सुगंध महका रखी थी कि उस जौहरी को यह आशंका ही नहीं हुई कि मैं गन्दे रोगोच से ग्रस्त हूँ। उसने दीर्घ विरह के उपरान्त मेरा प्रगाढ़ आलिंगन किया। उसे क्या विदित था कि इस प्रकार वह साक्षात मृत्यु का आलिंगन कर रहा है।"

"क्या खूब ?" नरेन्द्र ने शाबाशी दी।

"यही नहीं, मैंने अन्य यौनाचारियों को प्रेमान्ध कर भी अपने रोग से उन खतरनाक बीमारियों में मुत्तला कर दिया।" इसे सुनते ही नरेन्द्र साश्चर्य प्रसन्नता से फूला नहीं समाया; किन्तु उसी क्षण रागिनी की हालत खराब हो गई। फिर भी कोशिश करके वह धीरे-धीरे बुदबुदायी—"मैं जानती हूँ कि मैं जा रही हूँ। पर मुझे प्रसन्नता है कि मैं उन सब से बदला लेने में सफल हुयी हूँ। वह जौहरी और वह वकील तो रोग से तड़प तड़प कर दम तोड़ चुके हैं और बाकी कराल काल के गाल में पड़े अन्तिम साँसे ले रहे हैं। उनके घर वाले तक उनकी बदबूदार बीमारी से आजिज हैं। कोई उनके पास नहीं फटकना चाहता । बस यही मैं चाहती थी कि समाज के इन कामी कुत्तों के, प्रतिष्ठित नर— पिशाचों के, प्राण...सड़गल कर निक..... ल....."

वाक्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि रागिनी को एक भारी हिचकी आई और नरेन्द्र के देखते देखते वह सदा को उसकी गोद में सो गई। नरेन्द्र के मस्तिष्क में रह रह कर तूफान उठ रहा था और उसकी आँखों से घनघोर वर्षा हो रही थी। तभी उस को उसी आँधी पानी में दूर पर रागिनी खिल खिला कर यह कहती दीख पड़ी—"नरेन्द्र, देखा! मैंने कैसा लिया पाप का अनोखा बदला।"

पहेलियाँ

चौता सा मैं ऊपर लगता,
अन्दर से मैं मक्खन ।
लाके उल्टा, ताकत देता,
भाता जन-जन के मन ॥1॥
नारि नहीं, पर कुच मेरे से,
मिले सुधा का रक्तिम घोल ।
रोगी की हूँ मैं मुख बल्लभ,
मेरे दाँतों का ही मोल ॥2।
दूध जमा दूं मैं तुम्हें,
तीन सींग की गाय ।
जल पीती जीती रहूँ,
छील मुझे जग खाय ॥3॥
लगती है कटार,
खाने में खटाई ।
दांतों की दुश्मन,
मेरी नानी ने बताई । 4।

उत्तर 1. केला 2. अनार के बेल 3. सिंघाड़ा 4. इमली ।

<u>स्वास्थ्य सन्देश (व्यंग)</u>

आप क्या खाते हैं ?

ले०—हवलदार शिवदत्त शर्मा

यदि आप से पूछा जाये कि आप क्या खाते हैं तो आप तुरन्त जवाब देंगे कि दाल-रोटी खाते हैं और यदि आप से पूछा जाए कि मेले और बाज़ार में आप क्या खाते हैं, तब आप झट जवाब देंगे कि चाट-पकौड़े मिठाई-नमकीन खाते हैं। लेकिन आप इन सब के अलावा भी और बहुत कुछ खाते हैं । आप स्वयं सोचें और बतायें। यदि आप नहीं बता सकते हैं, तो सुनिये—मेले, बाज़ार और बस-रेल में आप खाते हैं धक्के और और जेब कटने पर पैसे की मार भी खाते हैं। इसके साथ, उड़ती हुई धूल भी खाते हैं

और चीजें खरीदते समय कमीशन भी कभी कभार खाते हैं।

क्या आप शतरंज के खिलाड़ी हैं ? तब तो आप को कभी कभी मात भी खानी पड़ती है और मात को भुलाने के लिए, आप को ग़म भी खाना पड़ता है। और शतरंज में समय पर घर जाना भूल गये, तब आप अपनी पत्नी की डाट भी खा सकते हैं और कहीं आप निखटू-डरपोक किस्म के हुये, तब श्रीमती जी की मार भी आप को खानी पड़ सकती है।

यदि आप की नीयत साफ़ नहीं हैं, तो रिश्वत भी खा लेते होंगे। उस वक़्त पकड़े जाने का भय भी आप खाते होंगे और कभी कभार तो आप जेल की हवा भी खा सकते हैं। नहीं तो, आपने झठी कसम खा कर जान बचाई होगी। फिर भी, आपको अपनी इस हालत पर रहम भी खाना पड़ा होगा।

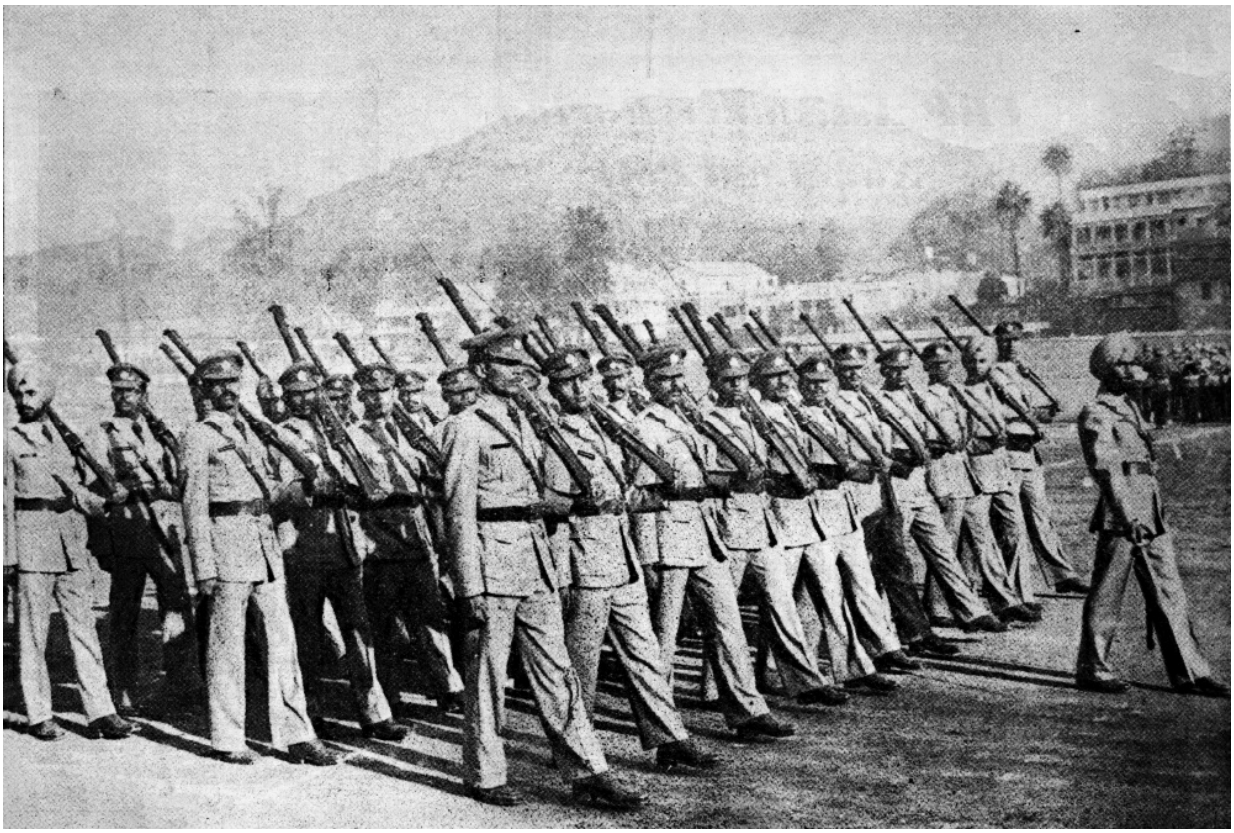
आप तो सैनिक हैं, तब मुठभेड़ों-लड़ाइयों में आपने गोलियाँ भी खाई होंगी, फिर भी कभी कभी आपको हार खानी पड़ती है।

इतने पर भी, यदि आप खुश नहीं हैं, तो आप किसी पार्क में जाकर हवा खाइये; पर सावधान, वापिस ड्यूटी पर देर से पहुँचने पर आप अधिकारियों की घुड़की भी खाने को तैयार रहिये।

इन सब चीजों के खाने के लिये आपको धन्यवाद !

ग्रुप केन्द्र अजमेर में पार्क

अजमेर ग्रुपकेन्द्र के पारिवारिक आवासों में, जवानों के बच्चों के मनोविनोद की सुविधायें प्रदान करने के हेतु, एक उद्यान (पार्क) बनाया गया है। पार्क में फव्वारा तथा क्रीडा क्षेत्र का भी प्रबन्ध किया गया है।



सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की 16वीं दीक्षान्त परेड

के० रि० पु० बल अनेकों राज्यों का मुख्याधार

आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, माउंट आबू में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की 16वीं दीक्षान्त परेड की सलामी लेते हुये, के० रि० पु० बल के भूतपूर्व महानिदेशक तथा राष्ट्रीय पुलिस आयोग के वर्तमान सदस्य श्री निगमेन्द्र सेन सक्सेना ने उन अधिकारियों की स्फति तथा उच्च कोटि की ड्रिल की प्रशंसा की।

सम्मान खड्ग सर्वतोभावेन श्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी सुनील शोरी को दिया गया। बहिरंग विषयों में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी गुरेन्दरजीतसिंह को तथा अन्तरंग विषयों में सर्वोत्तम प्रशिक्षार्थी पूनाचा मेनेमापाँडे को रजत पदक प्रदान किये गये। इनके अतिरिक्त, बर्ष के सर्वोत्तम निशानेबाज पी. मोहन राव को रजत पदक, वर्ष के सर्वोत्कृष्ट वक्ता पी० एम० कुलोथिंगम को निदेशक की चल-ट्राफी तथा वर्ष के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी रेजीनल्द वेज्ले को महानिदेशक की चल-ट्राफी दी गई।

श्री एन० एस० सक्सेना के० रि० पु० बल को कितने ही राज्यों का मुख्य आधार बताया तथा आन्तरिक सुरक्षा का विशेषज्ञ माना। स्वतंत्रता के उपरान्त व्यापक उपद्रवों को सुलझने में भी के० रि० पु० बल के महान योगदान की सराहना की। उनके भाषण के कुछ अंश नीचे उद्धत है :—

‘इस समय, हमारे यहाँ 22 राज्य और 10 संघ शासित क्षेत्र हैं। सभी सम्भाव्य घटनाओं से निपटने के लिये पुलिस की भारी जनशक्ति आरक्षित रखने के लिये, प्रत्येक राज्य को भारी रकम खर्चनी पड़ेगी। इस प्रकार, राज्यों की आर्थिक स्थिति पर बड़ा भार के० रि० पु० बल बचाता है। साथ ही, नागालैंड, मिजोराम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और त्रिपुरा जैसे नव-गठित राज्यों तथा संघ शासित क्षेत्रों में के० रि० पु० बल ही मुख्य सहारा है।

‘फिर भाषायी आन्दोलन, आंध्रप्रदेश में तेलंगाना आन्दोलन, असम में बगाली-विरोधी उपद्रव प्रादि कई बार उत्पात हुये हैं। कई राज्यों में स्थानीय लागडाट से मुक्त पुलिस बल का अपना ही विशेष महत्व होता है।

‘चाहे हफ्तों या महीनों से किसी राज्य में उपद्रव की माग सुलग रही होती है; किन्तु के० रि० पु० बल उस अन्तिम क्षण में लगाया जाता है, जब उपद्रव व्यापकरूप से मुख फाड़ कर सामने आते हैं।

‘आन्तरिक सुरक्षा बनाये रखने में जो निपुणता के० रि० पु० बल ने पायी है, वह किसी अन्य दल को सम्भव नहीं है। इसी उच्च कोटि की निपुणता के ही कारण, आन्तरिक सुरक्षा अकादमी के० रि० पु० बल को सौंपी गई है।

‘भारत में पिछले 15 वर्षों में आन्तरिक सुरक्षा की समस्याय बड़ी जटिल हो गयी हैं। अब हथियारों और उपद्रवीय-क़वायद (रायट-ड्रिल) की केवल जानकारी काफ़ी नहीं है। भारतीय पुलिस सेवा अधिकारियों को कम से कम ये तो जानना ही चाहिये, जिनके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

1. दक्षिण-पूर्व एशिया में इन्हीं दिनों अभ्यास में लाई गयीं जैसी छापामार युद्ध की नीतियाँ 2. भारत तथा संसार में आतंकपूर्ण कार्रवाईयां 3. गोलाबारूद का उपयोग 4. वाहनों का अपहरण 5. हवाई अड्डे की सुरक्षा 6. बन्धक ले जाना 7. अति विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा के आधुनिक तकनीक ।

‘इस प्रकार, आन्तरिक सुरक्षा से सम्बद्ध वरिष्ठ अधिकारी को एक कारगर सिपाही तथा एक अनुसन्धानकर्ता की भूमिका निभानी पड़ती है।

‘कानून तथा व्यवस्था में, पूर्वोपाय चिकित्सा से सदा उत्तम है। किन्तु शक्ति शाली निहित स्वार्थों के भय से पूर्वोपाय प्रायः नहीं किये जाते हैं। समाचारपत्रों में बहुधा अचानक सर्वनाश की खबरें छपती हैं। कानून-व्यवस्था से सम्बद्ध कुछ सर्वनाशों की व्यापक छानबीनों ने यह साफ़ उजागर कर दिया है कि वे कभी अचानक नहीं घटे असावधानी और नादानी की शिकार क़ानून-व्यवस्था की छोटी मोटी दुर्घटनायें उन नन्ही चिंगारियों के समान हैं, जो भीषण अग्निकाण्डों का रूप धारण करती हैं।

‘ऊँचे स्तर पर उद्देश्यों तथा साधनों के विषय में पूरी-पूरी स्पष्टता होनी चाहिए; अन्यथा पुलिस का एक बड़ा दल तक न्याय और शान्ति नहीं बनाये रख सकता। पिछले दस वर्षों में कई बार ऐसा हसा कि ऊंचे स्तर पर व्याप्त अव्यवस्था ने क्षेत्रीय कार्रवाइयों में बड़ा कहर ढाह दिया।’

‘सभी पुलिसजनों के मस्तिष्कों में यह बात साफ़-साफ़ आनी चाहिए कि जानोमाल की रक्षा करना उनका हुक्मी फर्ज़ है, जो उनकी इच्छा पर निर्भर नहीं है। इस सम्बन्ध में, सभी पुलिस संस्थानों के सभी प्रशिक्षार्थियों को पश्चिमी वंगाल में जय इन्जीनियरिंग वर्क्स तथा अन्यों के अभियोग में कलकत्ता उच्च न्यायालय द्वारा दिये गये निर्णय को ज़रूर-ज़रूर पढ़ना चाहिए।’

‘विभाजन के उपरान्त भारत में बड़े पैमानों पर हुये उपद्रवों में पुलिस का और मुख्यकर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस का इतिहास उत्तम रहा है। इसका श्रेय अधिकारियों के प्रशिक्षण तथा नेतत्व को जाता है। इसका एहसास तो हमें तभी हो सकता है जब संसार के अन्य भागों के अधिक वेतन पाने वाले और अधिक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित पुलिस दलों द्वारा ऐसी अव्यवस्थाओं के जूझने को हम भारत की पुलिस से तुलना करते हैं। इस संदर्भ में, इन्हीं दिनों में हुई विश्व के अन्य कई भागों में क़ानून-व्यवस्था की अस्तव्यस्तताओं का अध्ययन हमें करना चाहिये। जब हम उनकी तुलना भारतीय पुलिस की कार्रवाइयों से करते हैं, तब हमें आत्म-सन्तोष प्राप्त होता है।’

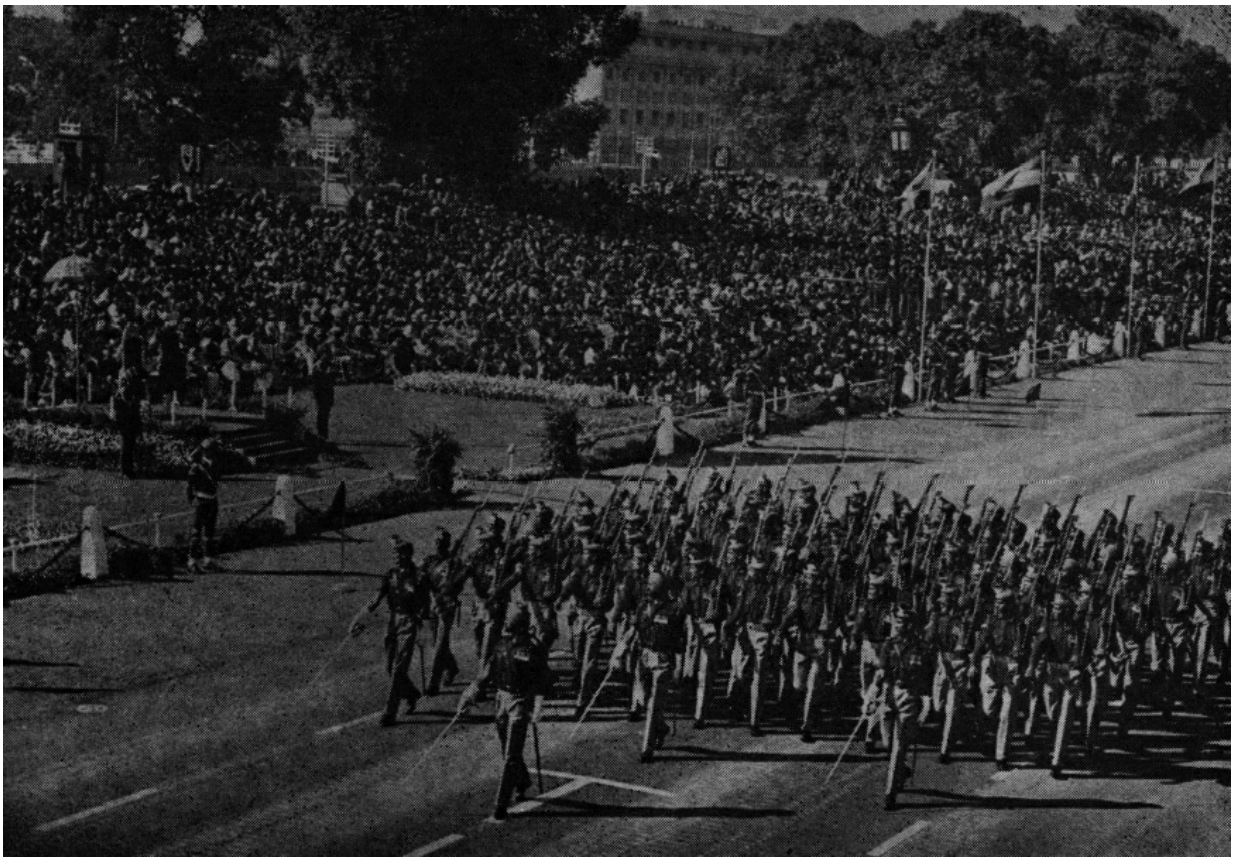
‘क्योंकि आन्तरिक परिस्थितियों से निबटने की विशेष निपुणता का उच्चस्तर भारतीय पुलिस ने अब प्राप्त कर लिया है, मुझे आशा है कि अगले पाँच छै वर्षों में माउण्ट आबू की यह आन्तरिक सुरक्षा अकादमी (जो अभी केवल 2½ वर्ष पुरानी है) संसार में सर्वोत्तम मानी जायेगी और सारी दुनिया के पुलिस अधिकारी यहाँ शिक्षा लेने आया करेंगे।’

<u>गणतन्त्र दिवस परेड में :</u>

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का योगदान

इस वर्ष गणतंत्र दिवस की परेड में के.रि.पु. बल के 76 अधिकारियों तथा 65 जवानों के दो बैंडों (वादक वृन्दों) की टुकड़ी ने भाग लिया। इसका नेतृत्व डी० वाई० एस०पी० हरप्रीत सिंह ग्रेवाल (22 बटा.) ने किया। अपव्यय बचाने के लिये, दिल्ली से बाहर की बटालियनों से जवान नहीं बुलाये गये; फिर भी, इस टुकड़ी में देश के सभी भागों के मनुष्यों को शामिल किया गया, जिससे इस बल की अखिल भारतीय रूप की झाँकी मिल सके।

ब्रास बैंड में, अजमेर और दिल्ली के ग्रुप केन्द्रों के बादक थे, जब कि पाइप बैंड में दुर्गापुर, दिल्ली और गाँधी नगर के ग्रुप केन्द्रों के वादक बुलाये गये थे। इन बाजों का नेतृत्व इ० गुरदयाल सिंह कर रहे थे। बैंड “शेर जवान” की धुन बजा रहे थे।



गणतन्त्र दिवस समारोह में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को टुकड़ी

पुलिस आयोग के लिये कार्यभार

ले०—श्री टी.नाथ

राष्ट्रीय पुलिस आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों के समक्ष बोलते हुये, श्री चरण सिंह, गृहमंत्री ने उन्हें ऐसी सिफारिशें सुझाने पर जोर दिया, जिससे क्या पुलिस और क्या जनता—सभी की विचारधारा में मामूल परिवर्तन प्राये; बढ़ते हुये अपराधों की संख्या को बिल्कुल कम करने में पुलिस सक्षम हो; अपराध करने के भीतरी और बाहरी कारणों का व्यापक विश्लेषण करके ठोस उपायों को बताया जाए व कार्यकुशल और ईमानदार पुलिस दल का गठन हो, जिससे जनता का सक्रिय सहयोग उसे मिल सके।

आपात् स्थिति में और उसके बाद भी, विशिष्ट वर्ग की असफलता साफ़-साफ़ रही है। दरबारी ढंग के प्रशासन से उत्पन्न चाटुकारिता के आदी इस वर्ग से किसी दूसरे व्यवहार की आशा की भी नहीं जा सकती थी। यह ढंग सदियों से इस देश में चला आ

रहा है और यद्यपि अंग्रेजी शासन ने इस मोड़ देने की चेष्टा भी की थी, किन्तु उसे कोई सफलता नहीं मिली और बड़े-बड़े अंग्रेजी प्रशासक तक इस मजेदार प्रशासन-चक्र के अरे बन कर रह गये। देश की स्वाधीनता के उपरान्त भी यही ढंग चलता रहा। सम्राट से चल कर सबेदारों के द्वारा छोटे जमीदारों मनसबदारी के पदाधिकारियों तक, सभी स्तरों पर बही महान मुग़लों की घिसी पिटी कार्य प्रणाली चलती रही। जब कि इस प्रणाली को दरबार-ए-माम और कुछ मात्रा में दरबार-ए-खास में प्रयुक्त किया जाता था, किन्तु आपात स्थिति में तो केवल दरबार-ए-खास ही रह गया । जुन्टा गुट तथा उसका पुच्छ लगू दरबार-ए-खास किसी भी तानाशाही में राज्य करता है; यद्यपि साधारण जन को उसमें भाग लेते हुये दिखाने के लिये, निर्वाचित संस्थानों का मुखौटा चढा रहता है। देश की अधिकांश निर्धन तथा शिक्षित—सम जनता के प्रति समुचित आभार प्रकट करना सम्भव नहीं है, जिसके लिये झूठे मकरमच्छौ आँसू बहाये जाते हैं। उसी जनता ने प्रदर्शन किये और साफ़-साफ़ अपने मन्तव्य बता दिये । यह कहना गलत होगा कि चुनावों ने धोखा दिया, शायद उनके कल्याण के लिये सेवा करने के ढोंग मचाने वाले अपने ही देशवासियों के हाथों से और अधिक बेइज्जती बचाने के लिये ही, पद-दलित लोगों ने सिर उठाया।

इसी संदर्भ में, पुलिस की जिम्मेदारी का महत्त्व बढ़ जाता है और उनको दिये हुये अधिकारों की फिर से समीक्षा करना जरूरी हो जाता है। प्रचलित पुलिस नियमों ने अधीनस्थ कर्मचारियों को नियंत्रक अधिकारों के समेत बड़े विवेकीय अधिकार दे रखे हैं। हथकड़ियाँ डालना तो इस खेल का छोटा-सा हिस्सा है । अधीनस्थ पुलिस कर्मचारी को खोजबीन, पकड़-धकड़ तथा भीड़ पर गोली तक चलाने के लम्बे चौडे अधिकार नियमानुसार प्राप्त हैं। इस सारे काम में, पुलिस की ये अधीनस्थ इकाइयां, न्यायपालिका के प्रति निश्चय ही जिम्मेदार हैं, चाहे वे उसके सीधे नीचे काम नहीं भी करती हैं । पुलिस नियमों तथा आपराधिक प्रक्रिया संहिता के अनुसार उनके द्वारा किये गये सभी काम के नतीजों की न्यायिका जाँच हो सकती है और अन्त में मुकदमें भी न्यायालयों में चलाने पड़ जाते हैं। वास्तव में, 1857 से पहले ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासनकाल में, न्यायपालिका के ठीक नीचे प्रभुत्व में पुलिस को रखने की प्रक्रिया का प्रयोग किया गया था; किन्तु इस को तिलाञ्जलि इस कारण दे दी गयी कि उस समय के तानाशाही-तुल्य शासन में जिला मैजिस्ट्रेट या डिप्टी कमिश्नर (उपायुक्त) को एक अधिशासक शक्ति के रूप में उपयुक्त पाया गया। यह भी सुनिश्चित किया गया कि इन अधिकारियों के पास प्रचुर न्यायिक अधिकार होने चाहिये। यह जिला मजिस्ट्रेट वाली पद्धति वास्तव में कमान की सैनिक शृंखला की प्रतिरूप थी और इसी प्रकार गठित पुलिस पर नियंत्रण रखने के लिये उपयुक्त थी । न्यायिक नियंत्रण से पुलिस को हटाने के अर्थ ये हुये कि न्यायपालिका अब और आजादी से कार्य कर सकती थी और न्यायिक अधिकारों ने जिला मैजिस्ट्रेट को परिचालन में पूरा कारगर बना दिया। जिला मैजिस्ट्रेट, अधीनस्थ दण्डाधिकारियों को अप्रसन्नता के पत्र भी दे देता था, जब उनकी न्यायिक कार्र वाइयां निष्पादक पुलिस की मंशा के मुताबिक नहीं होती थीं। यही वह पृष्ठभूमि थी, जिसमें कार्यपालिका को न्यायपालिका से अलग

करने के प्रश्न पर 1947 के बाद विचार विमर्श हुआ। फलस्वरूप, जिला मॉजेस्ट्रेट अपने सभी न्यायिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया और न्यायपालिका के किसी काम में उसका हस्तक्षेप नामुमकिन हो गया। फिर भी, अपने जिले में सामान्य प्रशासन पर उसकी ही तूती बोलती रही। यह उस प्रशासनिक विचारधारा के अनुसार था, जिसमें उसका वेतन पाने वाला अधिकारी, जिला प्रशासन में प्रमुख प्रभुता से काम करता था। यही ढरी स्वतंत्र भारत में चलता रहा और कुछ समय पूर्व गठित प्रशासन-सुधार आयोग तक ने इस में किसी फेरबदल की सिफारिश नहीं की। शायद, जिला मैजिस्ट्रेट के अधिशासकीय भूमिका का कोई विकल्प नहीं मिला, जिसकी तुलना सचमुच में उस क़ैदी से की जा सकती है, जो बांधने वाली हथकड़ियों को ही सीने चिपटा रहा हो। जिला प्रशासन के सिर पर जिला मैजिस्ट्रट को बिठाये रखने से, उसकी बाहें, बड़ा व्यापक नियंत्रण रखती हैं, जिसमें पुलिस कार्रवाइयों की देखरेख भी है। अतएव, स्थानीय प्रशासन की बुराइयों की जिम्मेदारी पुलिस पर नहीं थोप कर, जिला अधिकारी पर डालनी चाहिये। प्रचलित व्यवस्था में स्थानीय नागरिक को जिला अधिकारी की तुलना में (जिस के हाथ में बड़े बड़े नियंत्रण हैं) पुलिस से जूझना सरल लगा। शिकायत कर्त्ता लाइसेंस और छूटें पाने के लिये तो उस (जिला अधिकारी) की ठोड़ी में हाथ डालते थे, किन्तु सभी खराबियों के लिये वे पुलिस की पगड़ी उछालना चाहते थे। इस भाँति वह स्थिति आ पहुँची जब सारी शिकायतें पुलिस के मत्थे मढ़ी जाती थीं और उसे शैतान के अवतार की संज्ञा दी जाती थी। इस दरबारी ढंग के प्रशासन तथा तज्जात् चमचागीरी के वातावरण का प्रारंभ दरअसल जिला-स्तर पर किये जाने वाले सरकारी कामकाज से होता है, जहाँ जनता जिला अधिकारी की लम्बी-लम्बी दन्डवतें करती है। ऐसे वातावरण में, लोकतंत्र की चर्चा करना कोई विश्वसनीय बात नहीं समझ में आती।

भारतीय सरकार ने एक पुलिस आयोग के गठन की घोषणा की है। यह आशा की जाती है कि यह आयोग, पुलिस बनाम जिला अधिकारी के कार्यों की तुलना करेगा। कुछ इन प्रश्नों का उत्तर भी खोजना पड़ेगा—"क्या पुलिस राज्यशक्ति का प्रतीक है या अपराधों का केवल पता तथा निरोध करने वाली इकाई मात्र है" और क्या पुलिस को सामान्य प्रशासन के सभी कर्तव्य निबाहने चाहिये और प्रशासन की प्रमुख धुरी बननी चाहिये या किसी प्रगतिशील देश में सामान्यतः निर्धारित अपने क्षेत्र में ही उसे काम करना चाहिये। इस देश में, हमें ये नज़ारे देखने को मिलते हैं कि पुलिस के और कभी कभार तो सशस्त्र पुलिस के संरक्षण में, राजनीतिक सत्ताधीश ठाट-बाट के साथ चलते हैं और सम्मान गारदों की सलामी लेते हैं। पुलिस के इस तमाशे से उन्हें अनेक लाभ होते हैं। चुनीन्दा पुलिस जनों को ही गुप्तचरी सेवा में लगाया जाता है। तथा ग़ैर-पुलिस लोग पुलिस की छानबीनी में निदेश दे सकते हैं तथा प्रभाव डाल सकते हैं। शायद, इन अधिकारों में सुधार लाना होगा, जिन्हें वे राजनीतिज्ञ सीने से लिपटाये रखना चाहते है और जिन पर शासन की आधार शिला तक रखी है।

इसी देश में, वैशाली में लोकतंत्र-शासन की भव्य परम्परा रही है और राष्ट्रपिता ने इसी विषय पर हमें कितने उपदेश दिये हैं। इस 'माई-बाप' के रवैये को हमें डेढ़ हाथ

का नमस्कार करना होगा, जिसका राज्य आज अफसरशाही और मुख्यकर जिला-स्तर पर छाया हुआ है। जनता परिषदों को इसका स्थान लेना पड़ेगा। सब सम्बद्ध व्यक्तियों को परेशानियों से बचाने के लिये, चाहे दीवानी के हों या फौजदारी के, छोटे-मोटे झगड़े-फिसाद जनता की अदालतों में क्या तय नहीं हो सकते हैं? ऐसी स्थिति में, पुलिस अपने सामान्यतः स्वीकृत कर्तव्यों को ही निवाहेगी और निंरकुश आदेशों-निर्देशों के बिना लोक प्रशासन चलाया जा सकेगा। फिर उच्चस्तरों की तो बात ही क्या, जिला स्तर तक पर दरबारी ढंग नहीं पनप पायेगा।

सम्पूर्ण क्रान्ति इस समय की पुकार है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस क्रान्ति से जिला प्रशासन के रूप में परिवर्तन आयेगा और लोकप्रिय शासन के युग का अभ्युदय होगा। ऐसी आशा है कि पुलिस आयोग शासन प्रणाली में आमूल परिवर्तन के प्रश्न पर गम्भीरता-पूर्वक विचार करेगा, जिससे इस दरबारी ढंग के प्रशासन को अन्तिम नमस्कार कहा जा सके तथा देश की राजनीतिक व्यवस्था में पुलिस को अपना समुचित स्थान मिल सके।

भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिये गृह मंत्री का आह्वान

दिनांक 27 दिसम्बर 1977 को गुप्तचर विभाग तथा रेल के उपमहानिरीक्षकों (डी. आई. जी.) के वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुये, श्री चरण सिंह, केन्द्रीय गृहमंत्री ने, सभी पुलिस संघटनों को कार्य कुशलता का सर्वोच्च स्तर बनाये रखने तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध भीषण संघर्ष छेड़ने का आह्वान किया। भ्रष्टाचार के उन्मूलित होने पर ही, लोकतंत्र तथा राष्ट्र जीवित रह सकता है। गृहमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि अधीनस्थ कर्मचारियों के सम्मुख ईमानदारी और सच्चाई का उदाहरण स्वयं प्रस्तुत कर भ्रष्टाचार के उन्मूलन में वरिष्ठ अधिकारियों की खास जिम्मेदारी है। रेलों तथा विद्युतगृहों आदि प्रमुख संस्थानों में तोड़ फोड़ की चर्चा करते हुये, उन्होंने कहा कि इस विषय में छानबीन की गोपनीय प्रक्रियाओं में तेजी से सुधार लाने की आवश्यकता है। दुर्घटनाओं वाले राज्यों में इन तोड़फोड़ों के पीछे यदि किन्हीं संगठनों का हाथ हो, तब उनकी अच्छी जाँचपड़ताल के लिये विशेष दल का तुरन्त गठन होना चाहिये। इस अभियान में सभी सरकारी साधनों की सूचनाओं के तुरन्त आदान-प्रदान की जरूरत पर भी उन्होंने बहुत जोर दिया। पिछले दिनों में हुयी तोड़-फोड़ की कार्यवाइयों के विषय में छानबीन की धीमी गति पर उन्होंने अपना क्षोभ प्रकट किया।

उन्होंने कहा शिक्षा संस्थानों, और विश्वविद्यालयों में छात्रों द्वारा हड़ताल घेरावों तथा अनुशासनहीनताओं जैसे कई आन्दोलनों के छिड़ने से देश की शान्ति भंग हो गई है। इनके कारण, उत्पादन में घोर कमियाँ तथा आर्थिक विकास में बाधाओं की आशंका है। साथ ही, शिक्षा-संबंधी वातावरण भी इनसे दूषित हो सकता है। इन चुनौतियों से डट कर मुकाबिला करने के लिये सही-सही उपाय सुरक्षा-संगठनों को अविलम्ब करना चाहिये। उन्होंने छात्रों से पुलिस को सावधानीपूर्वक सुलझने पर बल दिया; किन्तु यह भी चेतावनी दी कि किसी भी प्रकार की हिंसा के प्रति कोई सहानुभूति नहीं

दिखलानी चाहिये।

देश की क़ानून तथा व्यवस्था को चर्चा करते हुए, गृह मन्त्री ने कहा कि स्थिति में तथाकथित बिगड़ने के प्रोपैगण्डों की हमें चिन्ता नहीं करनी चाहिए। देश में न्याय व्यवस्था के रूप को बिगाड़ कर दिखाने की सुयोजित चेष्टा में कुछ निहित स्वार्थों का हाथ है। केन्द्र तथा राज्यों के सभी सम्बद्ध विभागों से शान्ति बनाये रखने तथा कानून-भंजकों को तुरन्त हिरासत में लाने के लिए अपने प्रयासों में तालमेल रखने के वास्ते उन्होंने अपील की।

उन्होंने बताया कि यद्यपि आजकल पुलिस संगठन के प्रति बड़ी दुर्भावना फैली हुयी है, किन्तु समाज की सुव्यवस्था के प्रतीक पुलिस जवानों के प्रति उनके दिल में बड़ी जगह है। कुछ कमियां भी पुलिस संगठन में अवश्य हैं; तभी एक पुलिस आयोग बिठाया गया है। यह आयोग पुलिस की संगठन सम्बन्धी कमियों पर ग़ौर करेगा और निवारक उपायों को भी बतायेगा, जिनमें से बहुतेरों को गृहमंत्रालय तुरन्त क्रियान्वित करेगा। सम्मेलन को उन्होंने यह भी विश्वास दिलाया कि उसको विचार-विनमयों पर फ़ौरन ध्यान दिया जायेगा और यथासम्भव उसकी सिफारिशों का अनुपालन भी होगा।

इस से पूर्व, गृह मन्त्री तथा प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुये, श्री एस० एन० माथुर निदेशक, गुप्तवार्ता विभाग ने इस बात पर जोर दिया कि भय या अनुग्रह का ध्यान नहीं करते हुए अपने नियत कर्तव्यों के पालन करने की क्षमता जवानों में भरने के लिये, समूचे पुलिस दल के नैतिक स्तर को और मुख्यकर वरिष्ठ अधिकारियों के नेतृत्व की गुणवत्ता को मजबूत बनाना होगा। उन्होंने कहा कि किसी भी सच्चे लोकतांत्रिक समाज की सब से बड़ी ज़रूरत इस बात की है कि क़ानून और संविधान की प्रतिष्ठा रखने के लिये पुलिस ईमानदारी से काम करे।

प्रधान मंत्री द्वारा धमकियों से नहीं डरने की घोषणा

नई दिल्ली में 29 दिसम्बर 1977 को वरिष्ठ पुलिस तथा सुरक्षा अधिकारियों के समक्ष, श्री मुरार जी देसाई, प्रधान मन्त्री ने कहा 'सरकार किसी प्रकार की धमकियों के आगे घुटने नहीं टेक सकती। आनन्द मागियों की धमकियों की चर्चा करते हुये, उन्होंने कहा "हम अपनी इच्छा से पद छोड़ सकते हैं, किन्तु धमकियों में हम आने वाले नहीं.....आपात्स्थिति में पुलिसजनों को आदेश मानने पड़ते थे। मैं उन पर दोष नहीं मढ़ता। उनको आदेश पालन करना था और उन्होंने केवल वहीं किया; किन्तु कुछ आदेश वालों से भी उत्साही थे और उन्होंने ग़लत उपाय और ग़लत काम कराये। उन्हें अपना रवैया बदलना पड़ेगा; अन्यथा उनके साथ कठोरता का व्यवहार किया जायेगा।

क्रीडा क्षेत्रे :

अखिल भारतीय पुलिस दौड़ कूद (एथलेटिक्स) प्रतियोगिता में के. रि. पु. बल की स्थिति पर विहग-दृष्टि

दिनांक 18 फरवरी 1978 को दिल्ली में सम्पन्न हुयी 27वीं अखिल भारतीय पुलिस खेल कूद प्रतियोगिता में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 570 अंक पा कर जिम्नास्टिक्स की टीम चैम्पियनशिप जीती। इस बल का एन. बी. भोंसले सर्वश्रेष्ठ जिम्नास्ट घोषित हुआ। कबड्डी फाइनल में भी, दिल्ली पुलिस को 36-6 के भारी अन्तर से हरा कर सिर मौर जीता।

बास्केट बाल फाइनल में के०रि०पू० बल पूर्वार्द्ध में 38-36 से आगे रहता हुआ अन्त में सीमा सुरक्षा बल से 69-79 से मात खा गया और इस प्रकार, उसे दूसरा स्थान मिला। दूसरे ही स्थान पर, इस वर्ष एक्लेटिक्स (दौड़ कूद) में रह कर, अपनी 5 वर्ष से चली आ रही चैम्पियनशिप गवाँ दी। संघर्ष रोमांचक रहा और सीमा सुरक्षा बल ने 4x400 मी. रिले दौड़ की अतिन्म स्पर्धा मात्र एक सेकण्ड के अन्तर से जीती। के०रि०पु० बल के इ० हरीचन्द तीन दौड़ों में प्रथम रहा। 5000 मी. दौड़ में तो उसने 1976 वाले 14 मि. 16.4 से० के अपने ही रिकार्ड को भंग किया। इधर दूसरा रिकार्ड भंग करने वाला के०रि०पु० बल का अन्तराष्ट्रीय खिलाड़ी इ० आर. एस. बाल था; जिसने तार गोला (हेमर) 64.2 मी. तक फेंक कर सी० सु० बल के प्रवीण कुमार का 1968 वाला 63.74 मी. का कीर्तिमान तोड़ दिया। डेकथलन (दस खेल) में, 1968 के आर. एल. पाण्डे (उ. प्र.) द्वारा स्थापित 6,271 अंकों वाले रिकार्ड को के०रि०पु० बल के प्रभात सिंह ने 6,653 अंकों को पाकर सुधारा और प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ट खिलाड़ी का नाम पाया।

दंगल में के०रि०पु० बल के पहलवान तृतीय स्थान पर रहे। तृतीय स्थान पर ही, यह बल हाकी में मध्य प्रदेश पुलिस को 2-0 से हरा कर रहा। गोल ए. बारला और राम निवास ने किये। इ० हरीचन्द सी०सु० बल के धावक अजायब सिंह के साथ सयुंक्त सर्वोत्तम एथलीट घोषित किया गया।

हाकी प्रतियोगितायें :

कुमार मंगलम हाकी टूर्नामेंट में के० रि० पु० बल सिरमौर

भिलाई में 22 जनवरी 1978 को के० रि० पु० बल की हाकी टीम ने विदर्भ को हरा कर **कुमार मंगलम हाकी टूर्नामेंट** का सिरमौर जीता।

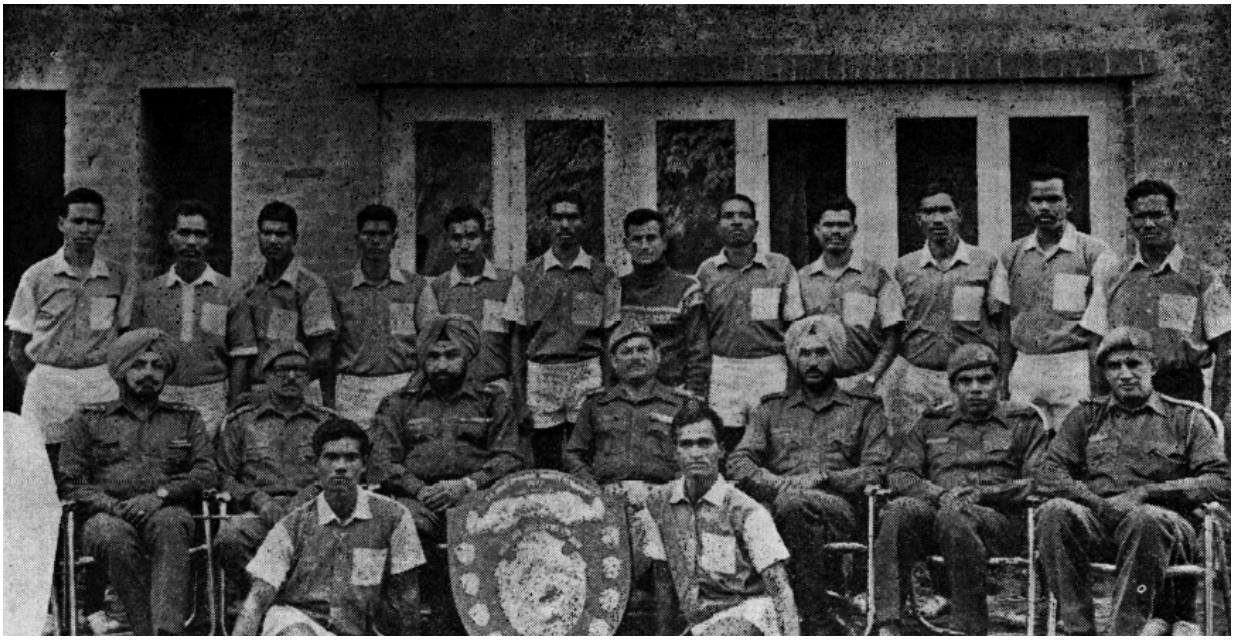
महन्त सर्वेश्वर दास हाकी टूर्नामेंट

12 दिसम्बर 1977 से 5 जनवरी 1978 तक खेले गये महन्त सर्वेश्वर दास स्मारक

हाकी टूर्नामेंट में, के० रि० पु० बल हाउलाइनर (उपविजेता) घोषित हुआ और उसे एक ट्राफी मिली।

डी. पी. धर हाकी टूर्नामेंट में 36 बटालियन को सम्मान

द्वितीय अखिल भारतीय डी० पी० धर स्मारक हाकी टूर्नामेंट 1977 को जम्मू कश्मीर एशोसियेशन ने 17 से 25 अक्टूबर 1977 तक श्रीनगर में आयोजित किया। 36 बटालियन, के० रि० पु० बल की टीम सर्वोत्तम टीम मानी गई और उसे एक विशेष ट्राफी प्रदान की गई।



धर हाकी टूर्नामेंट में प्राप्त ट्राफी के साथ 36 बटालियन की हाकी टीम

क्रीड़ा क्षेत्रे

वालीबाल प्रतियोगिताओं में हमारी धूम

सुच्चासिंह टूर्नामेंट में हमारी जीत

दिनांक 22 से 25 दिसम्बर 1977 तक नई दिल्ली में आयोजित सरदार सुच्चा सिंह स्मारक वालीबाल टूर्नामेंट को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने जीता। 14 टीमों ने भाग लिया। अर्द्ध फाइनल में डेसू को हराकर, हमारी टीम का मुकाबिला भारत तिब्बत सीमा पुलिस की ज़बरदस्त टीम से 25 दिसम्बर 1977 को हुआ, जिसमें हम विजयी हये। स० इ० सी. जे. कुरियान सर्वतोभावेन उत्तम खिलाड़ी और का० जयपाल सिंह सर्वश्रेष्ठ प्रहारी माना गया।

नवनीत टूर्नामेंट में हमें सिरमौर

नवनीत एथ्लेटिक क्लब दिल्ली ने 15 से 19 दिसम्बर 1977 तक राज्यस्तर पर दिल्ली में वालीबाल टूर्नामेंट आयोजित किया। उसमें 16 टीमों ने भाग लिया। फाइनल में, भारतीय वायुसेना की टीम का पराजित कर, के० रि० पु० बल ने सिर मौर जीता। हे० का० रोहताससिंह को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी माना मया। स० इ० सौ. जे. कुरियान, ना० स्वतन्त्रसिंह और का० जयपालसिंह का भी खेल प्रशंसनीय रहा।

शिकार टूर्नामेंट में हम चैम्पियन

दिनांक 20 से 23 जनवरी 1978 तक शिकार (राजस्थान) में खेले गये वाली बाल टूर्नामेंट की चैम्पियनशिप के. रि. प. बल की 'बी' टीम ने जीती।

दिल्ली राज्य टूर्नामेंट में हमें सिरमौर

दिनांक 7 से 13 दिसम्बर 1977 तक खेली गई दिल्ली वालीबाल चैम्पियनशिप में के०रि०पु० बल की 'ए' टीम ने भाग लिया। फाइनल में, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस को हरा कर, हमारे दल ने यह चैम्पियनशिप जीती। स० इ० अशोक कुमार, स०इ० सी. जे. कुरियान, हे० का० रोहताससिंह तथा ना० स्वतंत्रसिंह का खेल सराहनीय रहा।

एन. ए. सी. टूर्नामेंट में हमारी जीत

दिनांक 19 दिसम्बर, 1977 को नई दिल्ली के विश्वविद्यालय कोर्ट में भारतीय वायु सेना को हराकर, के० रि० पु० बल ने एन० ए० सी० बालीबाल चैम्पियनशिप जीती। पुरुषों में रोहतास सिंह को सर्वोत्तम खिलाड़ी माना गया।

जी. एम. पंजाबी टूर्नामेंट

जनवरी 1978 में आयोजित श्री जी. एम. पंजाबी स्मारक बालीबाल टूर्नामेंट में के.रि.पु. बल की टीम ने भाग लिया। इसमें दिल्ली राज्य की अधिकांश टीमों ने हिस्सा लिया। हमारी टीम ने फाइनल में भारत तिब्बत सीमा पुलिस को 6 जनवरी 78 को (10-15, 15-14, 15-8, 9-15 व 15-10 से) हरा दिया। स० इ० सी. जे. कुरियान, हे० कां० रोहतास सिंह, हे० कां० एन. एम. अली खाँ और कां० जयपाल सिंह का खेल प्रशंसनीय रहा।

अ. भा. भिड टूर्नामेंट

दिनाँक 27 से 29 जनवरी 1978 तक अखिल भारतीय वालीवाल टूर्नामेंट भिंड (म. प्र.) में आयोजित हुआ। उसके अर्द्ध फाइनल में, के.रि.पु. बल की टीम हरियाणा पुलिस से हार गई।

नारायण टूर्नामेंट में हमें सिरमौर

दिनांक 29 से 31 जनवरी 1978 को शिकोहाबाद में नारायण अखिल भारतीय

वालीबाल टूर्नामेंट खेला गया। इसमें देश की सभी प्रसिद्ध टीमों ने भाग लिया। फाइनल में, हमारी टीम का मुकाबिला सीमा सुरक्षा बल जलंधर से हुआ, जिसमें 3 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाडी और 2 अर्जुन पदक विजेता थे। 12-15, 15-7, 15-9 व 15-13 से सी. सु. बल को हराकर, हमने सिरमौर जीता।

एथ्लेटिक्स (दौड़ कूद) प्रतियोगितायें एन.आई. एस.प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल की धाक

दिनांक 9 जनवरी 78 को नेशनल स्टेडियम में खेली गई एन. आई. एस. खुली दौड़ कूद प्रतियोगिता में के० रि० पुलिस के खिलाड़ियों ने धाक जमा दी। ओलम्पिक धावक हरी चन्द ने 5000 मी० दौड़ को 14.265 मि० में पूरा किया। अन्य चमकने वाले हमारे खिलाड़ी थे-एस. एस. बाल (शाटपुट), मिठाई लाल, एम. वी. वर्गीज (800 मी०), चन्दर प्रकाश (1500 मी०,) पी. कंजम्बू (200 मी.), के. सुधाकरन (त्रिकूद) तथा प्रभाती सिंह (ऊची व लम्बी कूद)।

एलेक्स प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल चैम्पियन

पिछले नवम्बर में सातवाँ एलेक्स स्मारक अखिल भारतीय दौड़-कूद प्रतियोगिता त्रिवेन्द्रम में हयी। (केन्द्रीय टीम को छोड़ कर) के० रि० पु० बल की मद्रास तथा हैदराबाद रेंजों की संयुक्त टीम ने भाग लिया। दकन एथलेटिक क्लब, टिस्को जमशेदपुर, केरल पुलिस आदि देश की प्रमुख टीमों ने भाग लिया। हमारी टीम ने 10 अंकों से दकन एथलेटिक क्लब को हरा कर चैम्पियनशिप जीती।



एलेक्स प्रतियोगिता में एथ्लेटिक (दौड़ कूद) चैम्पियन ट्राफी लेते हुए हमारी टीम के कप्तान

<u>क्रीड़ा क्षेत्रे :</u>

प्राथमिक चिकित्सा व क्रिप्टोग्राफी में के० रि० पु० बल सिरमौर

इक्कीसवीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता 1977 का आयोजन 5 से 16 दिसम्बर 1977 को जालंधर कैंट में किया गया। केन्द्रीय तथा राज्यों की 21 पुलिस टीमों ने भाग लिया। (1) गोली भेदन (2) प्राथमिक चिकित्सा (3) मोटर परिवहन (4) बेतार (5) अनुसंधान में वैज्ञानिक सहयोग (6) पुलिस कुत्ते, (7) फोटोग्राफी (8) क्रिप्टोग्राफी (गुप्तलेखन) तथा (9) कल्याण प्रदर्शनी की प्रतियोगितायें रखी गयीं। (5), (6), और (7) को छोड़ कर, के० रि० पु० बल ने सभी में भाग लिया।

गोलीभेदन : हमारे दल की पिस्तौल टीम में सू० किशनलाल, स० इ० जुगलाल, हे० का० नाना राम तथा का० सोना राम थे। इसने केवल 556 अंक पाये और पाँचवाँ स्थान पाया। स० इ० जुगलाल ने चौथे अभ्यास में तृतीय स्थान पाने के कारण काँस्य-पदक प्राप्त किया।

रायफल टीम : में ला० ना० फकीर मुहम्मद व का० बच्चा लाल 100X खड़े में; हे० का० हरबेलसिंह व का० सोनाराम 200Xझुके में; सू० ए. माणिकराम व का० बी. बी. नायर 300Xअधोमुख तथा हे० का० नाना राम व का० आप्पा राव 300X आशु शामिल थे। यह टीम भी पाँचवें स्थान पर रही।

प्राथमिक चिकित्सा : हमारी टीम में का० हीरालाल (कप्तान), का० बाबूलाल, का० होशियारसिंह, का० बी. एम. त्रिपाठी थे, अतिरिक्त सदस्य का० जयलाल था। यह टीम 675.5 अंक पाकर सर्व प्रथम आयी। का० बाबूलाल को रजत पदक तथा का० बी. एम. त्रिपाठी को काँस्य पदक मिला।

मोटर परिवहन : हमारी टीम में ला० ना० जी. अप्पन (जीप), ला० ना० वीरास्वामी (पिकअप), का० राधा किशन (रिजर्व) और का० ब्रजनन्दन थे। इसने जीप में 8वाँ स्थान और पिक अप में 5वाँ स्थान पाया।

बेतार— इस टीम ने 9वाँ स्थान पाया। प्रेषण में गड़बड़ी के कारण यह संदेश जल्दी नहीं भेज सकी।

क्रिप्टोग्राफी (गुप्त लेखन) : इस टीम में हे० का० अशोक कुमार व हे० का० जमादार सिंह थे। इसने पहली बार प्रथम स्थान पाया।

कल्याण गोष्ठी : श्री अश्विनी कुमार, महानिदेशक सी० सु० दल की अध्यक्षता में, यह गोष्ठी 15 दिसम्बर 77 को आयोजित हुई। यह सुझाव पारित हुआ कि ड्यूटी प्रतियोगिता में सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्मिलित किये जायें, जिनमें राज्य सरकारों के पुलिस दलों को भाग लेना चाहिए।



विजेता टीम को बधाई देते हुये महानिदेशक श्री एस० एम० घोष

गोष्ठी में इन विषयों पर भी परिचर्चा हई—1. पुलिस कर्मचारियों की शिकायतों का निराकरण, 2. आवास-व्यवस्था 3. आवास भत्ते की बढ़ोतरी 4. कल्याण-अधिकारी की नियुक्ति।

आकांक्षा

[रचयिता—स० इ० लल्लन सिंह यादव, 3 बटालियन]

मग भूल न जाना सजन कहीं/
जब विरह-हृदय के आँगन में, सावन-घन कड़क रहे होंगे/
जब मिलन-प्रतीक्षा में अपने, नव-यौवन फड़क रहे होंगे/
लद्दाख-लेह की धरती पर, तब प्राणेश्वर उन्मुख होंगे/

गोरी को याद सतायेगी, कत्तव्य-मार्ग सन्मुख होंगे।
तब प्रथम-मिलन-आकांक्षा में, मग भूल न जाना सजन कहीं ॥१॥
कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे, जब महाकाल की माला में।
माँ माँग रही होगी आहुति, जब प्रतिरक्षा की ज्वाला में।
तब चिर संचित मम-आकांक्षा, क्षणभर में कहीं न ढह जायें।
कहने-सुनने को प्राणनाथ, बस संस्मृतियाँ ही रह जायें ।
मेरे सेन्दुर की कसम तुम्हें, मग भूल न जाना सजन कहीं ॥२॥
प्रियतम ! यह तेरी कुर्बानी, **श्री घोष** सुनेंगे हो हर्षित।
नीमच मिमोरियल में होगा, तुव नाम अमर होकर अंकित ।
सोहाग मुझे जब छोड़ेगा, आयेगी तब मेरी बारी ।
वरमाल लिये मैं स्वर्ग मिलूंगी पहन कुसुम्मी तब सारी ।
उस पुनर्मिलन फुलवारी में, मग भूल न जाना सजन कहीं ।३।

यह भी खूब रही

भक्त—गुरु देव, आपकी आज्ञानुसार हर स्त्री को माता कहने से मेरा चरित्र जहाँ संभलेगा, वहाँ मेरे पिता का चरित्र बेकार में ही बिगड़ जायेगा। x x

मित्र—अरे, अमीरों की बस्ती छोड़ कर इस झुग्गी-झोपड़ी कालोनी में क्यों चोरी करने आये हो?

चोर (निश्वास लेकर)—वह बस्ती तो दहेज में दामाद को देनी पड़ गयी यार, बेटी की शादी में।

अध्यापक—अच्छी औषधें निकल आने पर टी० बी० का मर्ज अब कम हो रहा है ।

बालक—कैसी बातकर रहे हैं सर, आज घर-घर टी० वी० का मर्ज बढ़ गया है; बल्कि एक-एक घर में दो-दो चार-चार एण्टीना अब लगे दिखाई पड़ते हैं।

नेता : अकेला दल दल है और दो दल मिलते ही दल-दल है।

मियाँ—(गर्म जलेबी खाने पर मुँह पट पटाते हुए) जले...बी।

बीबी—तुम जले, तो यह 'बी' क्या करे ? और खाओ मना करने पर भी गर्मागर्म जलेबी।

चुनाव लड़ता नेता : भई हम जानते हैं कि हमारे भाग्य से कोई जीता शब्द को नहीं छुड़ा सकता—जीता तो जीता, न जीता तो फजीता।

नर्स—कौन कहता है कि इमर्जेंसी खत्म हो गई है जब मेरी ड्यटी आज भी इमर्जेंसी वार्ड में लग रही है ?

बालक : पिताजी, आप तो कहते थे कि हाथी चार पैर का जानवर है, पर अखबार में तो लिखा है कि दवाई पर बनाई गई समिति का अध्यक्ष कोई हाथी है जिसने बड़ी बड़ी सिफारिशें की है।





★ क्रैपलर ★

● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक—हिन्दी संस्करण]

खण्ड VII, अंक 2

31 मई, 1978] [10 ज्येष्ठ, 1900

27वें अखिल भारतीय पुलिस खेल

27th All-India Police Games



सर्वोत्कृष्ट ट्राफी पाते हुये संयुक्त विजेता हरीचन्द (के० रि० पु० बल) व अजायब सिंह (सी० सु० दल)

यह भी खूब रही

होटल में एक मुफ़्तखोर जी हुजूर "श्याम, जो काम तुझसे नहीं हो सके वह मुझे बता।"

श्याम : इस समय तो मैं बिल नहीं चुका सकता। तू इसका भुगतान कर।

नौकर : सरकार, मालिकिन ने कहलवाया है कि 1 मास में मायके में आधी हो गयी हूँ।

मालिक : तब उन्हें कहला दे कि वह एक महीने और वहाँ रहें।

दो शिष्य : गुरुजी, आप कैसे कहते हैं कि एक एक मिल कर हम ग्यारह हो गये हैं। उधर गणित के अध्यापक तो एक एक मिलकर दो बताते हैं।

अध्यापक : तब नौ दो ग्यारह तो हो सकते हो; जाओ दफा हो।

सीता : गीता तुम्हें शाह कमीशन, ग्रोवर कमीशन, हाथी कमीशन में कौन सा कमीशन पसन्द है।

गीता : मुझे तो हथकरघा प्रदर्शनी का साड़ियों पर 20 % कमीशन पसन्द आया।

टिंकू : तुमने रेडियो को सुना है रिंकू ! अब वह विपक्षियों की खूब खबर दे रहा है।

रिंकू : देने की बात तो तुम जानो। हमें तो वह विपक्षियों की अब खूब खबर लेता दीख रहा है।

नरक के कष्ट बताने के उद्देश्य से उपदेशक "बताओ नरक के बीच में क्या होता है?

सरल स्वभाव से एक बालक—नरक के बीच में 'र' अक्षर होता है, गुरुदेव ।

जिगर-रोग में वैद्य द्वारा कुमारी आसव बताते हुए रोगिणी बिगड़ पड़ी—"मैं विवाहिता हूँ, कोई कुमारी नहीं; जो आप कुमारी आसव बता रहे हैं मुझे।"

ग्रामीण—सो तो ठीक है कि गोबर गैस के चूल्हे की यह घुंडी घुमाओ और वह जल जायेगा । मगर इसकी राख कहां से निकलेगी?



क्रै प ल र

[हिन्दी संस्करण द्वैमासिक]

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस का वृत्तपत्र

तथा

सचित्र पत्रिका

खण्ड VII
अंक 2

31 मई, 1978
10 ज्येष्ठ, 1900

मुख्य सम्पादक:
एच. एस. सेठी

हिन्दी सम्पादक:
जे० एस० शर्म्मा

छायाचित्रकार : एस. के. खन्ना

मुख पृष्ठ :

पुलिस खेलों के "सर्वोत्कृष्ट खिलाड़ी" की ट्राफी प्रधान मन्त्री श्री मुरार जी देसाई के कर-कमलों से पाता हुआ के० रि० पु० बल का हरीचन्द ।

सम्पादकीय कार्यालय :

द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110022

मुद्रक—सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली-111422

प्रकाशक : महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से एच. एस. सेठी

I. रिपोर्ताज :

(क) ग्रुप केन्द्र इम्फाल उद्घाटन

(ख) बालकन जी बारी

II. लेख:

(i) साम्प्रदायिक दंगों पर कुछ विचार, ले० —श्री के. एम. माथुर

(ii) पुलिस की ज़िम्मेदारी, ले०—श्री आनन्द स्वरूप गुप्ता

(iii) के. रि. पु. बल की भूमिका, ले०—श्री पी० जे० शेट्टी

III. कविताः

हृदय की आवाज़, रचयिता, कां० हंसराज ओझा, 53 बटा०

IV. कहानी :

तिकड़मबाज़, ले०—श्री जे. एस. शर्म्मा, हिन्दी सम्पादक

V. क्रीड़ा क्षेत्रे :

27वें अखिल भारतीय पुलिस खेलकूद तथा अन्य प्रतियोगितायें

VI. स्वास्थ्य-संदेश :

के. रि. पु. बल में प्रचलित रोग, ले०—डॉ० शेख हमीदुल्लाह

VII. गौरव गाथा :

(क) अग्नि शमन, लेखक—स० इ० बी० सी० बड़थ्वाल, महानिदेशालय)

(ख) सफल चालन, पकड़-धकड़ व चिकित्सा सुविधायें

VIII. विज्ञान के चढ़ते चरण :

IX. विविध :

(i) यह भी खूब रही

(ii) बटालियनों की अदला बदली

(iii) राहत सहायता

(iv) सूक्तिसुधा

(v) ग्रुप केन्द्र गांधी नगर में डाकघर

(iv) पहोलेयॉ-प्रस्तुतकर्ता ह० गोबेन्द सिंह, 23 बटालियन

यह संस्करण 30-5-78 को प्रकाशित हुआ है। यदि यह बटालियनों/ग्रुप केन्द्रों की रेल-सीमाओं पर दो सप्ताह के बाद पहुँचे, तब उपनिदेशक (संभरण) को पत्र द्वारा सूचित करना चाहिये।

गौरव-गाथा

अग्नि शमन

ले० स० इ० बी. सी. बड़थ्वाल

वे 1976 की गर्मियों के दिन थे। उन दिनों 6 बटालियन बिहार के विभिन्न भागों में क़ानून और व्यवस्था के लिए निरत थी। उसकी 'एफ' कम्पनी श्री रमेशचन्द्र डीवाई०एस०पी० की संरक्षता में मोतीहारी में तैनात थी। वहाँ की चिलचिलाती दुपहरी में, जब मैं रजिस्टरों को ठीकठाक कर रहा था, तभी साढ़े बारह बजे, उस कम्पनी के इन्स्पेक्टर दीनानाथ ने मुझे कम्पनी हेडक्वार्टर पर बुलाया । वहाँ पहुँचते ही, उन्होंने बताया कि मोती हारी (बिहार) पुलिस के सार्ज़ेंट डिक्रूज़ यह खबर लाये हैं कि वहां से लगभग 50 कि०मी० दूर चम्पारन ज़िले के बेतिया के मीना बाज़ार में भयंकर आग लग गई है। यह बाज़ार बड़ा ही मालदार और मशहूर है और वहाँ लाखों का व्यापार रोज़ होता है । मुझे तुरन्त अपनी प्लाटून ले जाकर घटनास्थल पर शीघ्र सहायता देने का आदेश मिला। यद्यपि नियमित गति से अधिक गाड़ी चलाना वर्जित है, किन्तु प्रश्न भयावनी आग की लपटों से जानोमाल की रक्षा करने का था। एक-एक क्षण बहुमूल्य था। स्थिति की गम्भीरता देख कर, मैंने गाड़ी पूरी गति से चलवायी; साथ ही, अग्निशमनक यन्त्र, बाल्टी, डंडे आदि सब साथ में रख लिये।

दूर से ही आकाश से छूती हुयी लपटें दिखाई दे रही थीं । थानों के थान भस्म हुये जा रहे थे। अनाज की बोरियाँ जल कर खाक हो रही थीं। जलती टीन की छत्तों से भड़ाम-भड़ाम बम से फूट रहे थे। सब ओर त्राहि-त्राहि पड़ी हुयी थी। भीड़ बेकाबू हो रही थी और जैसा ऐसे समय में प्राय: देखा जाता है, आस-पास के असामाजिक तत्व लूटपाट में व्यस्त थे ।

घटनास्थल पर पहुँचते ही, इलाके के सुपरिन्टेन्डैन्ट पुलिस श्री डवल्यू० एच० खान ने हमें सबसे पहले भीड़ को काबू में लाने के आदेश दिये। तुरन्त हमने हौंसले और निष्पक्षता से काम लिया और घबड़ाते हुये लोगों की हिम्मत बँधाई और फिर आग बुझाने का काम हाथ में लिया। कुछ समय के उपरांत, नेपाल से दमकल आ गया। तत्पश्चात् सीतामढ़ी और मुज़फ्फरपुर से भी दमकल ले आये गये; किन्तु वे खराब होने के कारण कुछ काम नहीं कर पाये। केवल नेपाल का दमकल ही अच्छा काम कर सका। आग बुझाते हुए हमें सुबह के तीन बज गये।

फिर हमारा ध्यान आग के वक्त की लूटखसोट की ओर गया। बेतिया के पुलिस इन्स्पेक्टर श्रीरामाधार के साथ, मैं जीप में गया और वहाँ के घरों से बेशुमार सामान बरामद किया।

बाज़ार के दुकानदारों तथा स्थानीय जनता ने हमारी सामयिक सहायता की बड़ी प्रशंसा की। श्री ख़ान ने, जो इस कार्रवाई में हमारे साथ रहें, मेरी पीठ ठोंकी और कहा **"हमें सी० आर० पी० पर बड़ा नाज़ है। आप बड़े अच्छे फोर्स के आदमी हैं।** आपने वाकई में बड़ी हिम्मत और मेहनत से काम किया और लाखों के जानोमाल को बचा लिया। हम आपकी तारीफ़ ऊँचे अफसरान को लिखेंगे।"

उस समय मेरी और मेरे साथियों की छातियाँ गर्व से फूली नहीं समा रही थीं।

दिनांक 7 जनवरी 1978 को अरुणाचल प्रदेश में 12 बटालियन की बाहरी चौकी के पास सेप्पा में एक नागरिक के घर में आग लग गई। हमारे जवान तुरन्त घटना स्थल पर जा धाये और आग को बुझा दिया।

दिनांक 8 जनवरी 1978 को, जम्मू-कश्मीर के तरल कस्बे में आग लग गई। 40 बटालियन के जवानों के प्रयत्नों से आस पास के घरों में फैलने से रुक गई।

दिनांक 20 जनवरी 1978 को कलकत्ता हवाई अड्डे की मुख्य हवाई पट्टी पर सूखी घास में आग लग गई। 58 बटालियन के लगभग 200 जवान तुरन्त दौड़ गये और आग बुझाने में बड़ा सहयोग दिया। कलकत्ता हवाई अड्डे के निदेशक ने इस सहयोग की भूरि भूरि प्रशंसा की।

दिनांक 24 ज़नवरी 1978 को, जम्मू में मानवल के विश्राम गृह (केन्द्रीय निर्माण विभाग वाले) के निकट एक नागरिक के घर में भयंकर आग लग गई। 18 बटालियन के जवानों ने तुरन्त घटना स्थल पर पहुँच कर आग बुझाई। जनता ने इस सामयिक सहायता की बड़ी सराहना की ।

ड्राइवर की प्रशंसा

श्री एस०एम०घोष, महानिदेशक के० रि० पु० बल ने पर्वतीय क्षेत्रों में बिना दुर्घटना के 40,000 मीटर से अधिक लम्बे मार्ग पर के० रि० पु० बल के वाहन सफलतापूर्वक चलाने के लिये हे० का० (ड्राइवर) शिवा जी (20 बटा०) की बड़ी प्रशंसा की है।

रेल डाक की पकड़ धकड़

जनवरी 1978 में, स० इ० रेशम सिंह (ग्रुप केन्द्र जम्मू) के अधीन 3 जवानों की टुकड़ी सरकारी सामान के साथ 16 और 22 बटालियनों को लिये जा रही थी। कार्य पूरा कर लेने के बाद, जब यह टुकड़ी असम मेल में 13.1.78 को यात्रा कर रही थी, रेलगाड़ी नक्सलबाड़ी रेलवे स्टेशन से पहले सहसा आवाज करती रुकी। इस अचानक रुकने के कारण चिंताकुल रेशम सिंह अपने प्रथम श्रेणी के डिब्बे से उतर कर इस बात का पता लगाने लगा। वह यह देख कर हक्का बक्का रह गया कि साथ के द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करते हुये उसके दो जवान ना० माधो सिंह तथा का० मुहम्मद शरीफ उन पाँच नागरिकों का पीछा कर रहे हैं, जो रेल की पटरी की बाँयी ओर खेतों में भागे जा रहे थे। दाल में कुछ काला समझ कर, स० इ० रेशम सिंह ने भी निज जवानों के साथ उन पाँचों का पीछा किया। दो कि० मी० की भीषण दौड़ धूप के

बाद, एक को तो मुहम्मद शरीफ ने पकड़ लिया और शेष सभी, नागारेकों से छीने गये थैले के साथ, धान के खेतों में चम्पत हो गये। क़ैदी को रेशम सिंह और उसके साथी रेल के रुकने के स्थान पर ले आये और नक्सलबाड़ी रेलवे स्टेशन की रेल पुलिस को उसे सौंप दिया।

बल को चिकित्सा-सुविधायें

पूर्वोत्तर अंचल में निरत के० रि० पुलिस के कर्मचारियों के लिये, असम राज्य के मेडिकल कॉलेज अस्पतालों में निम्नलिखित शय्यायें रिजर्व (आरक्षित) रखने का निर्णय हुआ है—I. असम मेडीकल कॉलेज डिब्रूगढ़-3; II गौहाटी मेडीकल कॉलेज गौहाटी-3 तथा III. सिलचर मेडीकल कॉलेज, सिलचर-2.

इन शय्याओं में एक शय्या शल्य चिकित्सा (सर्जरी) के लिये भी सम्मिलित है। इनके लिये रु० 2,250 प्रतिशय्या प्रति वर्ष राज्य सरकार को देना पड़ेगा। पथ्य तथा दातव्य औषधें पर भी वही दर लगायी जायेगी, जो सामान्य वार्ड के अन्य रोगियों से ली जायेगी। अस्पताल के अधीक्षक की अनुमति से, अधिक सुविधायें भी के० रि० पु० बल के कर्मचारियों को दी जा सकती हैं। खाली रहने पर इन शय्याओं का उपयोग अस्पताल के अधिकारी औरों के लिये भी कर सकते हैं।

साम्प्रदायिक दंगों पर कुछ विचार

ले०—श्री के० एम० माथुर

"साम्प्रदायिकता एक बड़ी खतरनाक़ और गुप्तचाली प्रक्रिया है, जो किसी भी धार्मिक दल के रवैये में राजनीति की मिली भगत से उत्पन्न होती है। यह ख़तरनाक़ इस लिए है कि यह ग़लत या सही के सभी विवेक को पलीता लगा कर, धर्मान्धता को सरलता से उभार देती है और गुप्तचाली दगाबाज़ इस कारण से है कि यह देश को बड़ी क्षति पहुँचा सकती है और उसका विभाजन करके मानी है। इसका एहसास होना चाहिए और मुचंटे के द्वारा इस प्रवृत्ति को कुचल देना चाहिये। दंगे होने से पहले ही पुलिस को कारवाई करनी चाहिए; बाद की कार्रवाई से कुछ नहीं बनता। इस विषय में पुलिस को जागरूक रहना चाहिए और धर्मान्धता से बचे रहने की पुलिसजनों को शिक्षा देनी चाहिए।"-**पुलिस पर नेहरू—श्री बी० एन० मलिक।**

भारत में साम्प्रदायिक दंगों की अपनी तीखी रणनीतियाँ दिखायी पड़ती हैं और यह बात उजागर है कि राजनैतिक दलों और समाचारपत्रों की साँठगाँठ से, साम्प्रदायिक लोग इन नीतियों को चलाने में सफल होते हैं। देश के इतिहास, भूगोल, सभ्यता और राजनीति में गहरी जड़ें होने के कारण, साम्प्रदायिक दंगे बड़ी जटिल

समस्या पैदा कर देते हैं। सांप्रदायिक दंगे केवल हिन्दू और मुसलमानों तक ही सीमित नहीं हैं; बल्कि मुसलमानों के शिया-सुन्नी दो दलों में, हरिजनों और सवर्ण हिन्दुओं में, हिन्दुओं में ही अन्य मतों में, आदि जातियों में तथा हिन्दुओं और पारसियों में उत्पन्न हो जाते हैं। जब भी दो जातियों में सांप्रदायिक दंगे उभर पड़ते हैं, तब साधारणतया ये अपराध होते हैं - (1) प्रहार, छुरीबाज़ी और मारधाड़ (2) लड़कियों और महिलाओं का अपहरण और बलात्कार (3) मकान, दुकानों की आगजनी (4) दो विरोधी दलों में संघर्ष (5) दुकानों की लूटपाट और (6) धार्मिक स्थानों को अपवित्र बनाना।

साम्प्रदायिक दंगों के व्यापक रूप के उदाहरण देखने को इन स्थानों में मिले हैं— कलकत्ता, जमशेदपुर, मेरठ, राँची, सिंहभूमि, सुन्दरगढ़, राउरकेला, गुजरात में अहमदाबाद तथा अन्य स्थानों में । प्राप्त आँकड़ों के अनुसार, देश में साम्प्रदायिक दंगों की संख्या 1954 में 83 से लेकर 1967 में 220, 1970 में 521 और 1972 में 240 रही है।

निम्नलिखित कारणों से राष्ट्र को भी चिन्ता रहती है —

1. श्री जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में —"किसी सीमा तक साम्प्रदायिक दंगे शर्मनाक हैं...अधिकारियों की विफलता के कारण ही, यह अपमानजनक दृश्य होता है।"

2. साम्प्रदायिक दंगों से बदले और बदले के बदले—एक प्रतिशोध की श्रृंखला का दुष्चक्र चल पड़ता है। जनता इन दौर-दौरों में पिस जाती है।

(3) संसार की दृष्टि में भारत की धर्मनिरपेक्षता की छवि को ये दंगे बिगाड़ देते हैं और पाकिस्तान को हमें बदनाम करने का मौक़ा देते हैं।

(4) मिस्र, सीरिया, ईराक तथा बंगला देश जैसे मित्र देशों से, ये हमारे सम्बन्ध खराब करते हैं।

(5) काम ठप्प होने से, उत्पादन-क्रिया में करोड़ों रुपयों तथा मानव घंटों की हानि होती हैं।

(6) इन दंगों में प्राणों का भारी नुकसान होता है। 1964 की जनवरी में पांच दिनों के साम्पदायिक दंगों में, दंगों के दबने से पूर्व 164 मनुष्यों के प्राण गये थे।

7. इन में सम्पत्ति को भी भारी क्षति पहुँची है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार, अहमदाबाद नगर में 1969 के सितम्बर वाले दंगों में सम्पत्ति की हानि रु० 4.25 करोड़ और मकान-दुकानों की क्षति की संख्या 6,472 थी।

8. दंगों के बाद, उनकी छानबीनों से स्थानीय अधिकारियों तथा पुलिस के हौंसले पश्त पड़ जाते हैं।

9. इन दंगों में, अल्पसंख्यक की ही बलि होती है और जानोमाल भी उनका ही अधिक क्षतिग्रस्त होता है। इस बात को ध्यान में नहीं रखते हुए कि किस ओर से दंगे शुरू हुए (और इसका जानना भी निष्पक्षता से प्रायः असम्भव होता है) "मुसलमानों को जानोमाल की अपेक्षाकृत अधिक हानि उठानी पड़ती है।"

10. देश के एक कोने में अल्पसंख्यकों पर हुए अत्याचारों का बदला, दूसरे कोने में अन्य अल्पसंख्यकों पर और भी अधिक अत्याचार करके चुकाया जाता है। राजनीतिक तथा वास्तविक दोनों ही दृष्टिकोणों से, ऐसे साम्प्रदायिक दंगे नितान्त अमानवीय होते हैं।

साधारण लक्षण : पिछली तीन दशाब्दियों में हुए साम्प्रदायिक दंगों में अधिकांशतः ये बातें देखने में आती हैं—

(i) कट्टर हिन्दुत्व और कट्टर इस्लाम—देश में ये दो बड़े साधारण तत्व हैं। साम्प्रदायिक और भाषायी गुटबन्दी ने बहुधा भारी दंगे कराये हैं, जिन्होंने अन्त में भयंकर रूप धारण किया है। साम्प्रदायिक हिंसा दावानल की भाँति फैलती है।

(ii) दंगों में सामान्य जीवन की अस्तव्यस्तता से लाभ उठाते हैं निम्न जगत के गुन्डे और शातिर लोग, जो लूटपाट, आगजनी और अन्य असामाजिक कार्रवाइयों का सहारा लेते हैं।

(iii) साम्प्रदायिक दंगों में, कुछ साम्प्रदायिक संगठन और अल्पसंख्यक जाति के कुछ स्वार्थी लोग जानबूझ कर आतंक का वातावरण पैदा करते हैं और क़ानून तथा व्यवस्था को सामान्यरूप में फिर से लाने के मार्ग में ये ही बड़ा रोड़ा अटकाते हैं।

(iv) ऐसे दंगों की पहले ही योजना बना ली जाती है। श्री जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में—यह कहना कि अधिकारी अचम्भे में रह गये, क़तई ठीक नहीं है।"

(v) विभिन्न जातियों में व्यक्तिगत शत्रुता और तिजारती दुश्मनी जैसे समाज-विरोधी तनाव बढ़ाने वाले तत्व बहुतायत में पाये जाते हैं।

(vi) स्थानीय जोश को प्रज्ज्वलित करने में अफवाहें बड़ा महत्वपूर्ण योगदान करती हैं ।

(vii) कुछ राजनैतिक दल, साम्प्रदायिक तनाव को बारम्बार बनाये रखने में प्रायः सक्रिय रहते हैं। "25 वर्षों का अनुभव यह बताता है कि साम्प्रदायिकता के प्रति चाहे पक्ष में या विपक्ष में, राजनीतिक दलों द्वारा अपनाये गए रवैयों से ही नये तनाव पैदा होते हैं और भयंकर रूप धारण करते हैं।" (डॉ० पी० डी० शर्मा की पुस्तक इन्डियन पुलिस--ए डेवलपमेन्टल एप्रोच)

(viii) अपनी निष्पक्षता दिखाने के लिए, स्थानीय अधिकारी साम्प्रदायिक दंगों में सतानेवालों और सताये गये लोगों को साधारणतया बराबर पलड़ों में रखते हैं।

(ix) साम्प्रदायिक समाचारपत्रों ने अपने ग़ैर ज़िम्मेदार प्रकाशनों से मजहबी आग भड़काने में ख़ूब नमक मिर्च लगाने का निन्दनीय काम किया है।

(x) श्री एस० सी० मिश्र (आई० पी०) के मतानुसार—"किसी ठोस प्रमाण के अभाव में भारतीय गुप्तचर विभाग ने भारत के साम्प्रदायिक दंगों में पाकिस्तान की गुप्तचरी का हाथ कभी नहीं माना है, किन्तु यह शक़ सदा बना रहता है कि अनेकों दंगे पाकिस्तान के स्वार्थी धर्मान्ध तत्वों के इशारे पर होते हैं ।'

(xi) "साम्प्रदायिकता एक राजनीतिक बल बनी रहती है और इलाहाबाद, अलीगढ़, खुलना, कलकत्ता, अहमदाबाद, जलगाँव और भिवानी के दंगों की भाँति, प्रायः हिंसा पर उत्तारू हो जाती है। देश के लिए यह हमेशा खतरा बनी रहती है।"

(xii) देश के राजनीतिक इतिहास के संकटों के समय, साम्प्रदायिक दंगों में स्वयं बारम्बार प्रज्ज्वलित होने की उल्लेखनीय प्रवृत्ति रही है।"

(देखिए—श्री एस० सी० मिश्र की पुस्तक—पुलिस एडमिनिस्ट्रेशन इन इंडिया)

पुलिस की भूमिका—साम्प्रदायिक दंगों से निबटने में, पुलिस के कार्य कालक्रम में कुछ इस प्रकार हैं—1. गुप्तचरी 2. निर्णय लेना (क़ानूनी स्थिति तथा सरकारी नीति) 3. पूर्वोपाय में पहले ही पकड़-धकड़ 4. कार्रवाई की तैयारी और योजना 5. सीधी कार्रवाई (कार्रवाई का समय उपलब्ध जनशक्ति का प्रयोग और उपद्रव-दमन के ढंग) 6. कार्रवाई का समापन और अनुसरण-कार्य (पूछताछ और न्यायालयों में अभियोजन) 7. साम्प्रदायिक दंगों को कुचलने के लिए दीर्घकालिक उपाय-जहां तक साम्प्रदायिक दंगों का सम्बन्ध है, "सहसा विस्फोट का सिद्धान्त' विरले ही सही है। साम्प्रदायिक दंगों के अध्ययन ने यह स्पष्ट किया है कि साम्प्रदायिक तनावों के कुछ चिह्न पहले ही दिखाई पड़ रहे थे, जिन पर पुलिस द्वारा स्थिति का अपर्याप्त तथा गलत मूल्यांकन करने के कारण सही ध्यान नहीं दिया जा सका। साम्प्रदायिक उत्तेजनाओं के विषय में सही और पर्याप्त जानकारी तथा दंगे की सुलगती आग या तनाव की उपस्थिति की सामयिक सूचना को कारग़र ढंग से इकट्ठा करने पर, पुलिस सरकारी तन्त्र को सतर्क कर सकती है और होते हुए दंगों को रोक सकती है या व्याप्त उपद्रवों की भीषणता को कम कर सकती हैं। उपद्रवियों, धर्मान्ध-शक्तियों, गुन्डों तथा अन्य समाज-विरोधी तत्वों की सूचियों को समय-समय पर अद्यतन सही करते रहना चाहिए और अराजकता फैलाने वालों पर कड़ी दृष्टि रखनी चाहिये। साम्प्रदायिक उपद्रवीय स्थिति पर प्रभावपूर्ण नियन्त्रण के लिए तथा गुप्त जानकारी के संकलन तथा प्रसारण एवं विविध पुलिस-सेवाओं को कारग़र निदेश देने के वास्ते, एक ज़िला नियन्त्रण-कक्ष की ज़रूरत है, जिस पर पर्याप्त जनशक्ति, क्षेत्रों के नक्शे, परिवहन, बेतार, टेलीप्रिंटर, टेलीफोन आदि जैसे अच्छे संचार-साधन हों। साम्प्रदायिक दंगों पर काबू पाने के लिए सभी समाजद्रोही तत्वों, सिंहभाइयों, उत्तेजकों तथा मजहबी तनावों में धन लगाने वालों की तुरन्त रोक थामी धरपकड़ करनी होगी। साथ ही, दोनों मतों के ज़िम्मेदार नेताओं से अनुनय-विनय एवं विचार विनिमय किया जा सकता है। पुलिस के निकम्मे होने पर ही, साम्प्रदायिक दंगे सिर उठाते हैं या विकराल मुख फाड़ते हैं। शुरू में ही बल प्रयोग किया जाना चाहिए क्यों कि देरी करने पर ख़तरनाक नतीजे और अपूर्य हानि हो सकती है। देश के जानो माल की रक्षा के लिए, दृढ़ कार्यवाही का निर्णय लेना बहुत ही आवश्यक हैं। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में मुख्यकर, दफ़ा 144 (अपराध दण्ड संहिता) के अन्तर्गत जारी आदेशों की घोषणा तथा प्रर्वतन की तुलना में पुलिस अधिनियम की 30 धारा में विहित नियामक आदेशों को तरजीह देनी होगी।

पुलिस-विफलता के कारण : साम्प्रदायिक उपद्रवों से सुलझने के विषय में

अतीत में की गई पुलिस और स्थानीय नागरिक अधिकारियों की सामान्य आलोचना को संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है :

1. बाद में कठोर कार्रवाई की जाने के भय से, सभी स्तरों पर कारग़र नेतृत्व की कमी, अनिर्णय तथा प्ररुचि का अभाव 2. घटनाओं को बहुत कम महत्व देना और गुप्त जानकारी की योजना में असफलता 3. पुलिस थानों पर तथा सशस्त्र पुलिस में जनशक्ति की कमी 4. मोटरपरिवहन व अश्रु गैस जैसे उपद्रव-दमन उपकरणों का अभाव 5. पुलिस में असंतोष तथा मनोबल में क्षीणता 6. सही प्रशिक्षण का अभाव और सांप्रदायिक दंगों से निपटने की तैयारी में कमी 7. उपद्रव ग्रस्त क्षेत्रों में चौकियों तथा पहरों के ठीक-ठीक प्रबन्ध में विफलता 8. कारग़र पुलिस कार्रवाई करने में असफलता तथा किन्हीं पुलिस अधिकारियों में कहीं-कहीं निष्पक्षता की कमी 9. उपद्रव के आरम्भिक काल में अप्रभावी कार्रवाई के ज़िम्मेदार स्थिति का ग़लत जायजा और आत्मसन्तोष की भावना 10. संगठन तथा योजना की कमी दिखाती हुयी, उपलब्ध पुलिस के प्रयोग और संरक्षण में विफलता 11. झूठी अफवाहों को रोकने के लिये आवश्यक जन-सम्पर्क तथा संचार की कमी तथा समाचार पत्रों से सहयोग पाने में विफलता 12. राजनीतिक समर्थन तथा स्वीकृति के लिये अनुचित चमचागिरी, जिसके फलस्वरूप पुलिस अफसरों द्वारा स्थिति को स्वयं जांचने की अपेक्षा राजनीतिक निदेशन तथा मार्गदर्शन पर निर्भरता।

साम्प्रदायिक दंगों के अधिकांश अध्ययन/छानबीनों ने यह बात बताई है कि पुलिस और स्थानीय अधिकारियों द्वारा देर से की गई कार्रवाई ने उत्तेजना ही नहीं केवल अधिक फैलाई, अपितु उस पर तुरन्त काबू पाने के लिये अधिकारियों को अक्षम बना दिया।

क़ानूनी शस्त्रागार : भारतीय दंड संहिता में 153 'ए' अनुच्छेद जोड़ने से तथा साम्प्रदायिक तथा चुनाव क़ानून (संशोधन) अधिनियम 1969 से; उसके क्षेत्र को विस्तृत करने से पुलिस को पर्याप्त अधिकार मिले हैं। इस कानून में अच्छी बातें ये हैं —

(क) कई अपराध, हस्तक्षेप्य तथा बिना जमानत वाले करार दिये गये हैं;

(ख) पूजास्थलों पर किये गये अपराध, और अधिक दण्डनीय होंगे; तथा

(ग) जन-प्रतिनिधित्व अधिनियम की 8 धारा के अन्तर्गत, कई अपराधों में गिरफ्तारियाँ अनर्हतायें मानी गई हैं। दफ़ा 144 (दंड अपराध सहिता) की घोषणा करने पर काफी रोकथाम के उपाय किये जा सकते हैं और ठीक समय पर गिरफ्तारियाँ की जा सकती हैं।

रोकथाम और नियंत्रण—(1) अनुभव यह बताता है कि बहुत वर्षों तक साम्प्रदायिक दंगों को हमें राष्ट्रीय जीवन का अंग मानते रहना होगा। इस बात को समझने के लिये, केन्द्र को तथ्य से मुख नहीं मोड़ना होगा और सांस्कृतिक तथा शैक्षिक उपायों के साथ-साथ केवल साम्प्रदायिक प्रकार के दंगों से ही निपटने के लिये एक केन्द्रीय संगठन (आन्तरिक सुरक्षा व्यूरो) का गठन उसे करना होगा (सी.

एल. प्राउडफुट का लेख "दीवार अगेंस्ट कम्यूनालेज्म—संडे स्टैन्डर्ड, 4 जुलाई, 1970)

(2) प्रशासन को भी दृढ़ता से कार्रवाई करनी चाहिये और मुकदमों में राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं सहन करना चाहिये (ए. डी. गोर्वाला की—पुस्तक दी रोल आफ दि एडमिनिस्ट्रेटर, पास्ट, प्रेजेंट एंड फ्यूचर)

(3) युवा-हिंसा की भाँति, साम्प्रदायिक हिंसा को एक भिन्न रवैया अपनाने की ज़रूरत है। प्रशासन को तो शायद निम्न स्तर की भूमिका निभानी होती है और इस रोग की (जो अधिकांशतः राजनीति से रंगा होता है) कोई अचूक दवा उस पर नहीं होती है। (डॉ० पी. डी. शर्मा — इन्डियन पुलिस, ए डेवलपमेन्टल एप्रोच)

(4) क़ानून और व्यवस्था के तंत्र को साम्प्रदायिक समस्याओं से निपटने के लिये विशेष रणनीतियाँ और उपाय काम में लाना चाहिये और इन कदमों को तो उठाना ही चाहिये—

(क) पुलिस संगठन में कर्मी-साहाय्य के रूप में किसी विशेष योग्यता या खण्ड का गठन;

(ख) स्वाधीनता और मुख्यकर धार्मिक स्वाधीनता के प्रति संवैधानिक अधिकारों के अन्तर्गत पुलिस को पूर्वोपाय करने के लिए पर्याप्त अधिकारों को देना; तथा

(ग) कर्मचारियों की भर्ती और प्रशिक्षा को मज़बूत बनाने के लिये निजी सुधार लाना, जिससे व्यवहार में धीरे-धीरे धर्मनिरपेक्षता की परम्पराओं और अभिरुचियों में वे मँझ जायें।

(5) सामूहिक जुर्माना एक ऐसा उपाय है जो इस ग़लत भावना पर आधारित है कि हज़ारों निरपराधी कुछ गुंडों को नहीं संभाल सकते हैं। इसी प्रकार के लिये कुछ दर्जनों ज़िलों को अलग करना और ज़िलाअधिकारियों को चेतावनियाँ देना दिखावे में भोली-भाली करतूते हैं। दोषी को कठोर दंड देना इस जटिल समस्या का केवल किनारा छूना है और ज़िला-प्रशासन सिर्फ गौण श्रेणी की भूमिका निबाह सकता है।

(6) एक नवजात लोकतंत्र में, विश्वविद्यालयों, ग्रामों, कस्बों और शहरों, समाचारपत्रों तथा दूरदर्शन तथा अन्य सामान्य मंचों पर विचार-गोष्ठियों द्वारा मेहनत करके एक ऐसी लोकनीति और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण बनाना है, जिससे सर्वसम्मति से साम्प्रदायिक समस्या का स्थायी समाधान खोजा जा सके। जनता जनार्दन में धर्मनिरपेक्ष और विश्वबन्धुत्व की भावना को भरने के लिये, सामूहिक माध्यमों के विविध रूपों द्वारा जन-नेताओं और शिष्ट वर्गों को बढ़चढ़ कर काम करना चाहिये। एक बहुजातीय समाज में पूरा साम्प्रदायिक तालमेलरखने के लिये, जनता में चेतना लाने के वास्ते, नागरिक अधिकारियों और पुलिस को विशेष कोर्सों द्वारा शिक्षित करना चाहिये।

(7) साम्प्रदायिक झगड़े को दबाने के लिये ज़रूरत है, निरन्तर सतर्कता और तुरन्त कार्रवाई की। राँची, मेरठ, दिल्ली जैसे साम्प्रदायिक दंगों के होने वाले शहरों में,

क़ानून तोड़ने वालों के विरुद्ध कारगर कारेवाइ तथा निमेम दमन हो का सहारा लेना चाहिये।

विविध आयोगों को लाभप्रद सिफारिशें : रेड्डी आयोग ने (जिसके अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री पी० जगन मोहन रेड्डी, तथा धर्ममूर्ति सर्वश्री नस्सर वाई जी के वकील और अकबर एस० सारेला (गुजरात न्यायालय) सदस्य थे, 19 सितम्बर 1969 को और उसके बाद गुजरात में अहमदाबाद तथा अन्य स्थानों पर हुये साम्प्रदायिक दंगों की छानबीन की थी और उसके जांच-परिणामों की ओर ध्यान देना उपयुक्त रहेगा। उसकी कुछ सिफारिशें इस प्रकार हैं—

(1) हर ऐसी घटना के लिये, जहाँ कठोर कार्रवाई की गई हो और जहाँ बिना न नकुच के बल-प्रयोग हुआ हो, कोई न्यायिक जाँच या आयोग नहीं बिठाना चाहिए, वर्ना पुलिस जनों का हौंसला टूटता है, व भविष्य के ऐसे अवसर या स्थिति में, जहाँ ऐसी सख्ती की ज़रूरत है, उनमें हौलदिली होने लगती है।

(2) देश के साम्प्रदायिक दंगों में असामाजिक तत्वों से अल्पसंख्यकों की जान व माल की रक्षा करना सरकार का काम है।

(3) पुलिस के हरेक ज़िले में, एक अलग सतर्कता तथा गुप्तचरी का अनुभाग खोलना चाहिए, जिसका काम छोटे-छोटे हिन्दू मुस्लिम झगड़ों या अल्प संख्यकों और बहुसंख्यकों के टुचपुच दंगों तक की सचना भी इकट्ठा करने का होना चाहिए। इस प्रकार की सूचना से, अधिकारी गण पूर्वोपायों द्वारा दंगों को बढ़ने से रोकने के योग्य होंगे।

(4) जिस क्षेत्र में दंगे हो जायें और 24 घन्टों से अधिक रहें, उसके सभी ऊँचे अफसरों पर विभागीय जाँच बिठानी चाहिए पौर दंगों को शुरू में ही नहीं दबाने की असावधानी के अपराध में उन्हें दण्ड देना चाहिए।

(5) साम्प्रदायिक घृणा के विरुद्ध और धर्मनिरपेक्षता के पक्ष में निरन्तर प्रचार तथा प्रशिक्षण द्वारा साम्प्रदायिक कुचेष्टाओं से जूझने के लिए जनमत का वातावरण पैदा होगा। यदि राज्य सरकार और स्थानीय अधिकारी सचमुच में साम्प्रदायिकता से ऊपर हैं और दंगों को शुरू में दबाना चाहते हैं, तब वे सफल हो सकते हैं और अल्पसंख्यकों में सुरक्षा की भावना उत्पन्न कर सकते हैं। दमन से रक्षा की समुचित नीति ही अल्पसंख्यकों की समस्या का साधारण हल है।

(6) सम्प्रदायों में घृणा व वैमनस्य पैदा करने वाले लोगों के विरुद्ध कठोर क़ानूनी कार्रवाई करनी चाहिए। एक बार ऐसे मामलों को न्यायालय में ले जाने के बाद, राजनीतिक दबावों में आकर लौटाना नहीं चाहिए।

(7) हिंसा की प्रवृत्ति वाले क्षेत्रों और नगरों में शस्त्र अधिनियम की 4 धारा को लागू करने के लिए तथा छुरे, चाकू, भाले तलवार आदि जैसे शस्त्रों को उन क्षेत्रों और नगरों में बिना लाइसेन्स के रखने या ले जाने के विरुद्ध अधिसूचना जारी करने के विषय में सरकार को सोचना चाहिए।

(8) ऐसे क्षेत्रों के लिये आपात्कालीन योजना तथा उसमें अपनी-अपनी सेवाओं की पूरी-पूरी जानकारी, ज़िला कलक्टर, पुलिस अधीक्षक और उसके अधीनस्थ कर्मचारियों को होनी चाहिये।

(9) ज़रा सी बात पर भभक पड़ने वाले तनाव को प्रज्ज्वलित करने वाली अफवाहों का खण्डन करना बड़ा जरूरी है। सही तथ्यों का बता कर अफवाहों के खण्डन में रेडियो लाभदायक हो सकता है। वाहनों द्वारा प्रचार भी किया जा सकता है।

(10) दंगाग्रस्त क्षेत्रों पर पूर्ण नियंत्रण लाने के लिए, स्थायी चौकियाँ कायम करनी चाहिए और इनका प्रयोग करना चाहिए।

(11) पुलिस टुकड़ियों को मोटरों में लगे वाकी-टाकी रेडियों से लैस रखना चाहिए और आक्रमणीय स्थानों पर टेलीफोन भी लगे होना चाहिए। पुलिस की सहायता के लिए, एक फोटोग्राफर भी घटना के छायाचित्र लेने के लिए मौजूद रहना चाहिए।

(12) उपद्रवों में हानि उठाने वालों को मुआवजा और पुनर्स्थापित करने का प्रबन्ध होना चाहिए। मरने वालों की सन्तान को उपयुक्त मुआवजा देना चाहिए।

(13) सामूहिक जुर्माना और दाण्डिक पुलिस को लगाने पर भी सोचना चाहिए।

1967 में हुए दंगों की छानबीन द्वारा न्याय मूर्ति पी. जगमोहन की रिपोर्ट में कुछ सिफारिशें इस प्रकार हैं—

(क) दंगों के सुलझने के लिए तुंरत कारगर निदेशन के वास्ते सभी क़ानून-पालन कराने वाली इकाइयों में तालमेल बिठाने को एक उपद्रव-आयुक्त प्रत्येक राज्य में लगाना वाँछनीय है।

(ख) आग्नेय अस्त्र और उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध प्रत्येक थाने में होना चाहिये।

(ग) मलवा उठाने, मुर्दे फेंकने, मारधाड़ के भय में ग्रस्त लोगों की भ्रमणरक्षा तथा जानोमाल की रक्षा जैसे अनेकों कार्यों में पुलिस साधारणतया लगायी जाती है। इन कामों को होमगार्ड या राष्ट्रीय कैंडेट कोर को सौंपना चाहिए।

(घ) नियंत्रण-कक्ष में सुधार और सूचना भेजने के बड़ी ज़रूरत है। धावे, आगजनी, लूटमार, मारधाड़ आदि जैसी उपद्रव सम्बन्धी सूचनायें थानों के हिसाब से इकट्ठ करने के वास्ते हर नियंत्रण कक्ष पर एक ज़िम्मेदार अफसर को रहना चाहिए, जिससे नियंत्रण अधिकारी को किसी समय भी पूरी-पूरी जानकारी मिल सके।

उपसंहार : पुलिस अफसरों तथा नागरिक अधिकारियों के निदेशन के लिए आन्तरिक सुरक्षा अकादमी के सहयोग से पुलिस अनुसंधान और विकास के व्योरों को विभिन्न सामुदायिक दंगों के मामलों का व्यौरेवार अध्ययन करना चाहिये।

बटालियनों की अदला-बदली

भविष्य में बटालियनों की अदला-बदली इस प्रकार रहा करेगी :—

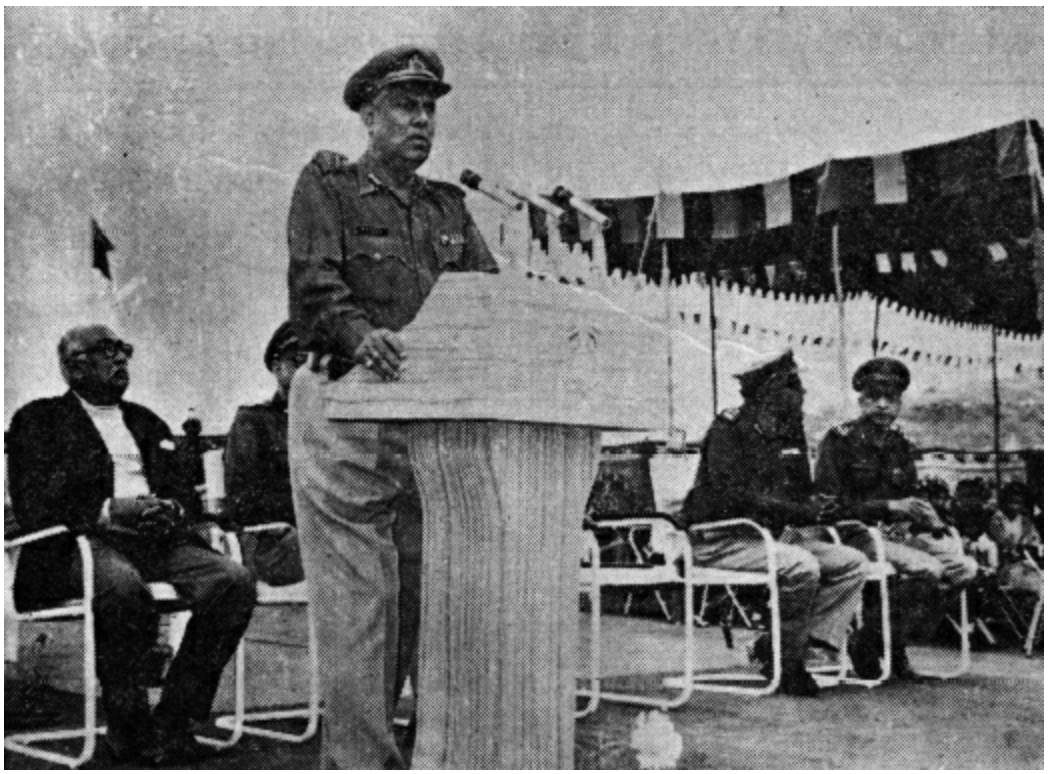
(I) पूर्वोत्तर अंचल में—एक स्थान पर चार वर्ष निरत रहने पर हरेक बटालियन

बदली जायेगी।

(II) अन्य क्षेत्रों में— एक स्थान पर तीन वर्ष निरत रहने पर सभी बटालियनें बदली जायेंगी।

राहत सहायता में वृद्धि

दिनांक 2 फरवरी 1978 को रवीन्द्र शाला में केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री चरणसिंह को 7,92,175 रु० के चेक देने के अतिरिक्त, 8,443 रु० की और राशि प्राप्त हुई और प्रधान मन्त्री के सहायता कोष को भेजी जा रही है। इस प्रकार, कुल दान की धनराशि अब 8,00,618.95 रु० हो गई है।



ग्रुप केन्द्र इम्फाल का उद्घाटन करते हुए श्री एस० एम० घोष

ग्रुप केन्द्र इम्फाल का उद्घाटन

दिनांक 30 नवम्बर 1977 को, श्री एस. एम. घोष, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने ग्रुप केन्द्र इम्फाल का उद्घाटन किया। पूर्वोतर अंचल में वर्षों से अनेकों बटालियन निरत रहने के कारण, सरकार ने इस क्षेत्र में एक ग्रुप केन्द्र खोलने का निर्णय लिया। अतएव, 1 जून 1975 से पूना में गठित ग्रुप केन्द्र को इम्फाल में भेज दिया गया। इससे ग्रुप केन्द्रों के सामान्य कार्यों के साथ-साथ, उस क्षेत्र के आर्थिक विकास को भी मदद

मिलेगी।

ग्रुप केन्द्र इम्फाल से तीन बटालियन संलग्न रहेंगी। मणिपुर की सरकार ने 10 लाख रु० की कीमत पर 90 एकड़ भूमि इम्फाल से 6 कि० मी० दूरी पर लोगजिंग पर प्रदान की। 20 एकड़ भूमि राज्य सरकार ने और दी है। योजना ढंग से की गई है। क्षेत्रीय समन्वय और भावी विकास को ध्यान में रखा गया है। वातानुकूलित शल्य कक्ष (आपरेशन थियेटर) के साथ अस्पताल, परिवार-कल्याण केन्द्र तथा प्राथमिक स्कूल की व्यवस्था की गई है। खेलों, मनोरंजन व अलग रसोईगृह का प्रबन्ध है।

जब तक वृहत्तर इम्फाल की जल योजना पूरी नहीं होती, मुख्य अभियन्ता और सिंचाई तथा बाढ़-नियंत्रण के सचिव ने नम्बुल नदी से 50,000 गैलन प्रतिदिन देने का प्रबन्ध कर दिया है। मुख्य जल-योजना पूरी होने पर, राज्य सरकार 2.5 लाख गैलन प्रति दिन देने लगेगी।

इम्फाल में बिजली देने की गम्भीर समस्या है। फिलहाल, ग्रुप केन्द्र अपने ही जेनरेटिंग सेटों (जनित्रों) पर निर्भर है।

1976-77 में, भूमि का सर्वेक्षण हुआ। एक रेखांकित योजना भी बन गई। निर्माण-प्रगति कुछ इस प्रकार है—

180 (विशेष) टाइप I क्वार्टर, स्टोर, अफसरी आवास के साथ अफसर मेस, क्वार्टर गारद, रेडियो स्टेशन और 2 धोबी घाटों के ठेके माँगे गये हैं।

क्यों इनके बनाने में समय लगेगा, सामान रखने तथा अस्पताल के लिये दो इस्पात कुटीर बन रहे हैं और आगामी मानसून के आने तक बन जाने की आशा है।

1978-79 में, इन भवनों को बनाया जायेगा—

1. तकनीकी भवन : आजाद गोदाम, (30 शय्या का) अस्पताल, परिवहन कार्यालय, भंडार, 5 भवन वाहन व गैराजें 3 मैगज़ीनें, और सार्वजनिक निर्माण कार्य विभाग को पूछताछ का दफ्तर।

(II) गैर-तकनीकी भवन—41 टाइप I के क्वार्टर, 96 टाइप II (विशेष) के क्वार्टर, 14 टाइप III के क्वार्टर, 3 टाइप IV के क्वार्टर, और 120-120 जवानों वाली 6 बारिकें।

1979-80 में इनका निर्माण होगा—

84 पाइप I (विशेष) क्वार्टर, 136 टाइप II क्वार्टर, 12 टाइप IV क्वार्टर, अधीनस्थ अधिकारी की बैरक, 1 हेडकान्स्टेबलों की बैरक, 1 अधीनस्थ अधिकारी मेस, कार्यालय ब्लाक, कैंटीन के साथ जवानों का क्लब, प्राथमिक स्कूल, I बेडमिन्टन कोर्ट और एक तरण-ताल।

1978-79 के लिये इस योजना के वास्ते 85 लाख रुपये का प्रबन्ध किया गया है।

स्वास्थ्य-सन्देश :

के०रि०पु० बल में प्रचलित रोग

ले०—डॉक्टर शेख हमीदुल्लाह

के० रि० पु० बल में साधारणतया पाया जाने वाला रोग है फुफ्फुस यक्ष्मा (फेफड़ों की तपेदिक़)। यह रोग दो प्रकार की कवकवेत्राणु प्रजाति (माइको बैकट्रियम) यक्ष्मा से होता है : (1) गाय के दूध से गोजातीय तपेदिक़, जो ग्रन्थियों को दूषित करती है तथा (II) मनुष्यों द्वारा मानवीय तपेदिक़, जो फेफड़ों पर बुरा प्रभाव डालती है। हमारे इस बल में, खाँसी के कितने ही मामले सामने आते हैं, जो सचमुच में फेफड़ों की तपेदिक़ होती है। इनका पता नही लग पाता है, क्योंकि समय मिलने पर ही या रोग की विषमावस्था में ही, जवान डाक्टरी राय लेने आते हैं। पूरी छानबीन के उपरान्त, तपेदिक़ के अनेकों रोगी पाये जाते हैं—उनके थूक में जीवाणु (वैकटीया) पाये जाते हैं। ये रोगी दूसरे लोगों में भी तपेदिक़ संक्रामित करते हैं। इस प्रकार रोग बढ़ता है।

ये लोग जानते नहीं हैं कि कैसे खाँसा जाये और कहाँ थूका जाये ? फलस्वरूप, और लोग बिन्दुकायी संक्रान्तता से ग्रस्त होते हैं। इस विषय में चिकित्सा अधिकारियों से सभी रोगियों को सही-सही मंत्रणा लेना चाहिए।

समुचित आहार का महत्त्व—तपेदिक़ का अन्य कारण समुचित आहार की कमी है। हमारे जवानों को कठोर परिश्रम मुख्यकर पूर्वोत्तर क्षेत्र में करना पड़ता है। उनके परिश्रम के अनुसार, उन्हें समुचित आहार नहीं मिल पाता है। बटालियन के कमांडैन्ट से, मैंने इस समस्या पर विचार-विनिमय किया तथा (नागालैंड के) चैज़ोबा जैसे स्थान पर भी हम जवानों को उत्तम भोजन दे सके। उन्होंने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया और मुझे तब, जवानों तथा स्थानीय नागरिकों की चिकित्सा, कोई समस्या नहीं रह गयी। उस क्षेत्र में बटालियन का बड़ा नाम हो गया। इससे कभी कभार अत्यन्त उत्तम तथा अप्रत्याशित फल प्राप्त हुये। स्वघोषित 'ब्रिगेडियर बेशोजन ने (जो चैज़ोवा के मेरे अस्पताल में भर्ती होकर मुझसे इलाज कराता रहा) बाद को आत्मसमर्पण कर दिया।

धूम्रपान—धूम्रपान नहीं करने वाला कोई बिरला ही जवान मिलेगा। जवानों को धूम्रपान कम करना चाहिए। उससे दो प्रकार से लाभ होगा—प्रथम, उनका खर्चा कम होयेगा और दूसरे, साँस की नली को कोयले के कणों से बचाया जा सकेगा और फेफड़े के रोगों से रक्षा मिल सकेगी। धूम्रपान से पेट में अम्लता बढ़ती है और उदर व्रण वाले रोगी को हानि होती है।

जवानों को तपेदिक़ को शीघ्र पता लगाने के लिए मॉटोक्स परीक्षण, एक्सरे या छाती का परेक्षण (स्क्रीनिंग) भर्ती के समय करना चाहिये तथा मॉटोक्स निगेटिव वाले लोगों को वी० सी० जी० भी करानी चाहिए। भर्ती के फार्म में इनके लिए स्तंभ (कालम) होना चाहिये।

चिकित्सा-वृत्त-पत्र (मेडीकल हिस्ट्री शीट)—यह पत्र कभी भी जवान पर नहीं रहता है। क्वार्टर मास्टर इसे रखता है; जवान की बदली होने पर, यह पत्र पुरानी जगह ही रहता है और नये स्थान पर पहुँचने पर, एक नया पत्र बना दिया जाता है। मेरे विचार से, एक वेतन पुस्तिका (पे बुक) ऐसी होनी चाहिए, जिसमें चिकित्सा-वत्त-पत्र भी सम्मिलित होना चाहिए और वह हर जवान के पास रहनी चाहिए। नहीं तो, डाक्टर किसी विशेष मामले में उसके रोग, टीके, संचारण आदि के विषय में कुछ नहीं जान सकेगा।

लगभग 95% जवानों के दाँतों में कीड़ा लगा होता है। इसका कारण मुख की साफ़ई के प्रति असावधानी और दन्त रक्षा का अभाव होता है। इस ओर जवानों का ध्यान दिलाना चाहिए। के० रि० पु० बल में कुछ दाँतों के डाक्टर भी भर्ती किये जाने चाहिए। बटालियनों/ग्रुप केन्द्रों में हर तिमाही उन्हें दौरा करना चाहिए और ऐसे जवानों की चिकित्सा करनी चाहिए, जिन्हें दाँतों के निकलवाने के लिए नागरिक अस्पतालों को अब भेजा जाता है।

उदर वायु विकार—हमारे पास अनेकों रोगी उदर विकार के आते हैं। यह कोई गम्भीर रोग नहीं है; पर मनुष्य मन में जल्दी घबड़ा जाते हैं। यदि उत्तम औषध और परामर्श मिल जावे, तब इसका इलाज हो सकता है। आँतों में जोश आने, मलिन जल से या जड़ वाली सब्जियों जैसे आहारों से गैस (उदर वायु) बनती है। आँतों में जोश का कारण आँतों में जीवाणु-संक्रमण है; इसकी चिकित्सा हो सकती है। पूर्वोत्तर जैसे क्षेत्रों में, यह रोग दूषित जल के कारण होता है।

कमर में दर्द और हृदय वेदना के भी अनेकों मामले सामने आते हैं। कुछ जवान झूठमठ के रोग का ढोंग भी रचते हैं; परन्तु छानबीन से कुछ को सचमुच में दर्द होना सिद्ध हुआ है। छाती में वेदना कुछ दिन आघातजनित पसलयों के दर्द या मायलजिया आदि से होता है, जिसका इलाज है। अन्य मामले फुफ्फसीय इओसिनफीलिया या सॉसनली में संक्रमण के कारण भी होते हैं। कुछ रोगी आँतों में गैस बनने से भी छाती में दर्द अनुभव करते हैं।

सेवा में घंटों खड़े रहने या काम करने के समय झटके से कमर में दर्द होने लगता है। रीड़ की हड्डी में चलविचल होने से, मूत्रनली में संक्रमण से या संधि-वात से भी यह रोग होता है। इसका सफलतापूर्वक इलाज हो सकता है। महिलाओं में, गर्भाशय के लौटने से भी कटिशूल हो जाता है।

ज्वर—ज्वर हर जगह होता है; बालक और युवक सभी उससे ग्रस्त होते हैं। कुछ पर्ची पर डाक्टर पी० यू० ओ० लिखते हैं, जिसके अर्थ, अपरचित प्रकार का ज्वर होता है। हमें हर हालत में, मूत्र की जाँच करनी चाहिए। मुख्यकर महिलाओं में, मूत्राशय में संक्रमण द्वारा ज्वर होता है। मलेरिया से भी ज्वर होता है और शीत, ऊष्म और प्रस्वेद अवस्थाओं के लक्षणों को जानना चाहिए। यदि अन्य कोई संक्रमण नहीं पाया जाये, मुख्यतः महिलाओं का मूत्र ज़रूर जाँच कराना चाहिये। अजमेर में नर-नारी तथा बच्चों में मूत्र-नली में संक्रमण पाया गया है और वहाँ के जल के कारण मूत्र नली में पथरी

होने से हैमेच्यूरेया के मामले भी मिले हैं।

मूत्र-नली में संक्रमण का मुख्य कारण गन्दगी है। शिश्नमल इकट्ठा होता रहता है और संक्रमित हो जाता है। मैंने वार्षिक डाक्टरी परीक्षा के समय देखा है कि जवान लिंग को कभी नहीं साफ करते हैं और मुंडचर्म को चढ़ाते समय शिश्नमल की बदबू आती है, जो ढका रहता है, जिससे चढ़ते संक्रमण के कारण (यूरेथ्रीटीज़) मूत्र पथशोथ प्रॉस्टैटाइटिज (शिश्नग्रंथिशोथ) और सिस्टाइटिज (मूत्रथैली की सूजन) नामक रोग हो जाते हैं। जवानों से सफाई रखने को कहा जा रहा है, अन्यथा लिंग में कैंसर तक हो सकता है। इसी प्रकार, महिलाओं के छोटे मूत्रपथ ढके रहते हैं और लघुशंका करने के बाद उन्हें वे धोती नहीं है और नाही वहाँ के बाल साफ करती हैं। इससे संक्रमण होता है। नन्हीं बच्चियां भी इससे ग्रस्त रहती हैं। यह भी ध्यान देने की बात है कि पति की गन्दगी से महिला भी कष्ट भोगती हैं और सहवास से गर्भाशय का कैंसर हो सकता है।

मानसिक रोग—अनेकों जवानों को स्काइजेफ्रीनिआ (मनोविकार), अनिवार्य उन्मादक मनस्ताप (न्योरोसिस) हाइपोमैनिआ (अवोन्माद) आदि रोग पीड़ित करते रहते हैं। इन रोगों के मुख्य कारण हैं— पारिवारिक झगड़े, भूमि समस्यायें, दहेज की माँग से पुत्री या बहिन की शादियों के समय आर्थिक कठिनाइयाँ, प्रेम की उलझनें, घरेलू झगड़ों के लिए छुट्टी (कभी मना की जाती है), नियुक्ति के स्थान तथा पारिवारिक रुझान (ऐसे मामले मनोविकार कहलाते हैं)। कितने ही लोग सोच-सोच कर, पागल हो जाते हैं या आत्म हत्या कर बैठते हैं। जवानों की ऐसी समस्याओं को आसानी से हल किया जा सकता है; हमारी यह एक फौज़ है और उन्हें सब प्रकार की सुविधायें मिलना चाहिये। हमें उनके प्रति दयालु होना चाहिये।

गोल कृमि, अंकुश कृमि और गियार्डीसिस भारत में बहुत हैं। के० रि० पु० बल में लगभग सब को ही आंत्र-विकार रहता है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में निरत जवानों को, अंकुश कृमि पीड़ित करते रहते हैं। संक्षेप में, इससे बचने को नाखून नहीं बढ़ाने चाहिए, हाथ धोते रहता चाहिये और स्वच्छ भोजन खाने से पहले बर्तनों को भलीभाँति धोना चाहिए और और पीने का जल साफ़ होना चाहिए। यदि अच्छे स्रोत से पीने का जल उपलब्ध नहीं हो, तब उसे उबाल लेना चाहिए। हरेक को साफ़ व गर्म भोजन लेना चाहिए। पूर्वोत्तर क्षेत्र में, विसंक्रामक गोलियाँ खानी चाहिए। जवानों को नंगे पाँव शौचालय जाने से मना करना चाहिए।

संक्रामक ज़िगर-सूजन—ज़िगर की सूजन संक्रामक रूप से जवानों में पाई जाती है। इसका विषाण दो प्रकार का होता है : एक तो मल स्पर्श से संक्रामक यकृत-विकार करता है; और दूसरी पिचकारी, रक्त आदि द्वारा सीरम यकृत शोथ पैदा करता है। के० रि० पु० बल में कोई ऐसा नियम नहीं है (परन्तु होना अवश्य चाहिये) कि छुट्टी पर जाते हुये जवानों को डाक्टर यह परामर्श दे कि यात्रा में किसी भी अनधिकृत साधन से भोजन तथा पेय पदार्थ नहीं लेना चाहिए और मलेरिया से बचने के लिये क्लोरोक्विन की गोलियाँ खाते रहना चाहिए। डाक्टरी निरीक्षण कक्ष (एम०

आइ० रूम) में सुइओं तथा पिचकारियों को गर्म करके विसंक्रामित करनी चाहिये और चिकित्साधिकारी को अचानक निरीक्षण से इसकी जांच करनी चाहिए। कम्पाउन्डरों को टीका लगाने से पहले मलमल कर हाथ साफ़ कर लेना चाहिए।

जवानों को यह एहसास कराना चाहिए कि चिकित्सा से भी बढ़कर, रोग की रोक थाम का पूर्वोपाय है। यह हरेक जन का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह देखे कि के० रि० पु० बल में सर्वत्र स्वच्छता तथा स्वास्थ्य की ओर पूरा-पूरा ध्यान दिया जाये।

विज्ञान के चढ़ते चरण

इन्हीं दिनों, वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि ग्वार की फली की सब्ज़ी खाने से, मधुमेह (डाइबिटीज़) और उससे उत्पन्न अन्य उपद्रवों में बहुत लाभ होता है।

जापान में ऐसे फोटो कैमरे का आविष्कार हुआ है जिसमें दूरबीन का भी मेल है। इसमें दोनों आँखों का प्रयोग होता है। जैसे ही दूरबीन से किसी चीज पर दृष्टि डाली, तभी चित्र लेने वाला कैमरे के लेन्स पर दूरबीन के लेन्स लगा देते हैं। उसी समय उस चीज का फोटो खिंच जाता है।

एक ब्रिटिश फर्म ने ऐसा **कम्प्यूटर** (संगणक) बनाया है, जो कलाई की घड़ी की भाँति, कलाई में पहना जा सकता है। इससे बड़े उद्योगपतियों और मैनेजरों को सुविधा होगी

भारत में **दो मंजिली रेलगाड़ी** अप्रेल 1978 में बम्बई में ही चलना प्रारम्भ हुयी, जहाँ रेलगाड़ी सबसे पहले भारत में चली थी।

बालकन जी बारी

दिनांक 29 जनवरी 1978 को ग्रुप केन्द्र गाँधीनगर में के० रि० पु० बल के जवानों के बच्चों के सब प्रकार से विकास के लिए **बालकन जी बारी** नामक प्रतिष्ठान को खोला गया। प्रारम्भ में, इस बारी में 90 बच्चे लिये गये।

पूर्ण जीवन और मधुर व्यक्तित्व को पाने के लिये, इस बारी में बच्चों को सुखद वातावरण मिलता है। इसके हेतु, बच्चे हर दिन मनोरंजन तथा शारीरिक व्यायाम के लिये ग्रुप केन्द्र में इकट्ठे होते हैं। व्यायाम 20 मिनट प्रतिदिन करना होता है तथा मनोरंजन में गीत, खेल, नाच, तथा कथावार्ता आदि का आयोजन होता है। नाटक खेलना, खेल प्रतियोगितायें, पर्यटन सैलानी भी बालकन जी बारी की क्रियाकलापों में सम्मिलित होती हैं। मनोविनोद तथा भावात्मक एवं कलात्मक विकास-पोषण के लिये, बच्चों को अवकाश के समय इकत्रित किया जाता है। 14 वर्ष तक के बालकों को **मौलिक सदस्य** बनाया गया है और 14 से 18 वर्ष तक के लड़के तथा लड़कियों को **सहचर सदस्य** । बालकन जी बारी को सहायता तथा निदेशन देने के लिये, के.रि.पु. बल के अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी तथा अन्य सदस्य स्वेच्छा के आधार पर संरक्षक सदस्य, सुरक्षक सदस्य तथा सहकारी सदस्य बनाये जाते हैं।

ग्रुप केन्द्र गॉधीनगर में बीस-बीस बच्चों के पॉच वृन्द बनाये गये हैं। हर शाम को, बच्चे शारीरिक व्यायाम (पी० टी०), लेज़िम तथा डम्बल करते हैं। इनसे बच्चों के रवैयों में स्वस्थ परिवर्तन पाया जाता है। उनके मनोरंजन के लिए, के० रि० पु० बल का बैंड मधुर धुनें प्रदान करता है। ग्रुप केन्द्र का पार्क भी बच्चों को अच्छा स्वास्थ्यवर्द्धक मनोविनोद प्रदान करता है।

सूक्ति-सुधा

जो भाग्य में ही विश्वास करते हैं, उन्हें कार्य की सिद्धि नहीं होती।

—चाणक्य

जो हो चुका, वह हो चुका। जो अनागत है, वह सन्देह युक्त है। अतः मनुष्य को वर्तमान से सम्बन्धित काम को करना चाहिए।

—रश्मिमाला

जैसे सब काम शान्ति से सिद्ध होते हैं, वैसे अशान्ति से नहीं।

—भागवत

पराक्रम के अवसर विषाद ग्रस्त होने से मनुष्य तेजहीन हो जाता है और पुरुषार्थ नहीं कर पाता।

—वाल्मीकि

पुलिस की ज़िम्मेदारी

लेखक : श्री आनन्द स्वरूप गुप्ता

समाचार पत्रों पर से प्रतिबन्ध हटने पर, अब उनमें आपात्काल में पुलिस द्वारा की गई यातनाओं की सूचनामों की भरमार रहती है। ऐसी सूचनाओं से कुछ ऐसी धारणा बनी है कि पुलिस रक्त-पिपासु और यातना प्रिय होती है। यह सच्चाई से कोसों दूर है, यद्यपि अन्य व्यवसायों की भाँति, इसमें भी कुछ पर-पीड़क हैं। वास्तव में, पुलिस जनों का आचरण उस प्राधिकारी से सीधा नाता रखता है, जिसके प्रति वे ज़िम्मेदार हैं।

1857 वाले सैनिक-विद्रोह के ठीक बाद ही, अंग्रेजों ने देश के पुलिस-तन्त्र को बनाया। उनकी चिन्ता प्रशासन के एक ऐसे तन्त्र को स्थापित करने की थी, जिससे उनका राज्य देश भर में कम व्यय पर कारगर रूप से सदा चलता रहे। ब्रिटिश सेना पर निर्भर रहना ना तो व्यवहारिक था और ना ही आर्थिक दृष्टि से सम्भव । सैनिकों पर

अब विश्वास नहीं किया जा सकता था। तब नागरिक वेश-भूषा में, आधिपत्य-सेना के रूप में, एक पुलिस दल की जरूरत थी और उसको ऐसा गठित करना था कि यद्यपि उसे हथियारों से लैस किया जाये, किन्तु वह विद्रोह करने की स्थिति में नहीं हो।

उस समय एक ही नागरिक सेवा होती थी, जिसमें ब्रिटिश अंग्रेजों के आर्थिक और राजनीतिक हितों की रक्षा के लिए प्रशासन की प्रत्येक शाखा की जिला मैजिस्ट्रेट सहित सभी वरिष्ठ अधिकारी नियंत्रित करते थे। अब यह आवश्यक समझा गया कि नये पुलिस दल पर जिला मजिस्ट्रेट का नियंत्रण रहे। 1861 के पुलिस अधिनियम की 4 धारा में, इस नियंत्रण को सुनिश्चित कर दिया गया :

1. वह समय अंग्रेजों के उदार विचार वालों का था और अनेकों ने यह अनुभव किया कि कानन के कार्यकारी एजेण्ट के रूप में पुलिस को न्याय पालिका से अलग रखना चाहिये; किन्तु भारत में अंग्रेजी राज्य की जड़ें मजबूत करने के कारण, इस सिद्धान्त को लागू नहीं किया गया।

इस प्रश्न का गहन अध्ययन एक प्रसिद्ध विधि वेत्ता सर जेम्स फिट्ज़ जेम्स स्टीफेन ने किया, जो 1871 में भारत सरकार के विधि सदस्य नियुक्त हुये। उन्होंने यह स्वीकार किया कि न्यायिक और कार्यकारी कामों की एकजाई उपयुक्त नहीं है।

किन्तु औपनिवेशिक शासन की विवशता को समझते हुए, उन्होंने कहा था-'भारत में ब्रिटिश शासन कायम रखने के लिए, ध्यान रखने वाला सबसे पहला सिद्धान्त यह होना चाहिए कि जिला अधिकारियों की यह स्थिति रखना बहुत ही जरूरी है और देश वासियों के ऊपर अनेक अधिकार तथा प्रभाव क्षेत्रों में कमी बड़ी, महगी पड़ेगी-जहाँ तक अपने जिलों की जन संख्या का प्रश्न है, ज़िला अधिकारी ही सरकार हैं और मेरे मत में उनको इसी प्रकार चलते रहना चाहिए।

दरअसल, इसके मायने ये हुये कि पुलिस को मौलिक रूप से राजनीतिक स्वामियों के प्रति जिम्मेदार रहना पड़ा। इसी कारण, ब्रिटिश सरकार अपने मनमानी ढंग से पुलिस को देश की स्वाधीनता के संग्राम को कुचलने में लाती रही। अनेकों व्यक्ति, जो आज भी जीवित हैं, यह बता सकते हैं कि 1942 में देश पर कैसा अत्याचार का पारा चला।

2. दुर्भाग्य से, स्वतन्त्रता के 25 वर्ष के बाद तक, हम इस स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं ला सके हैं, जो कानुनी शासन के लिये अपमान जनक है। जिला मजिस्ट्रेट द्वारा राजनीतिक स्वामियों को पुलिस पर इस आधिपत्य से ही तो केन्द्र में कांग्रेस सरकार और राज्यों में प्रादेशिक सरकारें आपातस्थिति लाग करने के लिए पुलिस को अपनी इच्छानु सार लगाती रहीं।

अब यह पता लगा है कि आपात् स्थिति का मुख्य ध्येय यह था कि विरोधी दल की रीढ़ की हड्डी तोड़ी जाये और उस ध्येय को पूरा करने के लिये कारागारों में ठूसने तथा यातना देने की रणनीति बना ली गई। यह भी मालूम हुआ है कि आपात स्थिति को घोषणा करने वाली निर्णयक रात को, अनेकों स्थान पर जिला मजिस्ट्रेटों से कैद करने को हस्ताक्षर किये हुये खाली परवाने पुलिस को दे दिये गये थे और जिनको पकड़ा

जाना था, उनकी सांचेयां पार्टी के सदस्यों ने दे दी थीं। ज्ञात हुए यातना के ऐसे मामलों में कोई भी प्रमाण यह दिखाने को नहीं मिलता कि पुलिस को उसमें कोई अपना उल्लू सीधा करना था, यद्यपि राजनीति का अनुग्रह पाने के लिये ज़रूरत से ज्यादा जोश दिखाने के मामले मिले हैं।

राजनीतिक उद्देश्यों के हित में, जिला मैजिस्ट्रेटों और पुलिस अधीक्षकों के पद ऐसे बहुत समय तक काम में प्राते रहे, जिससे राजनीतिक स्वामियों को लिखित आदेश देने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। ज़िला मैजिस्ट्रेटों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के माध्यम से, संदेश चलते थे और राज्यों के स्वामीभक्त सेवकों के रूप में पुलिस कानन के प्रति जिम्मेदारी की भावनाओं के लिए चिन्तित होने की स्थिति में नहीं थी। वस्तुतः पिछले वर्षों में यह रवैया रहा है कि पुलिस अधीक्षक पर जिला अधिकारी का नियंत्रण कठोर रहे, जब कि किसी भी राजनीतिक प्रयोजनों के लिए, न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग कर दिया है ।

3. एक प्रसिद्ध नागरिक श्री एच. एन. मंगतराय ने '**दि स्टेट्समैन** (7 अप्रैल 77) के अंक में प्रकाशित अपने पत्र में इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है। उन्होंने लिखा है कि हरियाणा के चुनाव में कांग्रेस की हार का कारण यह था कि सरकार जनता से अलग दूर जा पड़ी, जबकि डिप्टी कमिश्नर जिले प्रशासन की छुरी बन गया"। उन्होंने यह याद दिलाया है कि स्वर्गीय प्रतापसिंह कैरों के समय, (जिनके साथ मंगत राय ने मुख्य सचिव के रूप में कार्य किया था) भारतीय प्रशासन सेवा के कुछ उत्साही अधिकारी एक ऐसा परिवर्तन लाने की चेष्टा में थे, जिससे जिला पुलिस अधीक्षक के सहित सभी जिले के अधिकारी उनके नियंत्रण में आ जायें और कैरों "इस मत को मानने को तैयार भी हो गये थे" "किन्तु उन्होंने उसे अस्वीकार तब कर दिया, जब उन्हें यह पता चला कि ऐसे अपार अधिकारों से, ज़िला मैजिस्ट्रेट को लैस करने से अवाँछित परिणाम निकलेंगे।"

आगे वे लिखते हैं- "बंसीलाल के सत्तारूढ़ होने पर हरियाणा में, पुलिस अधीक्षक तथा अन्य जिला अधिकारी, जिला मैजिस्ट्रेट के प्रशासनिक नियंत्रण में आ गये। यह कदम खतरनाक़ था और आज हम जानते हैं कि आपात्काल में क्या-क्या घटनायें हुयी हैं। जिला अधिकारी मजबूरन नस-बन्दी के लिये पुलिस का प्रयोग करता था। पास ही पंजाब में, जहाँ जिला पुलिस अधीक्षक को जिला मैजिस्ट्रेट के अधीन नहीं किया गया, वहाँ इतनी ज्यादतियां नहीं हुईं।"

श्री मंगत राय ने यह बताया है कि हरियाणा में इस परिवर्तन की सफलता से प्रभावित होकर, सभी मुख्य मंत्रियों का सम्मेलन पिछले वर्ष इस प्रणाली को देश के सभी भागों में चालू करने के हेतु बुलाया गया । फलस्वरूप, केन्द्रीय गृह मन्त्री ने जिला पुलिस अधीक्षकों को जिला मैजिस्ट्रेट के अधीन बनाने के लिये सभी राज्य सरकारों की एक परिपत्र भेजा। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला है कि "कुछ आई. ए. एस (भारतीय प्रशासन सेवा) के अधिकारियों ने सरकार को और भी अधिकारों को छीनने की मंत्रणा दी थी, किन्तु यह एक अच्छे प्रशासन की धारणा के विरुद्ध था।

आपात्काल में पुरानी मान्यताओं को मानने वाले पुराने अधिकारी अपने अधिकारपदों से हटा दिये गये। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुयी है कि उन अधिकारियों को (जिन्होंने पुरानी सरकार की कठपुतली बनने से मना कर दिया था) फिर से पद पर लगाने के उपाय अब हुए हैं।

अपराध-विज्ञान और अपराध वैद्यक संस्थान (नई दिल्ली) और सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी (हैदराबाद) में, मैंने कितने ही निरन्तर लेक्चर पुलिस अधीक्षकों को (कुल मिलाकर 300) आपात्काल में दिये, जिनमें मैंने यही बल दिया कि वे यह सुनिश्चित करें कि उनके अपने जिलों में पुलिस के अधिकारों का दुरुपयोग नहीं हो। किन्तु प्रत्येक कोर्स में, मैंने अधिकारियों के मुख पर निराशा झलकती देखी। वे सदा यही पूछते थे कि सत्तारूढ़ राजनीतिज्ञों द्वारा की गई (सीधी या जिले अधिकारी द्वारा) मांगों को, वे और उनके अधीनस्थ अधिकारी कैसे टाल सकते हैं ? मेरे पास यह बताने का अन्य चारा नहीं था कि यदि आवश्यक हो, तो सही काम करने के लिये कष्ट सहने का वे साहस करें। इसे बताने का मेरा तात्पर्य यह है कि वरिष्ठ पुलिस अधिकारी इस स्वतंत्र भारत में अवैध कार्रवाइयों, अधिकार के दुरुपयोगों तथा ज्यादतियों को करने के लिये दिल से इच्छुक नहीं थे।

अपने राजनीतिक स्वामियों को प्रसन्न करने के लिये और कभी कभार अपने भ्रामक स्वार्थों को साधने के लिये अपने अधिकारों के दुरुपयोग के हेतु पुलिस की तत्परता इस प्रणाली के कारण ही दिखाई पड़ती है और ज्यादतियों के विरुद्ध जनाक्रोश के कारण, जांच-पायोगों के बिठाने से यह कभी कुचली नहीं जा सकती।

ब्रिटेन में, महानगरी तथा लंदन नगर को छोड़कर, पुलिस का गठन स्थानीय आधार पर होता है। जिला परिषद तथा सतर्क समितियां पुलिस का काम करती हैं। छान बीन, खोज तथा पकड़ने के मौलिक पुलिस अधिकार सिपाही को मिले होते हैं। 19वीं शताब्दी के मध्य में उस देश के लिये गठित पुलिस तंत्र का मुख्य ध्येय यह विचारधारा थी कि सिपाही का अधिकार मौलिक है अर्थात् किसी से बोपा सौंपा नहीं गया है और उस अधिकार का उपयोग, अपने पद में निहित विवेक द्वारा ही किया जाता है। सिपाही स्वतंत्ररूप से कानूनी अधिकारों का पालन करता है। सरकार से उसके सम्बन्ध स्वामी सेवक जैसे नहीं हैं। यदि वह अपने अधिकारों का दुरुपयोग या अतिक्रमण करता है, तब दुःखीजन द्वारा उस पर व्यक्तिगत मुकदमा चलाया जाता है। इस स्थिति को कितने ही मामलों में अंग्रेजी न्यायालयों ने स्वीकार किया है और इस सिद्धान्त को सारे पुलिस दल के कमांडरों पर भी लागू करने के लिये परिवर्धित किया गया है। इस आधार शिला पर, पुलिस स्वतंत्रता का वहाँ विधिवत्त शिलान्यास हुआ है।

कानून को पालन कराने के क्षेत्र में, वहाँ मुख्य सिपाही स्वतंत्र समझा जाता है। ब्लैक वर्म मामले (रेगिना बनाम कमीश्नर मेट्रो पालीटन पुलिस) में लार्ड डेनिंग ने यह व्यक्त किया था-"यह कहने में मुझे कोई आना कानी नहीं है कि सारे देश के प्रत्येक सिपाही की भांति, वह (मेट्रोपालीटन कमिश्नर) कार्य पालिका से स्वतंत्र है और होना

चाहिये कानून को छोड़ कर, वह किसी अन्य का सेवक नहीं है (यू० एन० डाकूमेंट न० 7509760)।

पुलिस की जिम्मेदारी के समस्त प्रश्न का व्यापक अध्ययन ब्रिटेन के शाही आयोग द्वारा हुआ था, जिसकी रिपोर्ट 1962 में प्रकाशित हुई थी। जबकि जिला परिषदों द्वारा प्रश्न उठाकर या रिपोर्ट मंगा कर, मुख्य सिपाही की गतिविधियों पर लोकतंत्रिक नियंत्रण की प्रणाली वह आयोग चलाना चाहता था; किन्तु यह स्पष्ट था कि इस से मुख्य सिपाहियों के कामों में हस्तक्षेप करने की कोई इच्छा नहीं थी। वास्तव में, यह सिफारिश की गई कि मुख्य सिपाही को रिपार्ट को अस्वीकार करने का न तो अधिकार होना चाहिये और जब ऐसा करना कानून के या लोकहित के विरुद्ध, हो तो उसे किसी प्रश्न के उत्तर देने को बाध्य नहीं किया जा सकता है। इससे भी बढ़कर यह कहा गया कि "किसी क्षेत्र की कारगर रूप से रक्षा करते समय, पुलिस अधिकारियों को कानूनी ज़िम्मेदारी से स्वतंत्र होना चाहिये।" जो कुछ स्वीकार उस आयोग ने किया, वह था कि पुलिस अधिकारी गण "मुख्य सिपाहियों को रक्षा के सामान्य प्रश्नों पर मंत्रणा देने के लिये उपयुक्त लोग हैं। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि प्राधिकारी की भूमिका प्रस्तावित व्यवस्था में मंत्रणा देने से अधिक कुछ भी नहीं हो सकती और रक्षण से सम्बद्ध मामलों में मुख्य सिपाही पर वह कोई आदेश या निदेश नहीं दे सकता। इस प्रकार एक पुलिस प्राधिकारी और मुख्य सिपाही के बीच सम्बन्ध उस से भिन्न हैं, जो परिषद समितियों और उन के मुख्य अधिकारियों के बीच होते हैं। परिषद समितियों तथा उनके मुख्य अधिकारियों के सम्बन्धों में मुख्य अधिकारी का कर्तव्य परिषद को मंत्रणा देना तथा नीति सम्बन्धी विषयों पर उसके निर्णयों का पालन करना है, किन्तु निर्णय लेना स्वयं ही चुनी हुयी समिति की जिम्मेदारी है। पुलिस में, ये स्थितियां ठीक उल्टी होंगी । पुलिस प्राधिकारी का कर्तव्य, क्षेत्र के रक्षण के मामलों में मुख्य सिपाही को मंत्रणा देना मात्र है; किन्तु निर्णय लेना केवल मुख्य सिपाही की ही जिम्मेदारी है।"

पुलिस कमिश्नरों तथा मुख्य सिपाहियों की स्वतंत्रता का ही यह सिद्धान्त है, जो यह सुनिश्चित करता है कि कानून का पालन स्पष्टतया निष्पक्ष रूप से हो और राजनीति प्रेरित हस्तक्षेप से उसकी रक्षा होती रहे । अपने ही देश में, हमने देखा है कि पुलिस पर राजनीतिक नियंत्रण ने नागरिक को कितनी बेहिसाब समस्यायें लाकर खड़ी कर दीं। उदाहरणार्थ, जब जुलाई 1957 में केरल की साम्यवादी सरकार ने अपनी नीति चलायी, तब क़ानून और व्यवस्था में बड़ी गिरावट आई तथा जानमाल की सुरक्षा के लिये सही खतरा पैदा हो गया, जिसके कारण केन्द्रीय सरकार को केरल की सरकार बरखास्त करनी पड़ी। बाद में, भगवती समिति ने उसे दोषी ठहराया। पुलिस पर राजनीतिक नियंत्रण के दुरुपयोग का इसी प्रकार का मामला मार्च 1967 में पश्चिमी बंगाल में हुआ, जब राज्य सरकार ने पुलिस को ये आदेश दिये कि बिना श्रम-मंत्री के पूर्व अनुमोदन के, घेरावों के प्रति कोई कार्रवाई नहीं की जाये और न कोई हस्तक्षेप किया जाये। 29 सितम्बर 1967 को, जय इन्जीनियरिंग वर्क्स लिमीटेड तथा अन्य बनाम पश्चिम बंगाल तथा अन्य के मुकदमें में अपने निर्णय द्वारा, कलकत्ता उच्च

न्यायालय ने अन्त में उस आदेश को रद्द किया।

वर्तमान पुलिस पद्धति में तो न्यायालय का द्वार तभी खटखटाया जा सकता है, जब सरकारी प्रादेशों तथा भाषणों द्वारा सत्ता रूढ़ दल के राजनीतिक इरादे साफ़-साफ़ बताये जायें। न्यायालय दुःखी लोगों की कोई मदद नहीं कर सकते, जब तक जिला मैजिस्ट्रेट या सत्तारूढ़ दल के प्रभावशाली सदस्यों के द्वारा राजनीतिक रोकटोक लुक छिप कर चलती रहेगी।

इस विषय में आँख मींच कर अंग्रेजी प्रणाली की नकल करना हमें सम्भव नहीं है; किन्तु कोई देशीय प्रणाली बनाने में निस्सन्देह कठिनता भी नहीं होनी चाहिये।

जब तक पुलिस-तंत्र में (जो किसी अन्य युग के लिए तथा अन्य राजनीतिक दशा के लिये बनाया गया था) यह आमूलचूल परिवर्तन नहीं लाया जाता, जो कानून के नियम के आदर पर आधारित लोकतांत्रिक राज्य के आदर्शों के अनुकूल हो, तबतक सरकार का यह वायदा कि मनुष्यों के दिल से वे डर निकाल देगें; कभी पूरा नहीं हो सकेगा।

"स्टेट्समैन" दिल्ली में बाद को प्रकाशित अपने पत्र में लेखक ने लिखा है 'ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे लेख "पुलिस की जिम्मेदारी" के विषय में कुछ स्पष्टीकरण आवश्यक हैं।"

मुझे यह नहीं विदित था कि 7 अप्रेल के स्टेट्समैन में उसके नाम से प्रकाशित पत्र एच. एन. मंगतराय ने अपना लेख बताने से इन्कार कर दिया है। यदि उन दो पैरों को मेरे इस लेख से निकाल भी दिया जायें, तबभी मेरे तर्कों के बल पर कोई आँच नहीं आयेगी। साथ में, मैं ना तो श्री बंसीलाल को जानता हूँ और ना ही उनके विरुद्ध कोई शिकायत है।"

पुलिस के चारों ओर "सुरक्षा का कोई कठघरा" बनाने का यत्न भी मैं नहीं कर रहा हूँ; मैं तो पुलिस-तंत्र में आमूल परिवर्तन लाना चाहता हूँ, जिससे पुलिस भेष में सभी भेड़ियों का पर्दाफाश हो और देश की न्यायपालिका द्वारा उन्हें दृष्टान्तयोग्य दण्ड मिले। इस समय तो, उन्हें विरले ही वाजिब सजा मिल पाती है।

आपराधिक कानून की दृष्टि में "प्रादेश पाये" का तर्क निश्चय ही कोई बचाव नहीं है; किन्तु यह नहीं भूलना चाहिये कि आज के चालू नियमों तथा विनियमों के अनुसार, सरकार ऐसे अभियोग लगे पुलिस अधिकारी का पक्ष न्यायालय में लेती है, जो यह देख सके कि उस समय वह अपनी सेवा का पालन कर रहा था।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की भूमिका

ले०—श्री पी० जे० शैट्टी

शांति समृद्धि की जननी है। जब तक हम हिंसा और बर्बादी को नहीं रोक पाते, विकास के कोई मायने ही नहीं हैं। पुलिस का काम अमनो आमान कायम रखना है। इस प्रक्रिया में, पुलिस की भूमिका पर मुख्य कर आपातकाल में बड़ी सख्त नुक्ताचीनी हुई, जब उस पर सारे देश भर में ज्यादतियों के आरोप लगे। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा सी० सु० दल जैसे अर्द्ध सैनिक दलों को, सरकार के दमन के यंत्र माने गये। अतः केन्द्रीय सरकार भारत संघ के अर्द्ध सैनिक दलों की भूमिका पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रही है। कुछ क्षेत्रों में इन अर्द्ध सैनिक दलों में भारी कमी करने के सुझाव हैं, क्योंकि ऐसा आरोप लगाया जाता है कि पिछली सरकार ने जनता के लोकतन्त्रीय अधिकारों को कुचलने के लिए, इन दलों का गठन किया था।

दल का जन्म- केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, कांग्रेस सरकार की देन नहीं है। आजादी से बहुत पहले, अंग्रेजों ने अपने प्रतिनिधि (वायसराय) के सौधे नियंत्रण में एक सशस्त्र दल की आवश्यकता का अनुभव किया और इसीलिए, 1939 में, सम्राट-प्रतिनिधि पुलिस (क्राउन रेप्रिजेन्टेटिव पुलिस)-सी० आर० पी० का गठन हुआ। इस बल की टुकड़ियों को, उस समय की रियासतों के अधीन न्याय-व्यवस्था कायम रखने के लिए, लगाया गया। स्वाधीनता के बाद, गृह मन्त्री सरदार पटेल तथा उनकी दूरदर्शिता ने इस बल की भूमिका की उपयोगिता को समझा और इसका नाम बदल कर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस रखा।

तदुपरान्त, राज्यों से इसके लिए निरन्तर बढ़ती मांगों तथा समय-समय पर विभिन्न और बढ़ते हये इसके कर्तव्यों को देख कर, इसकी जल्दी बढ़ोत्तरी हुई। इस बल की क्षमता और कार्रवाइयों की उत्तमता को देखकर, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में सरकार ने राज्यों की अनेकों भारतीय रिजर्व बटालियनों को मिला दिया। इसकी वर्तमान 60 बटालियनों की शक्ति में, 1967 से 1969 तक मिलाई गई 31 भारतीय रिजर्व बटालियनें सम्मिलित हैं। 1971 के बाद, इसकी कोई अभिवृद्धि नहीं हुयी।

आपात्काल में के० रि० पु० बल : जो लोग यह आरोप लगाते हैं कि के० रि० पु० बल आपात्काल में दमन का यन्त्र मात्र था, वे इस बल की भूमिका और ढंग से परिचित नहीं हैं। के० रि० पु० बल को केन्द्र विरले ही समय में कानून व व्यवस्था बनाये रखने के लिये राज्यों पर खुद लगाता है। इसको राज्य सरकार की प्रार्थना पर ही भेजा जाता है और वहां की सरकारी प्रतिनिधि के नियंत्रण और निदेशन में इसको अपने कर्तव्य निबाहने होते हैं। दूसरे शब्दों में, . यह केन्द्र पर एक रिजर्व (प्रारक्षित) बल है, जिसकी सेवायें आवश्यकता पड़ने पर राज्य पुलिस दलों को सहयोग देने के लिए उधार दी जाती हैं। अतः आपात्काल में इसके द्वारा ज्यादतियों होने की कोई तुक ही नहीं समझ में आती। यदि के. रि. पु. बल समेत पुलिस की कोई ज्यादती का उदाहरण आता है, तो यह स्मरण रखना चाहिए कि ज़िम्मेदारी राज्य सरकार या उसके अधि कारियों पर है, जिनके नियंत्रण और निदेशन पर इस बल को कर्तव्य निवाहने पड़े थे।

लोकतन्त्र शासन में, जहां जनता को सब प्रकार की आज़ादी प्राप्त होती है, पुलिस की भूमिका कठिन हो जाती है। केन्द्र में नयी सरकार स्थापित होते ही, संविधान में विहित सभी स्वाधीनतायें जनता को लौटा दी गयी हैं। जितनी ही अधिक स्वाधीनता होती है, उतनी ही आवश्यकता कानून पालने करने वाली शक्ति के हाथ मजबूत करने की होती है, जिससे स्वाधीनता का दुरुपयोग नहीं हो। इसलिये, नागरिक स्वाधीनताओं के बहाल होने पर, अपेक्षाकृत अधिक सतर्कता की जरूरत होती है और पुलिस पर ज्यादा जिम्मेदारियां आ पड़ती हैं।

के० रि० पु. बल की आवश्यकता 42वें संविधान (संशोधन) अधिनियम के आने से पूर्व, क़ानून व व्यवस्था केवल राज्य के हो विषय थे। 42वें संशोधन से लागू 257-ए अनुच्छेद से, किसी भी राज्य में न्याय-व्यवस्था को गंभीर स्थिति से निपटने के लिये भारत सरकार को किसी भी संघीय सशस्त्र दल को नियुक्त करने का अधिकार मिल गया। किसी सशस्त्र केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल के विनयमन तथा संविधान हेतु 1949 के अधिनियम LXVI के अनुसार, केन्द्र इस अधिकार का प्रयोग के. रि० पु० बल द्वारा कर सकता है। संविधान के 355 अनुच्छेद से केन्द्र का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह 'बाहरी आक्रमण और भीतरी उपद्रवों से प्रत्येक राज्य की रक्षा करे और यह सुनिश्चित करे कि प्रत्येक राज्य की सरकार संविधान के अनुसार चलती रहे।" अतः इस बल का रखना अनिवार्य हो जाता है।

सी० सु० दल, भारतीय-तिब्बत सीमायें पुलिस जैसे कुछ अन्य अर्द्ध सैनिक दल भी हैं, जिनकी भूमिका दूसरी हैं। उनको लगाने से विदेशी प्रेक्षकों के कान खड़े होंगे और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कटु आलोचना होगी।

जब कभी कानून-व्यवस्था से सुलझने के लिये, राज्य सरकारों के साधन काफी नहीं दीखते, तभी के० रि० प. बल को उनके अधीन लगाया जाता है। किसी खास क्षेत्र में आन्तरिक सुरक्षा को खतरे में तथा संविधान के अनुसार राज्य सरकार को काम नहीं करने देने की भयानक संभावनाओं में ही, यदा कदा केन्द्र को स्वयं स्थिति से सुलझना पड़ता है। ऐसी स्थितियां बहुत ही विरली होती हैं, जब केन्द्र को हस्तक्षेप करना पड़ता है और अपनी ही प्ररुचि से के० रि०प० बल को किसी राज्य में भेजना पड़ता है; किन्तु 355 अनुच्छेद ने केन्द्र सरकार को राज्य के बाहरी आक्रमण तथा आन्तरिक उपद्रव से सुरक्षित रखने के लिये, के. रि० पु० बल या सेना सहित किसी अन्य केन्द्रीय दल को भेजने का कर्तव्य सौंपा है।

यहां यह साफ़ जान लेना चाहिये कि संविधान के 355 अनुच्छेद में भिन्न स्थितियों को ध्यान में रखा गया है। उदाहरणार्थ, एक राजनीति-प्रेरित आन्दोलन में, राज्य सरकार हिचकिचा सकती है। ऐसी विकट स्थितियों में, 355 अनुच्छेद के अधीन, केन्द्र ही राज्य सरकार को अपने दायित्व निभाने में उसे उभार सकता है। हमारे जैसे संघीय संरचना वाले लोकतंत्रीय देश में, यह आशा नहीं की ना सकती कि जो केन्द्र में सत्तारूढ़ दल होगा, वही सदैव राज्यों में भी होगा।

ऐसे विचार प्रकट किये गये हैं कि राज्यों पर क़ानून-व्यवस्था से निपटने को जब

पर्याप्त पुलिस दल नहीं है, तब क्यों नहीं राज्यों को के. रि. पु. बल की कुछ बटालियनें स्थायी रूप से दे दी जायें और केन्द्र को अपने दल बनाये रखने की क्या ज़रूरत है। यह प्रस्ताव भी कुछ युक्तियुक्त नहीं दीखता। इस प्रकार के स्थायी बदली से, वे राज्यों की रिजर्व बटालियनें बन जायेंगी और वैसी ही स्थिति फिर हो जायेगी, जैसी भारतीय रिजर्व बटालियनों की विलय से पूर्व थी। साधारण तया, राज्यों पर कानून-व्यवस्था से सुलझने के लिये काफी पुलिस दल हैं; वे कुछ अस्थायी असाधारण परिस्थितियों से निपटने के हेतु ही, अतिरिक्त पुलिस दल की ज़रूरत महसूस करते हैं। इस अस्थायी माँग के लिये, अधिक स्थायी दल की स्थापना न्याय-संगत नहीं है। ऐसी स्थितियाँ एक ही समय में सभी राज्यों में सिर नहीं उठाती हैं। अतएव, के. रि० पु० बल को भेज कर ही, केवल केन्द्र राज्यों की अधिक पुलिस वाली ज़रूरत की पूर्ति कर उनकी सहायता कर सकता है।

यद्यपि राज्यों पर अपनी रिजर्व (पुलिस) बहुतेरी होती है। फिर भी वे कभी कभार स्थिति से सही-सही नहीं निपट पाते हैं। उदाहरणार्थ, उत्तर प्रदेश में 1973 वाले सशस्त्र पुलिस विद्रोह में, केन्द्र ने ही के० रि० पु० बल को भेज कर राज्य सरकार का उद्धार किया। 1970-71 में पच्छिमी बंगाल में व्याप्त स्थिति ने पुलिस का सारा मनोबल खत्म कर दिया था और यदि के. रि० पु० बल नहीं जाता, तो कानून व व्यवस्था कभी सामान्य स्थिति पर नहीं लौट पाती। वर्तमान स्थिति तक में, के० रि० पु० बल की सेवाओं से राज्य मुख नहीं मोड़ सकते। मिज़ोरम, नागालैंड आदि जैसे राज्यों में, बिना केन्द्र की सहायता के राज्यद्रोह की समस्या नहीं हल हो सकती। इन राज्यों में, सेना तथा सी० सु० दल की कुछ टुकड़ियां, नागरिक अधिकारियों की सहायता के लिये नियुक्त हैं। इन क्षेत्रों में के० रि० पु० बल की टुकड़ियों ने सशस्त्र राजद्रोहियों का सफ़ाया किया है और इन्हीं को यहां लगाना तथा सेना और सी० सु० दल को हटा लेना उपयुक्त रहेगा, क्योंकि इन दोनों की भूमिका कुछ और ही है। नागालैंड और मिज़ोरम को भारत से अलग करने में संघर्षशील राष्ट्र विरोधी तत्व, विदेशों में यह प्रचार करते रहते हैं कि भारत ने उनकी भूमि पर अपना प्राधिपत्य तथा स्वातन्त्र्य संग्राम का दमन, सेना के द्वारा कर रखा है।

राज्यों की याचना पर ही, के० रि० प्र० बल की सेवायें सौंपी जाती हैं। इसके लिये, राज्यों से भारत सरकार खर्चा वसूल करती है। पहले, यह खर्चा प्रति बटालियन रु० 30 लाख से अधिक प्रति मास था। 1976 से, राशन और विशेष लाने-लेजाने वाली रेलों के व्यय के अतिरिक्त, यह खर्चा रु. 1 लाख रखा गया है। इस प्रकार, के. रि० पु० बल बटालियनों की सेवाओं के लिये राज्य सरकारें खर्चा उठा रही हैं और इससे केन्द्र द्वारा किये जाने वाले व्यय में कुछ राहत मिलती है।

जैसे पहले बताया जा चुका है, के० रि०. पु० बल की वर्तमान शक्ति में आधे से अधिक (31) बटालियनें वे हैं, जो भारतीय रिजर्व बटालियन इसमें विलय होने से पूर्व थीं। यदि ये बटालियनें राज्यों पर रहतीं, तब भी केन्द्र और राज्य सरकारों को उतना ही व्यय दूसरे रूप में उठाना पड़ता। साथ ही, इस दल पर किये गये व्यय की तुलना

में, इससे बचाये गये जानो माल की कीमत कितनी हो गुणा अधिक है।

जिन आलोचकों का यह कहना है कि इस बल पर किये जाने वाला व्यय विकास कार्यों के लिये उपलब्ध स्रोतों को सुखाये जा रहा है, वे शायद इस बल की सफलताओं से शान्ति व्यवस्था के लिये विभिन्न राज्यों के राजद्रोही तथा उग्रपंथी तत्वों से जूझते हुए इस दल की कुर्बानियों से; तथा बाढ़, तूफान आग जैसे देवी प्रकोपों के समय इसके द्वारा की गयी जन सेवाओं से; सर्वथा अपरचित हैं। अन्य सरकारी प्रतिष्ठानों की भाँति, यह बल लाभ/घाटे का तुलनपत्र नहीं बना सकता और न ही शद्ध लाभ बता सकता है। किन्तु इसके ये अर्थ कभी नहीं हैं कि यह बल राज्य कोष पर एक बोझ है।

नई सरकार ने भी इस बल का महत्त्व समझ लिया है और कानून व व्यवस्था बनाये रखने के लिये, राज्य पुलिस के साधनों को मज़बूत बनाने के हेतु, इस बल को लगा रही है। राज्यों से इस बल की माँग इतनी अधिक है कि उनकी पूर्ति करना कठिन हो रहा है और इस बल की कमी के कारण ही, सी० सु० दल की टुकड़ियाँ लगाई जा रही हैं।

हर कोई सरकार सभी विभागों और कार्यालयों में प्रशासनात्मक व्यय कम करना चाहती है । के. रि० प्र० बल का यह नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने कार्यालयों में कम से कम व्यय करे और अधिक से अधिक बचत करे। के.रि. पु० बल अपने वित्तीय अनुशासन के लिये प्रसिद्ध है और कहीं भी इसमें फिजूल खर्ची नहीं होती है।

इस बल की भूमिका स्पष्ट है। अपने सिद्धान्त "सेवा तथा भक्ति" को कार्यरूप में परिणत करने में परम निष्ठा दिखा कर ही, हम अपने आलोचकों को मुंह तोड़ उत्तर दे सकते हैं।

कहानी—

तिकड़मबाज

ले०- श्री जे० एस शर्म्मा

'ऐ बाबू साब ! क्या आप थानेदार हैं, जो आगे खड़े हो गये हैं। हम घंटों से चिलचिलाती धूप में खड़े खून पसीना एक कर रहे हैं। बय्यरबानी है, बच्चे हैं; बस में हमें कैसे जगह मिल पायेगी"

अन्य सभी भी उस यात्री की 'हाँ' में 'हाँ' मिलाने लगे। अब समय नहीं रहा था, जब

सफेद पोश लोग गांव वालों पर धौंस जमा लेते थे। गॉव-गॉव में स्कूल-कालेज खुल जाने से ग्रामीणों से हीन भावना का अन्त हो गया था, इधर भूमि ने सोना उगला था। अब वे अपने सामने किसी शहरी को कुछ नहीं समझते थे । अतः बाबू को हटना पड़ा। इतने में बड़ी भगदड़ पड़ गई। कारण कि टिकट बाबू ने खिड़की खोल दी थी। सर्वत्र एक प्रकार का उल्लास, एक तरह की जल्दबाज़ी, एक किस्म की बेचैनी छा गई थी। जो दूर बैठे ऊँघ रहे थे, वे भी दौड़ कर पंक्ति में लग गये। जो दूर चले गये थे, उन्हें पुकार-पुकार कर लोग कह रहे थे कि "अरे खिड़की खुल गई" खिड़की क्या खुली थी, मानो उसका भाग्य खुल गया था। वस्तुतः टिकट मिलना मानों यात्री की लाटरी का टिकट खुलना था।

टिकट बाबू की भाव भंगिमा भी देखने योग्य थी मानो चित्रकूट का दानी भिखमंगों का मुफ्त रोटी बाँट रहा हो।

"अबे कहाँ जायेगा?"

"बाबू जी, गढ़ के तीन टिकट दे दो"

"निकाल दाम"

वृद्ध ग्रामीण ने कुछ नोट टिकट बाबू के हाथ में दिये। बाबू झिड़क पड़ा। 'अबे एक ना दो पूरे पाँच रुपये कहां हैं ?"

"नहीं, नहीं, मैंने इनमें पाँच रुपये का नोट भी दिया"

"दिया था, तो क्या मोर चुम गये ? सब यहीं दाम पड़े हैं"

वृद्ध को अपनी स्मरण-शक्ति पर भरोसा होते भी नहीं रहा । वह अपनी अंटी, अपनी जेबें-सभी टटोलने लगा। तभी टिकट बाबू ने फिर झिड़का "पूरे दाम लेकर तो चलता नहीं। दिन दहाड़े दूसरों की आँखो में धूल झोकना चाहता है। तिकड़मबाज कहीं का"

वृद्ध पानी-पानी हो रहा था। उसे भली भाँति याद था कि उसने पाँच रुपये का नोट टिकट बाबू को दिया था; पर उसकी हैरानी की कोई सीमा नहीं थी। इधर घन्टों से खड़ी भीड़ में खिड़की देर से खुलने के कारण बौखलाहट थी। हरेक अपने टिकट लेने की उत्सुकता में था। सब बूढ़े को फटकारने लगे; और उससे अलग खड़े हो कर हिसाब लगाने को कहने लगे "अरे तू अपनी वजह से दूसरों की भी क्या गाड़ी छुटायेगा। चल, हट । हमें टिकट लेने दे। लोग उसे हटाने लगे; किन्तु वृद्ध को अतीव आवश्यक कार्य से जाना था, वह फिर पंक्ति में आ गया और लगा गिड़गिड़ाने" "मैं और एक-का के पाँच नोट दिये देता हूँ। मुझे बड़ा ज़रूरी जाना है। साथ में बय्यरबानी है; बच्चे हैं"

"मानों हम पर मेहरबानी है" टिकट बाबू ने घिनौनी हँसी हँसी "जाने कहाँ कहाँ से ज़ाहिल लोग चले आते हैं"

बस फिर क्या था एक विचित्र खिलखिलाहट दौड़ गई। सबको जल्दी टिकट लेने के लिए टिकट बाबू की ठकुर सुहाती जो करनी थी। यहाँ ही यह स्थिति अपवाद नहीं

है। आप जहाँ जाइये, यही क़ैफियत पाइयेगा। ग्राहक का ग्राहक साथ नहीं देगा, वह 'सेठ' की हाँ में हाँ मिलायेगा; यात्री की यात्री सहायता नहीं करेगा, वह बस-कण्डक्टर की लल्लो पत्तो करेगा। वृद्ध अपना सिर धुनता हुआ यात्रा की ओर बढ़ा।

जब ऐसे रुपये कम होने की घटनायें नित्य प्रति होने लगी, तब यात्रियों के कान खड़े हो गये। जो कल हँस रहे थे, वे आज रोने लगे। कुछ ने साहस बटोरा और ऊपर शिकायतें कीं। पहले तो अधिकारियों ने कोई ध्यान नहीं दिया; किन्तु जब शिकायतों का अम्बार लग गया, तब टिकट बाबू को उस स्थान से हटा कर, बस-कण्डक्टरी पर लगा दिया गया।

अब उस रूट पर आय कम होने लगी। अधिकारियों की समझ में नहीं आता था कि अनायास अन्य कौन सा कारण हो गया, जो इधर बस घाटे में चलने लगीं"

तभी एक अधिकारी ने फबती कसी "जहाँ जाये कदम शरीफा, रबी रहे ना खरीफा।"

विचार विमर्श तो गम्भीर हो रहा था; परन्तु इस फबती ने कहकहे मचा दिये। फिर दूसरे ने यह व्यंग्य कहा "आखिर बिलायती राम जो हुये। जहाँ जाते हैं वहाँ की आय विलायत पहुँचाने लगते हैं।"

"बिल्कुल बिल्कुल" सबने समर्थन न किया "ज़रूर कुछ दाल में काला है"

"काले सफेद की तो हमें मालूम नहीं; मगर बिलायती राम पर कड़ी निगाह की जरूरत है।"

इसी विचार से एक जाँच टुकड़ी गुप्तरूप से बिलायती राम के पीछे लगा दी। दूसरे दिन ही एक वृद्धा पकड़ी गयी। वह देर से बैठी थी; किन्तु हाथ में उसके दूसरे ही स्टाप का टिकट था। पूछने पर वह बेचारी गिड़गिड़ाने लगी "हुजूर ! मैं तो इन बाबू जी से बारम्बार टिकट माँगती रही" उसने बिलायती राम की ओर संकेत कर के कहां । बिलायती राम खूँखाँर जानवर की भाँति उस वृद्धा पर टूट पड़ा "उल्टा चोर कोतवाल को डाटे। टिकट तो अपने आप नहीं लेते हैं और उल्टे कन्डक्टर को बदनाम करते हैं।

परन्तु इस प्रकार बिलायती राम की एक न चली। जाँच टुकड़ी देर से तथा दूर से उसका पीछा कर रही थी। टिकट बिक्री से अधिक उस पर रोकड़ निकली; वृद्धा को उन्होंने खुद बिठाया था। इस प्रकार, वह रंगों हाथों पकड़ा गया।

अपराध गम्भीर था; बिलायती राम को धोखाधड़ी में कठोर कारावास भी हो सकता था और सोचा भी पहले यही गया था कि मामला पुलिस को सौंप दिया जाए। किन्तु बिलायतीराम ने अपने बहु-बच्चों की दुहाई दी; दिन रात अधिकारियों के आगे नाक रगड़ी; तब कहीं जाकर, उस पर पुलिस मामला तो नहीं बनाया गया। अलवत्तः उसे नौकरी से अवश्य बरखास्त कर दिया गया।

मेरठ शहर में यह समाचार घर-घर रुई सा धुन गया। बिलायती राम को वहाँ रहना दुर्भर हो गया। आखिर को, वह मैट्रिक पास था। इसने कहीं अन्यत्र जाकर पेट भरने की जुगाड़ की सोची।

वह 90 अगस्त की दुपहरी थी, राम की माया अपना खेल खेल रहती थी। कभी धूप तो कभी छाया आ जा रही थी। कुछ इसी प्रकार की स्थिति, कौशल्या के चित्र की हो रही थी। उसका भाई अशोक जोधपुर से बहुत ही दूर गुजरात में नाडियाड नामक कस्बे में प्रवास करता था; किन्तु दूरी से क्या हुआ; जब स्नेह तन्तु दो हृदय को जोड़े हुये हों। उसका वह भाई सदा रक्षा बन्धन पर कोई न कोई मनीआर्डर अपनी नन्हीं मुन्नी गुड़िया" को अवश्य भेजा करता था। परन्तु इस वर्ष उसको कोई मनीआर्डर छोड़ चिट्ठी तक नहीं मिली थी। उसका हृदय आशा-निराशा में तैर रहा था। प्रकटतया उसने कोई ऐसी त्रुटि नहीं की थी, ज़िससे 'भइया' रुष्ट हो गये हों किन्तु विवाह होते ही, भ्राताओं में आमूल परिवर्तन आ जाते हैं; भाभियाँ अपने बन्धुओं से सब कुछ ऐंठ लेने की इच्छा रखते हुए भी, नन्दों का पत्ता गोल करना चाहती हैं। यही सोचती कौशल्या घबड़ा गयी "नहीं, नहीं' मेरे भइया अन्य जैसे नहीं हैं। वह मुझे सलूनों पर कभी नहीं भूल स....."

मन में वाक्य पूरा भी वह नहीं कर पायी थी कि किसी ने द्वार पर दस्तक दी "कौशल्या देवी। अपना पार्सल ले जाना"

कौशल्या की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। वह तो मनीआर्डर की आशा सदा की भाँति सगाये बैठी थी, किन्तु इस बार तो भइया ने उसे सचमुच में उपहार भेजा था "आखिर इस बार मेरा उलाहना भइया पर जादूकर ही गया" मुस्कराती हुई बुदबुदाती वह देहली पर पहुँची। डाकिये पर छोटे-मोटे, लम्बे-चौड़े सभी प्रकार के पार्सल थे। उसकी दृष्टि लालच में सबसे बड़े पार्सल पर गयी; परन्तु यह क्या ? डाकिये ने सब से छोटा पार्सल हाथ में थमाया और रसीद पत्र को आगे बढ़ाते हुये एक स्थान पर हस्ताक्षर करने को कहा। कौशल्या का हृदय धक् से रह गया; नेत्रों में अश्रु छल छला आये। किन्तु उसी क्षण अपने भइया की नौकरी की याद आई। "कोई लाट साब तो लगे नहीं हैं। बेचार क्लिर्की में कैसे गुज़ारा करते होंगे: फिर अब तो भाभी....." का ध्यान आते ही, उसका मुखारविन्द फिर विकसित हो गया। कम से कम उसने 'भइया' का हाथ तो नहीं रोका। इसी उल्लास में उसने तुरन्त हस्ताक्षर किये और पार्सल को कभी चूमती और कभी छाती से लगाती अन्दर ले गयी।

प्रभु को सकोटि धन्यवाद देते हुए, जैसे ही उसने उस पार्सल को खोला। तो वह हक्काबक्का रह गई। पार्सल में अशोक की चिट्ठी के अतिरिक्त उसमें कुछ भी नहीं था। वह इस मज़ाक को समझ नहीं सकी। क्या इस बेहूदे विनोद के लिये वही रह गयी थी। यदि पहली अप्रेल होती, तब भी कुछ समझा जा सकता था। शायद अंग्रेजों के चले जाने के बाद, जितने अंग्रेजी फ़ैशन भारत में चले हैं उतने उनके राज्य काल में नहीं चले थे।

फिर कौशल्या के मन में यह भावना जागृत हुई कि अन्ततः खत में लिखा क्या है ? उसने तुरन्त सरसरी दृष्टि डाली। उसमें कोई विनोद की बात नहीं थी, सारे पत्र में स्नेहसागर उमड़ा पड़ता था। और उसके प्रतीक-स्वरूप एक 'फाउन्टेनपेन' साथ में भेजने को लिखा था। वास्तव में, उसे पेन की अतीव चाह थी और उससे ही इस वर्ष

परीक्षा देने की उसने ठान ली थी। इस कारण 'भइया' से कह भी चुकी थी। अपनी मनोवाँछित वस्तु को पाने के लिये उसने बारम्बार पैकेट को उल्टा पुलटा; झाड़ा झटका। और अन्त में नहीं पाकर, वह डाकिये से पूछने के लिये दौड़ी, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। डाकिया कब का वहाँ से जा चुका था।

जिस से भी उसने अपनी व्यथा सुनाई, सब उसी को मूर्ख बताने लगे। "भाग्यवान, हस्ताक्षर ही तब करती, जब पेन को पा लेती"

"भला, कौन हस्ताक्षर करने से पहले पैकेट खोलने देता"

"मगर कुछ भी हो; इतना तो कम से देख लेती कि पार्सल ठीक ढंग से पैक भी है या नहीं। तुम्हें नहीं मालूम, एक बार मेरे मामा ने रेल से मुझे एक टोकरी में आम भेजे । पर खोलने पर क्या पाया मालूम है उतने ही भार के ईंट पत्थर।"

सब लोग सुन कर हँसने लगे। तभी एक वृद्धा ने कहा "यह तो अच्छा है कि पेन है पकवान नहीं। वर्ना एक बार की बात है जब सस्ते के समय में हजारों को विवाह में जिमाया जाता था और हरेक को पाँच पाँच पकवान पाँच पाँच अददों में परोसे जाते थे।"

"क्या दादी अलिफ लैला की कहानी सुना रही हो" कौशल्या बोली। "तो पूछ ले, इस पइया नानी से । एक रुपया का सेर भर घी मिलता था और वह सेर भी अस्सी का नहीं होकर सौ तोले का होता था। पच्चीस रुपया का तोला भर सोना और तुम्हारे चूसने वाले आम दो आने के सौ।" "और उस समय सौ भी पच्चीस पंजे का होता था" ज़र्जर पइया ने पोपले गालों का मसकोड़ कर कहा।

सब आश्चर्य मैं डूबे जा रहे थे तभी एक ने पूछा "फिर पकवान का क्या हुआ?

"हाँ, तो कितना खाया जाए? खाने से तिगुना बचकर जाता था। सो सब मेहतर का होता था। आजकल का सा हिसाब नहीं था। मेहतर भागों सराह कर लेता था और खाता था और तब भी बच रहता, तो बेटियों दामादों को भेज देता था। ऐसे ही जूठे पकवान का पार्सल एक बार एक मेहतर ने जब अपने जमाई को भेजा, तब रेलवे वालों ने सब हज्म कर लिया और बदले में ईट पत्थर रख दिए।"

"क्या खूब ? अगर पता लगता" कौशल्या बोली

"पता लगता, क्या लगा? जब शिकायत करने पर मालूम हुआ, तब सब थू-थू कर के सिर पीटते रह गये।"

कौशल्या को कटे पर इस चर्चा से नमक सा लगा। वह मन में कह रही थी कि किसी के घर आग लगे, दूसरा कहा—मोय तापन दे। परन्तु जब शिकायत की बात सुनी, तब उसके कान खड़े हो गये।

"तब शिकायत हो सकती है क्या ?"

"एक क्या, हज़ार बार । पर अब कौन सुनने वाला है।" पइया बोली "अंग्रेजी राज्य में एक घाट शेर बकरी पानी पीते थे ; सब कानून से डरते थे। लाल पगड़ी—'हौआ'

थी।"

"नानी तब का लीपा देओ बहाय, अब की लीपा देखो आये। दिनरात न्याय का डंका बजता है, पर सब ढोल की पोल है। कोई नहीं सुनने वाला है गरीबों की शिकायत फरियाद"

क्यों कि कौशल्या को महाव्याघात पहुँचा था, उसने एक बार तो शिकायत करनी की अवश्य ठानी। परन्तु लोगों का कहना सही निकला।

जब पोस्टमास्टर पर वह पहुँची और सारी व्यथा सुनाई, तब पोस्टमास्टर ने सम्वेदना तो बहुत दिखाई; परन्तु कुछ करने के नाम कन्नी काट गया । केवल इस आश्वासन से उसके आँसू अवश्य पोंछ दिये कि 'छानबीन के बाद आपकी शिकायत का उत्तर आपको मिल जायेगा।'

कौशल्या को दिल मसोस कर रह जाने के अतिरिक्त अन्य चारा ही क्या था।

"बेटे ! आज तुम्हारा गुलाब सा मुखड़ा मुरझा क्यों हो रहा है ?" कहते हुये कौशल्या के चाचा ने उसे प्यार किया। वह निज चाचा को बड़ी प्यारी थी और वह प्यार में बेटी के स्थान पर बेटे कहते थे।

"बस चाचाजी, रहने दीजिये। गुप्तचरी सेवा में आपके उच्चाधिकारी होने से क्या लाभ ?"

"क्यों, क्या बात हुयी"

कौशल्या ने कोई जवाब नहीं दिया; केवल अशोक का पत्र उनके हाथ में पकड़ा दिया। चाचा ने उसे पढ़ा और उलटा-पुलटा "इससे और गुप्तचरी से क्या सम्बन्ध ?"

"बहुत कुछ । उसमें कुछ भेजने को लिखा है।"

"हाँ, हाँ, फाउन्टेन पेन"

तभी उसने खाली पैकेट को चाचा के सामने प्रस्तुत किया "देखिये, कैसा बढ़िया पेन है। चाचाजी, आपके होते हुये, मेरा पेन चोरी हुआ है।"

"तुम क्यों चिन्ता करते हो बेटे, एक की जगह दो ले लेना"

"मुझे पेन की इतनी चिन्ता नहीं, जितनी चोरी की है। न जाने कितने लोगों की बहुमूल्य वस्तुयें इसी भाँति पार कर ली जाती होंगी"

चाचा विषय की गम्भीरता समझ गये; और तुरन्त दौड़े दौड़े हेड आफिस पहुँचे । पोस्टमास्टर ने उनकी शिकायत अत्यन्त सहानुभूति से सुनी, परन्तु उत्तर में शिकायतों का पुलन्दा सामने लाकर रख दिया। किसी के कंघन गायब हुए हैं, तो किसी की पुस्तकें । किसी की घड़ी चोरी हुयी है; तो किसी की अंगूठी।'

"इसके अर्थ तो ये हुये कि डाकतार विभाग निरस्त पड़ा है" चाचा ने कहा।

"आप कुछ कहें। हमने सब शिकायतें ऊपर भेजी हैं; पर चोर बड़ा तिकड़मबाज दीखता है । उसकी आज तक गिरफ्तारी नहीं हो पाई है।"

“हूँ। तब यह कुछ हमें ही करना पड़ेगा”

पोस्टर मास्टर चाचा को जानता था। “नेकी और पूछ-पूछ। इससे बढ़कर सबाब का काम क्या हो सकता है ?”

“या तो आज डेकोरेटिव पीस सुरक्षित मिलेगा या चोर का सुराग” चाचा ने गृह में प्रवेश करते हुए कहा।

“कौन सा डेकोरेटिव पीस” कौशल्या सकते में आ गई।

“बात यह थी। उस दिन मैं पोस्टमास्टर से मिलकर में नाडियाड चला गया”

“तब क्या वहाँ ही यह हरकत होती है ?”

“इसी का तो सही पता लगाने वहाँ गया था”

“फिर”

“वहां से खरीद कर मैंने एक डेकोरेटिव पीस पार्सल किया है और जिस डाकगाड़ी में वह पार्सल यहाँ भेजा गया है, उसी से सवार होकर निगरानी रखता मैं यहाँ आया हूं। यदि अब भी वह गायब होता है तब यहां के ही कर्मचारियों की कारस्तानी...”

इतने में डाकिये ने द्वार पर दस्तक दी और कौशल्या से पार्सल छुड़ाने को कहा। इस बार कौशल्या ने रसीद देने से पहले खोलने की ज़िद की; परन्तु डाकिये का कहना था—इसमें बहिनजी, हमारी क्या ज़िम्मेदारी। हम तो महज गुमाश्ते हैं। अगर कुछ कमी वेशी हो, तो ऊपर शिकायत लिख भेजिये।”

“नहीं। उस दिन भी तुम्ही पार्सल लाये थे; उसमें कुछ नहीं निकला। दूध का जला छाछ को फूँक-फूँक कर पीता है।”

“बोलिए, बीबी जी, इसमें हमारा क्या कसूर है ? हम तो सिर्फ पार्सल लाने के गुनहगार हैं।”

“कोई बात नहीं है; बेटे, रसीद दे दो” चाचा ने बाहर आकर कहा।

हताक्षर करते ही, कौशल्या ने डाकिये के सम्मुख ही पार्सल खोला। पहले की तरह इस बार भी पार्सल खाली था।

डाकिया अचरज में रह गया “आजकल कैसा जमाना आ गया है कि छोटे बच्चों की चीजों पर हाथ साफ करने से बदमाश बाज नहीं आते।”

“उन्हें क्या विदित कि पाने वाला कौन है।”

“बाबू जी, हम तो शिकायत करते करते थक गये हैं ? आप तो बड़े अफसर लगते हैं। आप डाटकर लिखिये, तो बड़े अफसरों की शायद आँखें खुलें। मामलों की सुनवाई हो। “चोर पकड़े जायें। तिल चोर सो बज्जर चोर...

‘कुछ ऐसा ही करना पड़ेगा।’

डाकिये ने झुककर नमस्ते की और अपना रास्ता पकडा। चाचा बहुत देर तक किसी उधेड़ बुन में पड़े रहे। अन्त में, बड़े डाकघर जाकर जाँच पड़ताल करने को

चल दिये। मार्ग में पुलिस का थाना पड़ा। वहाँ के थानाध्यक्ष उनको जानता था। बातचीत में संकेत करके, उसने बताया कि उस मन्दिर के पुजारी ने आज एक भीगा हुआ पत्रों का यह पुलिंदा दिया है"

"उसे कहाँ से मिला"

"बयान में कहा है कि जब प्रातः स्नान करने को उसने कुए में अपना डोल डाला, तो उसमें यह पुलन्दा आ गया"

चाचा ने पुलन्दे को खोला; उसमें अनेकों पोस्टकार्ड, और लिफाफे वगैरहः थे । यद्यपि पत्र भीग गये थे, तो भी उनमें पड़ी तारीखों से पता लगा था कि वे इन्हीं दिनों के हैं। फिर उन्होंने जो उलटा-पुलटा, तो उनके मख पर अचरज की रेखायें दौड़ गयी—अरर्र"

थानेदार देखता रह गया "क्या हुआ सर।'

"कुछ इनमें अजीब बात पाते हो"

थानेदार ने फिर ध्यानपूर्वक देखा तो उसका भी माथा ठनका । जिन पर ऊपर से टिकट लगाये गये थे सब के सब गायब थे।

"हूँ, तो तिकड़मबाज लहरे गिनने से भी टैक्स वसूल कर लेते हैं" चाचा बुदबुदाये ।

थानेदार कुछ समझ नहीं सका; पर साथ साथ में, पूछने का साहस भी नहीं कर सका । यह कहते हुए फिर चाचा उठ खड़े हुए "है तो गुत्थी बहुत उलझी हुई। मगर हज़रत अपने ही जाल में उलझते जा रहे हैं।" फिर मुस्कातें हुये बोले "आखिर गुप्तचरी में इतने दिन भाड़ नहीं झोका है, जिसका मुझे सन्देह था, वह और पूरा होता जा रहा है। अच्छा चलते हैं।"

चाचा चले तो, किन्तु बड़े डाकघर नहीं। उन्होंने उसी डाकिए का उसके घर तक पीछा किया, जो पार्सल लाया था। वहाँ उन्हें पता लगा कि वह तो बड़े-बड़े होटलों में खाता पीता है, खूब शान-शौकत के साथ रहता है; सन्देह तो उन्हें उसी समय हो गया था जब उसकी कलाई में बढ़िया इम्पोर्टेड घड़ी बन्धी देखी थी।

वह उस समय चुपचाप लौट आये, किन्तु दूसरे ही दिन जब वह डाकिया ड्यूटी पर गया था, तब उन्होंने उसके घर जा कर आवाज दी—"शंकरलालजी।'

एक स्त्री ने द्वार खोला—'वह तो हैं नहीं जी'

"मैं उनका पुराना मित्र हूँ"

सभ्यता के नाते, स्त्री ने बैठक खोल दी। चाचा ने जब उसकी साज सज्जा देखी, तब देखते ही रह गए। जो बहुमल्य वस्तुयें उन उच्चाधिकारी के गृह में नहीं थीं, वे वहाँ मौजूद थी। पर इससे अधिक आश्चर्य उन्हें एक चीज को देखकर हुआ, जिसकी उन्हें स्वप्न में भी आशा न थी। वह कल ही पार्सल से गायब हुआ था उनका **डेकोरेटिवी पीस**।

कुछ इधर उधर की बात कर चाचा तुरन्त उठ खड़े हुए 'फिर हम डाक घर में

मिले लेते हैं' "नहीं, नहीं वह बुरा मानेंगे कि बिना चाय पानी के कैसे जाने दिया"

"हम तो उनके साथ आयेंगे, तब जी भर के पियेंगे" फिर वह खिलखिलाते चल पड़े।

शंकरलाल की पत्नी उनके उन्मुक्त व्यवहार से बड़ी प्रभावित हुयी। जैसे ही शंकरलाल ने गृह में प्रवेश किया, तब पहला प्रश्न उनकी पत्नी ने जो किया, वह यह था "वह तुम्हारे लंगोटिया यार तुम्हें मिले"

"कौन लंगोटिया यार"

"नाम न तो मैंने पूछा और न उन्होंने ही बताया। मगर जब उनसे मैंने चाय पीने का अनुरोध किया, तब वह बोले कि आपके ही पास वह जा रहे हैं और आपके साथ आकर पियेंगे।"

"ओफ तो यार नहीं कोई शातिर अय्यार होगा अग़यार—जानी दुश्मन, दोस्ती का दामन पहन कर आया होगा"

तत्क्षण खड़म खड़म पदचापें हुयीं। शंकर लाल ने भागने की कोशिश की। किन्तु चारों तरफ संगीने तन गईं "खबरदार, जो भागने की तिकड़म की, तो भून दिये जाओगे"

शंकर लाल के पैरों तले की भूमि खिसक गई। उसने बदमाशियाँ तो बहुत की थीं, परन्तु पुलिस से मुचैटा पहली बार हुआ था। उसके हाथ पांव फूल गये; और अचेत अवस्था में गिर पड़ा। तभी उसको झुनझुनियाँ पहना दी गयीं।

जब सुधि में आया, तब शंकरलाल ने बताया "मैं बहुत गरीब आदमी हूँ"

"पर हो तो बड़े तिकड़मबाज" चाचा ने व्यंग्य कसा।

"नहीं हूजूर । पार्सल विभाग के क्लर्क टीकमचन्द मुझसे ये सब पाप करवाते थे।" "और इन लिफाफों-पत्रों के टिकट" पुलन्दा दिखाते हुये चाचा ने कहा। "ईश्वर की सौगन्ध । वह ही निकलवा कर फिर बिकवाते थे। सच जानिये मुझ से वह माल पार्सलों से निकलवा कर कुछ अपने पास रख लेते थे, कुछ मुझे देते थे और बाकी सब बिकवा देते थे।"

"और उस आमदनी को आधे-आधे अपनी-अपनी जेबों में। क्यों है ना" खड़ी हथेली को दूसरी हथेली पर काटे का इशारा करते हुये चाचा हँसे । शंकरलाल नतमस्तक मौन था।

तुरन्त टीकमचन्द भी पकड़ा गया। दोनों अभियुक्तों के और उनके निकट सम्बन्धियों के घर से बहुत सी वस्तुयें प्राप्त हुयीं; जिनमें वह **डेकोरेटिव पीस** भी था, जिस पर शिनाख्त के लिए चाचा ने अपना नाम भी खुदवा रखा था। उसे शंकर लाल द्वारा चोरी का माल नहीं बताने पर चाचा बहुत हँसे "तुम तो बनते ही थे तिकड़म बाज़" फिर अपना नाम डेकोरेटिव पीस पर खुदा दिखाकर बोले "बोलो, हम कौन हुये ?"

पुलिस रिमांड पर जो छानबीन हुयी, तो यह पता लगा कि शंकरलाल का असली नाम विलायती राम था, जो मेरठ में अपनी चालाकी से बसों के यात्रियों को लटता रहा और जिससे वहाँ से बरखास्त होने पर, जोधपुर में जाली नाम शंकर लाल राम से डाकिये की नौकरी पा ली। यहाँ भी वह अपनी तिकड़मबाजियों से बाज नहीं आया, जिसके कारण उसे कचहरी के कठघरे में खड़ा होना पड़ा और जेल में वर्षों सड़ना पड़ा।

ग्रुप केन्द्र गांधीनगर में डाकघर

ग्रुप केन्द्र गांधी नगर के परिसर में 13 फरवरी 1978 को एक छोटा डाकघर खोला गया। श्री जी० वी० एस० राव, डाक सेवा के निदेशक ने इसका उद्घाटन किया। इस डाकघर के खुलने से, के० रि० पु० बल के जवानों तथा पासवर्ती क्षेत्रों के निवासियों को अब डाक तुरन्त मिलने लगेगी। बचत खाते, धनादेश (मनीआर्डर), डाक बीमा, रजिस्टरी आदि की अन्य सेवाओं की भी सुविधा प्राप्त होगी। इसका पिन कोड नं० 382042 है।

हृदय की आवाज

[रचयिता—कां० हंसराज ओझा, 53 बटालियन]

घर से बाहर, दूर शहर से, होगा कोई वह अपना /
संभव है, वह इठलाता हो, देख किसी का सुख-सपना /
करता मौज, वहाँ पर होगा, लेकर हाथ में हथियार /
कैसे आये याद भला ? क्या, मैं दे सकती उसको प्यार /
शहर-शहर में, गाँव-गाँव में, जाना है जंगल-जंगल /
अधिकारी के संकेतों पर, सेवा करना है प्रति पल /
कमी दौड़ना, कमी पकड़ना, घात लगाना कभी-कभी /
बैठ अकेले है निगरानी, पड़ती लाना कभी-कभी/
दुश्मन या विद्रोही आये, घर दबोचना उसका काम /
पंजे से वह निकल न जाये, चाहे होये काम तमाम /
'कैम्प' छोड़ कर जाना होता, मौसम की परवाह नहीं/
ओले, आँधी हो या वर्षा, ड्यूटी करनी पड़े सभी/
कभी-कभी, खाना-पीना अरू, सोना होता है मुश्किल /
कुछ भी हो, पहरी का निश्चय, कभी नहीं टलता है तिल /

उसके दिल में, एक भावना-मेले सभी जन को कल्याण ।
मातृभूमि की रक्षा करने, का वह रखता प्रतिपल ध्यान ।
हे भारतमाता ! मेरे हित, बस, करना त इतना उपकार ।
हो शहीद;—पर युद्ध भूमि में, मेरे माथे की शृंगार ।

पहेलियां

(प्रस्तोता—हवलदार गोविन्द सिंह 23 बटालियन)

मां का देखा, बहिन का देखा,
देखा दुनिया सारी का।
एक अचम्भा ऐसा देखा,
नहिं देखा निज नारी का ॥
कर बोले, कर ही सुने,
और सुने नहिं कोय ।
कर भी जब नाहीं सुने,
मरा जान लो मोय ॥ 2 ॥
लग-लग कहे, तो ना लगे,
विलग कहे लग जाय ।
अगर न वह होता कभी,
मुखड़ा नहीं सुहाय ॥ 3 ॥

उत्तर(1) अपनी पत्नी का विधवापन (2) हाथी की नाड़ी (3) होंठ ।

(1) मद्रास तैराकी में हमारी टीम सिरमौर

के० रि० पु० बल की तैराकी टीम ने मद्रास में तकनीकी तरणताल के भारतीय संस्थान में 26 फरवरी 1978 को जनता-पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में भाग लिया और 79 अंकों से सिरमौर जीता। जलपोलो में, हमारी टीम ने 6-5 गोलों से तामिलनाडु को हराया।

क्विलोन दौड़ कूद

क्विलोन में खेली गई अन्तर्राज्यीय दौड़ कूद प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल के एथ्लीटों ने भाग लिया और उन्होंने इन पदकों/स्थानों को पाया—

I. स्वर्ण पदक—इ० आर. एस. बाल (घन फेंक)।

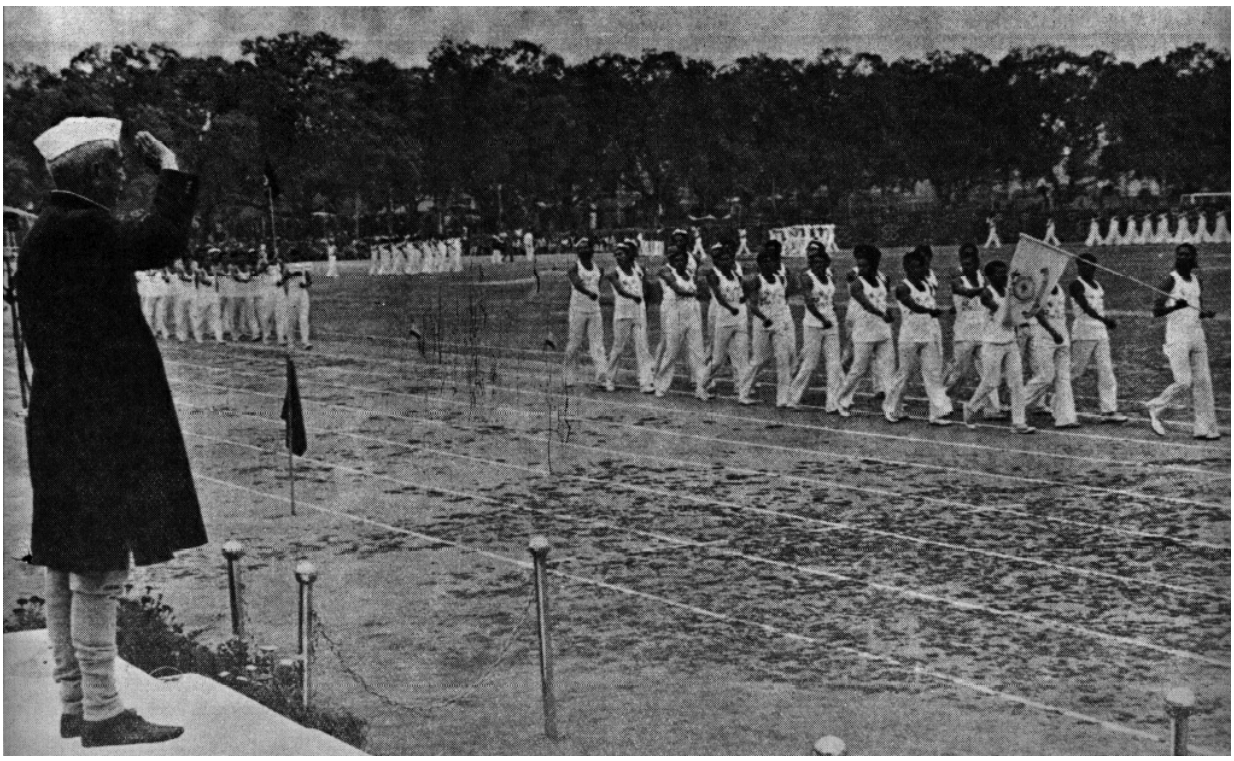
II. रजत पदक—1. इ० आर. एस. बाल (चक्का फेंक) 2. स० इ० प्रभात सिंह (डिकथलन) तथा 3 टीम (4X100 मी० रिले)।

III. कांस्य पदक—1. स० इ० प्रदीप कुमार (3000 स्टीपिल चेज़) 2. हे० का० नज़र सिह (400 मी बाधा,) 3. स०इ० वी० सुशीलम (नेजा फेंक) तथा 4. विशाल सिंह (800 मी० दौड़-बड़े लड़के)।

IV. चौथा स्थान—1. स० इ० प्रदीपकुमार (5000 मी० दौड़) 2. स० इ० ए. पी. मान (शाटपुट तथा चक्का फेंक) 3. ना० रासदेव सिंह (मराथान) व 4. स० इ० जे. एस. भुल्लर (घन फेंक)।

V. पाँचवां स्थान—का० एन. के. चन्द्रभानु (3000 मी० स्टीपिल चेज़)।

VI. छठा स्थान—ना० प्रेम चन्द्रन (पोलवाल्ट) तथा 2. ला० ना० एम. वी. वर्गीज (800 मी० दौड़)।



27वें पुलिस खेलों में के० रि० पु० बल के मार्च पास्ट में सलामी लेते हुए गृहमंत्री श्री चरण सिंह

क्रीड़ा-क्षेत्रे

1978 के अखिल भारतीय पुलिस खेल कूदों में के० रि० पु० बल उपविजेता

इस वर्ष फरवरी में खेली गई आंखेल भारतीय पुलिस दौड़-कूद प्रतियोगिता में, सीमा सुरक्षा दल ने 271-253 से के० रि० पुलिस बल को हरा कर सिरमौर जीता तो भी प्रतियोगिता में स्थापित छै कीर्तिमानों में से चार के० रि० पु० बल के खिलाड़ियों ने बनाये। दो कीर्तिमान ओलिम्पिक खिलाड़ी हरीचन्द (के० रि० पु०) ने स्थापित किये। उसको सी० सु० दल के अजायब सिंह के साथ संयुक्त सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी माना गया। गृह मन्त्री श्री **चरणसिंह द्वारा** प्रतियोगिता के उद्घाटन के तुरन्त पश्चात् ही, उसने 5000 मी० दौड़ में पुराना कीर्तिमान भंग किया। उसने अपना 14:16.4 से० वाला रिकार्ड 14:8.8 से० से तोड़ा। प्रतियोगिता के तीसरे दिन, उसने मूसलाधार वर्षा में 10,000 मी० दौड़ में फिर अपना ही पिछला रिकार्ड 29 मि० 41.4 से० में दौड़ कर सुधारा। उसे 1.500 मी दौड़ में स्वर्ण पदक मिला।

इधर चौथा नया रिकार्ड के० रि० पु० बल के बी० एस० बल ने घन को 64.2 मी० दूर फेंक कर स्थापित किया।

श्री मुरारजी देसाई, प्रधान मंत्री ने 27वीं अखिल भारतीय खेल प्रतियोगिता में पुरस्कार-वितरण करते समय खिलाड़ी भावना रखने पर ज़ोर दिया। उन्हें इस बात की प्रसन्नता हुई कि देश के सभी राज्यों की पुलिस टीमें इस प्रतियोगिता में सच्ची खिलाड़ी-लगन से भाग ले रही हैं।

उन्होंने कहा कि पुलिस का काम ही कुछ इस प्रकार का रहा है कि कुछ लोगों को उससे क्रुद्ध रहना स्वाभाविक है। फिर भी पुलिस को हर कोई काम सज्जनता तथा सम्वेदना के साथ करना चाहिये। जनता का यह विश्वास होना चाहिये कि उसे दिक़ नहीं किया जायेगा और हरेक अपना काम निर्भीकतापूर्वक करता रहेगा।

उन्होंने दिल्ली प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी पुलिस जनों से यह संकल्प लेने को कहा कि वे जनता के मित्र बन कर रहेंगे और उनके काम की पहचान उनके अच्छे पौर निष्पक्ष समान व्यवहार से होगी।

परिणाम इस प्रकार रहे-

10 मी० दौड़ : अजायब सिंह (सी० सु० दल) I; शशिधरन (सी० सु० दल) II और के जी० जोजेफ (के० रि० पु०) III.

200 मी० दौड़ : अजायबसिंह (सी०) सु० दल) I; बी० कंजंबू (के० रि० पु०, II और बल्देव सिंह (सी० सु० दल) III.

400 मी० दौड़ : अजायबसिंह (सी० सु० दल) I; बल्देव सिंह (सी० सु० दल) II और सुच्चासिंह (पंजाब) III.

800 मी० दौड़ : पूरनमल (भा० ति० सी० पु०) I; एम. वी. वर्गोज (के० रि० पु०) II और हरभजनसिंह (सी० सु० दल) III.

1,500 मी० दौड़ : हरीचन्द (के० रि० पु०) I; गोपालकृष्ण सैनी (राज०) II और चन्द्र प्रकाश (के० रि० पु०) (III).

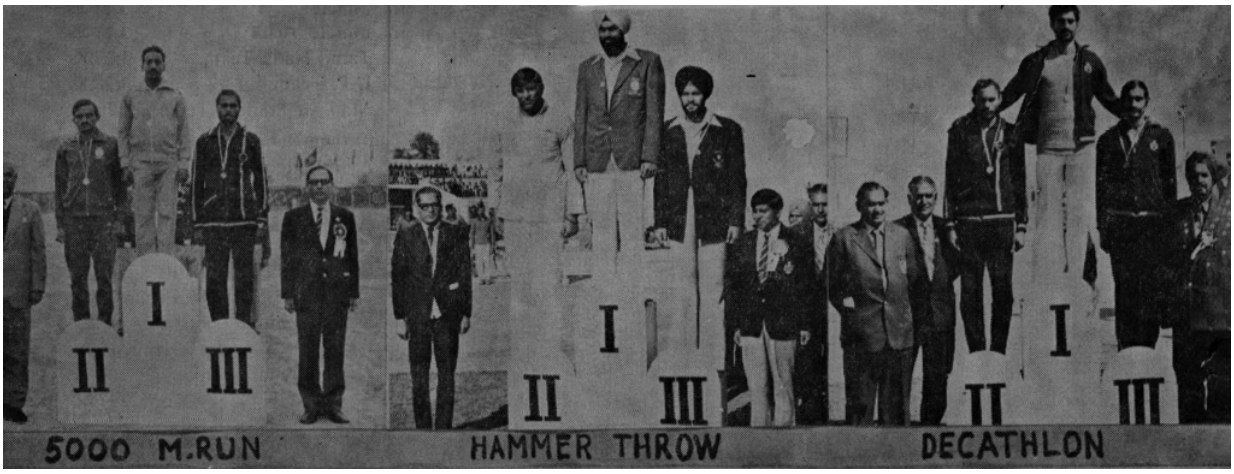
5,000 मी० दौड़ : हरीचन्द (के० रि० पु०)I; गोपाल कृष्ण सैनी (राज०) II और

मोहर सिंह (सी० सु० दल) III,

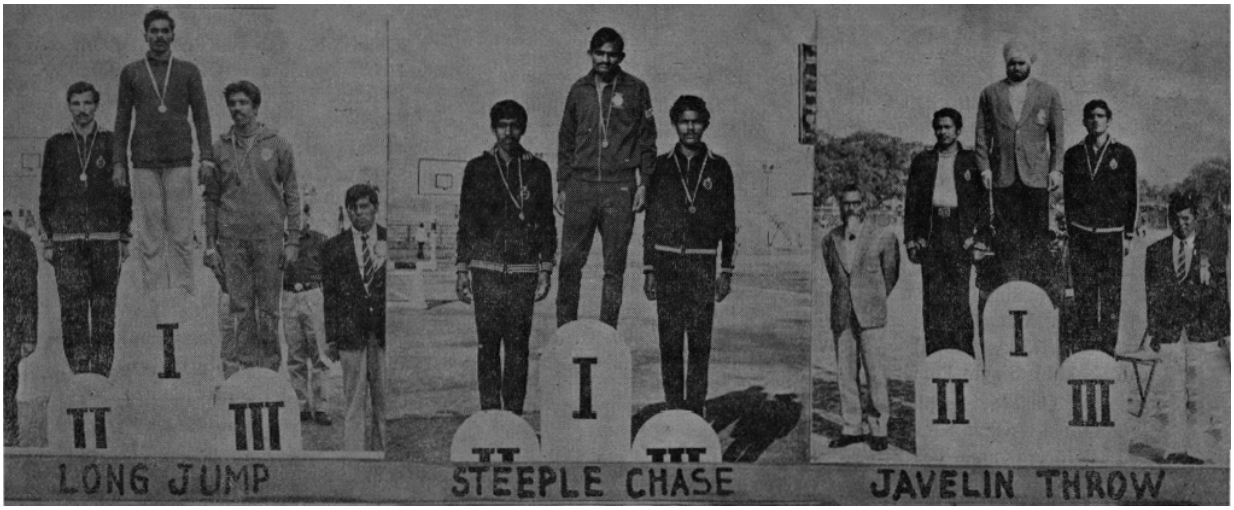
10,000 दौड़ : हरीचन्द (के० रि० पु०) I; प्रदीप कुमार (के० रि० पु०) II और मोहन सिंह (सी० सु० दल) III.

300 मी० स्टोपिलचेज : गोपाल कृष्ण 19 सैनी (राज०) I; प्रदीप कुमार (के०रि०पु०, II और एन० के० चन्द्र मान (के० रि० पु०) III.

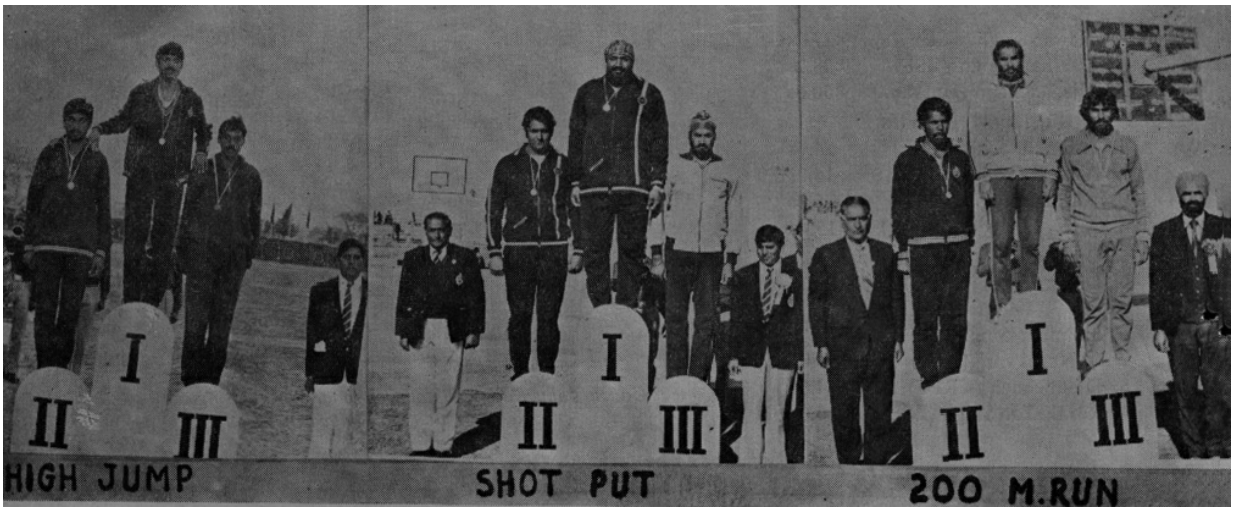
विजय सोपान पर



1. 5000 मी० दौड़ 2. घन फेंक व 3. डिकथलन ।



1. लम्बी कूद 2. स्टीपिल चेज़ व 3. नेजा फेंक



1. ऊंची कूद 2. शाट पुट व 3. 200 मी० दौड़।

110 मी० (बाधा): लेहम्बर सिंह (सी० सु० दल) I; ए० एस० रणधावा (सी० सु० दल) II और नजरसिंह (के० रि० पु०)III.

400 मी० (बाधा): लेहम्बर सिंह (सी० सु० दल) I; बी. नागेशबाड़ा (आं.प्र.) II, और दीदारसिंह (के० रि० पु०) III.

4x100 मी० बाधा : सी० सु० दल (43.1 से०) I; के० रि० पु० बल (43.5 से०,) II और केरल टीम (44.1 से०)III.

4x400 मी० रिले : सी० सु० दल (3:18 8 से०) I, के० रि० पु. (3: 19.8 से०) II और पंजाब टीम (3:21.9से०) III.

मराथान दौड़ : अवतारसिंह (हरि०) I; रणजीत सिंह (हरि०) II और रासदेवसिंह (के० रि० पु०) III.

ऊँची कूद : नसीबसिंह (के०रि०पु०) I; छगनसिंह (के० रि० पु०) II और रमाशंकर यादव (उ० प्र०) III.

लम्बी कूद : शशिधरन (सी० सु० दल) I; प्रभातसिंह (के० रि० पु०) II और जार्ज जोजेफ़ (म० प्र०) III.

त्रिकूद : दक्षिणमूर्ति (त० ना०) I; के० सुन्दरम (के० रि० पु०) II और जार्ज ज़ोज़फ (म० प्र०) III.

पोलवाल्ट : आर० एल० पांडेय (उ.प्र.) I; मोहिन्द्र सिंह (हरि०) II और फूल कुमार (हरि०) III.

शाट पुट : गुरदीपसिंह (सी० सु० दल) I; बी० बहादुर सिंह (सी० सु० दल) II और जे० एस मुल्लर (के० रि० पु०) III.

चक्का फेंक : प्रवीणकुमार (सी० सु० दल) I; आर० एस० बल (के० रि० पु०) II और बलकरसिंह (पं०) III.

नेजाफेंक : नारेन्द्रासेंह (स० सु० दल) I; बी० सुशीलम (के०रे०पु०) II और भगवान सिंह (के० रि० पु०) III.

घन फेंक : आर० एस० बल। (के० रि० पु०) I; प्रवीण कुमार (सी०सु० दल) II और जे० एस० भुल्लर (के० रि० पु०) III.

डिकथलन : प्रभातसिंह (के० रि० पु०) I; बलबिन्दर सिंह (सी० सु० दल) II और जनकचन्द (के० रि० पु०) III.

क्रीडा क्षेत्रे :

जिम्नास्टिक्स में के० रि० पु० बल सिरमौर

फरवरी 1978 में खेली गई 27वीं अखिल भारतीय पुलिस खेल-कूद प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल ने जिम्नास्टिक्स में सिर मौर जीता। हमारे खिलाड़ियों की स्थितियाँ इस प्रकार रहीं :-

वाल्टिंग हार्स- एस० भट्टाचार्य II: एन० बी० भोंसले V तथा अब्दुल हुसैन VI.

पैरेलल वार- एन० बी० भोंसले I; एस० भट्टाचार्य IV तथा अब्दुल हुसैन V.

पोमेल्ड हार्स- देव प्रकाश V तथा एन० बी भोंसले VI.

रोमन रिंग- एस. भट्टाचार्य I; चमूसिंह II; एन० बी० भोंसले IV तथा देव प्रकाश V.

होराइजन्टल बार- देव प्रकाश IV; एन. बी. भोंसले V तथा एस० भट्टाचार्य VI.

फ्लोर एक्सरसाइज- बी० के० भोंसले III तथा एन० वी० भोंसले VI.

व्यक्तिगत चैम्पियनशिप एन० बी० भोंसले को मिली और दूसरे स्थान पर एस भट्टाचार्य रहा।



पैरेललबार में यत्नशील व्यक्तिगत चैम्पियनशिप विजेता एन० वी० भोंसले

क्रीड़ा-क्षेत्र

के.रि.पु. बल बास्केटबाल में उपविजेता और हाकी व दंगल में तृतीय स्थान पर

बास्केटबाल

बास्केटबाल में, के० रि० पु० बल 27वीं अ० भा० पुलिस खेल प्रतियोगिता 78 में, उपविजेता रही। इसने क्वार्टर फाइनल में, आंध्र पुलिस को 86-53 से हराया और अर्द्ध फाइनल में, उत्तर प्रदेश पुलिस को 73-51 से जीता। किन्तु फाइनल में, वह सी० सु० दल से पराजित हो गई।

हाकी

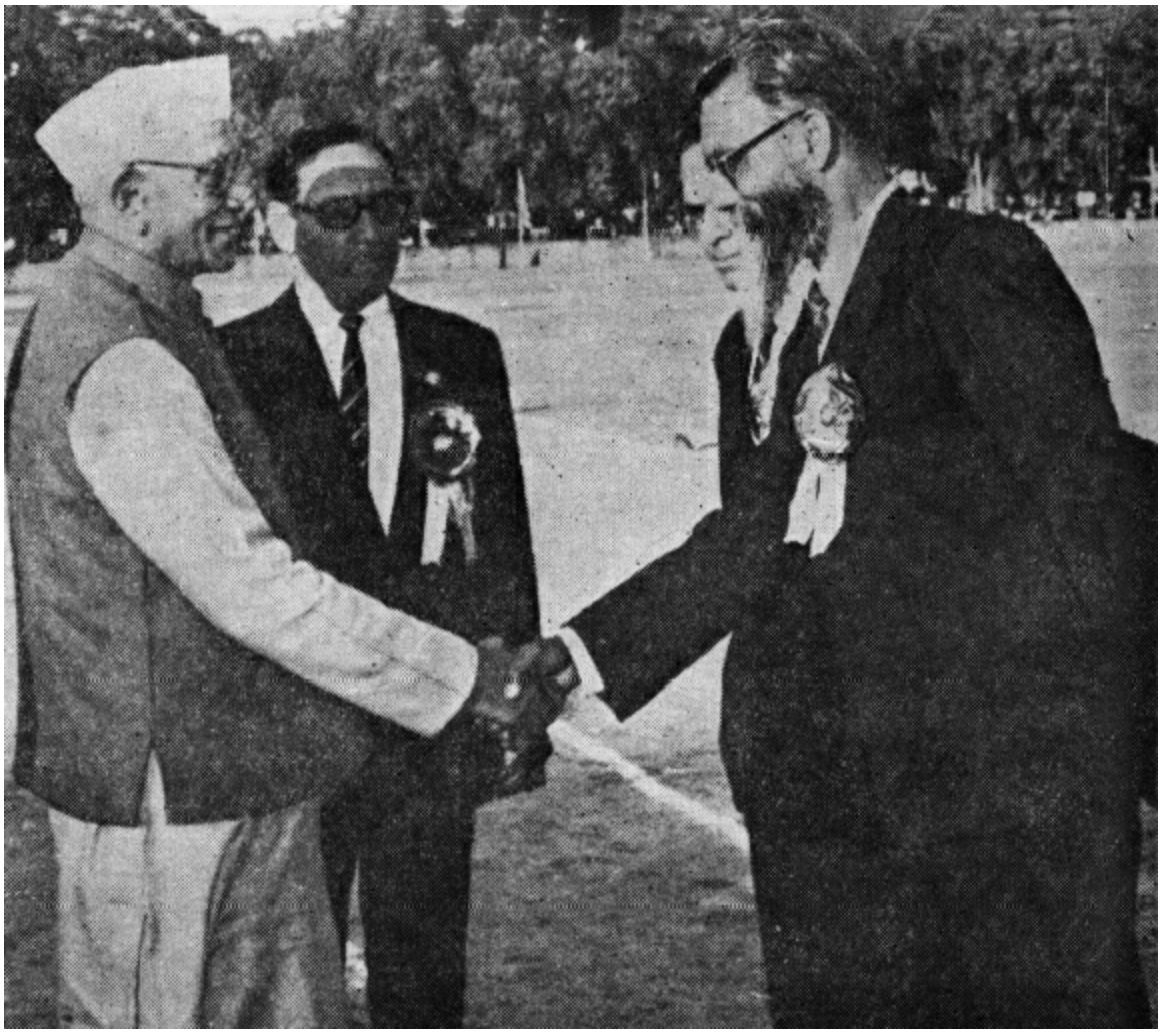
हाकी में 27वीं अ. भा. पुलिस खेल प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल की टीम तृतीय स्थान पर रही। उसने हार्ड लाइन मैच में 15 फरवरी 78 को मध्यप्रदेश पुलिस को 2-0 से हराया। इससे पहले क्वार्टर फाइनल में असम पुलिस को अवरोधक भंजन (टाई ब्रैकर) में 3 गोलों से उसने जीता। अर्द्ध फाइनल में, वह पंजाब पुलिस से अवरोध भंजन में 2-4 से हार गई। पंजाब पुलिस में दो ऐसे खिलाड़ी थे, जिन्होंने जनवरी 78 में गुरु नानक विश्वविद्यालय की ओर से खेला था।

फुटबाल

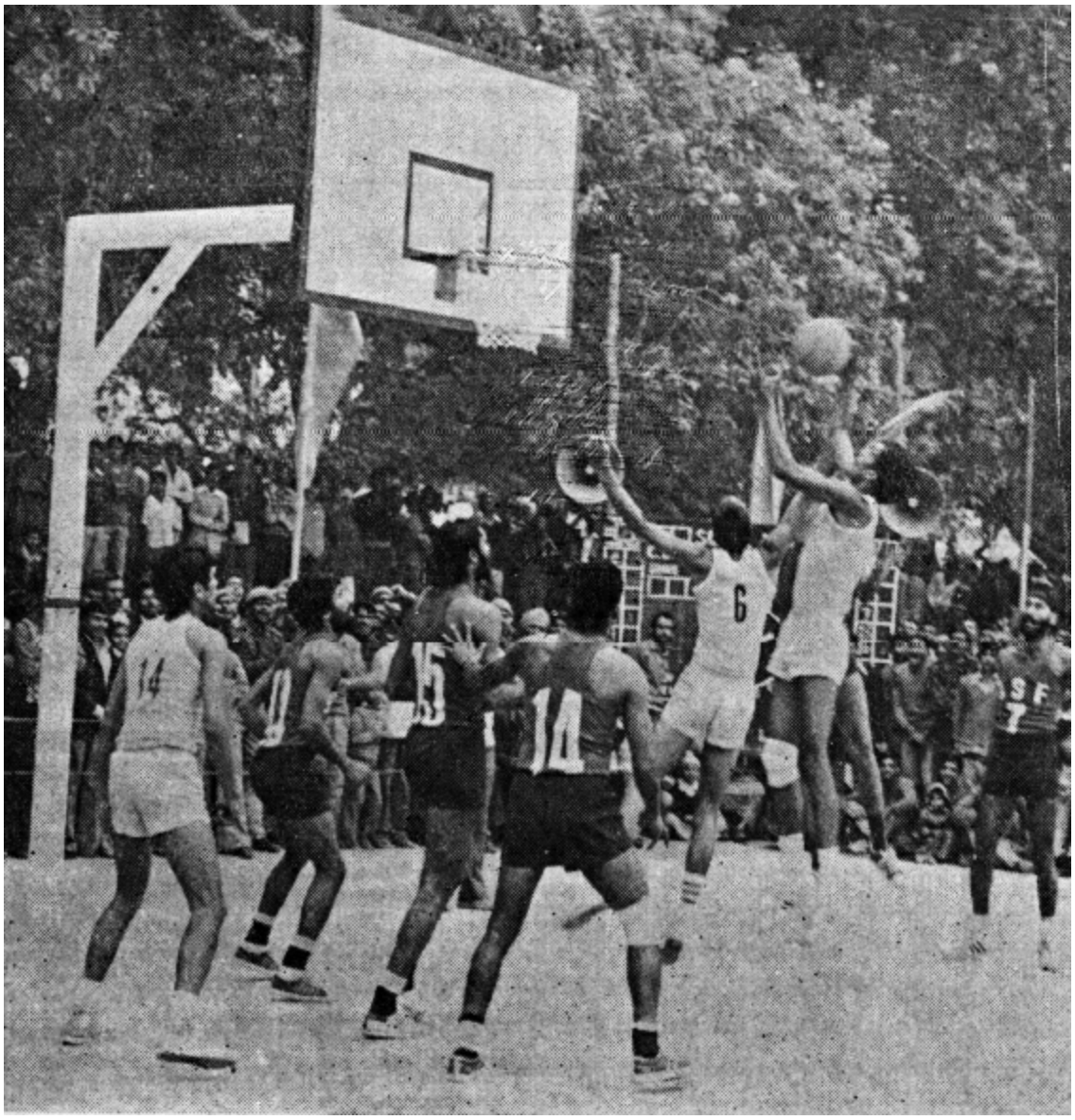
फुटबाल में, हमारी टीम 27वीं अ. भा० पुलिस खेल प्रतियोगिता 78 में पंजाब पुलिस से हार गयी। प्रथम मध्यांतर में, उसने दो बुरे अवसर छोड़े; पंजाब पुलिस केवल एक गोल कर सकी।

वालीबाल

वालीबाल में, के० रि० पु० बल 27वीं अ० भा० पु० खेल प्रतियोगिता 78 में उत्तर प्रदेश पुलिस के हाथों हार गया। हमने क्वार्टर फाइनल में मणिपुर पुलिस को हराया; किन्तु अर्द्ध फाइनल में, हम सी० सु० दल से पराजित हो गये यद्यपि इससे पूर्व खुले टूर्नामेंट में हमने सी० सु० दल को परास्त किया था।



प्रधानमन्त्री से भेंट करते हुये महानिरीक्षक श्री बी. वर्मा



बास्केट-बाल के फाइनल में के० रि० पु० बल सी० सु० दल से संघर्षशील

दंगल

कुश्ती-दंगल में, के० रि० पु० बल ने 27वीं अ० भा० पु० खेल प्रतियोगिता 78 में तृतीय स्थान पाया। उसके इन दो पहलवानों को स्वर्ण-पदक मिले-1. का० सन्त राज (52 किलो ग्रा०) व 2. स० इ० रघुवीर सिंह (82 कि० ग्रा०) और इन तीनों को रजत पदक मिले-1. ना० रामराज (82 कि० 2. इ० ओम प्रकाश (90 कि० ग्रा०) और इ० ईश्वर सिंह (100 कि० ग्रा०)।

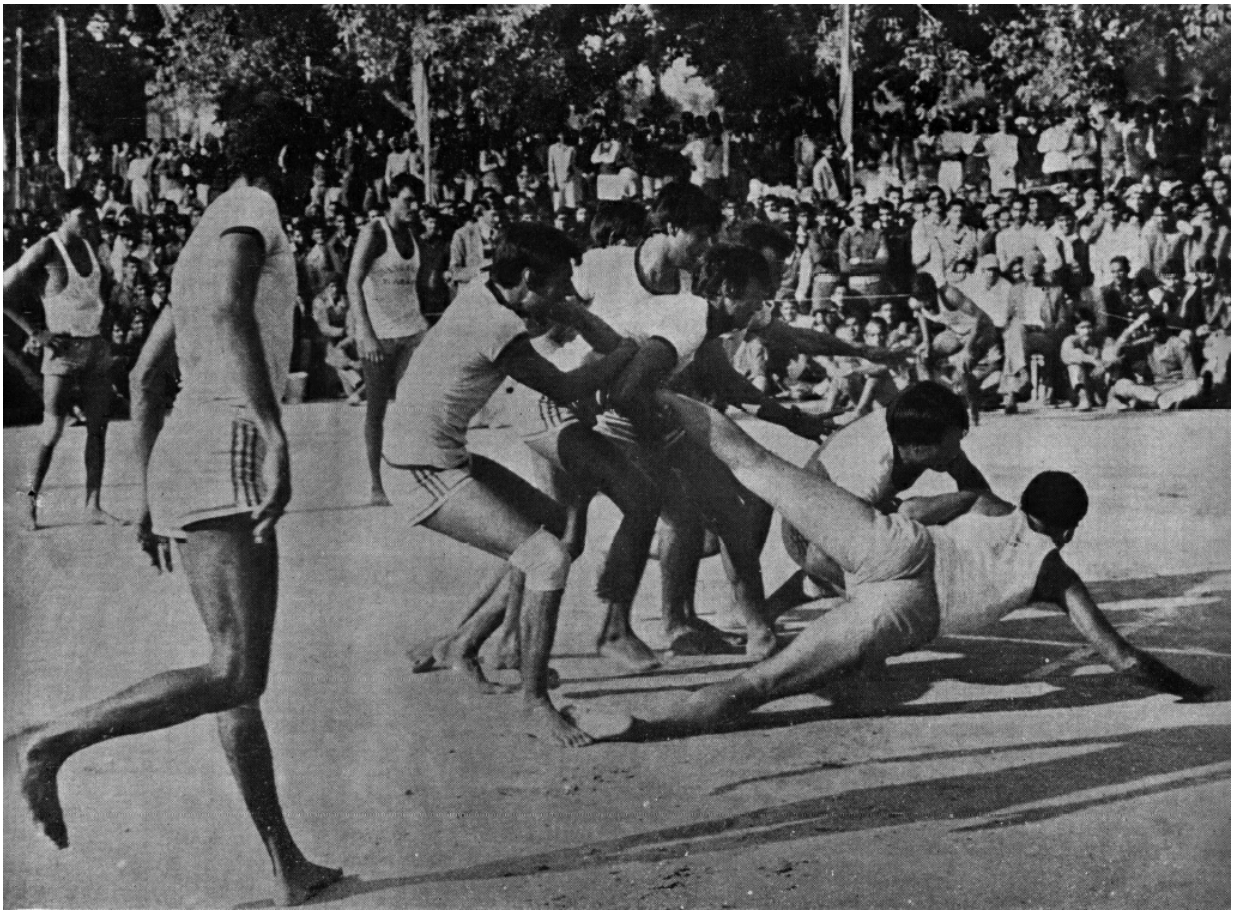
श्री सुखवन्त सिंह को कांस्य-पदक (100 कि० ग्रा०) से सन्तोष करना पड़ा।

गेटले हाकी कप चैम्पियन

पिछले वर्ष के उपविजेता उत्तर रेलवे ने शिवाजी स्टेडियम में के० रि० पु० बल को 8-7 से हरा कर गेटले कप के लिये इस वर्ष दिल्ली हाकी चम्पियनशिप जीत ली। इस खेल में अवरोधक-मंजन (टाई-ब्रेकर) का प्रयोग किया गया, क्योंकि नियमित समय में कोई भी टीम गोल नहीं कर सकी थी।

अजिण्ठा हाकी चैम्पियन

नीमच की के० रि० पु० टीम ने 29 अप्रेल 1978 को औरंगाबाद में जालंधर की ई. एम. आई. टीम को 3-0 से हरा कर अखिल भारतीय अजिंठा हाकी प्रतियोगिता जीती। तीनों गोल अतिरिक्त समय में किये।



पुलिस खेलों में कबड्डी के अन्तिम मैच में दिल्ली पुलिस से विजेता के० रि० पु० बल का संघर्ष

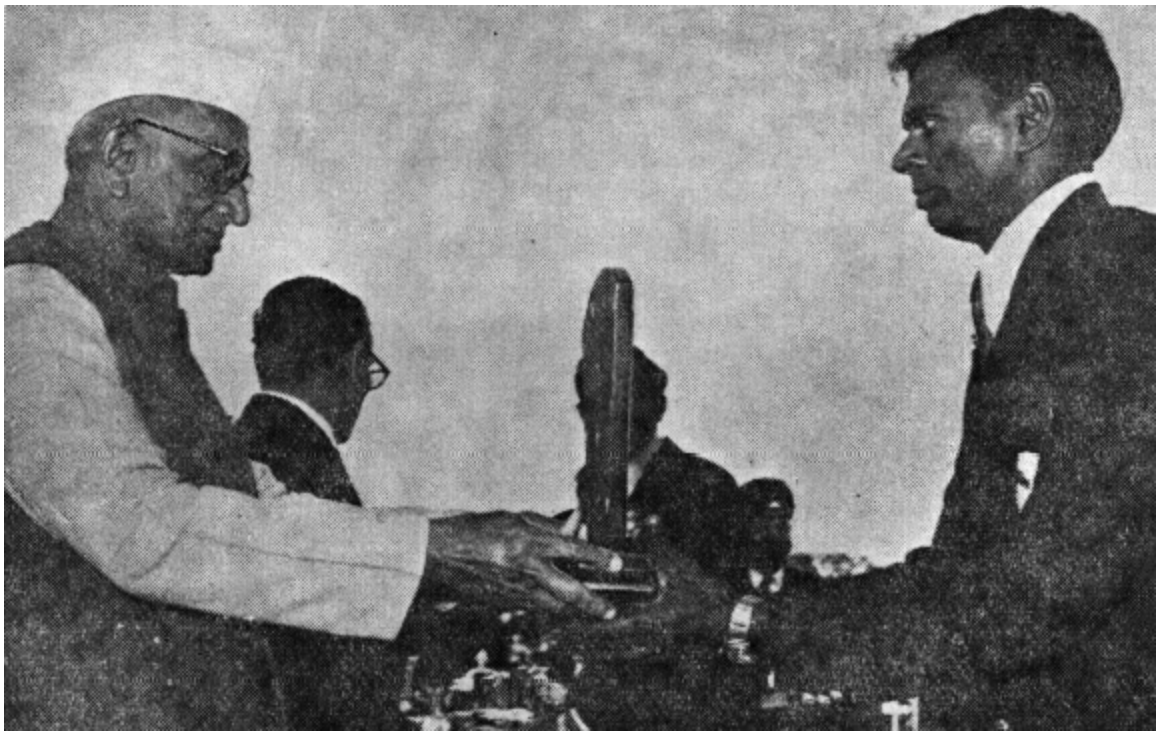
1978 के अ०भा० पुलिस खेलों में के०रि०पु० बल दूसरी बार चैम्पियन

कबड्डी में हमने 27वीं अ० भा० पु० खेल प्रतियोगिता 78 में अपनी चैम्पियनशिप

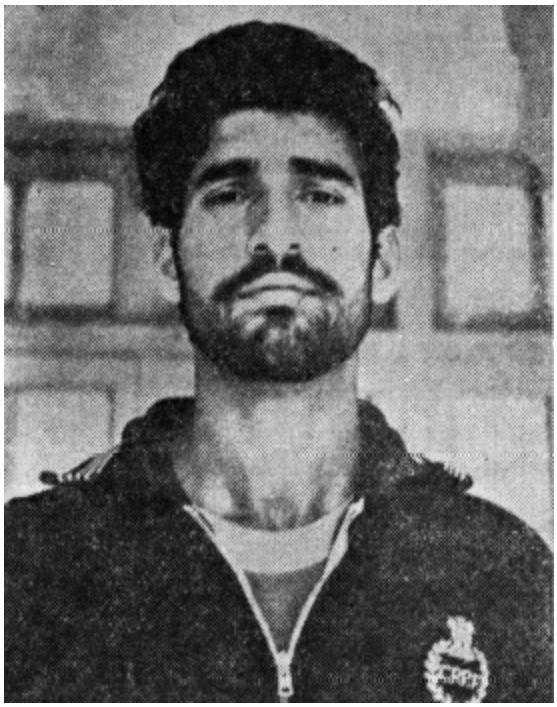
दूसरा वर्ष भी क़ायम रखा। हमने तामेलनाडु को 27-3 से और फाइनल में, दिल्ली पुलिस को 36-6 से हराया। प्रशंसनीय खिलाड़ी-1. स० इ० लालचन्द; 2. ना० यशपाल सिंह 3. ना. विजय सिंह व 4. ना० अमर सिंह।

हमारी कबड्डी टीम की धूम

के०रि०पु० बल की कबड्डी को टीम ने इन टूर्नामेंटों में भाग लिया और उनकी बड़ी धूम रही: 1. दिल्ली राज्य कबड्डी चैम्पियनशिप सिरमौर; 2. मुजफ्फर नगर में कबड्डी टूर्नामेंट-उपविजेता; तथा 3. दिल्ली में बिरला टूर्नामेंट-हार्डलाइन ट्राफी।



प्रधानमंत्री से कबड्डी चैम्पियन ट्राफी पाते हुए श्री बाबूराम (शिक्षक)



प्रभात सिंह

[रजिस्टर्ड नं० 25627/74]



घन फेंक कर नया कीर्तिमान स्थापित करता हुआ के. रि. पु. बल का रघुवीर सिंह

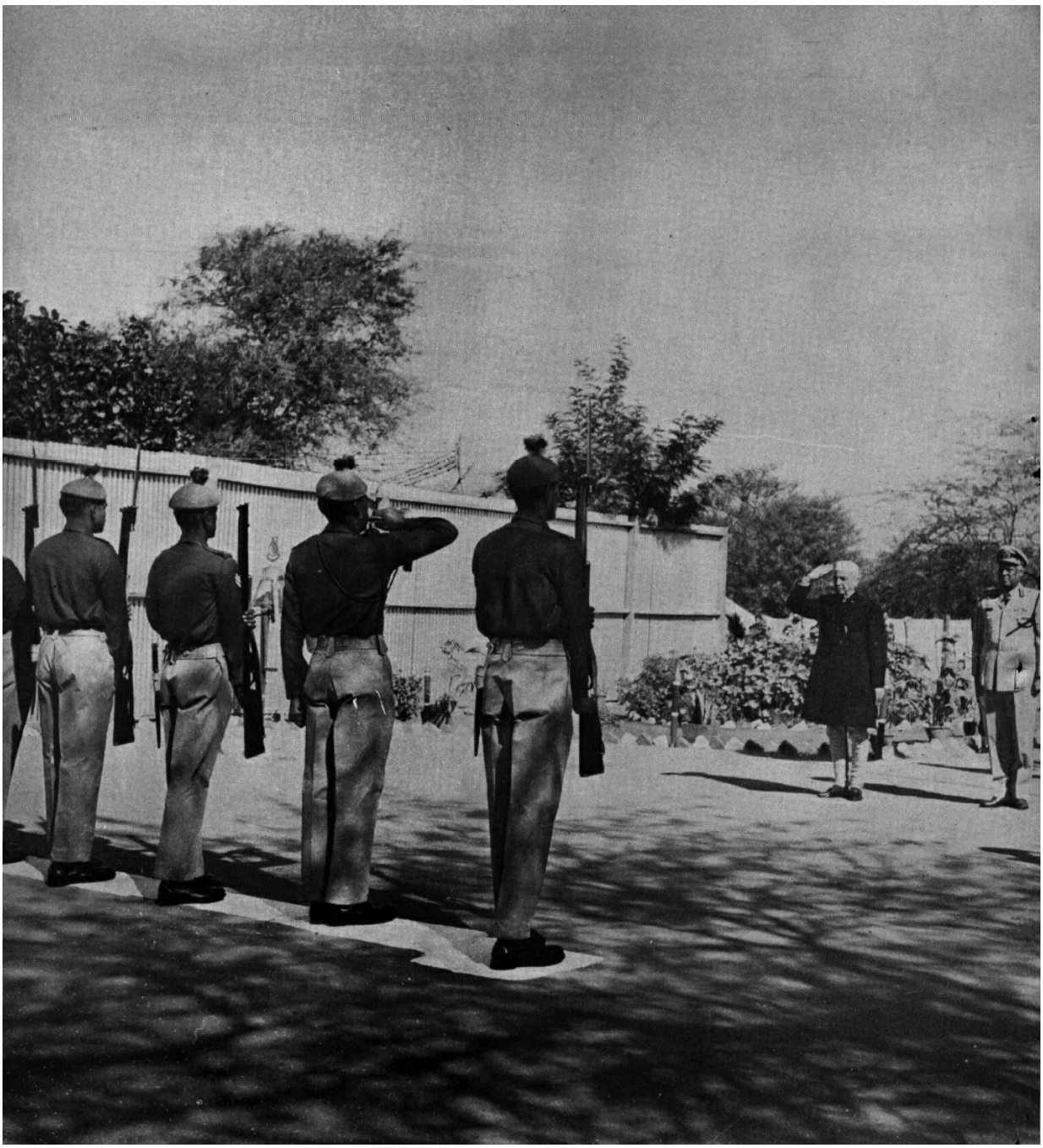
★ क्रैपलर ★

● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृतपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक–हिन्दी संस्करण]

31 जुलाई, 1978] खण्ड VII अंक 3 [9 श्रावण, 1900





रवीन्द्र रंगशाला, नई दिल्ली में 15 बटालियन के जवानों से सम्मान-गारद की सलामी लेते हुये केन्द्रीय गृहमंत्री श्री चरणसिंह



क्रै प ल र

[हिन्दी संस्करण द्वैमासिक]

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस का वृत्तपत्र

तथा

सचित्र पत्रिका

खण्ड VII
अंक 3

31 जुलाई, 1978
9 श्रावण, 1900

मुख्य सम्पादक :
एच० एस० सेठी

हिन्दी सम्पादक :
जे० एस० शर्मा

छाया चित्रकार : एस० के० खन्ना

मुख पृष्ठ पर :
केन्द्रीय विद्यालय, ग्रुप केन्द्र, दिल्ली की नन्हीं बालिकायें।

23 पृष्ठ पर :
स० इं० वी० पी० पिल्ले (अजमेर) को अन्तर्रेंज चैम्पियनशिप ट्राफी व दान करती हुयी श्रीमति अंजलि घोष।

सम्पादकीय कार्यालय :
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली - 110022 ।

मुद्रक — सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली - 110072 ।

प्रकासक —महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से एच० एस० सेठी।

1. रिपोर्ताज :

केन्द्रीय विद्यालय, ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

II. लेख :

1. शहरी राजद्रोह, ले०—श्री के० एम०. माथुर
2. नागालैंड में राजद्रोह, ले०—लेफ्टीनेंट जर्नल के० पी० कैंडेथ
3. किसी विदेशी पुलिस तंत्र का अन्धानुकरण अनुचित, ले०—श्री निगमेन्द्रसेन सक्सेना भू० पू० महानिदेशक के० रि० पु० बल
4. पुलिस-तंत्र की गड़बड़ियों का वर्णन, ले०—श्री के० के० कटियाल
5. मोटर वाहनों का सुरक्षित चालन, ले०—श्री एम० पी० नैथानियल
6. केरल और उसकी देवियाँ, ले०—हवलदार रमा शंकर पांडेय, 28 बटालियन

III. कविता : 'स्वार्थ', रचियता—कां० गोपाल द्विवेदी, 23 बटालियन

IV. गौरवगाथा : प्रशंसायें और प्रशंसात्मक कार्य

V. क्रीडा क्षेत्रे :

VI. विज्ञान के चढ़ते चरण :

VII. विविध :

(क) सेवा करे सो मेवा खाए

(ख) सूक्ति सुधा

(ग) यह भी खूब रही

(घ) पहेलियाँ—प्रस्तोता कां सुरेन्द्र नाथ मिश्र, 17 बटालियन

यह संस्करण 31-7-78 को प्रकाशित हुआ है यदि यह बटालियनों/ग्रुप केन्द्रों की रेल-सीमाओं पर दो सप्ताह के बाद पहुँचे, तब उपनिदेशक (संभरण) को पत्र-द्वारा सूचित करना चाहिये।

गौरव-गाथा

गृहराज्यमंत्री द्वारा प्रशंसा

लोकसभा में में न्याय तथा व्यवस्था पर वक्तव्य देते हुए, गृहराज्यमंत्री श्री धनिक लाल मंडल ने पिछली अप्रेल में हैदराबाद नगर में शांति स्थापित करने की हमारी भूमिका की सराहना की, जब उन्होंने कहा 'यदि केन्द्र केन्द्रीय रिजर्व पुलिस नहीं भेजता, तब आंध्रप्रदेश में स्थिति और बिगड़ी होती।'

अग्नि-शमन

• हमारे बड़वाहा शिविर से 10 की० मी० दूर स्थित जगतपुरा गाँव में, 11 मार्च 78 को, एक भयंकर आग लगी, क्योंकि वहाँ का एक मात्र दमकल 'ककातिया' नामक गाँव में लगी आग बुझाने गया था, इसलिये बड़वाहा के थानाध्यक्ष ने हमारे रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र I के प्रिंसीपल से सहायता की प्रार्थना की।

तुरन्त पानी के टैंक के साथ, स०इं० रामचन्द्र के अधीन 9 हे० कान्स्टेबलों, 13 नायकों और 1 कान्स्टेबल की टुकड़ी घटना स्थल पर जा पहुँची। दो घंटे की ज़बरदस्त ज़द्दोज़हद के बाद, आग काबू में आई । ककातिया गाँव में 80,000 रु० की हानि की तुलना में (जहाँ नगर का दमकल लगाया गया था), जगतपुरे में केवल 15,000 रु० की क्षति हुई। सभी स्थानीय लोगों ने के० रि० पु० बल के सहयोग की सराहना की। वहाँ के प्रसिद्ध अखबार "नई दुनिया"—समाचारपत्र में भी यह खबर प्रकाशित हुयी।

• फरवरी 26, 1978 को, दिल्ली उच्च न्यायालय में रद्दी क़ाग़ज़ भण्डार में सुलगती आग 23 बटालियन के जवानों ने देखते ही बुझा दी।

• मिस्र के दिल्ली स्थित राजदूत ने 17 मई 1978 को अपने भवन में बिजली से लगी आग को बुझाने के लिए 23 बटालियन के जवानों की बड़ी प्रशंसा की है।

• मई 3, 1978 को जम्मू-कश्मीर के शोपियन ग्राम में लगी आग को बुझाने के लिए 40 बटालिन के जवानों ने बड़ा नाम कमाया है।

• मई 14, 1978 को राजबाग के एक घर में लगी आग को बुझाने के लिए 36 बटालियन के जवानों ने बड़ी तत्परता दिखायी।

• मई 17, 1978 को जम्मू-कश्मीर के बीजबियारा में लगी आग को 40 बटालियन के जवानों ने बड़ी तत्परता से बुझाया।

• मई 16, 1978 को श्रीनगर में कयूम मंज़िल से भयंकर आग से 36 बटालियन के जवानों ने तुरन्त पहुँचकर एक बूढ़ी औरत और कुछ पशुओं के प्राण बचा लिये और टी. वी., कार, फ्रिज़ आदि मूल्यवान वस्तुओं को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया। लोक

निर्माण विभाग के मंत्री ने इनके कार्य को देखकर बड़ी सराहना की है।

चोरी की रोकथाम

• पिछली 2-3 मई की रात को, शास्त्री भवन की सातवीं मंजिल पर 716 कमरे का ताला किसी ने तोड़ा। गोदरेज अलमारी का ताला भी टूटा मिला और 1886 रु० रखे हुये रोकड़-बक्सा भी गायब था; किन्तु शास्त्री भवन में नियुक्त के० रि० पु० बल की कड़ी सुरक्षा और सावधानी के कारण, वह बक्सा भवन के बाहर नहीं जा सका। हमारे बल के इंस्पेक्टर ने स्थानीय पुलिस को सूचना दी; सारी जगहें खोजी गईं और आठवीं मंज़िल की जल-टंकी के नीचे वह बक्सा छिपा पाया गया। स्थानीय पुलिस ने एक आदमी को हिरासत में ले लिया।

इससे पूर्व भी, 21 अप्रेल 78 को एक सन के बोरे में धरा-ढका एक टाइपराइटर को लादे जाते हुये एक सतर्क प्रहरी ने भाँप लिया और चोरी से बचा लिया।

गुंडे से भिड़न्त

विगत 4-5 अप्रेल 78 की रात को, कई मामलों में स्थानीय पुलिस द्वारा अपेक्षित एक दुश्चरित्र गुंडे के घर पर पुलिस सहायक कमांडर हैदराबाद के साथ, हमारी 5 बटालियन की एक टुकड़ी ने छापा मारा।

संदिग्ध व्यक्ति ने पिछले द्वार से भागने का यत्न किया; किन्तु हमारे जवानों ने उसे रोक लिया। उस व्यक्ति ने कां० शिशुपाल सिंह पर आक्रमण किया और उसकी रायफल छीनने की चेष्टा की, जो सौभाग्य से, जंजीर से बंधी थी। कां० शिशुपाल सिंह ने अपने बचाव के लिये एक गोली चलाई, जिससे वह व्यक्ति घायल हआ और बाद में मर गया।



कां० बंसीलाल

स्थानीय सरकारी अधिकारियों और वहाँ के निवासियों ने कां० शिशुपाल सिंह के साहस, सतर्कता तथा कर्त्तव्य परायणता की बड़ी प्रशंसा की।

डूबतों की प्राण रक्षा

दिनांक 13 अप्रेल 78 को, बैसाखी के अवसर पर वजीराबाद पुल, दिल्ली के पास यमुना में पवित्र स्नान करने के लिये, एक भारी भीड़ इकत्रित हुयी। वहीं हमारी 21 बटालियन के जवान तैनात किये गये।

लगभग 8.30 पूर्वाह्न के समय, हमारे जवानों ने लोगों को सहायता के लिये पुकारते हुये सुना, क्योंकि नदी में पाँच आदमी डूब गये थे। हमारे जवानों ने डूबते आदमियों को मदद पहुँचायी और चार को बेसुध अवस्था में निकाल लाने में सफल हुये। उनमें दो तब तक प्राण गवाँ चुके थे।

इस कार्रवाई में कां० बंसीधर ने अत्युत्तम काम किया। जनता तथा स्थानीय अधिकारियों ने हमारे जवानों की बहुत सराहना की।

शहरी राजद्रोह

ले०–श्री के० एम० माथुर

प्रस्तावना—विश्व-इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि क्या शहरी और ग्रामीण क्षेत्र दोनों में राजद्रोह फूलता-फलता रहा है। दोनों बातावरणों पर अलग-अलग दृष्टि डालने से यह पता चलता है कि कम जनसंख्या, सरकारी ध्यान और समर्थन की बारम्बार कमी और छलछद्म के अपेक्षाकृत अभाव के कारण, छापामार युद्धों के लिये ग्रामीण क्षेत्र अधिक उपयुक्त रहता है; किन्तु हाल के राजद्रोहों के इतिहास से अब ऐसा मालूम पड़ता है कि जन-संचार की प्राप्ति, पढ़े-लिखे समाज, एक कड़ी राजनीतिक चेतना तथा नेतृत्व के आधार पर, शहरी क्षेत्र भी राजद्रोह के सिर उठाने में बड़ा हाथ बँटा सकता है। नागालैंड या मिज़ोरम के जंगलों की तुलना में कलकत्ता के ऊँचे-ऊँचे बहुमंजिले मकानों में, शहरी राजद्रोह भली-भाँति सुरक्षित है। अलज़ीरिया-युद्ध का फ्रांसीसी अनुभव, फाइडेल कैस्ट्रो का बटिस्टा सरकार के विरुद्ध शहरी छापामारी और उसमें सफलता, लातीनी अमरीका के नगरों में तुपमोरो की गतिविधियों की रफ्तार और उत्तरी आयरलैंड में शहरी छापामारों की कामयाबी—ये सब यही बताते हैं कि शहरी छापामारों के कृत्संकल्पी गिरोह छापामार युद्ध में अपने ग्रामीण छापामारों की भाँति ही योगदान दे सकते हैं । मिज़ोरम की राजधानी ऐज़ल के कार्यालय में (जहाँ सभी पुलिस अधिकारी बैठे थे) दिन दहाड़े बेधड़क घुसकर 5 छापामारों के एक गिरोह ने एक पुलिस महानिरीक्षक, एक पुलिस उपमहानिरीक्षक तथा एक ज़िला सुपरिटैंडैंट पुलिस का क़त्ल कर डाला। क्योंकि शहरी राजद्रोहों की अपनी विशेषतायें होती हैं और उनके ढंग भी ग्रामीण राजद्रोहों से भिन्न होते हैं, इसलिये नागालैंड और मणिपुर में पाये हुये अनुभव, कलकत्ता तथा बड़े राज्यों की राजधानियों के शहरी राजद्रोहों से निपटने के लिये काफी नहीं होंगे। इस लेख में, शहरी राजद्रोह के उद्देश्य, उनके विशिष्ट लक्षण, उनकी रणनीतियों तथा छलबल तथा शहरी राजद्रोह के विभिन्न चरणों के विषय में परिचर्चा करना है। अगले लेख में, शहरी राजद्रोह के दमन के उपायों का उल्लेख किया जायेगा।

शहरी छापामारी के उद्देश्य : शहरी छापामारी के इस सिद्धान्त का जनक ब्रेज़ीलियन साम्यवादी पार्टी का भूतपूर्व अधिकारी कार्लोस मैरीघेला था कि क्रान्ति, आतंकवाद के हिंसात्मक तथा विनाशकारी कृत्यों से, लाई जा सकती है। शहरी छापामार युद्ध की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है कि सरकार या संस्थापन को डराने धमकाने अथवा तथा नष्ट-भ्रष्ट करने के लिये यह एक छिपी सुयोजित कार्रवाई है। शहरी छापामारी के तीन उद्देश्य हैं :—

1. जनता को यह दिखाना कि पुलिस और सेना अधिकारी, शहरी आतंकवाद से उसको बचाने में अक्षम हैं और इस प्रकार सारे समाज की रक्षा करने में शक्तिहीन हैं।

2. घोर आतंकवादी कार्यों से पुलिस व सरकार को उन लोंगों के उन्मूलन के लिये ज़्यादतियाँ करने को उकसाना, जो क्रान्तिकारी लक्ष्यों के हामी हैं ; क्योंकि ज़्यादती करने के लिये उकसाने के बिना वे हिंसा पर उतारू नहीं होंगे।

3. इन दोनों उद्देश्यों द्वारा, स्थापित सरकार को अन्त में उखाड़ फेंकना।

[टेररिज़्म (आतंकवाद)—अमरीका के प्रतिनिधि सभा 93वीं कांग्रेस अगस्त 74 में

आन्तारेक सुरक्षा पर गाठेत सामोते द्वारा प्रस्तुत—एक कमेचारी अध्ययन (स्टाफ स्टैडी।]

स्पष्ट विशेषतायें :—जबकि ग्रामीण राजद्रोही साधारणतया अपनी गतिविधि खुल्लमखुल्ला करते हैं, शहरी राजद्रोही अधिकतर अपनी कार्रवाई लुक-छिप कर करते हैं। अपने विद्रोही आन्दोलन के समर्थन के लिये, शहरी राजद्रोह को बाहरी शक्तियों से सम्पर्क करने के अधिक अवसर मिलते हैं । शहरी राजद्रोही विदेशी ताकतों के ध्यान खींच सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उनसे मदद भी माँग सकते हैं । विदेशी समाचार प्रतिनिधि संसार का ध्यान भी आकृष्ट कर सकते हैं और राजद्रोह को मान्यता दिला सकते हैं। नगरों में धन और वस्तुओं की प्राप्ति भी सरलतापूर्वक हो जाती है। राज्य की राजधानियों से राजद्रोहियों को सरकारी गुप्त सूचनायें प्राप्त हो सकती हैं। कार्लोस मैरीघेला ने अपनी पुस्तक "मिनीमैन्युल आफ दी अरबन गुरिल्ला"—(शहरी छापामारी की लघु नियमावलि) में छापामारी की इन छै विशेषताओं का उल्लेख किया है :—

(1) शहरी छापामारी सरकार की घोर शत्र है और उन अधिकारियों तथा उन लोगों की छाँह सुनोयोजित ढंग से छीलती है, जो देश में छाये होते हैं और जिन पर शक्ति होती है । शहरी छापामारी का मुख्य काम होता है तानाशाही और उसके दमनकारी शक्ति को भटकाना, थकाना और हौसले पश्त करना।

(2) जनसाधारण की सच्ची माँगों को ही शहरी छापामारी समर्थन देती है। और इसी नैतिक वरीयता के कारण वह जीवित रहती है।

(3) शहरी छापामारों के हथियार शत्रों से छीने हुये हल्के किस्म के होते हैं, जिन्हें सरलता से अदला-बदला जा सकता है।

(4) शहरी छापामारों की कोई सेना नहीं होती ; वे भावना से जुड़े नन्हें-नन्हें सशस्त्र गिरोह होते हैं। उनके पास ना तो कोई निश्चित आधार-स्थल होते हैं और ना ही कोई गाड़ी।

(5) शहरी छापामार जनता में उसका मित्र बनकर रहना जानते हैं और वे इस बात से सजग रहते हैं कि कहीं वे साधारण नागरिक जीवन से अलग होकर अपरिचित तो नहीं बने जा रहे हैं।

(6) शहरी छापामार की तकनीकी तैयारी उनकी शारीरिक स्फूति तथा सभी प्रकार की कुशलता तथा धन्धों की और मुख्यकर दस्तकारियों की शिक्षा से प्राप्त होती है। उसके लिये यह ज़रूरी है कि वह मोटर वाहन चलाना, विमान चलाना, मोटर नौका चलाना, दस्तकारी, रेडियो, टेलिफोन बिजली को समझना जानता हो, इलेक्ट्रानिक तकनीकी की जानकारी रखता हो। रसायन शास्त्र, रंगों के मिलाने, डाकटिकटों, सुन्दर हस्तलिपि तथा अक्षरों की हेरफेर एवं अन्य चालाकियों में शहरी छापामार को तैयार होना चाहिये, जिससे काग़ज़ात में हेराफेरी से उस समाज में जाली सिद्ध कर सके, जिसे वह नष्ट करना चाहता है।

अपने पड़ोसियों के सामाजिक खतरों से डरा, शहरी छापामार अपने ग्रामीण भाई की तुलना में छलबल पर अधिक भरोसा करता है। वह अच्छा पढ़ा-लिखा भी होता है और आर्थिक स्थिति में भी अच्छा होता है। शहरी छापामार की पहचान उसकी बीरता तथा निर्णयात्मक स्वभाव से होती है; पुरुषत्व का भाईचारा और क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने की इच्छा उसे उत्प्रेरित करती रहती है (मार्टिन ऑप्पेनहीमर —अरबन गुरिल्ला (शहरी छपामार-1970)।

शहरी राजद्रोह के चरण : आतंकवाद तोड़-फोड़ और छापामारी तक में शुरू-शुरू में कुछ थोड़े बहुत लोगों के सक्रिय समर्थन तथा भाग लेने की ज़रूरत होती है और तैयारी करने के चरण में, इन्हें धमकाने और बारम्बार समझाने से काम प्रायः हो जाता है (फ्रैंक किटसन लो—इन्टेंसिटी आपेरेशन्स (घनी कार्रवाइयाँ) फैबर एण्ड फैबर लंदन, 1971)। साधारण तौर पर, शहरी राज द्रोह निम्नलिखित तीन चरणों में विकसित होता है—

चरण I—छापामारी सहायक आधार की संस्थापना तथा संरचना : लेकिन ने इस बात पर बल दिया है कि 'क्रान्ति का मौलिक नियम यह है कि वर्गभेद को जानने वाले, राजनीतिक सक्रिय कार्यकत्ताओं की बड़ी संख्या यह मानने लगे कि क्रान्ति ज़रूरी है और वह उस पर मरमिटने को तैयार होनी चाहिए।' जबतक लोकप्रिय सामूहिक समर्थन और जनता का पृष्ठपोषण नहीं मिले, तब तक शहरी राजद्रोह 'कुछ, हठीले मतफिरों की ताक़त पर नहीं चल सकता।' पहला क़दम यह होना चाहिए कि अनेकों लोग, मौजूदा सरकारी संस्थानों के विरुद्ध आवाज़ उठायें और जन साधारण में असंतोष की लहर दौड़े। इस असंतोष से उन उच्च प्रबुद्ध शहरी युवकों की इकाइयाँ बन सकती हैं, जो आतंकवादियों तथा राजनीतिक छिपे छोटे संगठनों का निर्माण कर सकते हैं। क्रान्तिकारिणी कारवाईयों को चलाने तथा अधिकाधिक हमदर्दी, सूचकों और रंगरूटों को पाने के लिए, इन छिपी इकाइयों को जनता ही में से प्रबुद्ध नेता मिल जायेंगे। तब छापामारी के आधार धीरे-धीरे बनने लगेंगे और अधोलिखित ढंगों से काम करना शुरू कर देंगे—

1. क्षेत्र की जनता पर नियंत्रण पाने और रखने के लिए, चुने हुए सम्वर्गों और प्रबुद्ध नेताओं द्वारा चुनींदा आतंकवाद का चलाना।

2. क्रान्तिकारिणी गतिविधियों के लिए, लुक छिप कर गोला बारूद हथियार और अपने दल का साहित्य निर्माण करना।

3. डाक्टरों, शिक्षाविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और अन्य महत्वशाली गण-मान्यों को इन इकाइयों में सम्वेदक, सूचक व ऐजेण्टों के रूप में भर्ती करना।

4. विदेशी एजेंटों से, "अनुदान" रूप से या राहजनी, डकैती द्वारा धन एकत्र करना।

5. सेना, पुलिस तथा नागरिक प्रशासनों में छापामारों की घूस पैंठ कराना।

6. आर्थिक जीवन छिन्न-भिन्न करने के लिए, हड़ताल, तालेबन्दियाँ, घेरावों या

प्रचण्ड प्रदर्शनों का आयोजन करना।

7. शहरी छापामारों से सहानुभूति तथा समर्थन रखने वाली घनी बस्तियों के सुरक्षित मुहल्लों में छापामारी के समर्थक आधार तैयार करन।

8. माओ ने इस स्थिति को "राजनीतिक रक्षा" पुकारा है—यह तैयारी की वह स्थिति है, जिसमें सहिष्णु समाज में छापामारों की घुस पैंठ की जाती है और जनता में लुकी छिपी गतिविधियाँ होती हैं । छोटे क्षेत्रों से चलकर बड़े क्षेत्रों पर धीरे धीरे "प्रतिरोधी आधारों' को यह राजद्रोह बनता जाता है।

चरण II—समर्थक आधार की सक्रियता तथा विभिन्न कार्रवाइयाँ : इस दूसरे चरण में, जनता में गतिशीलता का विस्तार करना और जिन क्षेत्रों में गतिशीलता आ गई है, उनसे उसको ठोस बनाना। शहरी राजद्रोही अपने काम दूर दराज़ के स्थानों पर शुरू करते हैं और उनकी सफलता सरकारी दलों को थका कर, चकना चूर करने तथा उन से लड़ने की अपनी क्षमता पर निर्भर करती है। माओ ने इसे "राजनीतिक गड़बड़" की संज्ञा दी है, जब कि सरकारी नियंत्रण कुछ क्षेंत्रों में होता है, दूसरे क्षेंत्रों में राजद्रोही अपना प्रभुत्व जमाने लगते हैं। सरकारी अधिकारियों और मुख्यकर कानून पालन कराने वाले दलों को दिक़, हानि, कुख्यात' या उनकी कारग़री कम करने के लिए कुछ ये रणनीतियाँ राजद्रोही अपनाते हैं—पुलिसथानों पर बम बरसाना, पुलिस गाड़ियों पर बमबाज़ी करना, जानबूझ कर गोली से धावा, घात लगाना, सरकारी भंडारों से हथियार चुराना, सरकारी अधिकारियों को परेशान करना तथा किन्हीं को तो मारने की धमकी देना । शहरी छापामारी तेज होने पर सरकार व पुलिस का मनोबल क्षीण होता है। "इस प्रकार के संघर्षों के चलने की बहुत सम्भावना है, क्योंकि आधुनिक युग की स्थितियों में इसी प्रकार का युद्ध उपयुक्त रहता है, जबकि सामाजिक असंतोष व जोश और राष्ट्रीय आवेगों का लाभ भी यह उठाता है।' (बी० एच० लिडेल हार्ट— (माआत्सेतांग और गुवेरा के प्रति प्रस्तावना) छापामार युद्ध) फोर वर्ड टु माआत्सेतांग एवं दी गुवेरा--गुरेल्ला वारफेयर कैसल 1962) क्योंकि छापामार युद्ध एक दीर्घकालीन संग्राम होता है, यह स्थिति बहुत समय तक चलती रहती है।

चरण III—प्रतिसमाक्रमण—सारे राज्य पर अपना नियंत्रण करके स्थापित सरकार का तखता उलटना शहरी राजद्रोह का अन्तिम चरण होता है। प्रति समाक्रमण का ध्येय, सरकारी दलों का सर्वनाश करना और राज्यद्रोहियों द्वारा राष्ट्रीय सत्ता हथियाना होता है। ग्रामीण छापामारों के सहयोग से, शहरी राजद्रोह सत्तारूढ़ होना चाहते हैं। श्रमजीवी और कृषक संधि से व लोगों के तालमेल से ही, राजद्रोह में किसी शक्तिशाली शत्रु पर विजय प्राप्त की जा सकती है। इस सफलता के लिए, छापामार युद्ध में शहरी और ग्रामीण अंगों में बहुत ही घने सहयोग की ज़रूरत है तथा जनता का लोकप्रिय समर्थन अपरिहार्य है। शत्रु के मनोबल क्षीण करने और प्रभाव कम करने के लिए अन्त में सफलता पाने के निमित्त राजद्रोहियों को संग्राम के इन सभी सिद्धान्तों को अपनाना पड़ता है—आक्रमण, सरलता, कमान में एकता, बल में

बचत, पैंतरे बाज़ी; आश्रय तथा सुरक्षा; किन्तु इन्हें आनियमित रूप से लगाना पड़ता है। कार्लोस मौरीघेला इस विचार से सहमत है कि अविकसित देशों में राजद्रोह की असली ताकत ग्रामीण छापामारी है, यद्यपि सबल शहरी राजद्रोह उस आन्दोलन में महान योगदान दे सकता है।

शहरी राजद्रोह के छलबल तथा रणनीति : कार्लोस मौरीधेला के मतानुसार शहरी छापामारी की रणनीति में ये तीन विशेषतायें हैं—

(क) इसमें अग्राकामी तकनीक या दूसरे शब्दों में आक्रमण विशेषता है।

(ख) आक्रमण और लौटने की यह वह तकनीक है, जिससे हम अपने दल सुरक्षित रखते हैं।

(ग) यह वह ढंग है, जिसका लक्ष्य छापामार युद्ध को विकसित करना है, जिसका काम शत्रु दलों को थकाना, भटकाना और हौसले पश्त करना है तथा उन ग्रामीण छापामारों को उठाना और सक्रिय रखना है, जो क्रान्तिकारी युद्ध में निर्णायक भूमिका अदा करते हैं।

कार्लोस मौरी घेला ने शहरी छापामारी कार्रवाइयों को तीन शीर्षकों में विभक्त किया है—

(क) सामूहिक कार्रवाइयाँ—सरकार को नष्ट करने के लिए, इनका ध्येय ठोस हानि तथा मनोबल का ह्रास करना है। इसको पाने के लिए—

1. औद्योगिक तथा शिक्षा संस्थानों में ताले बन्दियों और हड़तालों को प्रेरित करना;

2. सार्वजनिक प्रदर्शनों में जनता तथा क़ानून प्रवर्त्तन दलों के बीच संघर्ष और हिंसा को बढ़ावा देना;

3. तोड़फोड़ और आगजनी के गिरोहों का हड़तालों में शामिल होकर अपनी कार्रवाइयों का जनता की गतिविधि से ऐसा तालमेल बिठाना कि सब को यह अनुमान हो कि तोड़फोड़ जन आन्दोलन चाहते हैं; तथा

4. भंडारों को तहस-नहस, बसों का जलाना, बम फेंकना और लोक ज़रूरी वस्तुओं का नाश जैसे हिंसात्मक कार्यों के लिए प्रदर्शनकारियों को उत्प्रेरित करना।

लड़ाकू कार्रवाइयाँ : इनको प्रशिक्षित छापामार गिरोह करते हैं और इनमें चकमा और सदमा देने की प्रणाली काम में लाई जाती है। इनके काम के ढंग कुछ इस प्रकार शहर में होते हैं—(1) आक्रमण (2) धावे तथा घुसपैंठ करना (3) अधिकार में करना (4) घात (5) मार्गीय रणनीति (6) हड़ताल और काम रोको (7) भगोड़े बनना, भटकाना, पकड़ना, हथियार गोलाबारूद या विस्फोटकों को छीन कर अधिग्रहण करना (8) बंदियों को छुड़ाना (9) हत्या (10) अपहरण (11) तोड़फोड़ (12) आतंकवाद (13) सशस्त्र प्रचार (14) वायुयानों का अपहरण (15) नसों पर तनाव करना।

शहरी छापामार अत्यन्त वीरता से एक साथ पाँच, छै या सात या दस और उससे

अधिक के गिरोह में अपना काम करते हैं। शहरी छापामारों के लक्ष्य उनका नाश करने के होते हैं—उद्योग-प्रतिष्ठान, सरकारी दफ्तर, पुलिस थाने, रेडियो स्टेशन, पावर घर, बैंक, शिक्षा संस्थान।

आतंकवादी कार्यवाइयाँ : एफ. बी. आई. बुलेटिन (जुलाई 1973) के अनुसार, शहरी छापामारी युद्ध, क्रान्तिकारी उद्देश्यों के लिए हिंसात्मक अपराधिक कार्यवाई है। छापामारी, क्रान्ति के लिये की जाती है। "शहरी छापामार क्रान्ति के लिए रणनीति को काम में लाता है; किन्तु कभी-कभार वह अंधाधुंध आतंकवाद को छलबल के रूप में ग्रहण कर सकता, क्या करता भी है। बम को साधारणतया काम में लाया जाता है, क्योंकि असंदिग्ध बम फटने पर नागरिकों में खूब डर बिठाता है। बम फेंकना, वायुयानों का अपहरण, तोड़फोड़ और पुलिस पर आक्रमण—ये कुछ कार्रवाइयाँ शहरी छापामार साधारणतया काम में लाते हैं। उक्त बलीकृत व्यक्तियों को अपने घोषणा-पत्र में जनविरोधी करार देकर, अपहरण व हत्यायें सरकारी दलों के हौंसले पश्त करने के लिए की जाती हैं।

आतंवादिलों के लक्ष्य में कार्लोस मौरीघेली कहता है "दमन को प्रेरित करना उनका लक्ष्य होता है, जिससे दमन के बिना सरकार राज्य ही नहीं कर सके; सड़कों पर हिंसा, कर्फ्यू, पकड़-धकड़ से पत्रकारों और गवाहों को डरा धमका कर उदार क़ानूनों को चलना ही कठिन करते हैं, जिससे गवाह साक्ष्य नहीं दे सके और जूरी (राज्यपंच) दण्ड नहीं दे सकें। फलस्वरूप, अनुदार क़ानून चालू किये जाते हैं ; जैसे जूरी से मुकदमों का निलंबन और पूछताछ के लिए गवाह को उपस्थित हुये बिना लिखित गवाही को स्वीकार करना। इसका परिणाम होता है अन्याय में, अभियुक्त से सम्वेदना में और इस भाँति क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रति समर्थन में। अपनी पुस्तक "लिविंग विद टेररिज्म" (आतंकवाद के साथ जीवन) में, रिचर्ड क्लट्टरबुक ने इसे "दमन चक्र" की संज्ञा दी है। वायुयानों के अपहरण की मिसाल, आतंकवाद में सबसे नई है। 1962 से 1972 तक 80 विमान प्रतिवर्ष औसतन अपहृत हुये हैं।

मनोवैज्ञानिक कार्यवाहियाँ : दो प्रकार की मनोवैज्ञानिक कार्रवाइयाँ हैं—

स्नायु युद्ध—विस्फोटों, वायुयान अपहरण, बन्दियों को छुड़ाना, पत्र बम्ब भेजनी सुरक्षादलों के विरुद्ध शहरी राजद्रोहियों का निरन्तर सफलताओं की झूठी ख़बरें, अपने सुगठित प्रचार से इसलिए फैलायी जाती हैं जिससे सरकार निरस्त समझी जा कर बदनाम हो; उसमें मनोबल घटे, समाज में आतंक और गड़बड़ फैले।

(ख) राजनीतिक प्रचार : शहरी राजद्रोही देशीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समाचार पत्रों के द्वारा, मनोवैज्ञानिक कार्रवाईयाँ कराते हैं। मस्तिष्क को धोना और दूरदर्शन—ये शहरी छापामारों के मनोवैज्ञानिक युद्ध के रूप हैं। 1972 में म्यूनिख़ ओलिम्पिक खेलों में फिलिस्तीनी छापामारों द्वारा खेला गया रोमांचकारी नाटक अरब दूरदर्शन देखने वालों से देख़ा गया और विश्व समाचार पत्रों ने इसकी ख़बरें खूब छापीं। गुप्त रेडियो स्टेशन भी शहरी छापामारों के राजनीतिक प्रचार के लिए महत्वपूर्ण साधन हैं। गुप्त छापेख़ाने दलगत साहित्य तथा दीवारी इश्तहारों को निकालने के लिए प्रचार के एक

और साधन है। राजनैतिक प्रोपैगैंडे द्वारा जनता से छापामारों के समथन या कम से कम सरकार से असहयोग करने का आग्रह किया जाता है।

उपसंहार : भू० पू० एफ० बी० आई० के निदेशक के शब्दों में-"शहरी छापामारी केवल क़ानून पालन कराने वाले संगठन को ही नहीं (जिसे तो कटु और शैतानी हिंसा से जूझना पड़ता ही है), बल्कि सारे राष्ट्र को भी एक स्पष्ट तथा प्रस्तुत खतरा है।" शिक्षित बेरोजगारों का ज़ख़ीरा, धनी तथा निर्धनों के बीच धन संग्रह, वितरण की खाई और औद्योगिक श्रमिकों के निम्न जीवन स्तर की स्थितियाँ, गन्दी बस्तियों में धनी जनसंख्या, तथा दूषित शिक्षा प्रणाली को रखने वाले औद्योगिक नगर तथा शहरी कम्पलेक्सेज, आज राजद्रोह तथा अशान्ति के प्रसूतिगृह बन रहे हैं। उन राजनीतिक उग्रपंथियों तथा क्रांतिकारियों द्वारा (जिनके सिद्धान्त सत्तारूढ़ सरकार से भिन्न होते हैं) इन तत्वों का शोषण होता रहता है। "आर्थिक दबाव तथा प्रोपैगैंडे से गलहियाँ डालकर शहरी राजद्रोह भविष्य में सबसे अधिक लोकप्रिय कार्रवाई शायद मानी जायेगी।" (पीटर डिला विलीएर-चेन्जिंग पैटर्न आफ गुरिल्ला वार फेयर 'छापामारी युद्ध के बदलते ढंग)।'

क्योंकि यह आज की ज्वलन्त समस्या है, इसलिए सभी पुलिस तथा सैनिक अफसरों तथा अन्य नागरिक अधिकारियों को (जिन्हें इसको नियंत्रित करने के लिए उपाय करने हैं) इस विषय का व्यापक अध्ययन करना चाहिए। एक नई पहुँच, एक सही दृष्टिकोण तथा सैनिक और नागरिक अधिकारियों के बीच उत्तम तालमेल पर ही, इस समस्या को सुलझाने की सफलता निर्भर करती है।

<u>कविता :</u>

स्वार्थ

[रचयिता—कां गोपाल द्विवेदी, 23 बटा०]

नाते हैं, रिश्ते हैं, अपने व पराये हैं/
दुनिया के बन्धन, निज, हित से अपनाये हैं/
सब कुछ इस जग में बस, अपना झमेला /
जीवन के पथ पर, पर राही अकेला है/
जग में सब मतलब है, मतलब भी अपना है/
माली का उपवन में, स्वार्थ भरा सपना है/
सतरंगी तृष्णा का, जग एक मेला है/
जीवन के पथ पर, पर, राही अकेला है/

धरती के प्रांगण में, मृग जल का सोता है।
इस ही के कारण सिर, धुन हरजन रोता है।
निहित स्वार्थ जगती में, पौधा विषैला है।
जीवन के पथ पर, पर, राही अकेला है।
स्वार्थ दान करने में, है पुण्य कमाने का।
जप-तप सोपान बना, सुर पुर को जाने का ।
स्वार्थ सभी विद्या का—गुरु है, न चेला है।
जीवन के पथ पर, पर, राही अकेला है।

सूक्ति सुधा

सम्मानित पुरुष को अपकीर्ति मृत्यु से भी बुरी है।

—गीता

विना मन लगाये, कोई व्यक्ति किसी काम को ठीक प्रकार से नहीं कर सकता।

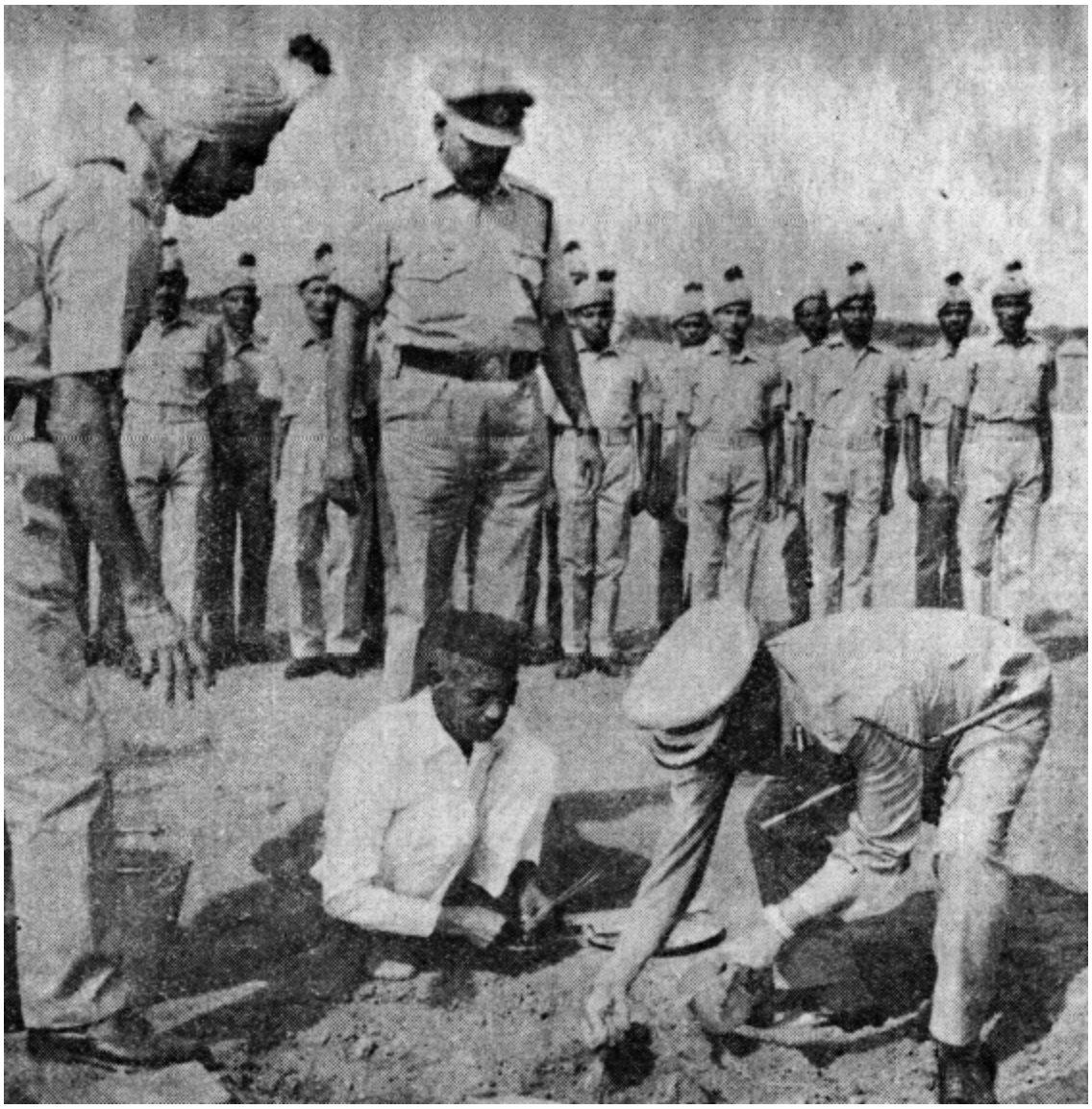
—शतपथ ब्राह्मण

देवता उसी की सहायता करते हैं, जो परिश्रम करता है।

—ऋग्वेद

आगरे में शान्ति स्थापना के लिये के० रि० पुलिस की प्रशंसा

आगरे के निकट नौबस्ता और जगदीशपुर में शान्ति स्थापना के लिये अपनी पूरी-पूरी जिम्मेदारी निभाने के हेतु 55 बटालियन के कमांडैंट तथा अन्य अधिकारियों की प्रशंसा स्थानीय गणमान्यों ने की है।



आवडी में शाकोद्यान का उद्घाटन करते हुये श्री एच. वीर भद्रैया

सेवा करे सो मेवा खाये

आवडी में शाकोद्यान

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस दल के घूमन्तु प्रकार के जीवन में, फल-सब्जियों को 'बाबा के मोल' खरीदने से भारी धनहानि देखते हुए, श्री एच० वीर भद्रैया, महानिरीक्षक से० I ने आवडी में 35 बटालियन के पहले दौर में एक शाकोद्यान लगाने का सुझाव दिया। क्वार्टरगारद के सामने आधी एकड़ भूमि तुरन्त साफ़ की गई। अनुभवी जवानों ने खुशी-खुशी सहयोग दिया। मुफ्त में ही खाद, पौध आदि इकट्ठी हो गई। जनवरी 77 में, यूनिट कल्याण तथा सुविधा निधि से 500 रु० उधार लेकर वह उद्यान प्रारम्भ किया गया। मार्च 77 तक, हरियाली ही हरियाली हो गई। आम और अमरूद के पेड़ खूब

फले-फूले । आठ बोरी आम और तीन बोरी अमरूद उतरे। सभी जवानों और अफसरों को वे मुफ्त बाँट दिए गये; साथ में, तमिलनाडु पुलिस को भी एक बोरी आम प्रेमोपहार-स्वरूप भेंट किए गए।

गौहाटी फार्म

पिछले वर्ष, ग्रुप केन्द्र गौहाटी की अप्रयुक्त भूमि को तैयार किया गया और उसमें एक ओर भाँति-भाँति की सब्जियाँ व दूसरी ओर सरसों बोई गयी। इसका उद्घाटन श्री पी० सी० दास, महानिरीक्षक सेक्टर IV ने 17 नवम्बर 1977 को किया।

सब्जियों की बड़ी फसल हुयी। उनके दाम बाज़ार मूल्यों से कम रखे गये और उन्हें ग्रुप केन्द्र गौहाटी के विविध मेसों और परिवारों को बेचा गया। सरसों को कोल्हू (क्रशर) से पेल कर तेल कम कीमत पर बेचा जायेगा।

इस वर्ष, इनसे 5000 रु० प्राप्त हुये । ऐसी आशा है कि अगले वर्षों में और भी अधिक अच्छी फसल होगी।

घायलों को बचाना

मई 10, 1978 को ग्रुप केन्द्र मुकामेघाट के पास एक यात्री बस उलट गयी ; तथा 47 बटालियन के जवानों ने घायल यात्रियों को तुरन्त जा बचाया।

निरीक्षण के दिन

महानिदेशक महोदय ने ऐसे निदेश दिये हैं कि ज़रूरी कारणों को छोड़ कर, साधारणतया राजपत्रित छुट्टी के दिनों में अधीन यूनिटों (इकाइयों) का निरीक्षण नहीं होना चाहिये।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

नागालैंड में राजद्रोह

ले०–ले. जर्नल के. पी. कैंडेथ (रिटा०)

नागालैंड में राजद्रोह फैलाने वाली घटनाओं को तथा आजकल उसके विराम के कारणों को समझने के लिए, पृष्ठभूमि को जानना ज़रूरी है। 1840 में, असम में चाय पाई गई, और नीफा (जो अब अरुणाचल और नागालैंड है) के चाय बागानों पर आदिवासियों को छापे मारने से तथा श्रमिकों को दिक़ करने से रोकने के लिए,

अंग्रेजों ने "अन्दुरूनी रेखा नीति" चलाई, जिससे आदिवासियों को मैदान में आने और दूसरों को जनजाति क्षेत्र में जाने से रोक दिया। इससे भारत के जन-जीवन से जनजातियाँ बिल्कुल अलग थलग हो गयीं।

ब्रिटिश शासन-काल में, इस क्षेत्र का विकास मिशनरियों पर छोड़ दिया, जिन्होंने शिक्षा तथा चिकित्सा के क्षेत्रों में तो बहुमूल्य काम किया; किन्तु आदिवासियों और शेष भारत के बीच लक्ष्मण-रेखा खींच दी और सो ही, उनमें और अन्य भारतियों के बीच में सन्देह का बीज बो दिया। वे ऐसा सोचने लगे कि उनका हित सुरक्षित नहीं है और भारत में विलय होने पर, उनका अपना कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। जब स्वतन्त्रता कुछ ही दिनों की बात थी, गवर्नर क्लोव तो भारत में नागालैंड के विलय के पक्ष में था; परन्तु अफसरशाही दरार डालना चाहती थी और नागालैंड को भारत से अलग करना चाहती थी तथा उसे एक ईसाई राज्य के रूप में अलग राज्य बनाना चाहती थी, जो इंगलैंड और पश्चिम के प्रति वफ़ादार रहे। इससे साम्यवाद के रोकने की भी वह आशा करती थी और संसार के इस हिस्से में उसे एक मज़बूत आधार मिलता दीखता था। यद्यपि वह नागालैंड को अलग नहीं कर सकी, किन्तु नागाओं में सन्देह तथा अलगपने की भावना कूट कूट कर भर दी।

नागाओं ने यह सोचा कि वे कभी भारत के अंग नहीं थे तथा उन्हें अंग्रेजों ने जीता था और इसलिए भारत से उनके चले जाने के बाद, वे स्वतन्त्र हो गये। सन् 1928 में, यहीं तर्क उन्होंने साइमन कमीशन के सामने रखा था। 1935 के अधिनियम में यह जनजातीय क्षेत्र दो भागों में बँट गया—अलग क्षेत्र तथा अंशतः अलग क्षेत्र। नागालैन्ड और मिज़ोरम इस दूसरे वर्ग में आये। वे असम के अंग बन गये; किन्तु गवर्नर को इनके प्रति विशेष जिम्मेदारियाँ सौंपी गई। इस अधिनियम से, नीफा से त्वेनसांग ले लिया गया और नागालैंड से मिला दिया गया, जो अब नागाहिल्स और त्वेनसांग क्षेत्र (नहाटा) पुकारा गया।

सन् 1946 में, जब स्वाधीनता संनिकट थी, तब नागा लोग भारतीय नेताओं से मिले तथा तत्कालीन गवर्नर अकबर हैदरी ने उनसे एक नौसूत्रीय समझौता किया। इस समझौते से, कृषि, परम्परागत क़ानूनों, वनों आदि के क्षेत्रों में विद्रोहियों के हितों के चिन्ता भी की गई; किन्तु उसमें एक शर्त सब आगामी झगड़ों की जड़ थी। प्रस्तावना में तो नागाओं को अपने खुली इच्छानुसार विकसित होने का अधिकार मिल गया; परन्तु 9 अनुच्छेद ने यह नियत किया कि इस समझौते की अवधि 10 वर्ष होगी और इस अवधि की समाप्ति पर, नागा राष्ट्रीय परिषद से यह पूछा जायेगा कि क्या वे इस समझौते को और अधिक समय के लिये बढ़ाना चाहेगी या नागा लोगों के भविष्य में कोई नया समझौता करेगी?

नागाओं ने ये अर्थ लगाये कि 10 वर्ष के बाद, वे भारत संघ से अलग होने के भी अधिकारी होंगे। भारत सरकार इस व्याख्या को मानने को तैयार नहीं थी और जब नागाओं को इस बात का पता लगा, तो उन्हें ऐसा लगा कि वे ठगे गये।

1951 में, फीज़ों ने जनमत संग्रह किया और यह दावा किया कि 99 प्रतिशत नागा

स्वाधीनता चाहते हैं। पांडेत नेहरू ने इसे मानने से इन्कार कर दिया। साथ ही, जब पं० नेहरू और बर्मा के प्रधानमन्त्री यूनू कोहिमा गये, तब सब उपस्थित श्रोता लोग बाहर चले गये, क्योंकि स्वाधीनता का माँगपत्र देने से फीज़ों को डिप्टी कलक्टर ने रोक दिया। इससे नागाओं में बेचैनी फैल गई।

अब घटना-चक्र जल्दी जल्दी चला । 1952 में, असम पुलिस शान्ति-व्यवस्था के लिए भेजी गई। फीज़ों ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चला कर बदला लिया और कर देने बन्द करा दिये । द्वितीय विश्व युद्ध के समय, अमरीकियों और अंग्रेजों द्वारा छोड़े गये हथियारों का प्रयोग कर, नागाओं ने विद्रोह का विगुल बजा दिया और 1954 में नागाओं ने गणतन्त्रात्मक सर्व प्रभुत्व सम्पन्न गणराज्य स्थापित किया, जिसको बाद में नागा केन्द्रीय सरकार के नाम में बदल दिया गया।

सही अर्थों में, विद्रोह 1955 में हुआ, जब त्वेनसांग के नागाओं ने स्वयं को स्वतन्त्र घोषित किया। थोंग चांग के नेतृत्व में, असम में पुलिस के थाने पर धावा बोला गया। उस विद्रोह को दबाने में पुलिस को असमर्थ पाकर, सेना की दो कम्पनियाँ लगाई गईं। उस समय नागा लोग गठित नहीं थे, और ना ही भली भाँति प्रशिक्षित थे। यदि उस समय डट कर जन शक्ति लगा दी जाती, तो यह बला सदा को टल जाती। नागरिक अधिकारी स्थिति की गंभीरता समझ नहीं पाये और सम्पूर्णतः नियंत्रण कर नहीं पाये । अतएव जन शक्ति कम प्रयोग में लाई गई और फलस्वरूप, विद्रोह अन्य सब क्षेत्रों में इतना फैल गया कि 60-70 बटालियनें लगानी पड़ी। कम जनशक्ति और वह भी देर में लगाने का यह ज्वलन्त उदाहरण है।

साथ ही, कोई समायोजित नियंत्रण नहीं था । एक ओर तो नागरिक अधिकारी शान्ति के इच्छुक थे, दूसरी ओर सैनिक अधिकारी अपनी कार्रवाइयों को करने की छूट चाहते थे। किन्तु सहयोग द्वारा बहुत कुछ किया गया और लगातार कार्रवाइयों ने विद्रोहियों को थका मारा। नागालैंड के राजनीतिक भविष्य को सुनिश्चित करने के लिये, एक वोस्वा और दूसरा मोकोकचंग पर सम्मेलन हुआ। इन सम्मेलनों के समय, कारवाइयाँ रोक दी गई और नागा विद्रोहियों को बहुत ज़रूरी आराम मिला। वे अपनी शक्ति तथा विश्राम पा गये ; सुरक्षा दलों की ज्यादतियों के विरुद्ध वे प्रचार करने लगे, ग्रामीणों को डराने धमकाने लगे तथा नागाओं को अपने गिरोह में भर्ती करने लगे। अतः जब वे सम्मेलन समाप्त हुये, तब सुरक्षा दलों को फिर से अपनी कार्रवाइयाँ शुरू करनी पड़ीं व 1961 तक, उन्हें अपनी धाक विद्रोहियों पर फिर बिठानी पड़ी।

1962 में, सभी सशस्त्र दलों को नागालैंड खाली कर उत्तर की ओर चीनी आक्रमण के मुकाबले को जाना पड़ा और इससे नागाओं को और विश्राम का समय मिल गया, जिसका उन्होंने पूरा पूरा फ़ायदा उठाया। यह 1962 ही था, जब उन्होंने पहले पहल पाकिस्तान से सम्पर्क स्थापित किया और पाकिस्तान के द्वारा चीन से भी मेल हुआ। इस समय से 1971 तक, विद्रोहियों के दल पर दल पूर्वीय पाकिस्तान गये, जहाँ उन्हें शरण, शिक्षा तथा हथियार मिले और जहाँ उन्हें आराम और पुनः स्वास्थ्ययोगता मिली। चीनियों ने भी हाथ बँटाया और कुल मिला कर आठ दल चीन

गये। चीनी गोला बारूद तथा प्रशिक्षण से तो नागाओं को सहायता करने को तैयार हो गये, किन्तु उन्होंने अपने स्वयंसेवक भेजने की माँग नहीं मानी।

चीनी आक्रमण के बाद, नागालैंड में सैनिक तैयारियाँ अगस्त 1963 में हुयीं। 1 दिसम्बर 1963 को, नागालैंड को पूरा राज्य का दर्जा मिला। नागा कार्रवाइयाँ अब नये जोश से प्रारम्भ हुयीं, क्योंकि अब नागाओं को अच्छी शिक्षा और हथियार मिल गये थे, तथा सेना को सूचना देने वाले या तो मार दिये गये थे या डरा कर भगा दिये गये थे और सुरक्षा दलों द्वारा विद्रोहियों से जूझने की एकता में ग्रामवासियों का विश्वास समाप्त हो गया था। 1964 के मध्य तक, सुरक्षा दलों का फिर पलड़ा भारी हुआ, जब जयप्रकाश नारायण, पूज्य माइकेल स्काट और छलिहा के साथ शान्ति शिष्ट मंडल आया और फिर नागाओं ने आन्दोलन बन्द कर दिया। विद्रोहियों ने सुरक्षा दलों के विरुद्ध आक्रमक प्रोपैगंडा प्रारंभ किया और उन पर हत्या, अपहरण और आगजनी के आरोप लगाये । दुर्भाग्य से, उन पर इस शान्ति-शिष्टमंडल ने विश्वास भी कर लिया। विद्रोहियों से वार्त्ता शुरू हुई और 1968 तक चली।

युद्धविराम के समय, सुरक्षा दलों का कार्य नागालैंड में विद्रोहियों के आवागमन पर केवल रोकथाम करनी थी और उन्हें सीमा के साथ-साथ तीन मील की पट्टी में ही अपनी कार्रवाईयाँ करनी थीं।

छापा मार युद्ध में मित्र शत्रु की पहचान करना कठिन है, जो नागा बाह्य रूप से खेत जोत रहा है, वह घात लगाये विद्रोहियों की टोली का संतरी हो सकता है या वही अपने पास में हथियार छुपाये खड़ा हो सकता है, जिनसे कभी भी आपकी पीठ में गोली मार सकता है । सो ग्रामीणों को बचाने के लिए, उनमें अपने ग्रामों को बन्द रखने के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया तथा खोज की कार्रवाई प्रारंभ की गई। उस समय, कोई भी दीखते ही गोली से भून दिया जाता है; और बचना इस बात पर निर्भर करता है कि कौन पहले गोली चलाता है और किसका लक्ष्य सही बैठ जाता है।

1967 के अन्त में, वार्त्ता टूट गयी और (कार्रवाइयाँ आरंभ हो गयीं)। भारत को यह अवकाश बड़े काम का रहा, क्योंकि भारत-पाक युद्ध 1971 के फलस्वरूप, बंगला देश बना और एक मित्र-सरकार ने वहाँ पद ग्रहण किया। एक ही बार में, विद्रोही अपने शरणस्थल को खो बैठे; उनका प्रशिक्षण समाप्त हो गया। उन्होंने विश्राम शिविर गवाँ दिये तथा धो बैठे हाथ वे गोले बारूद के स्रोत से । अब वे नागालैंड की सीमा में ही सीमित रह गये ।

1967 से 1971 तक की निरन्तर हमारी कार्रवाईयों से, थकावट से, सुरक्षा दलों के दवाव से और उनसे हमारी दीर्घकालीन वार्त्ता से, सेमानागाओं और अंगामी जातियों में मतभेद फैल गया। सूचनायें सरलता से मिलने लगीं और 1969 में माओ अंगामी और उसका दल चीन से लौटते समय एक घात में पकड़ा गया । 1971 में सारे सेमा विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसके अर्थ ये हुए कि सात ज़िलों में से पाँच में राजद्रोह समाप्त हो गया। अंगामी और चकसाँग जातियों के बाकी दो ज़िलों में अब सेना कार्यरत हो गयी। इस प्रक्रिया ने नागाओं को बाहर लाकर शान्ति-याचना के लिए

विवश कर दिया।

इस बार, सरकार सन्धि-वार्त्ता को तैयार तो गई, किन्तु बुद्धिमत्ता से उसने वार्त्ता के समय कार्रवाई को रोकने से मना कर दिया। चप्पे-चप्पे पर खोजे जाने के कारण, थकान से चकनाचूर विद्रोही, कहीं भी शरण नहीं पाकर अब शर्तों को मानने को तैयार हुए, जो 1975 की संधि में विहित है।

राजद्रोही दैवी अनुकम्पा के कारण मुख्यतः समाप्त हो गया है, जिससे बंगला देश बन गया, और शरण, तथा सहयोग सब बाहर से मिलना बन्द हो गया है। बर्मा वालों ने भी कठोर रवैया अपनाया है और इससे भी सुरक्षा दलों ने विद्रोहियों को नाकों चने चबा दिये हैं। हमें यह सुनिश्चित करना है कि संधि बनी रहे और शीघ्रताशीघ्र नागा लोग स्वयं को भारत का अंग समझने लगें, वर्ना किसी कारणवश यदि बंगला देश कभी द्वैषपूर्ण रुख अपना ले, तो राजद्रोह सिर फिर उठा सकता है ।

[‘इंडियन एक्सप्रेस’ के सौजन्य से]

विज्ञान के चढ़ते चरण

भारतीय आयुर्वेद संस्थान हैदराबाद ने पेट के फोड़े (पेप्टिक अल्सर) की अचूक दवा खोज निकाली है । हैदराबाद के ही यूनानी चिकित्सा अनुसंधान केन्द्र ने सफेद दाग (ल्यूकोडर्मा) की भी रामबाण औषध खोज ली है। दोनों दवायें शीघ्र बाज़ार में मिलने लगेंगी।

आस्ट्रेलिया में हृदय रोग के लिए एक छोटा पेस मेकर तैयार हुआ है। 60 कि० मी० X 43 मि० मी० आकार का यह यंत्र 75 ग्राम के भार का है। इतना हल्का और पतला होने के कारण, रोगी को कोई बाहरी तत्व महसूस ही नहीं होता। इससे इंगलैंड में पिछले अप्रैल में एक नौ मास की बच्ची के प्राण बचा लिये गये।

केन्द्रीय विद्यालय, ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

दिनांक 3, अप्रेल 78 को ग्रुप केन्द्र दिल्ली के केन्द्रीय विद्यालय में वार्षिकोत्सव मनाया गया। प्रोफेसर एम० वी० माथुर, निदेशक, शैक्षिक नियोजकों और प्रशासकों के राष्ट्रीय सेविवर्ग कालेज, मुख्य अतिथि थे।

वार्षिकोत्सव उल्लास के वातावरण में मनाया गया, श्री चिन्तामणि पाण्डेय, कमांडेंट ग्रुप केन्द्र, दिल्ली ने अध्यक्षता की। सामूहिक गान, नाटक तथा छोटी रंगीन झलकियाँ खेली गयीं। सब से उत्तम अंग्रेजी एकांकी ‘विशाप्स कैंडल स्टिक्स’ (पादरी का दीपाधार) समझा गया, जिसको आठवीं तथा नवीं कक्षाओं के छात्रों ने मिल कर खेला था।

शिक्षा के स्तर में अपना महत्व पाने के लिए, स्वयं को नैतिक मूल्यों की संस्था बनाने के हेतु तथा विविध क्षेत्रों में सरस्वती मन्दिर होने के वास्ते, यह विद्यालय दिन दूनी-रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। अगली वर्ष, इसमें दसवीं कक्षा भी खुल जायेगी।

सामूहिक नृत्य, हिन्दी व अंग्रेजी में नाटक और नन्हें मुन्नों द्वारा कुछ मनोविनोदात्मक खेल आदि अनेकों कार्यक्रम वर्ष भर चलते रहे। बच्चों में छिपी प्रतिभा व क्रियात्मक कल्पनाओं को जगाने के लिए, सारे सत्र में आन्तरिक प्रतियोगितायें चलती रहीं। अनेकों साहित्यिक तथा पाठ्येतर कार्रवाइयों में भी प्रतिस्पर्ध्दायें हुयीं। बदखलझील, राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी, कृषि निर्यात तथा अन्तर्राष्ट्रीय सौर ऊर्जा प्रदर्शनी आदि को देखने विद्यालय के छात्र गए।

विद्यालय ने भारत सरकार के संसद विषयों के विभाग द्वारा आयोजित युवा संसद प्रतियोगिता में भाग लिया है। उसने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शान्ति की शिक्षा के लिए सम्बद्ध स्कूल परियोजना के अन्तर्गत रूसी परियोजना भी पूरी करनी चाही है। अध्यापकों के लिए एक अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता भी हुयी, जिसमें विषय था "छोटी कक्षाओं में अंग्रेजी पढ़ाने का मेरा कारगर कार्यक्रम"। इस स्कूल की अध्यापिका श्रीमती ढिल्लों का निबन्ध पाँच सर्वोत्तम निबन्धों में माना गया और उस पर भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से पुरस्कार मिला। अन्तर्विद्यालय विवाद प्रतियोगिता में, यहाँ के दो बालकों—गुरुप्रीत सिंह तथा अनूप पेब्बी—ने भाग लिया और 'सांत्वना पुरस्कार' और गुणवत्ता का प्रमाण पत्र पाया। मानव भारती भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय स्कूल में "आशु चित्रकारी" प्रतियोगिता हुयी। यहाँ की आठवीं कक्षा के छात्र दिनेश गौतम ने प्रथम पारितोषिक पाया और अतुल कंसल ने सांत्वना पुरस्कार।

फिर भी, यह विद्यालय अपने शैशवकाल में ही है, जब इसे अत्यन्त देखरेख तथा लालन-पालन की आवश्यकता है।



छात्रों को पुरस्कार वितरित करते हुये श्री एम. वी. माथुर

यह भी खूब रही

राम—आज कल देश में लूटमार की घटनायें बहुत घट रही हैं।
श्याम—बहुत घट रही हैं कि बढ़ रही हैं।
भूगोल शिक्षक :— टिंकू बताओ सूरत कहाँ हैं ?
टिंकू (मुख पर हाथ फेरते हुये) सर, यहाँ।
प्रेमाबिह्वल शोभा—कौन सा यार खतरनाक होता है प्रभा ?
प्रभा—हथियार।
पनवाड़ी:—कहिये कैसा पान चाहिये सादा पान, मीठा पान, बनारसी पान
ग्राहक:—बसबस, हम धूम्रपान चाहेंगे करना।
आगन्तुक—यहाँ कोई भला आदमी भी रहता है, जो राह बता दे।
स्थानीय व्यक्ति—भले बुरे की मालूम नहीं; पर मेरे पड़ोसी पुकारते स्वयं को

ज़रूर हैं भल्ला कहकर।

मित्र—राजू किसी ने 'कृषि—रत्न' पाया तो किसी ने 'भारत—रत्न'। पर तूने क्या पाया जो इतना खुश है। ?

राजू—मैंने सब रत्नों का रत्न 'पुत्ररत्न' पाया है।

शीला :—ऐसा हो ही नहीं सकता जो कन्या तुम्हारे पिता से उत्पन्न हो और तुम्हारी बहिन नहीं हो।

बीना :—हो क्यों नहीं सकता बल्कि है। वह कन्या मैं ही हूँ।

जिसकी वाह वाह नहीं, वह अफवाह नहीं।

वाह ! में पर लगते ही सब जगह परवाह होती है।

किसी भी विदेशी पुलिस-तंत्र का अन्धानुकरण अनुचित

लेखक : श्री निगमेन्द्रसेन सक्सेना

विषय प्रवेश—बोझा ढोने का कौन सा सर्वोत्तम पशु है ? किसी मंगोल से पूछिए —वह घोड़ा बतायेगा। दक्षिणपूर्व के जंगलों में काम करता हुआ मनुष्य हाथी को चाहेगा। सहारा का बेदूइयन, ऊंट तथा एस्किमो, रेनडियर को सर्वश्रेष्ठ बतायेगा।

इसी प्रकार एक देश का पुलिस जवान दूसरे देश में नहीं रोपा जा सकता। लंदन का पुलिस जवान 'बाबी' अमेरिका या इटली में अपने हाथ-पाँव गवाँ बैठेगा और अमरीकी पुलिस जन को इंगलैंड में क़ानून-उल्लंघन के कारण खींचातानी सहनी पड़ेगी। जब कि सऊदी अरब में पुलिस जन को कुरान के क़ानूनों का पालन करना पड़ता है, के० जी० बी० को रूस में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निबाहनी पड़ती है।

फिर, पुलिस कोई ऐसा संस्थान तो है नहीं, जो अपनी टाँगों से खुद खड़ा हो सके। 4×400 मीटर रिले दौड़ में अच्छे तीन धावक दौड़ नहीं जीत सकते, यदि चौथा गिर पड़ता है या डंडा गिरा देता है। जानोमाल की सुरक्षा की इस रिले दौड़ में, चारों धावकों का क्रम इस प्रकार है—

(i) **विधान मंडल**—जो जनता की इच्छाओं और आवश्यकताओं के अनुसार क़ानून बनाता है। यह बहुत ज़रूरी है कि अधिकांश लोग क़ानून का पालन करें और एक छोटी अल्पसंख्या को ही केवल, राज्य का दमन-तन्त्र प्रयोग में लाया जाये। साथ ही, क़ानूनों का पालन कराना सम्भव भी होना चाहिए। स्वास्थ्य के लिए पेट से ऊपर खाना बुरा है; किन्तु विद्वान लोग इसे , रोकने के लिए क़ानून बनायेंगे।

(ii) एक कारग़र, ईमानदार और निष्पक्ष पुलिस दल इस दौड़ का दूसरा धावक है।

(iii) सरल, सस्ता तथा फुर्तीला न्याय-तंत्र तीसरा धावक है।

(iv) अन्त में, एक ऐसे जेल-प्रशासन तथा दण्डात्मक दर्शन की ज़रूरत है, जिसमें भूले-चूके मनुष्य को घोर अपराधी नहीं बना दिया जाये; परन्तु जिसमें घोर अपराधियों के चंगुल से समाज को बचाने की क्षमता हो।

इस प्रकार, अन्य तत्वों से अलग करके, पुलिस के आन्तरिक संगठन पर विचार-विनमय नहीं हो सकता और ना ही पुलिस के उन अधिकारों तथा उत्तरदायित्वों पर परिचर्चा हो सकती है, जो उसके कर्त्तव्यों तथा भूमिका से जुड़े हुए हैं। यदि कर्त्तव्यों और भूमिका को बताया जा सकता है, तब अधिकारों और दायित्वों की परिभाषा करना सरल को सकती है। पुलिस को मिला कर देश के सभी संस्थान, संवैधानिक व्यवस्था से सम्बद्ध ही केवल नहीं है, साथ में, राष्ट्रीय लोकनीति पर भी निर्भर हैं। चाहे कोई पुलिस प्रतिष्ठान दूसरे से सीख सकता है, परन्तु इतिहास सभ्यता तथा परम्पराओं में विभिन्नता होने के कारण उन दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर होगा। आइये, कुछ ज्वलन्त उदाहरण लें—

इंगलैंड—एक शब्द में, पुलिस का कर्त्तव्य, क़ानूनी नियम के अनुसार अपराध का पता लगाना और रोक थाम करना है। आइये, इस कथन की व्याख्या दो उद्धरणों से करें:—

लदंन की राजधानी पुलिस की सरकारी निदेशावली में पुलिस की भूमिका तथा कर्त्तव्यों और उसके रुझानों को सैकड़ों वर्ष पूर्व इस प्रकार निर्धारित किया गया हैं :

अपराध की रोकथाम ही, किसी कारगर पुलिस का मुख्य उद्देश्य है; और दूसरा है अपराध हो जाने पर अभियुक्तों का पता लगाना और दण्ड दिलाना। जानोमाल की सुरक्षा करना, सार्वजनिक शान्ति बनाये रखना तथा अपराध की अनुपस्थिति ही केवल सिद्ध कर सकेगी कि जिन उद्देश्यों के लिये पुलिस का गठन हुआ, वे पूरे हो गये हैं। पुलिसजन को यह स्मरण रखना चाहिये कि अपराधियों को पकड़ने के साथ-साथ, जनता जनार्दन को सहायता एवं संरक्षा प्रदान करना उसका कर्त्तव्य है। फलस्वरूप, एक ओर तो उसे अपराधियों के पकड़ने तथा अपराध रोकने में चुस्त होना चाहिये, दूसरी ओर सामान्य जनगणों का सेवक तथा अभिभावक भी उसे स्वयं को समझना चाहिये तथा चाहिये उसे (सामाजिक स्थितियों का ध्यान नहीं करते हुये) सभी न्याय-निष्ठ नागरिकों के प्रति अथक सहनशीलता तथा विनम्रता के साथ व्यवहार करना।

ब्रिटिश सम्विधान शास्त्री, **आईबर जेनिंग्ज** ने क़ानूनी नियम की निम्नलिखित परिभाषा की है—

"कोई भी पुरुष (या स्त्री) तब तक बन्दी नहीं बनाया जा सकता, जब तक कि वह क़ानून को नहीं तोड़ता है, ना ही उसे तब तक कारागार में रखा जा सकता है जब तक कोई मजिस्ट्रेट या कोई न्यायाधीश या कोई न्यायपंच (जूरी) उसे किसी अपराध का दोषी नहीं पाता है; ना ही क़ानूनी कार्यवाही के बिना, और वह भी मुआवजा की अदायगी पर, उसको उसकी सम्पत्ति से वंचित किया जा सकता है; ना ही कोई सरकारी अधिकारी उसकी पकड़ धकड़ तब तक कर सकता है, जब तक कि क़ानून

उसे आज्ञा नहीं देता है और तब भी जब तक अधिकारी सभी न्यायिक औपचारिक तंत्रों का पूरा-पूरा पालन नहीं करता है तथा यह सुनिश्चित नहीं कर लेता है कि उसके साथ सही व्यवहार हुआ है।"

इससे पता चलता है कि क्यों ब्रिटेन में यातायात की पुलिस और गश्ती सिपाही क़ानून-प्रवर्तन के प्रतीक माने जाते हैं। यद्यपि साम्यवादी देशों की भाँति, अपराध वहाँ उतने प्रभावी रूप से नहीं नियंत्रित किये जा सकते हैं, तद्यपि ब्रिटेन के अधिकांश नागरिक अपने कई सौ वर्षों के बने समाज को सुरक्षित रखने के इच्छुक हैं।

राजधानी लंदन में (क्षेत्रफल 800 वर्गमील) की 75 लाख वाली जनसंख्या पर 20,000 पुलिस जन 50 वर्ष से सतर्क रहते हुये भी, अपराध की दर इस शताब्दी के दूसरे शतक के 15,000 प्रति वर्ष से बढ़कर अब 23 गुणा से अधिक 3½ लाख प्रति वर्ष जा पहुँची है।

संसार भर के लोगों की दृष्टि में, ब्रिटिश पुलिस शायद सब से अब्बल मानी जाती है। इसका कारण, कार्य कुशलता की अपेक्षा, उसका दर्शन तथा क़ानून के प्रति निष्ठा है। ब्रिटेन की तुलना में, फ्रांस में प्रसिद्ध पुलिस जन उत्पन्न हुये हैं। यह फ्रांस का अल्फोंजो वर्तिलोन था, जिसने 1879 में सब से पहले मानवमिति (एन्थ्रोपमीटरी) चलाई। फ्रांस का ही एडमंड लोकर्ड था, जिसने क्रीमिनलिस्टिक इन्टीच्यूट (आपराधिक संस्थान) नामक विधि-विज्ञान-प्रयोगशाला सर्वप्रथम स्थापित की। स्काटलैंड ने ऐसी प्रयोगशाला 1933 में जाकर 23 वर्ष बाद क़ायम की।

फ्रांस—22 मील इंगलिश नहर ने संसार का इतिहास ही केवल नहीं बदल दिया है, बल्कि उस ब्रिटिश पुलिस का आहार-व्यवहार भी बदल दिया है, जो फ्रांस से सर्वथा भिन्न परिस्थितियों में फला फूला है।

फ्रांसीसी राजाओं ने तो छठी शताब्दी में पेरिस की रक्षी प्रहरी टुकड़ी की स्थापना की। जब कि चौदहवी शताब्दी में फ्रांस के चार्ल्स पंचम ने एक नियमित पुलिस का गठन किया था, लन्दन में 1820 तक राजनीतिक और जनता की यह धारणा थी कि नागरिक स्वतन्त्रता से, नियमित पुलिस ताल मेल नहीं खाती है। महान नरेश लुई चौदहवें ने पुलिस के अधिकार बढ़ाये तथा केवल अपराध और अराजकता से ही नहीं प्रत्युत् गर्दोगुबार से भी पेरिस को सुरक्षित रखने के लिये उसने व्यापक राज्यादेश दिया। फ्रांसीसी पुलिस को दण्डाधिकारी की शक्ति मिली थी और केवल गम्भीर मामले ही, लोग न्यायालय में ले जाते थे।

पुलिस देशभक्त थी, जिसके अर्थ ये थे कि वह बड़ी राजभक्त थी। पुस्तकें; पैंफलेटों, मुद्रकों तथा प्रकाशकों को नियंत्रित करने में वह लगी रहती थी। इसी कारण जब 1789 में फ्रांसीसी क्रान्ति हुयी, तब पुलिस घिनौनी समझी गई। पुरानी पुलिस के स्थान पर नई पुलिस संगठित हुयी, जो क्रान्तिकारियों के हाथों में बड़ा खूंखार यंत्र बनी।

यद्यपि फ्रांसीसी पुलिस अपने राजनीतिक स्वामियों के प्रति निष्ठावन्त थी, तद्यपि वह एक देशभक्त दल थी और जब फ्रांस-प्रशियन युद्ध में 1870-71 में सेना हार गयी,

तब फ्रांसीसी पुलिस वीरतापूर्वक लड़ी। यही इतिहास 1947 में फिर दोहराया गया, जब फ्रांसीसी पुलिस, जर्मनों से शूरवीरता से लड़ी और सैकड़ों ने प्राण न्यौछावर कर दिये।

चाहे फ्रांसीसी पुलिस की देशभक्ति निस्संदिग्ध है, किंतु सरकार के प्रति निष्ठावंत होने के कारण, जनता से वह ब्रिटिश पुलिस की सी प्रतिष्ठा नहीं पा सकी। राजभक्तों की जमात होने की वजह से, उसने बड़ी उम्दा गुप्तचरी सेवा का विकास किया, जिसके कारण वह जनता का चित्त नहीं मोह सकी, क्योंकि गुप्तचरी से मनुष्यों की गोपनीयता की ताकझाँक होती है।

परिवहन, औषध आदि जैसी लोक सेवाओं के प्रबन्धक रूप में बनी ब्रिटिश पुलिस से भिन्न, फ्रांसीसी पुलिस राजनिकाय के हाथ में शक्तिशाली यंत्र रही। इसी कारण, दिग़ॉले ने 1945 के बाद यह स्पष्ट कर दिया कि वह किसी साम्यवादी को पुलिस का विभाग नहीं देगा।

नेशनल जेन्दारमोरी नामक सशस्त्र पुलिस दल की नक़ल योरूप के सभी देशों ने की और लोक प्रतिष्ठा पायी हुयी ब्रिटिश पुलिस प्रणाली के चरण चिह्नों पर चलने की, उसने कभी चिन्ता नहीं की। उसका गठन 12 वी शताब्दी में हुआ और वह अपने इतिहास तथा **गौरवांक** पर गर्व करती है।

सुरेत नेशनेल नामक राष्ट्रीय दल का उद्गम, 1699 को सरकारी राजाज्ञा में मिलता है। यह एक कार्य-कुशल दल तो है ही, किन्तु इसका दृष्टिकोण संकीर्ण है और राजनीति में एक स्थायी करने वाला तत्व है।

इस प्रकार जो फ्रांस पिछले 300 वर्षों में योरुप के महा युद्धों और हरेक राजनीतिक आन्दोलन में अग्रणी रहा है, उसने अपनी आवश्यकता के अनुरूप एक पुलिस दल का विकास किया, जिनमें एक आवश्यकता थी आन्तरिक तथा बाहरी शत्रुओं के विरुद्ध राज्य की रक्षा करना। फ्रांसीसी पुलिसजन ब्रिटिश पुलिस के कभी प्रशंसक नहीं रहे हैं। 'सुरेत में मेरा कार्य' नामक संस्करण में सुरेत के कमीश्नर **जीन बोलियन** ने इस प्रकार लिखा—

"केवल भौगोलिक कारणों से ब्रिटिश में फ्रान्स की अपेक्षा पुलिस कार्य सरलतापूर्वक सफल होना चाहिए। सागर से घिरा यह एक देश है, जो साधारण स्थितियों में वांछित व्यक्तियों को बच भागने से रोकता है। स्काटलैंड और वेल्स वासियों के विशिष्ट चरित्र होते हुए भी जनता वस्तुतः समरूप है। एक छोटा सा विदेशी तत्व है जो लन्दन तक ही न्यूनाधिक सीमित है। फ्रांस में, स्थिति सर्वथा भिन्न है। यहाँ सैकड़ों मील तक फैले हुये पश्चिम और दक्षिण में लम्बी स्थलीय सीमायें हैं। साथ में, सभी राष्ट्रीयताओं, रंगों तथा मतों के 35 लाख विदेशी निवासियों की जन संख्या है। इस बात से कि ब्रिटेन में पुलिस जाने माने अपराधियों पर कड़ी दृष्टि रखती है, वहाँ की पद्धति अपेक्षाकृत अधिक जानीबूझी होती है; प्रायः मैं थोड़ी दयालुता के लिये सुझाव देने का साहस करता हूँ।"

रूस—ब्रिटेन की यातायात पुलिस और गश्ती पुलिस से भिन्न, क़ानून प्रवर्तक का

प्रतीक रूस में के. जी. बी. है। लोकतंत्रों में इस शब्द से भय एवं घृणा उत्पन्न होती हैं; किन्तु रूस के नागरिकों के लिये यह संगठन राष्ट्रीय सुरक्षा का परिचालक है। प्रख्यात इतिहासकार सर बनर्ड पेरेस की इस टिप्पणी को समझने के लिये, रूस के इतिहास का अध्ययन आवश्यक है—"अन्य जगहों की भाँति, रूस में भी हरेक बात के पीछे तर्क है।

जब पाँचवे दशक में संयुक्त राष्ट्र संगठन की सभा में एक अमेरीकी प्रवक्ता ने रूस द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा के राग अलापने की कटु आलोचना की, तब रूसी प्रतिनिधियों में से वीलोरूस के एक निवासी ने तड़ाक से यह उत्तर दिया कि उसके ग्राम में पिछले 150 वर्षों में शत्रुदलों ने 17 बार-अपना आधिपत्य जमाया है।

एम. बी. डी; एन. के. बी. डी; ओ. जी. पी. यू, चेका, ओखराना तथा ऑधीचाइना जैसे पूर्वजों की लम्बी सूची के.जी.बी. पर है। राष्ट्रीयता को पुनरुज्जीवित रखने पर रूसी बड़ा महत्व देते हैं और उन्होंने यह मान रखा है कि भीतरी और बाहरी सभी राज्य शत्रुओं से निपटना पुलिसदल के बिना सम्भव नहीं है। जिस प्रकार एक रूसी किसान अपने आँगन में सच्चे भेड़ियों को घूमता प्रायः पाता है; उसी प्रकार रूसी-राष्ट्र अपनी सीमाओं बहुधा भेड़ियों को विचरता पाता है।

बाहरी संसार चाहे कुछ कहे, रूसियों को अपनी सुरक्षा का भूत सवार रहता है। रूसी पुलिस से लागू की गई सुरक्षा का एक पहलू सेन्सरशिप (दोष वेचन) है। यह संस्था इतनी पुरानी है कि अल्फ्रेड काज़िन ने लिखा था—हर रूसी को दो बातें तो निश्चित ही हैं—शीतकाल और सेसंरशिप (पत्रावेक्षण)।

सार्ज की भाँति प्रकाण्ड गुप्तचर, रूस के वे शाश्वत वीर पुंगव हैं, जो जापान के मंत्रिमंडल तक के रहस्यों का पता लगा लेते हैं। रूस के गुप्तज्ञान विरोधी अभिकरण **स्मरेश** (रूसी गुप्तचरी विरोधी एजेंसी) के बारे में कई प्रसिद्ध उपन्यास हैं। इसके प्रति जनता निरन्तर स्वयं को आभारी मानती है; क्योंकि रूस को शत्रु द्वारा दासता की जंजीरों के बंधने से इसने सदा बचाया है। कोई भी रूसी यह नहीं भूल पाया है कि मंगोलियों ने उनको 240 वर्ष की लम्बी अवधि तक उन्हें ग़ुलाम बनाया रखा और फिन्स, पोल्स, स्वेदेस, हंगरी रुमानिया, जापान जैसे छोटे देशों के अधीन उसके देश के भाग दबे रहे हैं।

यद्यपि रूस में परम्परागत अपराध इतने कारग़र रूप से नियंत्रण में नहीं आये हैं जितने वे सऊदी अरब में हैं, तद्यपि पश्चिम के धनी लोकतन्त्रों की तुलना में वहाँ वे अपराध बहुत कम हैं।

आज से 250 वर्ष से अधिक पहले 18 वीं शताब्दी के पहले त्रिमास में पुलिस का गठन पीटर महान के शासनकाल में हुआ जिसको रूस में हर वस्तु को आधुनिकीकरण करने का श्रेय है। तब से, पुलिस सरकार का यंत्र रही है और 19वीं शताब्दी के शुरू में तो भीतरी क़ानून प्रवर्तन में यह सरकार की मज़बूत भुजा बनी। अन्य देशों में प्रचलित कई विभागों का इसमें समावेश है। यहाँ पुलिस केवल अपराधियों से ही नहीं निबटती है, साथ में, वह जनगणना, जन्ममरण, विवाहों के

पंजीकरण, लाइसेंस, थियेटर, होटल, छात्रावास, दुकानों की समस्याओं से भी सुलझती है; औषधों, नशीली दवाओं के प्रयोग की व पुस्तकों, समाचार पत्रों वगैरह के प्रकाशन की अनुमति भी देती है। पुलिस को यह भी सुनिश्चित करना पड़ता है कि जनता अपने धार्मिक कर्त्तव्यों को निबाह रही है। लोकतन्त्रीय देशों में, इसे निरंकुशता का चिरभोगाधिकार समझा जा सकता है, किन्तु बाहरी शत्रुओं से सदा सताये जाने वाले रूस को सारी जनता के कल्याण के लिये एक व्यापक यन्त्र की आवश्यकता थी। गुप्तज्ञान का संकलन कभी भी कोई गोपनीय कार्रवाई नहीं थी और न अब है। आठवें दशक में एक अमरीकी पत्रकार के लिये दो आइस क्रीमों को खरीदना सम्भव हुआ, जिनमें एक तो अपने लिये और दूसरी अपनी छाया के लिए, जिसने उसे बिना किसी ना नकुच के सहर्ष खा लिया। 1917 की क्रान्ति के बाद, **चेका** द्वारा अत्यन्त आतंक फैला था। इस संगठन में बड़े परिवर्तन आये हैं; किन्तु ज़ार-काल की भाँति अब भी पुलिस रूप में मौजूद है और बल्कि, अधिक व्यापक रूप में उभर कर आई है।

जापान—1871 में जापान ने आधुनिकीकरण की योजना बनाई; उसमें पुलिस को भी आधुनिक बनाना था। जापानी नेताओं ने जान बूझ कर ब्रिटेन की अपेक्षा अपने ही महाद्वीप वाली प्रणाली अपनायी। यह इतिहास और सभ्यता के मुताबिक भी था। जापान में अन्य संगठनों के सदृश पुलिस में भी, राजभक्ति ही आधार है और राजा का वंश 660 ई० पू० से चला आता माना जाता है। ब्रिटिश पुलिस से भिन्न, जापानी पुलिस कभी लोकप्रिय नहीं हुई। उसके प्रति भय तथा आदर केवल सम्राट की पुलिस होने के नाते ही मिला है।

अगस्त 1945 में, जापान के इतिहास के सब से अधिक अन्धकारमय दिनों में, इस राज भक्ति की परीक्षा की घड़ी आई। 16 अगस्त को, हीरोशिमा पर अणुबम गिरा। क्या जनता और क्या सेना, अधिकांश सभी जीवन के अन्तिम साँस तक युद्ध करना चाहते थे। सम्राट ने तभी आत्मसर्मपण का निर्णय लिया और 15 अगस्त को उसने 'असह्य को सहने और अभोग्य को भोगने' के अपने संकल्प की घोषणा की। अगस्त के अन्त में, जब अमरीकी अधिपत्य-सेना टोकियो पहुँची, तब उपद्रव के लक्षण भयानक रूप धारण करने लगे। जापानी जनता के गर्व पर ऐसा कलंक बुद्धि से बाहर की बात थी। टोकियो के ऊपर, वायु चालकों ने उड़ाने भरी और युद्ध चालू रखने के इश्तिहार गिराये। राजभवन के सामने स्वाभिमानियों की टोलियों ने आत्महत्यायें की। अन्य लोग नगर की छोटी पहाड़ी पर चढ़ कर, पुलिस से तब तक मुचैटा लेते रहे, जब तक पुलिस के और दल नहीं चढ़ धाये। तब बेचारों ने हथगोलों से अपनी जीवन लीला समाप्त की। इससे सम्राट के चचेरे भाई राजकुमार हिवासी कुनी के अधीन बनी नई सरकार घबड़ा गई। सम्राट के ठीक बाद, पुलिस की राजभक्ति दूसरा महत्वपूर्ण तत्व था, जिसने जापान को अमरीकी अधिपत्य-सेना पर आक्रमण करने के फलस्वरूप संकट से बचा लिया।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात्, जनरल मॅक आर्थर ने केन्द्रीयभूत पुलिस प्रणाली को लोकतंत्रीय बनाने के लिये सोचसमझ कर उसमें आमूल-चूल परिवर्तन किये। इससे

गड़बड़ी फैली और जुलाई 1954 में जापान ने केन्द्रीयभूत प्रणाली को फिर अपनाया। आजकल जापानी प्रणाली के प्रमुख गुण ये हैं :

(i) अद्यतन तकनीक तथा उपकरणों से उसमें प्रयोग किये जा रहे हैं और उनको देश की आवश्यकता के अनुसार ढाला जा रहा हैं;

(ii) अपराध की रोकथाम पर किसी अन्य देश ने इतना बल नहीं दिया है। चोरों, उठाईगीरों और जेबकतरों से बचने के लिये लोगों को निरन्तर शिक्षा दी जा रही है।

(iii) भूकम्पों, बाढ़ों, भू-स्खलनों बर्फीले तूफानों आदि देवी प्रकोपो में, जनता की सहायता के लिये, जापानी पुलिस विश्व भर में सर्वोत्तम है;

(iv) कई उपायों द्वारा, जिनमें सर्वोपरि आग्नेय अस्त्रों पर कठोर नियंत्रण है। जापान ही समृद्धिशाली देशों में अकेला वह देश है, जिसमें अपराधों की संख्या कम पाई गई है। ब्रिटिश पुलिस तो, उसकी तुलना में कुछ भी नहीं है। इसका कारण यह है कि ब्रिटेन में अधिकारी की आज्ञा का उतना अन्धानुपालन नहीं होता, जितना जापान में।

सऊदी अरब : सऊदी अरब की पुलिस-पद्धति, एक ऐसे रूढ़ि निष्ठ मुस्लिम देश के राष्ट्रीय लोकाचार पर आधरित है, जहाँ हरेक चीज़ इस्लामी क़ानून के चहुँ ओर घूमती रहती है। यद्यपि संविधान-शास्त्री सऊदी अरब के राजतंत्र को निपट तानाशाही कह कर पुकारते हैं; किन्तु ऐसा है नहीं। जिन्होंने मुस्लिम इतिहास पढ़ा है, वे जानते हैं कि सऊदी अरब के राजतंत्र पर कुरान की आयतें और भी कठोरता से लागू होती हैं। राज्यों सरकारों के सत्ताधीशों पर वह एक लिखित संविधान है। ऐसा प्राय: कहा जाता है कि क़ानून की दृष्टि में सब की समानता आधुनिक लोकतंत्र की देन है; किन्तु तथ्य यह है कि क़ानून के सामने धनी और निर्धन एक समान नहीं हैं, क्योंकि धनी ही वकीलों को 2000 रु० प्रति दिन में खरीद सकते हैं। इससे भिन्न, पुराने समय के भारतीय राजतंत्रों में और आजकल के कुछ रूढ़ि वादी मुस्लिम देशों में, क़ानून की समानता अपेक्षाकृत बहुत थी और अब भी है।

सऊदी-अरब की पुलिस पद्धति वहाँ के लोगों के हिसाब से अच्छी खासी कारगर है। मक्का को हज करने के लिये जाने वाले बताते हैं कि लाखों यात्री तम्बुओं में खुले सोते हैं और वहाँ कोई चोरी-डकैती नहीं होती है। (ब्रिटेन में) स्काटलैंड की या अमरीकी पुलिस, आधुनिक उपकरणों से लैस होते हुये भी, अपराधों की संख्या का एक चौथाई भी ऐसे प्रभावी ढंग से कम नहीं कर सकी है। सऊदी अरब की पुलिस की सफलता का यह कारण है कि चोरियों व उठाईगीरियों पर कुरान के क़ानून कारग़र रूप से लागू किये जाते हैं। सऊदी अरब की पुलिस की कार्य-प्रणाली का समझने के लिये, जुलाई 1977 की एक घटना का जिक्र काफी होगा। 18 फरवरी 1978 की टाइम पत्रिका के अनुसार, "वह 23 वर्षीया शहज़ादी मशाल बिन्ट अब्दुल अज़ीज़ थी, जिसकी तय हुई शादी खटाई में पड़ गई। अली-अल-शायेर (लेवनान में सऊदी अरब के राजदूत) के भतीजे मुस्लेह-अल-शायेर से, इसकी आँख लड़ गई। जब इस रहस्य के उजागर होने पर, उन्हें अपने खतरनाक़ सम्बन्ध टूटने का भय हुआ, तब उन्होंने जाली पासपोर्ट बनवाये और वायुयान से भागने का यत्न किया। शहज़ादी ने जाली

आदमी का रूप बनाया; किन्तु वह प्रेमी के साथ तब पकड़ी गयी, जब सुरक्षा पुलिस को जेदाह हवाई अड्डे पर उस जाने वाले यात्री के परम्परागत रूप से फैले हुये परिधान में एक सन्दिग्ध उन्नत पयोधरा तरुणी की परछाई सी दिखाई पड़ी।

लन्दन की फ्लीट स्ट्रीट ने इस कहानी को तोड़-मरोड़ कर सारे दिन सुनाया। एक तर्कसंगत विश्लेषण से, निम्नलिखित तथ्य उभर कर आते हैं—

(i) मुस्लिम क़ानून में, पर-स्त्रीगमन में सजा मृत्यु दण्ड विहित है;

(ii) सऊदी अरब में मुस्लिम क़ानून का पालन, जीवन का परमधर्म है और वह इसलिये केवल ऐसा नहीं है कि वह शासकों द्वारा लागू है; अपितु वह 13 शताब्दियों से जनता की इच्छानुसार प्रचलित है। उसकी आलोचना करना उसी प्रकार से बेहूदा है, जिस प्रकार कोई लन्दनवासी खजूर के आहार और ऊँट के दूध पर नुक़्ताचीनी करे।

(iii) सऊदी अरब की पुलिस ने शहजादी और उसके प्रेमी को पता लगा कर पकड़ने में अपने संवैधानिक कर्त्तव्य को निभाया;

(iv) जिस देश में कितनी ही स्त्रियाँ, इस न्यायसंगत दण्ड को जब भोग चुकी हैं, तब उसके राजतंत्र की समानता की भावना को यह श्रेय की बात है कि शाही महल की एक शहज़ादी तक, उससे छुटकारा नहीं पा सकी।

मानवदयावाद के तक़ाज़े से हमारी भावना को ठेस अवश्य पहुँचती है, किन्तु हमें यह बात मानने के लिये व्यक्ति-निरपेक्ष होना चाहिये कि मुस्लिम क़ानून में कोई ऊँचा-नीचा नहीं है और क़ानून के नियम की यह रुह उसमें है कि वहाँ सब किसी को केवल एक क़ानून का डर है।

भारत : भारत में क़ानून पालन का परम्परागत सम्बन्ध, जनता के मानस-पटल पर अंकित रामराज्य से जोड़ा जाता है जिसकी चर्चा प्रायः गाँधी जी किया करते थे; यद्यपि वह यह भी स्पष्ट कर दिया करते थे कि उनके रामराज्य से हिन्दूधर्म का कोई नाता नहीं है।

ब्रिटेन से भिन्न, (जहाँ कोई भी नागरिक पुलिसजन बनता है, पूर्ण कालिक सेवा के आधार पर काम करता है और तभी वह वेतन का हकदार होता है), रामायण और महाभारत के युगों में यहाँ पर सुरक्षा जाति मात्र के आधार पर निर्भर थी। इन महाकाव्यों के दिनों में बाहरी और भीतरी दोनों प्रकार की सुरक्षा के हेतु अपना सारा जीवन सौंपने के उपलक्ष्य में, एक विशेष क्षत्रिय-जाति थी। उसकी सुविधाओं के लिए ही नहीं, बल्कि ऐश्वर्य में रहने के लिए, उसको उसके अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नहीं करना पड़ता था। ब्राह्मण पढ़ने-पढ़ाने में सारा जीवन लगाते थे, वैश्य बाणिज्य-व्यापार में तथा अन्य लोग कृषि और पशुपालन में जीवन बिताते थे। ब्राह्मणों ने उस समय की शस्त्रविद्या में पारंगत होने की चिंता नहीं की थी, द्रोण और परशुराम जैसे ब्राह्मण-योद्धा केबल अपबाद थे। इस प्रकार कठोर श्रम-विभाजन प्रचलित था। यह पुरानी प्रथा, आधुनिक व्यावसायिक प्रणाली से मिलती-जुलती है; भेद केवल इतना है हिन्दू

प्रथा में विशेष योग्यता जन्म के आधार पर मुख्यतः थी, जबकि इसके लिए अब चयन और शिक्षा का सहारा लिया जाता है।

इस प्रथा से नागरिक पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहता था और उस समय की लोक-नीति की यह माँग थी कि व्यावसायिक रूप से सुरक्षा प्रहरी को अपने कर्त्तव्यपालन में प्राणों की आहुति देने से भी आनाकानी नहीं करनी चाहिए। उसका मनोबल यह समझाकर रखा जाता था कि युद्ध में मरने से मनुष्य सीधा स्वर्ग जाता है। महाभारत की इस कथा से इसकी पुष्टि होती है:

पांचों पांडवों ने एक पत्नी द्रौपदी से विवाह करने पर यह पवित्र प्रतिज्ञा की थी। कि वे बारी-बारी से द्रौपदी से सहवास करेंगे और यदि जब कोई पांडव द्रौपदी के पास होगा, और यदि तब कोई दूसरा पांडव उस कक्ष में प्रवेश करेगा, उसको 12 वर्ष का बनवास जाने का दण्ड भोगना पड़ेगा। एक दिन शस्त्रों से सुसज्जित डाकुओं के एक गिरोह ने नगर से बाहर स्थित एक ब्राह्मण के कुटीर पर धावा बोल दिया और उसकी सब गायें लेकर चम्पत हो गये। ये गायें ही केवल उस ब्राह्मण का सब कुछ धन थीं। उसने न्याय भवन में पुकार की और अर्जुन से भेंट हुयी। ब्राह्मण क्रोध में आग-बबूला हो रहा था। उसने अर्जुन को याद दिलाया कि धर्मशास्त्रों के अनुसार वह राजा नरक यातना सदा भोगता है, जिसके राज्य में ऐसी अराजकता छाई रहती है। साफ़-साफ़ वार्तालाप हुआ। अर्जुन स्वतः अपना कर्तव्य जानता था; पर दुर्भाग्य से उसके अस्त्र-शस्त्र द्रौपदी के शयन-कक्ष में रह गये थे। फिर भी, उसने उस कक्ष में जाने का संकल्प किया, परन्तु वहाँ उसने ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर को पाया। वह रथ पर सवार हो कर डाकुओं के पीछे दौड़ा और अपने तीक्ष्ण बारणों से उन सबको मौत के घाट उतारा। ब्राह्मण को उसकी गायें लौटायीं और लौटने पर अपने भाइयों से उसने बिदा ली और फिर 12 वर्ष को वह वन चला गया। सभी लोगों ने उसकी इस प्रकार भूरि-भूरि सराहना की, जिस प्रकार उत्तर प्रदेश की डाकुओं वाली धनी बस्ती से डाकुओं का सफ़ाया करने पर पुलिस की प्रशंसा की जाती है।

क़ानून लागू कराने के इस दर्शन का वर्णन, हिन्दूधर्म की कई पुस्तकों में मिलता है। यहाँ पर सनातन धर्म प्रवर्तक मनु को उद्धृत किया जा सकता है--

“डंडे का भय ही डंडे को रोक सकता है, भलों को नियंत्रित करता है और राष्ट्र को सुखी रखता है”। अतएव राजा को निडर होकर दंड देना चाहिए, अन्यथा बली दुर्बल को सतायेगा। वह राजा सरासर अन्यायी है, जो दोषी को छोड़ देता है और निरपराधी को दंड देता है।”

आजकल अपराधी केवल चोर-डाकू तक ही नहीं सीमित होते हैं, उनमें सफेदपोश अपराधी तथा सुगठित अपराध-परिषदें सब गुण भरे वैतला सोंठ गुँडे बनकर निकलते हैं।

गुप्तचरी : राज्य की सुरक्षा के लिए गुप्तचरों का प्रयोग भारत में बहुत पुराना है। जब श्री राम की बानर-सेना भारत के तट पर पड़ाव डाले पड़ी थी और श्रीलंका में सागर पार करके पहुँचने की सोच रही श्री; तब रावण ने बानर-वेष में अपने दो धुरन्धर

गुप्तचर, शत्रु की सैनिक-शक्ति को ऑकने के लिए भेजे। गुप्तचरों ने यह अनुभव किया कि रावण की सेना राम की तुलना में कमज़ोर है। जब वे लौटे, तब रावण ने उनपर यह कहने को दबाव डाला कि राम की सेना उसके मुकाबले में कमज़ोर है। किन्तु उनमें से एक ने झुक कर सही सूचना देने पर ज़िद की। तब रावण ने उसे पीटा; इस पर वह श्रीलंका छोड़ गया। तुलसीदास के रामचरितमानस के सुन्दर कांड में इसका वर्णन विस्तार से किया गया है और शाश्वत सत्य बताया है कि गुप्तचर्चा में यदि निर्भयतापूर्वक सच कहने की छूट होगी, तभी गुप्तचरी बड़े काम कर सकती है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्रेरित मौर्य प्रशासन में छोटे-छोटे मामलों में स्थानीय स्वतंत्रता थी; जबकि राज्य के महत्वपूर्ण मामलों में अफसरशाही थी। सभी छोटे मोटे मामले पंचायतों द्वारा निपटाये जाते थे। गुप्तचरी के बड़े जाल पर निर्भर, सरकारी मशीन सुख से चल रही थी। उसमें आजकल की आई. बी. (सूचना ब्योरो) और सी. बी. आई. (गुप्तचर विभाग) का मणिकांचन संयोग था, क्योंकि वह राजा के शत्रों की ही केवल खबर नहीं लगाती थी, बल्कि बेईमान सरकारी कर्मचारियों की भी खबर लेती थी।

दंड संहिता बड़ी कठोर थी; किन्तु यूनानी लेखक मैगस्थनीज़ ने इस कथन से उसकी दक्षता की इस प्रकार पुष्टि की कि 4 लाख नगर पाटलीपुत्र में, कुल चोरी 100 रु० प्रति दिन से कम थी। यह दंड संहिता जनता को प्यारी थी, क्योंकि कौटिल्य के अनुसार प्रशासन का लक्ष्य यह है कि "राजा को जो प्रिय है उसे राजा उत्तम नहीं समझेगा; किन्तु जो प्रजा को प्रिय है, वही राजा को उत्तम होगी।" दक्षिण के राज्यों में भी गुप्तचरी एक सुगठित संस्था थी। राजा जी की पुस्तक "कुराल ऑफ तिरूल्लवट" के 139-142 पृष्ठों को पढ़ने से पता लगता है कि इस महान संत के द्वारा दिये गये उपदेश आज भी सच्चे हैं और वे हैं ये-"राजा को अपने सम्बन्धियों पर कड़ी निगरानी की आवश्यकता; तीन स्वच्छन्द साधनों द्वारा किसी बात की पुष्टि की ज़रूरत और गुप्तचरों के पहचानने की सुनिश्चितता करने की आवश्यकता।"

भारत के मुस्लिम काल में, मुस्लिम दंड-संहिता का भी कुछ मात्रा में समावेश हुआ। कुछ विषयों में, जनसाधारण ने उसका स्वागत किया। बलवन एक बर्बर राजा था; किन्तु उसने दिल्ली क एक पूर्ण रूपेण शान्तिमयी नगरी बना दिया। सर्वभाँति से प्रभावी अपराध-नियंत्रण, शेरशाह के शासन-काल में भी देखा गया। स्टैनले लेन पोल लिखता है—"सारे जहाँ में ऐसी सुरक्षा का वातावरण छा गया कि कोई लूला-लंगड़ा किसी रुस्तम से भी भय नहीं खाता था।"

भारत के मुख्य नगरों को लोकनीति में, मौलिक हिन्दू-सभ्यता के साथ-साथ, मुस्लिम काल की कुछ विरासतों तथा पश्चिम के उदार विचारों का इन्द्रधनुषी संगम है।

<u>श्री धर्मवीर द्वारा</u>

पुलिस-तंत्र की गड़बड़ियों का वर्णन

ले०–श्री के. के. कटियाल

"इस आयोग को बिठाने में 30वर्ष की देरी हुयी; इसे तो 1947 में गठित करना चाहिए था"—ये शब्द श्री धर्मवीर, राष्ट्रीय पुलिस आयोग के अध्यक्ष के हैं, जो सुधारों के सुझानों के लिए पुलिस की कार्यविधि का गहन अध्ययन कर रहे हैं।

स्पष्टतया, श्री धर्मवीर के विचार से, पुलिस की कार्यविधि के सुधार के लिए पग, देशविभाजन के तुरन्त बाद ही उठाने चाहिए थे; जब इसकी भूमिका एक औपनिवेशिक शक्ति के दमन यन्त्र से बदल कर, जनता और कल्याणकारी राज्य की सहायता का साधन बनी थी। उनके शब्दों में, इन तीन दशकों में, बहुत भारी क्षति पहुँची है और अनेकों खींचातानियों तथा कुप्रथाओं ने केवल घुसपैठ ही नहीं की है; बल्कि अपनी जड़े जमा ली हैं। पुराने ढंग की पुलिस ने नये प्रकार के राजनीतिज्ञों से समझौता कर लिया और ऐसे निहित स्वार्थों ने सिर उठाया कि उनको खत्म करना सरल नहीं है।

श्री धर्मवीर ने यह आलोचना आयोग के अध्यक्ष के रूप में प्रारम्भिक कार्य के आधार पर ही केवल नहीं की है, प्रत्युत् एक प्रशासक के रूप में अपने व्यापक अनुभव की शक्ति पर की है। मंत्रि मंडल के सचिव, स्व० जवाहरलाल नेहरू प्रधानमन्त्री के सचिव तथा पंजाब, पश्चिमी बंगाल और कर्नाटक जैसे तीन राज्यों के राज्यपाल ऐसे लाभप्रद उच्च पदों से प्रशासनिक तन्त्र को निरीक्षण करने का उन्हें अवसर मिला है।

सबसे उल्लेखनीय खींचातानी तो वह पुलिस प्रशासन में राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण बताते हैं। राजनीतिक स्वामियों तथा सत्तारूढ़ पार्टी के प्रभावशाली सदस्यों के संकेतों पर बारम्बार तबादलों, पदोन्नतियों या अवनतियों से पुलिस दल के हौंसले पश्त होते हैं।

'यदि एक ज़िले में एक वर्ष के भीतर चार सुपरिटेडेंटों को बदला जाये, तब सुचारु रूप से प्रशासन को चलने की कैसे आशा की जा सकती है? क्षेत्र को कठिनता से समझ ही पाने पर, उन्हें दूसरों के लिये स्थान खाली करना पड़ता है। फल-स्वरूप, पुलिस दल का प्रशासन छोटे अधिकारियों को हाथों में रहता है और उसके परिणाम ज़ाहिर ही हैं।"

राजनीतिक हस्तक्षेप से कितनी ही अनियमिततायें उत्पन्न होती हैं। वरिष्ठ अधिकारियों की प्रभावशाली राजनीतिज्ञों के सीधे चमचे बनने की चिन्ता सदा सताती रहती है। ऐसी स्थितियों में से अनेकों समझौते कर बैठते हैं।

श्री धर्मवीर इसको सर्वोपरि प्रधानता दे रहे हैं कि किस प्रकार राजनीतिक हस्तक्षेप रोका जाये। यद्यपि यह बताना बहुत जल्दी है कि वह क्या सुझाव देने जा रहे हैं, किन्तु इतना वह साफ़ समझते हैं कि पुलिस प्रशासन में ज़िम्मेदार पदाधिकारियों के कार्यकाल काफी लम्बे होना चाहिये।

एक ऐसे वातारण को बनाना होगा जिसमें वरिष्ठ अधिकारियों के सेवा-भविष्य को बिना डराये-धमकाये, पुलिस कार्य चलता रहे। निजी तौर पर, वह इसके लिये, अन्दर से बने सुरक्षणों का होना चाहेंगे।

श्री धर्मवीर पुलिस कार्य को दो वर्गों में विभाजित करना चाहेंगे : (1) किस प्रकार पुलिस को अधिक कारग़र बनाया जाये; और (2) किस प्रकार जनता की सेवा के लिये पुलिस को उत्तम यन्त्र बनाया जाये। इन सब वर्षों में, अपराध के रूप बदले हैं और स्पष्टतया, पुलिस की कार्य विधि में फिर से तालमेल बिठाना होग।

छानबीन और अन्य कर्तव्यों के लिए, पुलिस को उपकरणों से सज्जित तथा अद्यतन वैज्ञानिक सहायताओं से लैस होना चाहिये। पुलिस दल का आकार-प्रकार बदलना होगा और लाठी लिये अधिकांश पुलिसजनों के स्थान पर, शिक्षित लोगों को भर्ती करने के उपाय खोजने होंगे।

द्वितीय, उनके अनुसार, कान्स्टेबलों में ज़िम्मेदारी तथा सम्बन्ध की भावना पैदा करने के लिए, उनकी पदोन्नति के लिये मार्ग बनाने होंगे। यदि कोई जीवन भर कान्स्टेबल ही पड़ा रहेगा, तो स्तर बनाये रखने के लिये उसमें ना तो रुचि होगी और ना ही कोई प्रोत्साहन।

जनता की सेवा के लिए पुलिस को कैसे सक्रिय किया जाये? श्री धर्मवीर के मत में, पुलिस, जनता तथा राजनीतिज्ञ ये तीन मुख्य वर्ग हैं और उत्तम परिणाम पाने के लिए इन सबको यथाशक्ति प्रयत्न करना होगा। यदि जनता या राजनीतिज्ञ पुलिसजन की सहायता नहीं करते हैं, तब पुलिसजन को फरिश्ता बनने को कैसे कहा जा सकता है?

यदि लोग अपने कर्तव्यों की ओर ध्यान नहीं दे कर, केवल अधिकारों की तरफ सचेष्ट रहेंगे, तब कितनी ही उन्नतिशीलता कभी भी पुलिसजन को जनता का सेवक नहीं बना पायेगी।

इस आयोग की खोजबीन बड़ी व्यापक होगी, उदाहरणार्थ, दण्ड-प्रक्रिया-संहिता, ज़मानत देने की विधि, साक्ष्य का नाश या क्षीण करने वाली निर्णय-देरी की जाँच पड़ताल करनी होगी। उनके विचार से, बिना सम्बद्ध प्रक्रियाओं पर ध्यान दिये, पुलिस की कार्यविधि पर अलग थलग विचार नहीं किया जा सकता और अन्य क्षेत्रों को छोड़ कर केवल एक का ही सुधार बेकार रहेगा। इसी ध्येय के लिये, आयोग के सदस्य राज्यों में जा रहे हैं, क्या शहरी क्या ग्रामीण, दोनों प्रकार के थानों, का दौरा कर रहे हैं तथा कान्स्टेबल से लेकर सभी पुलिसजनों से विचार कर रहे हैं। एक व्यापक प्रश्नावलि चालू करके भी जनता के विचार जानने की चेष्टा की गई है, यद्यपि उत्तर कम मिले हैं। अन्य 36 प्रश्नों को और सभी राज्य सरकारों के पास इस लिये भेजा जा रहा है कि वे अध्ययन दल स्थापित कर पुलिस की कार्यविधि के विशिष्ट पहलुओं पर विचार करें।

आयोग स्वयं भी अध्ययन दलों का गठन विस्तृत छान बीन के लिये करेगा तथा स्टाफ कालेज हैदराबाद और मैनेजमेंट इस्टीट्यूट अहमदाबाद जैसे प्रबन्धक संगठनों से भी सहयोग माँगेगा।

श्री धर्मवीर इस बात से परिचित हैं कि स्वाधीनता के उपरान्त, विशद राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तनों के होने पर, पुलिसतन्त्र की सर्वांगीण समीक्षा नहीं हुई। विभिन्न राज्यों द्वारा गठित आयोगों की रिपोर्ट पढ़ने का लाभ, इस राष्ट्रीय आयोग को होगा, जिससे उन राज्यों की अपनी समस्याओं का अध्ययन हो सके। कुल मिलाकर, राज्यों के आयोगों की सिफारिशों पर राज्य सरकारों द्वारा ली गई कार्रवाई के अनुभव, निश्चय ही, इस राष्ट्रीय आयोग को बड़े उपयोगी सिद्ध होंगे।

[‘हिन्दू’ के सौजन्य से प्राप्त]



विजयी तैराकों के साथ श्री एस० एम० घोष, महानिदेशक, के० रि० पु० बल

क्रीडा क्षेत्र :

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस तैराकी में अजमेर रेंज चैम्पियन

जून 1978 में दिल्ली के नेशनल स्टेडियम के तरणताल में सम्पन्न बारहवीं के० रि०

पु० तैराकी प्रतियोगिता को अजमेर रेंज ने 170 अंकों से जीता। मद्रास रेंज 96 अंकों से द्वितीय रही और गत वर्ष की चैम्पियन हैदराबाद रैंज को 81 अंकों से तीसरे स्थान पर सन्तोष करना पड़ा।

अजमेर रेंज के कान्स्टेबल पी० पद्मनाभन सर्वश्रेष्ठ तैराका माना गया। उसने 100 मी० फ्री स्टाइल 02.5 सेकंड में पार किया। कलकत्ता रेंज के दिलीपसिंह ने 100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक 1 मि० 17.5 से० से जीती। 100 मी० बैक स्ट्रोक में, हैदराबाद रेंज के स० इ० पी० वी० पिल्ले ने 1 मि० 11 से० में सब को पछाड़ दिया। 74×100 मी० फ्री स्टाइल में अजमेर रेंज की चौकड़ी प्रथम रही।

100 मी० बटर फ्लाई में दिल्ली रेंज के हे० कां० एस० नायर ने I मि० 9 से० में पार कर पुलिस रिकार्ड बनाया।

इन जवानों ने विविध तैराकियों में **प्रथम स्थान** पाया-1. का० पी० पद्माभन (100 मी० फ्री स्टाइल) 2. का० एस० लोचनन (200 मी० फ्री० स्टाइल) (400 मी० फ्रीस्टाइल) तथा (1500 मी० फ्रीस्टाइल, 3. स०इ०पी०वी० पिल्ले (100 मी० बैक स्ट्रोक) तथा (200 मी० बैक स्ट्रोक); 4. ना० दिलीप सिंह (100 मी० बटरफ्लाई), (200 मी० बटरफ्लाई) तथा 400 मी० व्यक्तिगत मेडले); 5. हे० का० आर० एस० नायर (100 मी० बटरफ्लाई).

गोते खोरी में, का० बी० एन० तोमचे (226.70 अंक) और हे० का० ढाका सिंह (345.50 अंक) हाईवोर्ड और स्प्रिंग बोर्ड में क्रमशः प्रथम रहे।

रिले तैराकी में, अजमेर रेंज 4×100 मी० फ्रीस्टाइल तथा 4×200 मी० फ्रीस्टाइल में तथा दिल्ली रेंज 4×100 मेडले में प्रथम रहीं।

प्रतियोगिता का उद्घाटन श्री बी० वर्मा, महानिरीक्षक से० III ने किया, जब कि श्री एस० एम० घोष महानिदेशक ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती अंजलि घोष ने पारितोषिक वितरित किए।

16वीं अ०भा० खुली एथलीट प्रतियोगिता

दिनांक 26 से 28 मई 1978 तक जालंधर में खेली गई 16वीं अखिल भारतीय खुली एथ्लीट प्रतियोगिता में, सैन्यदलों के साथ पुलिस संयूक्त विजेता रही। हमारे इन एथ्लीटों का खेल प्रसंशनीय रहा—1. इ० आर. एस. बल०, (चक्का फेंक) रजत पदक 2.30 हरी चन्द (5000 मी० दौड़) स्वर्ण तथा (10000 मी० दौड़) रजत; 3. इ० के० जी० जोजेफ (4×100 मी० रिले दौड़) स्वर्ण 4. हे० का० मिठाईलाल (4×100 मी० रिले दौड़) स्वर्ण; 5. ना० बचनसिंह (4×400 मी० रिले). रजत 6. स० इ० प्रभात सिंह (डिकथलन) रजत; 7. स० इ० प्रदीप कुमार (10000 मी० दौड़) और (3000 स्टीपिल चेज) IV; 8. स० इ० बी० सुशीलन (नेजा फेंक) IV तथा 9. हे० कां० सुधा करन (त्रिकूद) IV.

मध्य प्रदेश में हमारे जिम्नास्टों की धाक

मध्य प्रदेश राज्य जिम्नास्टिक प्रतियोगिता 13 से 15 मई 1978 तक खेली गयी। उसमें ला० ना० नसरुद्दीन और का० सुभाष चन्द हमारे दो जवानों ने भाग लिया। का० सुभाष चन्द सब स्पर्धाओं में प्रथम रहा जबकि ला० ना० नसरुद्दीन द्वितीय।

क्रीडा क्षेत्रे :

राष्ट्रीय दंगल

27वीं राष्ट्रीय दंगल प्रतियोगिता 11-20 मार्च 78 को करनाल (हरियाणा) में खेली गयी। के० रि० पु० बल के कई पहलवानों ने भाग लिया और ये पदक स्थान पाये :

श्री सुखवन्तसिंह पंजाब राज्य की ओर से लड़ा और सुपर हेवी भार में कांस्य पदक पाया। 2. ईश्वर सिंह हरियाणा राज्य की ओर से लड़ा और हैवी भार में स्वर्ण पदक पाया। 3. ओमप्रकाश हरियाणा राज्य की ओर से लड़ा और लाइट हेवीभार में चौथा स्थान पाया 4. रघुवीर सिंह हरियाणा राज्य की ओर से लड़ा और मिडिल भार में कांस्य पदक पाया व 5.सन्तराज उत्तर प्रदेश की ओर से लड़ा और बन्टम भार में रजत पदक पाया।

वालीबाल टूर्नामेंट

मार्च 1978 में के०रि०पु० बल की वालीबाल टीम ने इन पाँच प्रसिद्ध टूर्नामेंटों में अपनी धूम मचाई :

I. अखिल भारतीय बालीबाल टर्नामेंट सिंभौली (3-5 मार्च 78)

के०रि०पु० बल ने सी० डी० ए० (नियंत्रक रक्षा लेखा) मेरठ को अर्द्ध फाइनल में हरा दिया; किन्तु फाइनल में सिगनल मेरठ से परास्त हो गया।

II. नेपालसिंह स्मारक टूर्नामेंट, मुज्जफरनगर (6-8 मार्च 78)

के० रि० पु० बल ने अर्द्ध-फाइनल में सिगनल मेरठ से हार खाने से पूर्व, जाट रेजीमेंट तथा उत्तरी पूर्वी रेलवे गोरखपुर को परास्त किया।

III. अखिल भारतीय स्वर्ण कप टूर्नामेंट, फिल्लौर (10-12 मार्च 78)

सी० सु० दल की टीम, सिगनल मेरठ और भारत तिब्बतीय सीमा पुलिस को हरा कर, के० रि० पु० बल, सी० सु० दल जलंधर से फाइनल में पराजित हो गया।

IV. कुंदन शुगर मिल्स टूर्नामेंट अमरोहा (14-16 मार्च 78)

उत्तरीपूर्वी रेलवे वाराणसी और हरियाणा पुलिस को हराकर, अर्द्ध फाइनल में सिगनल मेरठ से के० रि० पु० बल परास्त हो गया; फिर भी डेसू को हराकर तीसरा स्थान पाया।

V. अखिल भारतीय बाल रुड़की (17-19 मार्च)

डेसू दिल्ली व वा. इ. जो. रुड़की को हराकर, के० रि० पु० बल अद्ध-फाइनल में सी० सु० दल जालंधर से पराजित हो गया।

VI. अखिल भारतीय अग्रवाल स्मारक बालीबाल टूर्नामेंट (अप्रेल 78)

रेणकूट (उ०प्र०) में विगत अप्रेल में खेले गये अखिल भारतीय अग्रवाल स्मारक वालीबाल टूर्नामेंट का सिरमौर, प्रसिद्ध टीमों को हराकर के० रि० पु० बल ने जीता।

दिल्ली सीनियर हाकी

तीन बार लगातार जीतने के बाद, 2 जुलाई 1978 को के० रि० पुलिस ने दिल्ली सीनियर हाकी प्रतियोगिता में इंडियन रेडर्स को भी 3-0 से सरलतापूर्वक हरा अर्द्ध फाइनल में स्थान पाया। किन्तु 4 जुलाई 78 को अर्द्ध फाइनल में खेल अवरोध-भंजक (टाई-बेकर) तक खिंचा, जिसमें दिल्ली बंगाल सैपर्स 8-7 से ही केवल जीता। दैनिक हिन्दुस्तान के अनुसार 'खेल के आधार पर रिजर्व पुलिस को विजय श्री मिलनी चाहिये थी। पूरे खेल में उनका पूरा-पूरा दबदबा रहा।'

अवरोध भंजक के पहले, दोनों टीमें 3-3 से बराबर रही। दूसरे दौर में बंगाल सैपर्स ने पाँचों स्ट्रोक गोलों में बदले; जबकि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल चार पर ही गोल कर सका। दल की ओर से, ए. बरला (1) रामनिवास (2), एस. एक्का (2) और प्रमोद (2) ने कुल मिलाकर 7 गोल किये।



ग्रुप केन्द्र गौहाटी में आडीटोरियम

ग्रुप केन्द्र गौहाटी में अब 350 दर्शकों के बैठने के लिए एक आडीटोरियम (दर्शक कक्ष) बना है। अपनी ही मदद से बाँस के बने इस आडीटोरियम का उद्घाटन श्रीमती पी. सी. दास ने पिछली फरवरी में किया था। इनमें जवानों के परिवारों के लिए सिनेमा दिन में दिखाया जाता है तथा कभी-कभी नाटक खेलने के काम में माता है।

तमिल नाडु टेनिस में हमारी विजय

श्री एम० आई० दास, सहायक कमांडैंट, ग्रुप केन्द्र आवडी और श्री डी०डी० शर्मा, सहायक प्रिंसीपल, र० प्र० केन्द्र II आवडी ने तमिल नाडु सरकार का सेंट्रल सविसेज़ रीजनल स्पोर्टस् बोर्ड टेनिस टूर्नामेंट जीता। इन्होंने डबल्स में तमिलनाडु ए० जी० आफिस रेक्रियेशन क्लब को हराया। सिंगिल्स में, श्री दास सेंट्रल इक्साइज़ डिपार्टमेंट रेक्रियेशन क्लब के मुहम्मद अली से फाइनल में हार गये।

महानिदेशक द्वारा ग्रुप केन्द्र नागपुर से पारिवारिक क्वाटरों का उद्घाटन

दिनांक 16 मार्च 78 को, श्री एस. एम. घोष महानिदेशक ने ग्रुप केन्द्र नागपुर में पारिवारिक क्वार्टरों टाइप I (विशेष) का उद्घाटन किया। इन क्वार्टरों की संख्या 144 है और इन पर रु० 26.29 लाख की लागत आई है।

दिल्ली लक्कड़ बाज़ार भस्म

पिछली अप्रेल में लगभग 25 दुकानों के आज़ादपुर लक्कड़ बाज़ार में भयंकर आग लग गई, जिससे 50 लाख रुपये की हानि हो गई। बिजली के शार्ट-सर्किट से आग लगी बताई जाती है। प्रत्यक्ष दशियों का कहना है कि डेसू जल टैंक के समय पर आने और मार्ग पार स्थित पुलिस थाने में निरत के० रि० पु० बल के जवानों की तुरन्त कार्यवाई के कारण वह कुछ बच सका। उन्होंने यथा शक्ति व्यापारियों की भी सहायता की।

मोटर वाहनों का सुरक्षित चालन

ले०–श्री एम० पी० नैथानियल

कमांडेंटों को अपने पत्र में, महा-निदेशक श्री एस० एम० घोष ने मोटर परिवहनों में दुर्घटनाओं में कमी लाने पर फिर बल दिया है। उनके शब्दों में—"पिछले छै महिनों में, इस बल में 42 मोटर दुर्घटनायें हुयी हैं। इन दुर्घटनों की छानबीन से पता चलता है कि बहुत सी दुर्घटनायें तेज या असावधान चलाने के कारण हुयी हैं। इनके कारण हैं—चलाते समय मदिरापान, आराम की कमी, नींद का अभाव, खराब दृष्टि और ज़रूरत से अधिक खतरा मोल लेना।

"अधिकांश ड्राइवर अपने परिवारों से दूर अलग-थलग एकाकी जीवन व्यतीत करते हैं। जब तक हम उन्हें सन्तुष्ट नहीं रखेंगे, उनसे उत्तम चालन की आशा नहीं

कर सकते हैं।"

के० रि० पु० बल के जवानों तथा नागरिकों के बहुमूल्य प्राणों की हानि के अतिरिक्त, मोटर दुर्घटना से सरकार को भारी आथिक क्षति भी पहुँचती है। श्री घोष साहब ने तभी बटालियनों के स्तर पर समझाने-बुझाने, प्रशिक्षण और निरीक्षण द्वारा ठीक-ठीक उपाय लेने के लिये सभी अधिकारियों से आग्रह किया है।

यातायात की निरन्तर बढ़ोतरी से, सड़कें जान जोखिम की चीज़ हो गई हैं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता, जिसमें किसी न किसी दुर्घटना का समाचार नहीं छपता; कुछेकों में तो कई जानें चली जाती हैं। अतएव यह आवश्यक है कि दुर्घटनाओं से बचने के लिये, ड्राइवर चलाने में होशियारी बरतें।

चलाने के लिये, शुरू करना, बढ़ाना और रोक देने की दक्षता से अधिक योग्यता की ज़रूरत है । एक उत्तम ड्राइवर वही है, जो यातायात की स्थितियों को समझे और अपनी गाड़ी को उसी के मुताबिक चलाये ।

एकाग्रचित्ता : एक लापरवाह ड्राइवर के हाथ में, वाहन एक संघातक हथियार है । अत: चलाते समय, ड्राइवर को असावधानी से डेढ़ हाथ का नमस्कार करना होगा। उसको एकाग्रचित्त होना पड़ेगा और किसी भी प्रकार से मस्तिष्क को भटकने-भ्रमने नहीं देना होगा। अपने ऊपर नियंत्रण लाने से ही, एकाग्रचित्ता का उच्च स्तर बन सकता है। इसमें आत्मचिन्तन की ज़रूरत है यानी अपनी कमियों को समझना और उन्हें दूर करना।

उत्तम से उत्तम सुरक्षा के साथ चलाने के लिये, ड्राइवर को शरीर से स्वस्थ और मस्तिष्क में सतर्क रहना पड़ेगा। सुरक्षित चलाने की तुरन्त योजना बनाने की और उसे तत्काल अनुपालन की योग्यता ही अच्छे ड्राइवर की पहचान है।

प्रतिक्रियाकाल : किसी काम करने की ज़रूरत समझने के समय से लेकर उस को पूरा करने के समय तक को ड्राइवर का प्रतिक्रियाकाल कहलाता है। चक्र-चालन (स्टीयरिंग), ब्रेक या गति बढ़ाना या इन सब को एक साथ मिलाकर काम करने पड़ते हैं। एक सेकंड के दो तिहाई समय से भी कम में, किसी आपात् विराम के लिये ब्रक लगाने होंगे। साधारण स्थितियों में, 50 कि० मी० प्रति घंटे चलने वाला वाहन इतने समय में कोई 30 फुट आगे बढ़ गया होगा। इस दूरी को विचारात्मक दूरी कहा जाता है और 'राजपथ-संहिता' में इसी प्रकार विहित है । यह दूरी, वाहन की गति, ड्राइवर की शारीरिक और मानसिक स्थिति तथा चलाने में उसकी एकाग्रचित्ता के कारण भिन्न-भिन्न हो सकती है।

और बातें जो दुष्प्रभाव डालती हैं वे हैं—चिन्तायें, थकान, रोग तथा दवाइयों और मद्य का प्रभाव । लम्बा प्रतिक्रियाकाल लेने वाले ड्राइवर को नित्य 15 मिनट शारीरिक व्यायाम करने की सलाह देनी होगी। इससे उसके नेत्रों और हाथ पावों में ठीक तालमेल होगा।

मार्गचेतना : मार्ग तथा यातायात की स्थितियों के प्रति निरन्तर सतकता ही अच्छी मार्ग-चेतना का लक्ष्य है। अन्य मार्ग यात्रियों के प्रति संवेदनशील होने से दुर्घटनायें बच सकती हैं । जीवन के अन्य पहलुओं की तरह, सद् व्यवहार दूसरों के प्रति सम्वेदनशीलता में रहता है और एक ड्राइवर के अच्छे होने की पहचान मार्ग में उसके लेने-देने की विनम्रता से होती है। यदि कोई मार्ग के नियमों का उल्लंघन करता है और दूसरों के अधिकारों की अवहेलना करता है, तब वह खतरे और उत्पात का कारण बन सकता है।

किसी खड़े वाहन या अन्य वस्तु को पार करते समय, जहाँ पैदल यात्री उस वाहन या वस्तु के पीछे से मार्ग पार कर सकते हैं, खास सावधानी बरतने की ज़रूरत है। पशों से खींचने वाली गाड़ियों के पास हार्न बजाने से पशु बिदक सकते हैं तथा फलस्वरूप सड़क को खतरा पैदा हो सकता है। किसी पैदल यात्री या दो पहिये वाले वाहन के पीछे भी हार्न बजाने से कभी-कभी दुर्घटनायें हो जाती हैं।

मार्ग के यातायात संकेतों के उल्लंघन या मार्ग-चिन्हों के प्रति लापरवाही, ड्राइवरों को ही केवल नहीं, बल्कि अन्य आदमियों को भी खतरनाक है। ऐसा प्रायः देखा जाता है कि जल्दी में ड्राइवर मार्ग संकेतों का उल्लंघन कर तेजी से वाहन चलाते हैं। भीड़ भाड़ वाले मार्गों पर ऐसे उल्लंघन खतरे की जड़ होते हैं । और गंभीर प्रकार की दुर्घटनायें प्रायः कर देते हैं । सभी ड्राइवरों को यह याद रखना चाहिये कि मंज़िल पर कभी नहीं पहुँचने से तो, देर में पहुँचना उत्तम है।

किसी भी ड्राइवर को सारे मार्ग पर अपना हक़ नहीं जताना चाहिये। बायीं ओर चलाने से, केवल दुर्घटनायें ही नहीं बचती हैं, साथ में, दूसरों को भी आने-जाने की सुविधा मिलती है। मार्ग पर अपना इजारा दिखाना, ड्राइवर की खु दगर्ज़ आदत को बताता है।

चालन-निर्देश : अनेक लापरवाह ड्राइवर तेज गति से मोड़ ने में फक्र समझते हैं। इससे वाहन लौट जाने का डर रहता है । मोड़ों, यातायात द्वीपों, रेल पार करने के स्थानों, पुलों तथा घनी बस्तियों में दूसरे वाहनों से आगे निकलने की बुरी आदतें, कुछ ड्राइवरों में पाई जाती हैं। इन आदतों को तिलांजलि देनी चाहिये, क्योंकि ये ही दुर्घटना स्थल बन सकती हैं, दलदली और पंकिल स्थानों पर होशियारी से चलाने की ज़रूरत है, क्यों कि असावधानी में वाहनों के फिसलने का डर रहता है।

छोटी-मोटी दुर्घटनाओं से वाहन के पिछले भाग में गड्ढे पड़ जाते हैं । ये छुटपुट घटनायें दाईं ओर मुड़ते समय दूसरे वाहनों को पार करते समय हो जाती हैं। इस से कभी कभार बड़े हादसे भी हो सकते हैं; सो इस से बचना चाहिये।

वाहनों तथा मकानों जैसे अन्य चीजों के बीच की संकरी जगहों से भी गाड़ी को निकालना खतरे से खाली नहीं है। वाहन की दोनों ओर सुरक्षा को खाली जगह सदा रखनी चाहिये। आगे की गाड़ी से घनी बस्तियों 20 गज़ और खुली सड़कों पर 50 गज की दूरी दुर्घटना को उस समय के लिये रखना चाहिये, जब अगली गाड़ी को सहसा रुकना पड़ जाता है।

अरक्षित रेल पार करने के चौराहे, लापरवाह ड्राइवरों के लिये धोखे की टट्टी होती हैं। यह निश्चय करके कि कोई भी रेल बायें-दायें से नहीं आ रही है, ऐसे स्थान पार करने चाहिये।

हार्न से ब्रेकों का काम नहीं लेना चाहिये। बेकार हार्न बजाने से दूसरों के कान पकते हैं।

कुछों की यह धारणा होती है कि हार्न बजाने से आगे का यातायात साफ हो जाता है और घनी सड़क पर अच्छे वेग से चलाने का साहस कर सकते हैं। यह मतिभ्रान्ति है और जान लेवा हो सकती है।

घबड़ाहट या अत्यन्त आत्म विश्वास के साथ चलाना भी खतरनाक़ है जब कि हाथ पैर फूला हुआ ड्राइवर वाहन को दायें-बायें मोड़ कर यातायात को खतरा पैदा कर सकता है, अति साहसी ड्राइवर हर जगह साहस दिखाना चाहता है और दूसरों को खतरनाक़ सिद्ध हो सकता है। साधारणतया अति साहसी ड्राइवर ही दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं।

किसी दूसरी गाड़ी को आगे निकलते समय गति तेज करने पर अगली गाड़ी से टकरा जाने की संभावना रहती है। आगे निकलने वाली गाड़ी को सुरक्षित निकलवाना हरेक ड्राइवर का कर्तव्य है और साफ़-साफ़ यह संकेत देना चाहिये कि दूसरा गाड़ी अब निकाल ले। इसी प्रकार, जब दूसरे ड्राइवर से गाड़ी आगे बढ़ने का संकेत नहीं हो, अपने वाहन को आगे बढ़ाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये।

रख-रखाव : वाहनों का रख-रखाव बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। रख-रखाव में तनिक असावधानी प्राण लेवा हो सकती है। फिर चतुर से चतुर ड्राइवर भी कुछ नहीं कर सकता। अपना जीवन तो अलग, वह दूसरों के जीवन को भी खतरा हो सकता है। मार्ग में चलाने से पहले, हर ड्राइवर को वाहन की पूरी-पूरी जांच करना बहुत ज़रूरी है।

आवश्यक होने के नाते, ब्रेक और स्टीयरिंग (चक्र चालन) की ठीक-ठीक जाँच और व्यवस्था होनी चाहिए। सही ब्रेकों के बिना, वाहन चलाना मौत को निमंत्रण देना है; तब तो वह वाहन बिना लगाम के पशु की भाँति हो जाता है। यह सुनिश्चित करना चाहिए कि टायर में कोई खराबी तो नहीं है और हवा का दबाव हर समय एक सा है। विंडस्क्रीन (आगे का वातरोधक शीशा) साफ़ रखना चाहिए और उसके वाइपर (प्रोंछ) को मुख्य कर वर्षा ऋतु में क्रियाशील रखना चाहिए। हार्न को भी ठीक रखना चाहिए। पीछे दिखाने के शीशे (रेअर व्यू मिरर) को इस प्रकार लगे रहना चाहिए कि पीछे का यातायात उसमें साफ़ साफ़ दीखता रहे। साइलेंसर (मूककारी) की भी जाँच कर लेनी चाहिए कि वह कहीं बहुत आवाज़ तो नहीं दे रहा है या अत्यधिक धुआँ तो नहीं फेंक रहा है। सब बत्तियों को ठीक से काम करना चाहिए और डिपर (मध्यम प्रकाश की बत्ती) को कभी नहीं भूलना चाहिए। अन्त में, आराम से चलाने के लिए ड्राइवर के बैठने की सीट ठीक ठीक लगी होनी चाहिए।

वाहन की समय-समय पर सेवा होनी चाहिए और नियमित समय पर तेल बदलना

चाहिए। यदि तनिक भी मरम्मत होनी हो, तब और अधिक खराबी से बचाने के लिए उसको तुरन्त ठीक करना चाहिए। शुरू-शुरू की असावधानी से, बड़ी खराबी पैदा हो सकती है जिससे कभी दुर्घटनायें हो सकती हैं।

चेतावनी : मोटर-चालन परीक्षा में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण होने के ठीक बाद का समय ही शायद ड्राइवर को सब से खतरनाक़ वक़्त होता है । सीखते समय के नियंत्रण हटा लिए जाते हैं और नया चालक तेज़ चलाने को पसन्द करता है। यह मनहूस आनन्द भयावह स्थिति पैदा कर सकता है। यदि कोई ड्राइवर यह समझ ले कि चलाने की सच्ची शिक्षा तो चालन परीक्षा के उत्तीर्ण होने के बाद ही शुरू होती है, तब वह इस धारणा की महती त्रुटि से बच जायेगा कि चलाने में कुछ यातायात के नियमों का पालन करने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

नवसिखिए या अनुभवी, सभी ड्राइवरों को तेज चलाने और साहस दिखाने के प्रलोभन से बचना चाहिए। यह याद रखना चाहिए कि तेज गति से चालन प्रतिक्रिया में शीघ्रता पाती है। अधिकांश दुर्घटनायें विहित गति सीमाओं के अनुसार चलाने से टल सकती हैं। सभी घटित होती हुयी बातों का निरन्तर सूक्ष्म निरीक्षण तथा आगे मार्ग पर होने वाली दुर्घटनाओं की संभावनाओं को ध्यान में रखना एवं उसी के अनुसार वाहन चलाना, एक उत्तम चलाने की क्रिया का सार है।

सुरक्षित चालन पर शाबाशी

श्री एस. एम. घोष ने इन दो ड्राइवरों को बिना दुर्घटना के चालन पर शाबाशी दी है : 1. हे० कां० शिवाजी पाण्डेय (20 बटा०) पहाड़ी क्षेत्र में 40,000 कि० मी० और 2. हे० कां० नेतराम (4 बटा०) मैदानी क्षेत्र में 60,000 कि० मी० ।

केरल और उसकी देवियाँ

ले०—हवलदार रमाशंकर पाण्डेय

केरल प्रदेश दक्षिण भारत की अन्तिम सीमा पर अरब सागर के तट पर बसा हुआ है । इसके उत्तर में कर्नाटक तथा पूर्व व दक्षिण में तामिलनाडु की सरहद मिलती है। यह प्राकृतिक सौन्दर्यों से परिपूर्ण नारियल के पत्तों के सघन छाये से ढका अपने दामन में दर्शनीय स्थलों को लिये हुये मन्द मन्द मुस्काता हुआ केरल राज्य है। इसकी राजधानी तिरुवन्तपुरम (त्रिवेन्द्रम) है। इसका क्षेत्रफल 15,002 बर्ग मील है तथा यहाँ की जन संख्या लगभग 2 करोड़ 13 लाख है। यहाँ की भाषा मलयालम है, जिसमें

संस्कृत भाषा के शब्दों का समावेश है। यहाँ की मुख्य उपजे हैं धान, नारियल, केला तथा काजू। मोज़ाइट, कटाइल, जिरकान ; इल्मेनाइट आदि यहाँ के प्रमुख खनिज हैं तथा यहाँ के मुख्य उद्योग हैं—रबड़, चाय, रसायन, कागज, ईटं व टाइल बनाना और शार्क (मछली विशेष) का लिवर पायल (जिगर का तेल)।

यहाँ की अधिकांश जनता शिक्षित है , और केरल से बाहर भारत में ही नहीं, बल्कि संसार के प्रमुख देशों में नौकरी करती है । अधिकांश नवयुवक क्लर्क और नवयुवतियाँ नर्स बन कर सेवा करना अधिक पसन्द करती हैं। यहाँ के नवयुवक व नवयुवतियाँ संकीर्ण विचारों के घेरे से काफी बाहर बढ़ हुये हैं । वे विवाह-सूत्र में स्वतः ही उस समय बधते हैं, जब दोनों ही जीविकोपार्जन के योग्य स्वतंत्र रूप से हो जाते हैं। वैसे भी, विवाह-सूत्र में बँधने के लिये इनकी आयु 25-30 के बीच होती है।

भारत के सभी राज्यों में "संयुक्त परिवार" की परम्परा है। इस परम्परा को निवाहने में, परिवार के लड़के बहुत कुछ कुर्बानी देते हैं। परिवार में पिता की आय का साधन समाप्त होते ही या उसके वृद्ध होने पर, ज्येष्ठ पुत्र साधारणतया अपने पिता के आर्थिक व सामाजिक दायित्वों को अपने ऊपर लेता है और जीविकोपार्जन के लिये, अथक परिश्रम करके अपने बूढ़े माँ-बाप व छोटे भाई-बहन का भरण-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, सगाई-विवाह का प्रबंध करता है।

किन्तु केरल राज्य में, इससे सर्वथा भिन्न अनोखी प्रथा है। वहाँ की लड़कियों का त्याग भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में अनोखा उदाहरण है। उनके त्याग की कोई सीमा नहीं है, कोई तुलना नहीं है । संयुक्त परिवार के नवयुवकों का बलिदान हम महान बताते हैं, किन्तु केरल की इन देवियों के सामने, उनका त्याग नगण्य लगता है। सचमुच में, इन्हें भारत की साक्षात् देवियाँ कहकर पुकारा जाना चाहिये।

केरल प्रदेश में, यदि लड़की बड़ी है और उसके माँ बाप बूढ़े हैं तथा यदि आमदनी का कोई ज़रिया नहीं है, तब ऐसी हालत में बहन व बेटी अपने पिता का दायित्व अपने ठीक उसी प्रकार ले लेती है, जिस प्रकार अन्य राज्यों में संयुक्त परिवार में ज्येष्ठ पुत्र लेता है। वही तुरन्त जीविकोपार्जन की व्यवस्था करती है; उस जीविका से परिवार का भरणपोषण तथा शिक्षा-दिक्षा की व्यवस्था करती है।

आधुनिक युग में, जीवन का परम लक्ष्य, वैभव ऐश्वर्य मान कर नवयुवक विवाह-सूत्र में बध जाते हैं; चाहे उन्हें अपने वृद्ध माँ-बाप के व्यय में कटौती क्यों नहीं करनी पड़े ; भाई-बहिन की शिक्षा में कमी क्यों न करनी पड़े । परन्तु केरल राज्य में, इस प्रकार के दायित्व की वेदी पर वहाँ की देवियाँ तब तक विवाह-सूत्र में बधने की कल्पना नहीं करती, जब तक उसके छोटे भाई-बहिन स्वतंत्र रूप से जीविकोपार्जन नहीं कर पाते हैं। ऐसा करने में, कभी कभार तो विवाह योग्य अवस्था तक निकल जाती है। लेकिन वे अपने प्रियतम का घर बसाने की सोंच ही नहीं सकती हैं, क्यों कि ऐसा करने से, वे प्रियतम के घर चली जायेगी और उसके सर्वस्व पर उसके पतियों का ही आधिपत्य हो जायेगा । क्यों कि उसको माता-पिता का दायित्व निबाहना है और छोटे भाई बहिनों की देख-रेख करनी है, वे बेचा विवाह की इच्छा का सदैव दमन

करती हैं। भले ही इसमें उन्हें अपने पूर्ण यौवन का बलिदान क्यों न करना पड़े, लेकिन ये देवियाँ अपने पुनीत दायित्व से मुख नहीं मोड़ती हैं।

यदि संयोगवश कोई नव युवक किसी देवी से विवाह का प्रस्ताव रखे भी, तब वह अपनी दायित्व-कथा समझा कर विवाह से इन्कार कर देती है या वह प्रेमी को इस बात पर राज़ी कराती है कि अपने द्वारा उपार्जित धन से वह अपने माता-पिता भाई बहनों की मदद करती रहेगी जब तक कि उसका परिवार आत्म-निर्भर न हो जाये।

हालांकि इस भौतिक युग में पति-पत्नी के दाम्पत्य सुख को ही सर्वोत्तम माना जाता है; परन्तु केरल राज्य की इन देवियों के इस महान त्याग को देख कर ऐसा महसूस होता है कि ये देवियाँ आधुनिकता से परे, सच्चे अर्थों में भारत की पूजनीय देवियाँ हैं। इनके इस महान त्याग पर भारत को गर्व है। दाम्पत्य-सुख को ही जीवन का परम सुख समझने वाले विश्व को ये देवियाँ ललकार ललकार कर कह रही हैं की संयुक्त परिवार के भरण-पोषण के दायित्व निबाहने को वह हम से सीखे।

धन्य है भारत देश और धन्य है उसके प्रांगण में बसा हुआ सुन्दर केरल राज्य और उसमें निवास करने वाली आत्म-त्याग की मूर्तियाँ वहाँ की देवियाँ !

पहेलियाँ

[प्रस्तोता—का० सुरेन्द्र नाथ मिश्र, 17 बटा०]

सर पर मैं किर-किर चढ़ धाऊँ।
बदन खोल बिजली बन जाऊँ।
शत्रु अगर चाहे हों कितने;
भोंक भोंक कर मार गिराऊँ ॥1॥
मेरा रूप गेंद है जैसा।
चलूँ आग का दरिया ऐसा।
भून भून कर रहजन डाकू,
को खा जाऊँ कच्चा कैसा ॥2॥
राय अगाड़ी लख रिपु भागें।
मेरे फल भूख प्यास गँवावें।
जिसे खिलाऊँ अपनी गोली,
सोये वे फिर कभी ना जागें ॥3॥

1. किरण (संगीत) 2.बन्दुक की गोली 3. रायफल





दिल्ली में आये बवंडर द्वारा विनाश लीला के बाद, प्रशासन का हाथ बँटाते हुये के०रि०पु० बल के जवान

[रजिस्टर्ड नं० 25627/74]

युप केन्द्र गौहाटी में बच्चों को खेल पुरस्कार
प्रदान करती हुयीं श्रीमती के० एल० दुबे

मल्लयोधा ईश्वर सिंह





मल्लयोधा सन्तराज



★ क्रै प ल र ★

● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक–हिन्दी संस्करण]

30 सितम्बर, 1978] खण्ड VII अंक 4 [8 आश्विन, 1900

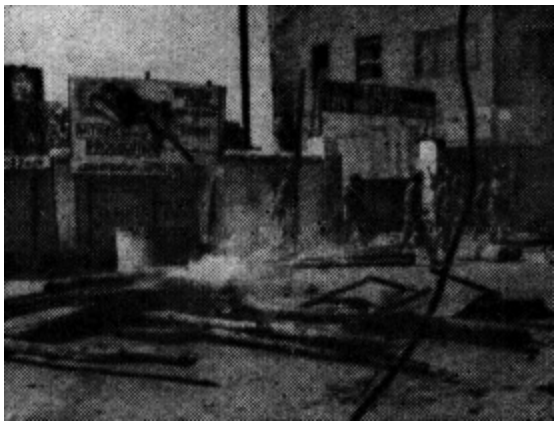


निवर्तमान महानिदेशक की विदाई

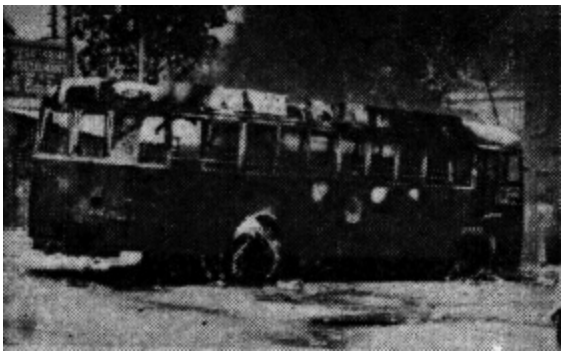


निवर्तमान महानिदेशक श्री एस० एम० घोष को विदाई देते हुए के० रि० पु० बल के जवान

हैदराबाद के दंगों के दो विभीषक दृश्य



रीन बाज़ार के मार्ग में जलते लट्ठे



एक भस्मीभूत बस



क्रै प ल र

हिन्दी संस्करण द्वैमासिक

खण्ड VII
अंक 4

30 सितम्बर 1978]
[8 आश्विन 1900

मुख्य सम्पादक : **एच० एस० सेठी**

छाया चित्रकार : शिवकुमार

हिन्दी सम्पादक :
जे० एस० शर्म्मा

I. रिपोर्ताज :

(क) भाव-भीनी विदाई

(ख) गुंडेराज्य से हैदराबाद का छुटकारा

(ग) 10 बटालिनन का वार्षिकोत्सव

II. लेख :

(i) मिज़ोरम में राजद्रोह, ले०—ले० ज० के० पी० कैंडेथ (रि०)

(ii) कौन गुण नेता बनाते हैं, ले०—श्री आर० के० ओहरी

(iii) के० रि० पुलिस कोई बन्देरी नहीं, ले०—श्री टी० नाथ

(iv) उ०प्र० की सशस्त्र पुलिस के साथ मेरे वे दिन, ले०—श्री निगमेन्द्र सेन सक्सेना, भू० पू० महानिदेशक

(v) पुलिस को चुनौती, ले०–श्री एम० एस० बावा, उपनिदेशक (परिचालन)

III. कहानी–नौ दो ग्यारह, ले—श्री जे० एस० शर्म्मा, हिन्दी सम्पादक

IV. कविता—आज़ादी का त्योहार, र०—श्री आर० सी० पारस नाथ, 53 बटालियन

V. क्रीडा क्षेत्रे

VI. गौरवगाथा—पदक, प्रशंसा तथा पुरस्कार

VII. विज्ञान के चढ़ते चरण

VIII. स्वास्थ्य सन्देश—योग द्वारा चिकित्सा ले०—श्री जे० एस० शर्म्मा, हिन्दी सम्पादक

IX. विविध :

(i) पहेलियाँ

(ii) सूक्तिसुधा

(iii) यह भी खूब रही



शुभागमन ! स्वागतम् !!

महानिदेशक का पदभार संभालने पर, श्री आर० सी० गोपाल का महानिदेशालय में पदार्पण

गौरव गाथा

विशिष्ट तथा सराहनीय पदक

स्वाधीनता—दिवस 1978 के अवसर पर, भारत सरकार ने के०रि०पु० बल के निम्न लिखित 15 सदस्यों को विशिष्ट तथा सराहनीय सेवा के लिये 'पदक' प्रदान किये है : —

I राष्ट्रपति-विशिष्ट-सेवा-पदक (1)

1. श्री जे. एफ० रिवीरो, उपनिदेशक (प्रशासन)।

II पुलिस सराहनीय सेवा पदक (14)

1. श्री आर० के० त्रिवेदी, उप महानिरीक्षक, कलकत्ता 2. श्री के० आर० के० प्रसाद, वरिष्ठ स्टाफ अफसर से० IV 3. श्री गुरु वचन सिंह रणधावा, सहायक कमांडैंट (36 बटा०) 4. डी वाई० एस पी० रघुवीर सिंह (44 बटा०) 5. डीवाई० एस० पी० मोहन सिंह (10 बटा०) 6. सू० लालू चन्द (ग्रुपकेन्द्र रामपुर) 7. सू० लाल चन्द (2 सिग० बटा०) 8. स० इ० राजेसिंह (27 बटा०) 9. स० इ० लालचन्द (8 बटा०) 10. स० इ० उम्मेद सिंह (1 सिग० बटा०) 11. हे० का० बिहारीलाल (ग्रुपकेंन्द्र, नीमच) 12. हे० का० ए. कुरूपइहा (ग्रुपकेंन्द्र, हैदराबाद) 13. हे० का० शिउराम (16 बटा०) तथा 14. ना० कूरिया सिंह (ग्रुपकेंन्द्र, गाँधी नगर)।

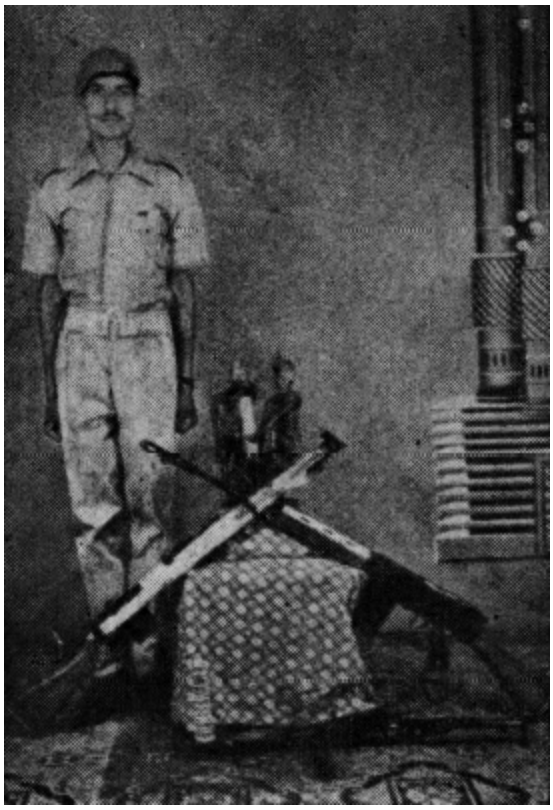
दिल्ली में डाकू को पकड़ाई

दिनांक 19 जून 78 को, दो सशस्त्र डाकू दिल्ली के सदर बाज़ार क्षेत्र में किसी व्यक्ति से 335 रु० छीन कर भाग निकले, किन्तु 21 बटालियन के जवानों ने तुरन्त पीछा किया और उनमें से एक मुहम्मद रफीक़ को पकड़ने में सफल हुये, पर दूसरा बच भागा।

जम्मू में उचक्के की पकड़

जम्मू में, 23 जून 1978 को जब का० गोपीचन्द (2 बटा०) की पत्नी अन्य परिवारों के साथ एक अस्पताल को जा रही थी, तब अवतारसिंह नामक कुख्यात उचक्के ने उसके गले की ज़ंज़ीर खींचनी चाही। का० एस० एस० प्रधान (जो साथ में था) तुरन्त अभियुक्त पर झपटा और पकड़ कर, उसे स्थानीय पुलिस को सौंप दिया।

पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता में पुरस्कार



कांस्टेबल राधेश्याम

• के० रि० पु० बल के कांस्टेबल राधे श्याम ने अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी प्रतियोगिता 1977 में काष्ठ माडल में प्रथम तथा तृतीय स्थान पाये। उसकी कलात्मक बुद्धि का परिचय 1976 में लगा, जब उसने एक हल्की मशीन गन वाले का माडल बनाया; उससे आकृष्ट हो कर श्री बलजीत राय सूर, तत्कालीन उपमहानिरीक्षक कोहिमा ने 75 रु० का पुरस्कार उसे दिया था।

• इसी ड्यूटी प्रतियोगिता की कल्याण प्रदर्शनी में पुरस्कार पाने वाली दो जवानों की पत्नियाँ हैं —

1. श्रीमती जगदम्बा देवी, ग्रुप केन्द्र नीमच तथा हरबाई देवी, ग्रुप केन्द्र त्रिवेन्द्रम । श्रीमती हरबाई देवी ने बुने थैले पर प्रथम पुरस्कार पाया तथा श्रीमती जगदम्बा देबी को बुनने की कुशलता पर पारितोषिक मिला।

घायलों की सेवा-शुश्रूषा

दिनांक 28 जून 78 को, मणिपुर में माओ के पास एक बस उलट गई। चार यात्री बुरी, भाँति घायल हो गये। 27 बटालियन के जवान पास की चौकी से घटनास्थल पर जा दौड़े । प्राथमिक चिकित्सा देकर उन्होंने घायलों को अस्पताल पहुँचाया।

दिल्ली की भयंकर बाढ़ में योगदान

दिल्ली में ऐसी भयंकर बाढ़ हाल में कभी नही आई, जैसी सितम्बर 78 के शुरू में

आई। उत्तरी क्षेत्र की सभी शानदार कालोनियाँ जल-निमग्न हो गईं; यमुना के चारों पुल अकारथ हो गये। यमुनापार की बस्तियों से सम्बन्ध टूट गया। जन-जीवन अस्त व्यस्त हो गया। लाखों मनुष्य बेघर हो गये। कितनों के तो प्राण ही चले गये। करोड़ों रुपये की हानि हो गई।

ऐसे अभूतपूर्व संकट की स्थिति में, के० रि० पु० बल दिनरात्रि सहायता, सुरक्षा तथा सेवा के कार्य में जुटा रहा। इसकी आठ बटालियनों को पलक मारने तक का अवकाश नहीं मिला। उनके ही प्रयत्नों के कारण, ढाँसा बाँध बच गया और वह पिछले वर्ष की सी विनाश-लीला नहीं कर पाया।

ग्रुपकेन्द्र खानपाड़ा में बैंक सुविधा

भारतीय स्टेट बैंक की दिसपुर शाखा की उपशाखा का उद्घाटन, 30 मई 78 को ग्रुप केन्द्र खानपाड़ा में श्री लक्ष्यधर चौधरी, शिक्षामन्त्री असम द्वारा किया गया। उन्होंने कल्याणकारी योजना के अन्तर्गत ऋण से खरीदी हुई सिलाई की मशीनों को के० रि० पु० बल के जवानों में वितरित किया और बैंक द्वारा दी गई सुविधाओं का पूरा-पूरा लाभ उठाने का आग्रह किया। बाद को, वह परिवार कल्याण केन्द्र में गये और वहाँ पर विविध निर्मित वस्तुओं को देखकेर सन्तुष्ट हुये।

निर्विघ्न मोटर चालन की प्रशंसा

श्री एस० एम० घोष, महानिदेशक ने पहाड़ी क्षेत्रों में 40,000 कि० मी० निर्विघ्न मोटर वाहन चलाने के लिए इन तीन ड्राइवरों की प्रशंसा की है—1. ना० ओ० वी० शशिधरन (19 बटा०) 2. ना० बलराम (33 बटा०) और 3. का० मंगलसिंह (2 बटा०)।

पत्नी—यह तुम्हारा प्रश्न ही ग़लत है कि मेरे पति को क्या वेतन मिलता है, क्योंकि वे लाकर सब मुझे ही देते हैं। फिर मिलने को उन पर रह ही क्या जाता है ?

मिज़ोरम में राजद्रोह

ले०—ले. जर्नल के. पी. कैंडेथ (रि०)

जो लुशाई हिल्स असम का सब से अधिक दक्षिणी ज़िला था, 1 सितम्बर 1954 से उसका नाम मिज़ो ज़िला हो गया। पश्चिमी सीमा पर बंगला देश, पूर्व में बर्मा स्थित होने के कारण, यह अत्यन्त सामरिक महत्त्व का स्थान है। इसमें अनेकों पहाड़ियाँ हैं, जिन्हें उत्तर से दक्षिण तक फैली हुयी गहरी घाटियाँ अलग करती हैं। 1971 की जनगणना के अनुसार, लगभग 21,00 कि० मी० वर्ग के क्षेत्रफल की इस भूमि में 3.4 लाख लोग

रहते हैं, जिनमें 87 प्रतिशत इसाई हैं। इसका प्रशासन एक उपआयुक्त से चलता था। किन्तु स्वाधीनता तक और उसके बाद भी लम्बे समय तक, मिज़ो को उनके हाल पर छोड़ दिया गया तथा अन्य लोगों से मिज़ो लोग की विलगता घटने के स्थान पर बढ़ती गयी। इस प्रकार जैसा कि आजकल इसे पुकारा जाता है, मिज़ोरम एक पश्चजल रह कर भारतीय राजनैतिक जीवनधारा से अछूता रहा और मैदानों के अन्य लोगों से क्या जातिवृत, क्या सांस्कृतिक, क्या धार्मिक तथा क्या भाषाई—सभी बातों से अपने आप को भिन्न समझता रहा।

यहाँ की जलवायु बड़ी आर्द्र है, क्योंकि वार्षिक वर्षा वर्षभर में लगभग 254 से० मी० होती है। 435 कि० मी० लम्बी बर्मा सीमा से 25 मीलों के अन्दर तक जनजातियों का घूमना-फिरना बिना पासपोर्ट और विसा (पारपत्र) के प्रतिबन्धों के निर्विरोध था । क्योंकि आदिवासी सीमा की दोनों ओर रहते थे, इसलिये असमियों के मुकाबले वर्मा से उनके घनिष्ठ सम्बन्ध थे।

मोटे तौर पर, 1948 तक यह निर्धन विरल बसा तथा पिछड़ा क्षेत्र शान्ति पूर्ण था और इसके निवासी अपने परम्परागत नियमों के अनुसार रहते थे; पर भारतीय स्वतंत्रता प्रभाव डाले बिना नहीं रही और नये विचार प्रवेश करने लगे। 1948 में मिज़ो कामन पीपिल्स पार्टी ने अपने मुखियों के अत्याचार से मुक्ति पाने के लिये, एक आन्दोलन छेड़ा और इसकी प्राप्ति असम विधान सभा द्वारा पारित एक अधिनियम से हुई, जिसने मुखियागीरी ख़त्म कर ज़िला परिषदों का निर्माण किया।

इसी बीच में, अपेक्षाकृत अधिक राजनीति में जागरूक निकटवर्ती नागालैंड में, राजद्रोह की अग्नि प्रज्वलित हो गई और मिज़ों उन घटनाओं से स्वाभाविक रूप से प्रभावित हुये। उन्होंने कृषि, संचार, वाणिज्य तथा शिक्षा में वहाँ पर होती हुयी प्रगति को देखा तथा नागाओं को दी गई छूटें देखीं। तब उन्होंने अपनी दुःखद दुर्दशा से तुलना की। 1959 के महा दुर्भिक्ष ने तो और भी इसमें आग लगाने का काम किया। दुर्भिक्ष वहाँ नियमित रूप से आते थे और वे दो प्रकार के होते थे—1. पिंगतन (छोटा अकाल) तथा माउतम (बड़ा दुर्भिक्ष)। माउतम बाँसों के फूलने पर होता है, जो 50 वर्ष में एक बार आता है और किसी असाधारण कारण से, चूहों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती है। अगले वर्षों में ये चूहे सभी फसलें और भोजन भंडारों को चट कर जाते हैं, जिससे अकाल पड़ता है। 1959 के दुर्भिक्ष तथा इस पूर्व दृष्टव्य संकट से सुलझने में, प्रशासन की शिथिलता ने मिज़ो नेशनल फैमीन फ्रंट (मिज़ो राष्ट्रीय दुर्भिक्ष मोर्चे) का गठन तथा उसके नेता लालडेंगा का उदय देखा।

लालडैंगा (जो सेना सिगनल कोर में हवलदार था) सेवा से अवकाश पाने पर ऐज़ल जिला परिषद में एक लेखपाल हो गया। धन के अपहरण के कारण, उसे उस पद से निकाल दिया गया। नौकरी छूटने पर, उसने मिज़ो कल्चरल आर्गेनाइजेशन (सांस्कृतिक संगठन) बनाया और **"मिज़ोरम मिज़ो के लिये"** नामक आन्दोलन छेड़ा, जिसने युवकों को आकर्षित किया। उसे खुश करने लिये, सरकार ने 1959 में दुर्भिक्ष राहत कार्यों में उसकी मदद मांगी। इससे उसकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी और

1961 तक वह मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे का पक्का नेता मान लिया गया; यही मोर्चा, मिज़ो , राष्ट्रीय दुर्भिक्ष मोर्चे का उत्तरधिकारी था।

असम भाषा अधिनियम 1963 ने (जिसने असमी भाषा को एकमात्र सरकारी भाषा घोषित किया) लालडेंगा को छूटें मांगने के लिये उत्तम अवसर दिया। यह घोषित कर कि उस अधिनियम ने मिज़ो की सभ्यता खतरे में डाल दी है, उसने सभी पहाड़ी क्षेत्र के प्रतिनिधियों से त्याग पत्र देने को कहा और उप चुनावों में मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चा ने सर्वत्र मोर्चा मारा। इधर दिसम्बर 1963 को नागालैंड को राज्य का दर्जा मिल गया। इससे मिज़ो को यह विश्वास हो गया कि सरकार दवाव में ही आकर अधिक स्वायत्ता तथा राज्य का रुतवा देगी। सो मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे के एक मनोनीत लालमा वीवा ने शिलांग स्थित पाकिस्तान उच्च आयोग के अधिकारियों से साँठगाँठ की। लालडेंगा ने भी सम्पर्क स्थापित कर पूर्वीय पाकिस्तान का दौरा किया। वहाँ से लौटते समय वह पकड़ा गया और जेल में डाल दिया गया, परन्तु असम मुख्य मंत्री से खेद प्रकट कर उसने मुक्ति पाली। जेल से छूटते ही, उसने एक विशाल प्रदर्शन किया तथा मिज़ो के लिये **'पूर्ण स्वाधीनता'** का नारा लगाया।

जम्मू-कश्मीर में सैनिक विद्रोह के फलस्वरूप, वहाँ से लौटते हुये असंतुष्ट जवानों से लालडेंगा ने सम्पर्क किया और उन्हें मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे में सम्मिलित होने को फुसलाया। अब उसने और उग्र रूप धारण किया और स्वयं सेवकों को भर्ती करना शुरू कर दिया। सितम्बर 1965 में, वह मिज़ोरम का अध्यक्ष बन बैठा और पूर्वीय पाकिस्तान को प्रशिक्षण के लिये उसने पहला जत्था भेजा।

1 मार्च 1966 को, मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार ने स्वतंत्रता घोषित की तथा साथ में, सरकारी खज़ाने तंगलाई व एज़ल आदि में प्रतिष्ठानों और कार्यालयों पर सशस्त्र छापे मारे। लगभग छै महीने तक सेना की दौड़ धूप ने स्थिति पर काबू पा लिया। किन्तु लालडेंगा सहित, राष्ट्रीय मोर्चे के अधिकांश लोग पूर्वीय पाकिस्तान बच भागे। मिज़ो को खुश करने के लिये, अब सरकार ने सड़कें बनाना, स्कूल खोलना सहकारी समितियाँ बनानी शुरू कर दी तथा एक विकास योजना चालू की। जनवरी 1967, अगस्त 1968 तथा अगस्त 1971 में, उसने राजक्षमा की श्रृंखला को घोषित किया; फलस्वरूप, 700, 900 और 700 राजद्रोहियों ने क्रमशः आत्मसमर्पण किया। राजक्षमा की इन अवधियों में, सुरक्षा दलों की कार्रवाइयाँ रोक दी गईं; परन्तु वे फिर शुरू की गईं। इस प्रकार, 1967 से 1971 तक के समय में रुक-रुक कर कार्रवाइयाँ होती रहीं। सुरक्षा दलों की सफलता का मुख्य करण यह था कि नागालैंड से भिन्न, यहाँ शुरू से ही काफ़ी बल लगा दिया गया और मिज़ो विद्रोहियों के साथ पूर्व से ही कठोर वर्ताव किया गया, ताकि आन्दोलन वहाँ जड़ नहीं पकड़ सके।

दिसम्बर 1971 में, भारत-पाक युद्ध छिड़ा और विद्रोही मिज़ों को उनकी इच्छा के विरुद्ध पूर्वीय पाकिस्तान की ओर से लड़ने को वाध्य किया गया। युद्ध बन्द होने तथा बंगला देश का राज्य वहाँ बनने पर, विद्रोहियों से प्रश्रय व प्रशिक्षण की सुविधायें तथा शस्त्रास्त्रों का स्त्रोत छिन गया। इस भय से कि कहीं उसकी सीमा पर बसे मिज़ो ऐसी

हो आज़ादी को मांग नहीं कर बैठें, बर्मा ने उन विद्रोहियों को अपने यहाँ नहीं बसाया। अब कहीं भी जाने को स्थान नहीं पाकर, उन्हें मिज़ोरम में लुक छिप कर घुसना पड़ा।

यहाँ उन्होंने पुनर्गठन, नये रंगरूट भरती करना तथा जनता से सहयोग मांगना प्रारंभ कर दिया। बंगला देश में उनका अड्डा छिन जाने पर, अब वे चीन से मदद मांगने लगे। 1972 में, चीन में एक जत्था भेजा गया, जो प्रशिक्षण के बाद, अत्यन्त धनराशि, गोलाबारूद व हथियारों को प्राप्त कर 1974 में लौटा। 1975 तक का समय उन्होंने सुगठित और अखंडित होने में लगाया तथा जनवरी 1975 में उन्होंने सरकार से लोहा लेने के योग्य स्वयं को पाया। अतः 1974 के अन्त में **"मिजोरम छोड़ो की चेतावनी"** सभी ग़ैर मिज़ों को दी। 1975 में उपराज्यपाल पर घात लगा कर घायल किया और फिर आई. जी., डी. आई. जी., तथा एस. पी. (महानिरीक्षक, उपमहारीक्षक व पुलिसाधीक्षक) का बध उन्हीं के कार्यालय में किया। किन्तु सुरक्षा दलों का निरन्तर दबाव तथा उस घात में भाग लेने वाले सभी की पकड़ धकड़ तथा उनका सफ़ाया बेकार नहीं गया।

पूर्वीय पाकिस्तान के शरणस्थल के ख़ास तौर से छिन जाने पर, मिज़ों के हौंसले पश्त हो गये तथा उस जत्थे ने भी (जो 1972 में चीन गया था) हर दम खदेड़े जाने पर 1975 में आत्म-समर्पण कर दिया; किन्तु इसके यह अर्थ नहीं हैं कि सभी विद्रोही निराश हो बैठे है। उनमें कुछ अब भी दृढ़ निश्चयी हैं, जो मिज़ो की स्वाधीनता में विश्वास करते हैं, जैसा कि इससे सिद्ध है कि 1975 में चीन को दूसरा जत्था भेजा गया है।

मिज़ो राष्ट्रीय मोर्चे के नेता खूब समझते हैं कि बिना व्यापक सहयोग के, बिना विश्राम के लिये शरण-स्थल के, (जहाँ वे विश्राम, स्वयं को फिर तरोताज़ा, ठीक और प्रशिक्षण पा सकें) तथा हथियार व गोला-बारूद देने वाले किसी मित्र शक्ति के वग़ैर, वे बाजी नहीं जीत सकते। वे यह भी खूब जानते हैं कि भारत और चीन के सम्बन्ध सुधर रहे हैं और अब यह कुछ ही दिनों की बात है कि जब चीन उन्हें मदद देना छोड़ देगा । ऐसे संकेत मिले हैं कि चीन मिज़ो और नागाओं से मधुर सम्बन्ध तोड़ रहा है। ऐसी स्थिति में; लम्बे संघर्ष के अर्थ होंगे स्थानीय जनता को कष्ट, जिसके कारण जनता विरुद्ध हो जायेगी तथा भीतरी सहायता मिलना भी बन्द हो जायेगी।

इन्हीं कारणों से लालडेंगा को सरकार से वार्तालाप करने को बाध्य होना पड़ा। उसके सामने समस्या यह है कि अपनी नाक बिना कटाये, वह कैसे आत्म-सम्पर्ण करे । अब सरकार के हाथ में सूत्रपात है, क्योंकि इस समय स्थितियाँ ऐसी हैं कि मिज़ोरम में राद्रजोह के सफल होने की आशा नहीं है और इस बात को लालडेंगा जानता हैं।

[इन्डियन एक्सप्रेस के सौजन्य से]

अध्यापक : तलवार के वार से भी तीखा कौन वार होता है ?

शिष्य : सर, अखबार।

नन्हे टिंकू के प्रवेश के समय अध्यापक : —क्या तुम जोड़ना जानते हो?
टिंकू : जी हाँ, मैंने पापा के दिये सभी पैसे गोलक में जोड़ रखे हैं।

कविता

आज़ादी का त्योहार-स्वतन्त्रता दिवस

(रचयिता—श्री आर० सी० पारसनाथ सिंह, 53 बटा०)

मातृभूमि की सेवा करना, जन्म सिद्ध सब का अधिकार !
मन के सागर में लाता वह, क्रान्तिभरे प्रलयंकर ज्वार ।
ऐसे ही ज्वारों से निकले, गाँधी-नेहरू और सुभाष ।
तजे जिन्होंने सभी देश-हित, मातुपिता-सम्पत्ति-निवास ।
गोरों का मुँह काला करके, भेजा सात समुन्दर लाद।
बढते रहे क़दम थे, जब तक, हुआ नहीं भारत आज़ाद ॥
आज़ादी के परवानों को, मर मिटने की थी बस चाह ।
उन्हें खिलाई मुँह की, पकड़े जो थे जुल्म-सितम की राह ।
याद करो उन बलिदानों को, जिनसे हम हैं आज स्वच्छन्द ।
फन्द दासता के कटने पर, मिटे दैन्य-द्विविधा-दुख-द्वन्द्व ॥
तोड़ गुलामी की ज़ंज़ीरें, दूर किए युग-युग के शूल ।
उजड़े हुए चमन को अपने, लहु से सींच, खिलाये फूल ।
बीच भँवर से नौका लाये, थे माता की वही निकाल ।
हम से कहा उन्होंने तब यह, 'रखना बच्चों ! इसे सँभाल ।'
आज उन्हीं की शपथ तुम्हें है, रखो वतन को तुम गुलज़ार ।
शत-शत नमन उन्हें, जो लाये, यह आज़ादी का त्योहार ।

पहेलियाँ

(प्रोस्तोता : दफ्तरी, गणेश प्रसाद, ग्रुप केन्द्र जम्मू)

पेड़ है खम्भा, डाल न होय ।
एक फूल में सौ फल होय ॥
बूढ़े बालक सब कोई खाये ।

मधुर स्वाद, कोइ नाम बताये ॥1॥
तन काला अरु चोंच मुड़ी रख,
पिये गगन का नीर ।
वारिस में वह पँख फुलाये,
पर निर्जीव शरीर ॥2॥
एक घोंसला, चार पपीहे,
अलग-अलग नहिं संग ।
बत्तिस के चंगुल में पड़ कर,
हो गये सब यक रंग ॥3॥

उत्तर 1. केला 2. छतरी 3. पान

सूक्ति सुधा

• डरपोक और दुर्बल लोग भाग्य के पीछे दौड़ता है; किन्तु वीर और साहसी व्यक्ति भाग्य की उपासना नहीं करते।

—रामायण

• सम्मानित पुरुष के लिए बदनामी मौत से भी बुरी है।

—गीता

• एक दूसरे की सहायता और रक्षा करना मनुष्यों का पहला कर्त्तव्य है।

—ऋग्वेद

कौन गुण नेता बनाते हैं ?

ले० श्री आर० के० ओहरी

सभी संगठनों में और मुख्यकर वर्दीधारी दलों में, नेतृत्व की गुणवत्ता एक महत्वपूर्ण भूमिका निवाहती है। ऐसा अनुभव किया गया है कि किसी भी संगठन की कार्यकुशलता तथा दक्षता पर अपने अधीनों में उत्साह भरने वाली नेता की योग्यता बड़ा प्रभाव डालती है।

संगठन की कार्यकुशलता सुधारने के अलावा, जन-प्रबन्ध में भी नेतृत्व प्रमुख काम करता है । एक प्रकार से, नेतृत्व तथा जनप्रबन्ध एक मुद्रा के दो पाश्र्व हैं। अच्छे

जनप्रबन्ध के लिये उत्तम नेतृत्व की सबसे अधिक ज़रूरत है। उत्तम नेतृत्व से अच्छा मनोबल, अच्छा अनुशासन और अच्छा सन्तोष मिलता है।

वर्दीधारी जवानों के प्रमुख नेता फील्डमार्शल मांटगोमरी ने नेतृत्व की परिभाषा इस प्रकार की है—'किसी लोक उद्देश्य के लिए नर-नारियों को इकत्रित करने की इच्छा तथा क्षमता तथा विश्वास जगाने बाला चरित्र" है।

अच्छे-बुरे-नेता—'नेतृत्व' शब्द के अर्थ नेताई करने और उत्साह भरने के ही सिर्फ हैं। नेतृत्व करने की योग्यता हमेशा अच्छे काम के लिए ही नहीं प्रयुक्त होती; अपराधियों तथा डाकुओं में भी नेता होते हैं। संक्षेप में, अच्छे नेता भी हो सकते हैं और बुरे भी। चंगेज़खां, हलाकू, हिटलर, मुसोलिनी, आदि बुरे नेताओं के उदाहरण हैं, जो स्वभाव से निर्दयी होते हुये भी बहुत अधिक अनुयायियों का नेतृत्व करते थे।

इसी प्रकार, नेतृत्व किसी एक व्यवसाय या अनुशासन से सीमित नहीं है। कितने ही सैनिक कमांडर, राजनीतिक नेता तथा उद्योगपति बड़े प्रसिद्ध हो गये हैं।

नेतृत्व के दो पहलू हैं—गुणवत्ता तथा कार्रवाई से सम्बन्धित योग्यता। गुणवत्तात्मक पहलू नेतृत्व की बुद्धिमत्ता पर बल देता है और कार्यात्मक पहलू प्रवन्ध क्षमता पर। उत्तम नेता वही है, जो सहयोगियों से और अपने चारों ओर के लोगों से आदर तथा श्रद्धा पाता है। यह समझ लेना चाहिए कि आदर तथा श्रद्धा मांगने से नहीं, बल्कि ठीक हुक्म चलाने से खुद मिलती है।

गुणवत्ता—यदि हम गुणवत्ता के पहलू का विश्लेषण करें, तब कुछ विरले गुण सफल नेताओं में हमें मिलते हैं। नेतृत्व के सर्वाधिक व्यापक गुण कुछ इस प्रकार हैं —

1. एक नेता का उत्तम व्यक्तित्व तथा रूप होना चाहिये। इससे अपने जनों में प्रेरणा देने में मदद मिलती है। उसे अन्य लोगों के मुकाबले तरजीह मिलती है; किन्तु एक उत्तम व्यक्तित्व केवल सुन्दर सूरत या रोबीली शक्ल ही नहीं है; उससे कहीं ज़्यादा है। संक्षेप में, किसी का व्यक्तित्व, उसके शरीर, दिमाग तथा आत्मा के गुणों का योग है; सिर्फ बाहरी सूरत-शक्ल नहीं। वर्ना, फिल्मी सितारे ही अच्छे नेता होते।

2. उसे स्पष्टवादी, सत्यसंध और ईमानदार होना चाहिए। इन्हीं गुणों से वह अपने अनुयायियों का चहेता बनेगा।

3. उस पर कुछ ध्येय, और अच्छा हो यदि कोई आदर्श हो, जिससे लोगों को प्रेरणा दे सके।

4. उसमें स्थिति तथा मनुष्यों की अच्छी परख होनी चाहिए। उसमें लोगों के पहचानने की योग्यता होनी चाहिए और अपने अधीनस्थों के गुणों तथा प्रतिभाओं के जानने की दक्षता होनी चाहिये।

5. उसे निस्वार्थ और कभीकभार तो आत्मबलिदानी होना चाहिये। स्वार्थ परायण कभी उत्तम नेता नहीं हो सकते। यदि कभी वे नेता बन भी जायें, तब शीघ्र उनका भाण्डा फूट जायेगा।

6. उसमें क्षमा करने का गुण होना चाहिए। जो लोग कितने ही उत्तम गुण वाले हों, पर यदि वे अत्यन्त क्रूर हैं, बहुत ही शकी हैं तथा छोटी ग़लतियों को भी माफ़ नहीं करते हैं, तो वे उत्तम नेता नहीं बन सकते। स्पष्टवादी तो जन्मजात नेता होते हैं। शकी अधिकारी या मैनेजर सरलता से नेता नहीं स्वीकृत होते हैं।

7. उसका अपने जनों से अच्छा सम्पर्क होना चाहिए। दुर्भाग्य से, अनेकों वर्दीधारी दलों में संचार एक ही मार्ग से चलता है। निम्न लोगों पर अधिकारियों के निदेश शीघ्र पहुँचते हैं; किन्तु कठोर अनुशासन के कारण, इन आदेशों की निम्न-स्तरों द्वारा की गई प्रतिक्रियायें या उनकी समस्यायें सरलता से बड़े अफसरों के पास नहीं पहुँच पाती हैं। एक उत्तम नेता को अपने जनों से दोनों ओर की संचार व्यवस्था रखनी चाहिए। उसे अपने लोगों को जानना चाहिए और उसके लोग, उसे भी जानें।

8. उसमें घटनाओं को समझने तथा उन पर हावी होने की क्षमता होनी चाहिये। उसके लिए अथक उमंग तथा ओजस्विता होनी चाहिए।

9. उसे शांत, सौम्य तथा अपने लोगों के लिए वफ़ादार होना चाहिये। एक शांत व्यक्ति उत्तम नेता होता है, जबकि एक चिड़-चिड़ा व्यक्ति, बुरा नेता होता है। गहरी और सच्ची ईमानदारी, चाहे किसी सिद्धांत के प्रति हो या अपने जनों के प्रति हो, एक उत्तम नेतृत्व की पहचान है।

10. समय पर उत्तम निर्णय लेने की उसमें क्षमता हो। जो व्यक्ति समय पर निर्णय नहीं ले सकता या जो ढुलमुल दिमाग रखता है, तब वह अपने दल के सदस्यों में विश्वास नहीं पैदा कर सकता। ऐसा मनुष्य कभी उत्तम नेता नहीं बन सकता।

नेतृत्व के गुणों की यह सूची किसी भी प्रकार पूरी नहीं है; और भी गुण जोड़े जा सकते हैं। वास्तव में, नेतृत्व अनेक गरिमा वाली वहुरूपणी कला है। ऐसा ज़्यादातर विश्वास किया जाता है कि मनमोहक व्यक्तित्व नेतृत्व की सर्वोपरि विशेषता है। किन्तु अब्राहम लिंकन तथा महात्मा गांधी की कोई लुभावनी आकृति नहीं थी। यह बताता है कि मनमोहकता मात्र से कहीं ज़्यादा नेतृत्व को कोई और चीज़ चाहिए।

फील्डमार्शल मान्ट गोमरी ने नेतृत्व की इन सब खूबियों को चार विशेषताओं में बांटा है, जिन्हें उसने आधारभूत गुण बताया है। ये इस प्रकार हैं—

1. सतर्कता—नेतृत्व का महत्वपूर्ण गुण सतर्कता है। एक उत्तम नेता को बुद्धिमान, निष्पक्ष, चतुर तथा संयत होना चाहिए।

2. न्याय—एक उत्तम नेता को हरेक के प्रति उचित तथा न्यायसंगत होना चाहिये। उसे यह सुनिश्चित करना चाहिये कि किसी के अधिकार न छीने जायें और हरेक अपना देय पाये।

3. आत्मसंयम—एक उत्तम नेता आत्मसंयमी होना चाहिए, विनम्रता रहनी चाहिए और सहनशीलता की प्रचुर मात्रा होनी चाहिए।

4. साहस—साहस उत्तम नेतृत्व के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उत्तम नेता में सहने की, मुकाबले की और अन्त में सभी विघ्न वाधाओं पर विजय पाने की भावना होनी

चाहिये।

कार्यात्मक पहलू—पिछले वर्षों में यह माना गया है कि कार्यात्मक पहलू गुणवत्तात्मक पहलू की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि गुणवत्तात्मक पहलू कुछ अमूर्त लक्षणों पर ज़ोर देता है, जिनमें से कुछ किसी अधिकारी या मैनेजर पर हो भी सकते हैं; और नहीं भी हो सकते हैं । एक नेता तभी सचमुच में कारग़र भूमिका निबाह सकता है, जब दल के सहयोग तथा प्रेरणा द्वारा, अपने लोगों की वह कार्यकुशलता सुधार सकता है। तथाकथित कार्य-नैतिकता की स्वीकृति की समस्या का मानवीय आयाम कार्यकुशलता के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

नेतृत्व का कार्यात्मक पहलू इस बात पर ज़ोर देता है कि नेता को अपने दल का अच्छा प्रधान होना चाहिए। उद्देश्य निर्धारण, निर्णय-लेने तथा नियंत्रण और निरीक्षण को उचित मात्रा के उपयोग में लाने की उसमें क्षमता होनी चाहिए । कार्यात्मक पहलू में यह विश्लेषण भी होता है कि नेता को कौन से उद्देश्य प्राप्त करने हैं और उनके लिए उसे क्या करना है ?

एक उत्तम नेता को कार्य के प्रति रुख में अपने जनों की सच्ची रुचि दिखानी होगी और वातावरण को सरल करके उनके कार्य में प्रेरणा भरनी होगी। एक उच्च प्रकार की प्रेरणा तथा अपने जनों का पूर्ण सहयोग, संगठन की कार्यकुशलता तथा जन-प्रबंध —ये दोनों कामों के लिए ही आवश्यक हैं।

प्रबंध की दृष्टि से, नेता को इन दो ध्येयों को प्राप्त करना चाहिए :—

(क) अपने जनों या कर्मचारियों में कार्य-प्रेरणा भरकर उनका मनोबल बढ़ाना; और

(ख) अपने जनों में सामूहिक कार्य करने को उत्साहित करना।

इन युगल उद्देशों को पूरा करने वाला अफसर किसी भी संगठन का उत्तम नेता बन सकता है। चाहे क्रीड़ाक्षेत्र हो या हो रणक्षेत्र, सामूहिक कार्य की महत्ता को जितना भी कूता जाये, उतना ही कम है।

सामूहिक-कार्य—उत्तम सामूहिक-कार्य के पीछे रहस्य क्या है ? फील्डमार्शल मांटगोमरी के अनुसार—'वफ़ादारी, किन्तु सबसे बढ़कर स्नेह पर सामूहिक-कार्य निर्भर है।" जहाँ सामूहिक कार्य ठीक नहीं है, वहाँ कार्यकुशलता गिरती है तथा अच्छे सामूहिक कार्य से कार्यकुशलता बढ़ती है। सामूहिक कार्य के अर्थ हैं अपने दल को साथ में रखने की नेता की योग्यता; इसके मायने सबकी एक मति के नहीं हैं। नेता को सर्व सहमति का शिकार नहीं होना चाहिए; उसे अत्यावश्यक विषयों पर सर्वसम्मति के विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस व हिम्मत होनी चाहिए : किंतु उसे अपने सभी साथियों से परामर्श लेना अवश्य चाहिए। उसे यह जानना होगा कि अकेला आदमी चाहे कितना हो चतुर और दृढ़निश्चयी हो, वह कुछ ज़्यादा प्रगति नहीं कर सकता। इसके अर्थ ये हैं कि दल के प्रत्येक जन को केवल आदेश देने के अलावा, संगठन के उद्देश्यों को पूरा करने की चेष्टा भी करनी चाहिए।

एक सुविख्यात जापानी प्रबन्ध-विशेषज्ञ, डा० नाकानोशे ने कहा है कि "मानवीय असह, संबन्ध की समस्या से सुलझने के लिये, संगठन के हरेक व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आदर करना होगा और उसके उद्देश्यों को संगठन के ध्येयों से एकाकार करना होगा।" यहाँ नेता की भूमिका अपने जनों के जीवन संभालने और विकसित करने से शुरू होती है। उत्तम नेता को अपने जनों के और मुख्यतः बुद्धिमान तथा सुप्रेरित व्यक्तियों के व्यक्तिगत विकास में पूरी चेष्टा करनी चाहिये।

निर्णय-निर्धारण—सामूहिक कार्य का दूसरा पहलू है जिसे आधुनिक प्रबन्ध पदावलि में 'मांगग्राही निर्णय-निर्धारण' पुकारा जाता है। यह एक सहल बात है। दल का नेता अपने जनों को उद्देश्य बताता है, काम गिनाता है तथा ध्येय पूर्ति के लिये उपलब्ध उपाय बताता है। विचार-विनमय में, वह अपने साथियों के विचार जानना चाहता है और जब उन्हें निर्णय लेने में अपने भाग लेने की सन्तुष्टि हो जाती है, तब वह अपना निर्णय बताता है। इस ढंग से, मस्तिष्कों को एकत्र करने और व्यापक विचार-विमर्श के लाभों के अलावा, शुद्ध लाभ यह होता है कि दल के हरेक सदस्य को यह संतुष्टि होती है कि उसने निर्णय लेने में भाग लिया है। इस कार्यक्रम की सफलता का वह जुआ खेलता है। अधिकांशतः स्वीकार कराने के लिये कुछ संशोधनों के अलावा, दल का नेता सचमुच में अपने साथियों को अपने निर्णय की उपयुक्तता का विश्वास दिलाता है। कितने ही उत्तम नेताओं ने कुछ अप्रिय तथा कठिन निर्णय इसी प्रक्रिया से लिये हैं, जो 'मांगग्राही प्रबन्ध' अब कहलाता है।

इस सम्बन्ध में, आधुनिक प्रबन्ध-तकनीक के विशेषज्ञों द्वारा कष्टसाध्य अनुसंधानों से प्राप्त निम्न दो निष्कर्षों को ध्यान में रखना चाहिये :—

(क) भारी पर्यावेक्षण की तुलना से साधारण देखरेख में मनुष्य अधिक कार्य कुशल तथा मनोबली पाये जाते हैं, क्योंकि हर समय की टोकटाक से संदिग्ध सतर्कता का अभास होता है; और

(ख) किसी संगठन में अधीनस्थों की कार्यकुशलता तभी सुधर सकती है, जब उन्हें यह आभास हो कि वे उस संगठन के सदस्य हैं, जिसमें सामूहिक प्रतिष्ठा या दल कार्य की विशेषता है।

असफलता के कारण—अब तक नेतृत्व के अनुलोम पहलुओं की व्याख्या की गई है, क्यों कि नेतृत्व एक नियत सफलता है चाहे गुणवत्तात्मक हो या कार्यात्मक। यहाँ हमें "अपने काम में असफल रहने के दस निश्चय मार्ग" नामक एक संक्षिप्त लेख की याद आती है, जिसे दस वर्ष पूर्व एक प्रबंध सम्बंधी पत्रिका में हमने पढ़ा था। नकारात्मक ढंग से, लेखक ने दस वे बातें बताई थीं, जिन्हें किसी को अपने काम में विफल रहने के लिये करनी चाहिये और वे हैं ये—

1. अपने कर्मचारियों से सदा लड़ते झगड़ते रहों, 2. हर कार्य को अपने आप करने का यत्न करो, 3. निर्णय लेने से कतराओ, 4. दक़ियानूसी उपायों से चिपके रहो, 5. दूसरों के विचारों पर तनिक भी ध्यान न दो, 9. छोटे छोटे विवरणों में समय बर्बाद करते रहो, 7. सभी जानकारी अपने पास रखो, 8. ध्यान रखो कि सारे विभाग के

उत्तम काम का श्रेय अपने ऊपर लो, 9. मनुष्यों के स्थान पर उत्पादन पर बल दो, 10. दूसरों की भावनाओं की परवाह मत करो।

इस सूची को महज़ देखने से ही सब किसी को यह विश्वास हो जायेगा कि जो भी इन दस बातों या इन में से कुछ का भी अनुसरण करेगा, उसे असफलता अवश्य भोगनी पड़ेगी।

सीधे-साधे शब्दों में, नेता एक आदर्श मैनेजर (प्रबंधक) है। जैसा विदित है, हरेक अधिकारी या प्रबंधक अपनी प्रबंधकारिणी भूमिका से नेता बनना चाहता है। अज्ञानी संगठनों में, यह मूल रूप से अधिकारी ही होता है, जो उद्देश्य निर्धारण में, ध्येय-प्राप्ति में, कार्य समापन में तथा अनुशासन रखने में उत्तरदायित्व लेता है; जब की एक उद्योग में यह कार्य प्रबंधक का होता है जो अधिक उत्पादन तथा अधिकतम लाभ-प्राप्ति के युगल कामों में तालमेल बिठाने से सिद्धि पाता है। जब तक नेता अपने जनों का विश्वास नहीं पाता है और उनकी दक्षता बढ़ाने के लिये प्रेरित नहीं करता है, तब तक संगठन के ध्येय पूरे नहीं हो सकते ।

इस प्रकार, अधिकारी या प्रबंधक के साथ काम करने वाले लोगों के दिलो दिमाग़ जीतने का संघर्ष ही नेतृत्व की शुरुआत है। उसे दल के रूप में काम करना होता है । यहाँ उत्तम नेतृत्व के निर्माण में सर्वोपरि अकेले तत्व के रूप में **संघ भावना** उभर कर आती है।

धर्म की भूमिका : लोगों में नेता बनने के गुणों को विकिसित करने में धर्म भी एक बड़ी भूमिका निबाहते हैं। मानवजाति के अनेकों नेता धर्मगुरु तथा पैगम्बर हुये । सभी धर्म तथा धार्मिक ग्रंथ उन गुणों पर ज़ोर देते हैं, जिनसे उत्तम नेता बनते हैं।

वर्षों पहले, मद्रास विश्वविद्यालय के दीक्षांत भाषण में, स्वर्गीय राजगोपालचारी ने गीता के निम्नलिखित उपदेशों पर चल कर, छात्रों से अपने में नेतृत्व के गुणों को ग्रहण करने का आग्रह किया था—

1. अपने कर्त्तव्यों को निस्वार्थ तथा उपयुक्त ढंग से करो। जयपराजय से मत घबड़ाओ।
2. सुख-दुःख की भावना को वश में रखो।
3. दया करो। जैसे अपने लिये अनुभव करते हो, वैसे दूसरों के प्रति भी अनुभव करो।
4. सदा याद रखो कि मन ही सब कुछ है। यदि उसे छूट दे दोगे, तब तुम्हें हार खानी पड़ेगी।
5. समय-समय पर ईश-चिंतन करो और अन्तर्दृष्टि से देखो; आत्मचिंतन ही चरित्र निर्माण में सर्वोत्तम उपाय है।

श्री राजगोपालाचारी के अनुसार "जैसे शारीरिक व्यायाम देह को लाभप्रद हैं, वैसे ही ये प्राणिधान आत्मा को उपयोगी हैं। इनके फल शीघ्र नहीं दिखाई देते; किन्तु जैसे

व्यायाम अंगों को पुष्ट करते हैं, वैसे इनसे आध्यात्मेक शक्ति मिलती है। यही गीता का उपदेश है।"

सफलता की एक अन्य कुँजी है नेता में विनम्रता । यहाँ प्रसिद्ध **अन्तिम रात्रिभोज** (लास्ट सपर) का दृष्टान्त देना उचित रहेगा, जब ईसा मसीह ने इस प्रतीक में अपने शिष्यों के चरण धोये कि मानवजाति की रहनुमाई (जिसे वे उत्तराधिकार में पायेंगे) करने में, उन्हें सेवा करने की योग्यता होनी चाहिये; केवल हुक्म चलाने से काम नहीं बनेगा। ईश प्रभु के इस संकेत की एक अन्य शिक्षा भी है। नेता को ऐसा करना चाहिये, जिससे दल का हरेक सदस्य स्वयं को महत्वपूर्ण समझे।

हरीचन्द : क्रास कण्ट्री विजेता

दिनांक 20 अगस्त 78 को रिंग रोड दिल्ली पर दौड़ी गई प्रथम अखिल भारतीय पुलिस क्रासकण्ट्री दौड़ में के० रि० पु० दल के हरीचन्द ने 14.5 कि० मी० को 44 : 10.2 मि० में दौड़ कर सिरमौर जीता। पहला, दूसरा, पाँचवाँ, छठा, आठवाँ तथा नवाँ स्थान पाने पर 61 अंक लेकर टीम चैम्पियनशिप भी प्रथम वर्ष में ही जीतने का गौरव के० रि० पु० बल को प्राप्त हुआ।

विज्ञान के चढ़ते चरण

• रूस ने मोटर वाहनों के लिए ऐसा इंजन तैयार किया है, जो नगर में पेट्रोल से और बाहर हाइड्रोजन से चला करेगा, जिससे बहुमूल्य पेट्रोल की बचत होगी।

• इंगलैंड में 25 जुलाई 78 को सब से पहला **परख नली शिशु** उत्पन्न हुआ। वैसे इटली का दावा है कि वहाँ इससे पूर्व ही, कई ऐसे शिशु जन्म ले चुके हैं; किन्तु धार्मिकता को ठेस नहीं पहुंचाने के लिये, गुप्त रखा गया।

• पुणे विश्वविद्यालय ने **टाफी के आकार का रेडिये** सेट तैयार किया है, जो 50 कि० मी० के दायरे में स्थित ब्राडकास्टिंग स्टेशन का प्रसारण पकड़ सकता है।

• दिमाग़ी खराबी, पक्षघात तथा स्नायु दौर्वल्य के लिए 'कपोतपादी' जड़ी लाभदायक है।

यह भी खूब रही

भारत में कुछ वर्ष पूर्व नारियल-जटा के विकास के लिये उस जटा का वर्ष मनाया गया। अंग्रेजी प्रेमियों ने उसे **'कॉयर वर्ष'** का नाम दिया। तब कुछ मनचलों से यह कहे बिना नहीं रहा गया 'आख़िर कायरों के देश में कायर-वर्ष के मनाने की ही उम्मीद की जा सकती है।

दूर दर्शन पर विशेषज्ञ : इस वर्ष, विहार व उत्तर प्रदेश में अच्छी बाढ़ आई है।

भेंटकर्त्ता : अच्छी कहाँ ? यह तो भीषण बाढ़ है, श्रीमान ! जिसने लाखों घर बर्बाद कर दिये हैं।

भक्त : गया जो गया, उसका गया-गुज़रा पितर भी गया से स्वर्ग गया।
अध्यापक : राम, 'सती' तुम जानते ही हो, उसका प्रयोग वाक्य में करो।
राम : शत्रु को देख कर हरेक की छाती झुलसती है।
पत्नी : सखी, बर सात तभी बर साथ रहे जब; नहीं तो 'हाड़' हाड़ तड़पावे ।
बालक को गधे पकड़े देख कर, सैनिक : 'अरे, इस गधे को क्यों पकड़ रखा है ?'
बालक : 'कि कहीं तुम्हारी सेना में भर्ती नहीं हो जाये ।'

स्वास्थ्य संदेश :

योग द्वारा चिकित्सा

ले०—श्री जे० एस० शर्म्मा

आजकल ज़रा सा रोग भी लगा नहीं कि हम हकीम, वैद्य या डाक्टर पर जा धमकते हैं और अपनी जेब ख़ाली करा आते हैं; किन्तु हम इतना नहीं समझ पाते हैं कि रोग हमारी ही ग़लतियों व असावधानियों से होता है और उसका निवारण उन ग़लतियों तथा असावधानियों को दूर करने से ही होगा। यह काम योग से हो सकता है। साथ ही, योग द्वारा चिकित्सा में, हर्र लगे न फिटकरी, रंग चोखा आवे । हम को किसी अन्य व्यक्ति के पास जाने की ज़रूरत नहीं है और ना है ही फूटी कौड़ी खर्च करने की आवश्यकता केवल सूझ-बूझ, अभ्यास और सावधानी ही ज़रूरी है।

वैसे भी, औषधि एक वाहरी तत्व है और उसके सेवन से प्रतिक्रिया होना ज़रूरी है, जो प्रायः बड़ी महँगी पड़ती है। कितनी ही बार इन्जेक्शनों से मत्यु तक हो जाती है; तनिक अधिक मात्रा में नींद की गोलियों खाने से बेहोशी आ जाती है और कभी-कभार प्राणों तक पर बन आती है। कुछ औषधें एक रोग को दूर करती हैं, परन्तु दूसरे रोग लगा देती हैं। एलर्जी (अधिहृषता), चर्म रोग आदि में काम आने वाली फेरेस्टोल, फिनर्गल, इन्सीडल, एविल आदि किन्हीं रोगियों के हृदयों पर कुप्रभाव डालती हैं और ग़फलत लाती हैं।

क्योंकि योगपद्धति में किसी बाहरी तत्व की आवश्यकता ही नहीं पड़ती, उसमें ऐसी बुरी प्रतिक्रियाओं के होने का प्रश्न ही नहीं उठता। प्रत्युत् कुछ रोगों में, जहाँ भेषज्य पद्धति की दाल नहीं गल पाती है, योगभ्यास अमोघ शक्ति का काम करता है। तभी तो साईकोथैरैपी (मनश्चिकित्सा) में डाक्टर अनेकों योग आसनों को नया नाम रखकर काम में लाते हैं। दरअसल, योगात्मक चिकित्सा का प्रयोग संसार के सभी

स्थानों पर रोगियों द्वारा "स्वयं चिकित्सा-पद्धति" के रूप में किया जाना चाहिये।

I. ध्यातव्य बातें

योगाभ्यास से पूरा लाभ उठाने के लिये कुछ इन बातों पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है :

(i) **समय :** वैसे सामान्यतः खाली पेट यानी भोजन के बाद तीन-चार घंटों का मध्यान्तर देकर योगाभ्यास करना चाहिए, किन्तु प्रातःकाल का समय सर्वोत्तम माना गया है।

(ii) **स्थान**—चौकी या बिस्तर की अपेक्षा भूमि पर योगाभ्यास करना लाभकारी है। उस पर दरी, कम्बल या चटाई अलबत्तः बिछा ली जाये। स्थान साफ़ सुथरा और हवादार हो।

(iii) **मौनधारण**—वार्तालाप, व गाने बजाने से दूर रहना चाहिये, जिससे एकाग्रचित्त योगाभ्यास हो सके और उसका पूरा लाभ मिल सके।

(iv) **वस्त्र :** कम-से-कम वस्त्र—पुरुष पाजामा कच्छा, निकर आदि और महिला, ब्लाउज़ के संग साड़ी, स्लैक्स आदि योगाभ्यास के समय धारणा करें । जाड़ों में हल्के गर्म वस्त्र अवश्य पहने जा सकते हैं।

(v) **स्नान :** प्रातः काल योगाभ्यास करने के दस-पन्द्रह मिनट बाद स्नान उत्तम रहता है।

(v) **भोजन :** फल, पत्तीवाली हरी तरकारियाँ, गेहूँ की रोटी, दलिया, दालों आदि से परिपूर्ण सन्तुलित भोजन लाभप्रद होता है। मौसम के सस्ते फल और शाक, महँगों की तुलना में अधिक पौष्टिक होते हैं । साथ ही ये सिद्धान्त ज़रूरी हैं: 1. भोजन को धीरे-धीरे खाना 2. भूख से कम खाना 3. रात को सोने से दो घंटे पहले खाना 4. मसालेदार व तली चीजें नहीं खाना 5. चाय- कॉफी कम से कम लेना 6. धूम्रपान या मदिरापान नहीं करना।

(vi) **विश्राम :** श्रम के साथ विश्राम भी ज़रूरी है। हर आसन के बीच थोड़ा विश्राम या शवासन करना उपयुक्त है। पूरा योगाभ्यास करने के बाद तो, पाँच-दस मिनट विश्राम बहुत ही आवश्यक है।

(vii) **मात्रा :** अपनी शक्ति के अनुसार ही योगाभ्यास करें। धीरे धीरे आसनों को करें और उनकी संख्या में वृद्धि करें। गर्मी में आध घन्टे और जाड़े में पौन घन्टे तक अभ्यास किया जा सकता है। महिलाओं को साधारण आसन करना चाहिए तथा मासिकधर्म तथा गर्भावस्था में चौथे महीने के बाद योगाभ्यास वर्जित है। किन्तु कुछ अभ्यास रजः स्राव और प्रसव सम्बन्धी गड़बड़ियों के लिये ज़रूरी हैं।

II. कुछ प्रमुख रोग और आसन

(i) **मधुमेह :** इस रोग से लाखों लोग पीड़ित हैं। वैसे तो इस रोग के अनेक भेद

तथा लक्षण हैं, किन्तु इसमें साधारणतया रक्त व मूत्र में चीनी परेशान करती है। इसका मूलकारण पैंक्रियस (क्लोमग्रंथि) की गड़बड़ी होती है, जिससे पर्याप्त क्लोमरस नहीं बन पाता, बार-बार पेशाब लगता है, प्यास और थकावट लगती, है, दृष्टि मन्द पड़ती है, दुर्बलता व्याप्ती है तथा उच्च रक्तचाप आदि मानसिक तनाव पैदा होते हैं। इस रोग को दूर करने के लिये, हमें क्लोमग्रंथि (पैंक्रियस) को सक्रिय तथा स्वस्थ करना है, जो इन आसनों द्वारा हो सकता है—1. सूर्यनमस्कार 2. अर्द्ध वक्र 3. मत्स्येन्द्र आसन 4. सुप्तवज्र आसन व 5. धनुरासन।

(ii) **दमा (श्वास रोग) :** आजकल इस रोग से आबाल वृद्ध, सभी ग्रस्त हैं। इसमें रोगी को साँस लेने में कठिनाई होती है; साँस छोड़ने में भार पड़ता है। जीवन दुःखदाई लगता है और यदाकदा रोगी अपंग तक हो जाता है। इसका मुख्य कारण साँस-नली की गड़बड़ी है। इसको इन आसनों ने अच्छा किया है। 1. उत्तान आसन 2. तारा आसन 3. योगमुद्रा 4. ऊष्ट्र आसन 5.सिंहासन 6. सर्वांग आसन व 7. मत्स्य आसन।

(iii) **सन्धिशोथ** (जोड़ों में दर्द) : यह रोग सभी उम्र के स्त्री पुरुषों को होता है। इसमें सूजन, कड़ापन तथा बड़ी बेदना होती है। भारत में बहुत लोग इस रोग से पीड़ित हैं तथा टेढ़े-मेढ़े और अपंग दीखते हैं। गठिया, वात रक्त, अस्थिसंधि शोथ, कटिशूल सब प्रकार के जोड़ों में दर्द इसी रोग के फल हैं। इस रोग से पीड़ितों को 1. सन्तुलन आसन 2. त्रिकोण आसन 3. वीरासन 4. गोमुख आसन 5. वृक्षासन 6. सेतुबन्द आसन 7, सिद्धासन 8, नटराज आसन 9. शवासन व 10. हलासन से बड़ा लाभ होता है।

(iv) **उदर विकार :** पाचन-संस्थान में गड़बड़ी होने से उदर विकार होते हैं। कोष्ठ वद्धता (कब्जियत), अपच, पेचिश, खट्टी डकार, पेट-दर्द तथा गैस की शिकायतें होने लगती हैं। यह रोग भी स्त्री पुरुष, बाल-वृद्ध किसी को नहीं छोड़ता। आजकल तो यह रोग बड़ी समस्या बन गया है। इसको ठीक करने के लिये 1. उत्तानपाद आसन 2. पवनमुक्त आसन 3. भुजंग आसन 4. शलभ आसन 5. पश्चिमोत्तान आसन व 6. शवासन से उत्तम लाभ पहुँचा है।

(v) **मोटापा :** यह विश्व व्यापी स्वास्थ्य-संकट बन गया है। इस से आयु कम होती है, दिल की बीमारियाँ पैदा होती हैं; उच्च रक्तचाप होता है, धमनियाँ कड़ी होती हैं तथा मानसिक रोगों से भी मनुष्य ग्रस्त हो जाता है। इसको कम करने के लिये 1. उत्तानपाद आसन 2. मंडूक आसन 3. भूजंग आसन 4. शलभ आसन 5. संतुलन 6. पवनमुक्त आसन 7. सूर्य नमस्कार आसन 8. धनुरासन 9. अर्द्धवक्र आसन 10. पश्चिमोत्तान आसन 11. सुप्त बज्रासन व 12. मस्त्येन्द्र आसन लाभकारी हैं।

(vi) **हृदय रोग :** यह रक्तवह संस्थान का रोग है। आजकल अमेरिका तथा पश्चिम योरुप जैसे विकसित देशों में भी यह 'महा संघातक रोग' बन गया है और 20 वीं शताब्दी की महामारी कहलाता है। इसमें धमनियाँ कड़ी हो जाती हैं; हृदय को पर्याप्त रक्त नहीं मिल पाता है; हृदय धमनियाँ अचानक रुक जाती हैं तथा अत्यधिक तनाव

हो जाता है। इसको ठीक करने के लिये शवासन बड़ा लाभकारी है। दूसरे आसन हैं : 1. उत्तान-पाद आसन 2. पवनमुक्त आसन 3. संतुलन आसन व सूर्यनमस्कार आसन ।

(vii) **मानसिक रोग :** यह रोग भी किसी विशेष जाति, लिंग, देश तथा समय से सीमित नहीं है। इस मशीन युग में तो इस रोग की भीषणता चरम सीमा तक पहुँच गयी है। कोई भी व्यक्ति ही शायद ऐसा हो, जो इस रोग से अछूता हो । इसमें 1. सूर्यनमस्कार 2. उत्तानपाद आसन 3. पश्चिमोत्तान आसन 4. भुजंग आसन 5. त्रिकोण आसन 6. सर्वांग आसन 7. मत्स्य आसन 8. धनुरासन व 9. हला सन बहुत लाभकारी है।

नोट : शीर्षासन सब आसनों का शीर्षस्थ या राजा कहलाता है; वह सब रोगों का राम बाण औषध है। पं० जवाहर लाल तो मानसिक तनाव बढ़ते ही इसे लगाते थे और बड़ा आराम पाते थे । आजकल कुछ लोग उच्च रक्तचाप वालों और हृदय रोगियों को शीर्षासन या सर्वांग आसन करने को मनाह करते हैं; किन्तु यह धारणा सब पर लागू नहीं होती। एक उच्चरक्त चापी के पैर सूज जाते थे और कोई औषध काम नहीं कर रही थी। किसी वैद्य ने उसे शीर्षासन डरते-डरते बताया। अब उस रोगी के पैर में सूजन नहीं आती; बल्कि रक्तचाप भी सामान्य आ गया है।

III. प्राणायाम : यह सारा शरीर श्वास का खेल है। उसका समान और स्वस्थ रूप ही प्राण है। अतः जीवन को नीरोग रखने के लिए प्राणायाम परमावश्यक हैं। राजधानी में एक स्वास्थ्य संस्थान व्यायाम के उपरान्त प्राणायाम अवश्य करवाता हैं। इससे सब रोग और मुख्य कर मानसिक और हार्दिक तथा श्वास सम्बन्धी कष्ट दूर हो जाते हैं। सामान्यतः प्राणायाम के तीन चरण होते हैं—1. रेचक (सांस छोड़ना) 2. पूरक (सांस खींचना) तथा 3. कुम्भक (साँस रोकना)। प्राणायाम कई प्रकार के होते हैं जिनमें 1. उज्जयी 2. अमृत 3. पक्षी तथा 4. भस्त्रा मुख्य हैं।

1. उज्ज यी प्राणायाम—में दोनों नथुनों से साँस खींचते हैं; फिर साँस को कुछ समय रोके रहते हैं तथा मुँह से सीटी बजाते जैसी गति से साँस छोड़ते हैं।

2. अमृत प्राणायाम—में सीटी बजती जैसी गति से साँस खींचते हैं; फिर साँस को कुछ समय रोके रहते हैं और तब धीरे-धीरे दोनों नथुनों से साँस छोड़ते हैं।

इन 1 और 2 प्रकार के प्राणायामों से दमा और मनोरोग से पीड़ितों को बहुत लाभ होता है।

3. पक्षी प्राणायाम :—में दोनों बाहुये धीरे-धीरे फैलाकर ऊपर ले जानी होती हैं और पक्षी के उतरने की भाँति धीरे-धीरे गिराती हुई देह के दायीं-वायीं ओर जंघा से उन्हें सटाना पड़ता है। नौ-दस बार प्रति दिन करने से क्षय के रोगी को बहुत लाभ होता है; उसके फेफड़ों में नई हवा पहुँचने से रोग को दबाने की शक्ति बढ़ती है।

4. भस्त्रा प्रारणायाम—में धौंकनी की भाँति साँस को जल्दी से जल्दी लेना और छोड़ ना होता है। प्रतिदिन एक बार में सौ ऐसे प्राणायाम करने से शरीर के अंग-अंग

में नव चेतना दौड़ती है।

IV. अट्टहास : प्राणायाम करने के पश्चात्, खूब ज़ोर-ज़ोर से यथाशक्ति एक मिनट हँसने से दिनभर को प्रफुल्लता, नीरोगता तथा आशावादिता मिलती है।

V. पतंजलि का योग सूत्र : शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य एवं शान्ति के लिए कपिल मुनि ने सांख्य दर्शन का सहारा लिया, जिसमें समस्या की सही जानकारी पर बल दिया जाता है। जब मनुष्य को किसी बात का पूरा-पूरा ज्ञान हो जाता है, तब उसे दुःख दबाना आ जाता है और मानसिक सन्तुलन से जीवन का सुख प्राप्त होता है। इसके लिये, एक व्यापक पद्धति की आवश्यकता थी, जिसकी व्याख्या पतंजलि के योगसूत्र में मिलती है। मानसिक तथा शारीरिक सन्तुलन तथा स्वास्थ्य के लिये, कपिल ने ये पाठ सोपान बताये हैं 1. यम (नियंत्रण और अनुशासन) 2. नियम (विधि पद्धति और सिद्धान्त-पालन) आसन (अंगों को मोड़मरोड़ कर योगाभ्यास करना) 4. प्राणायाम (श्वास और प्रश्वास को नियमित तथा नियंत्रित करना) 5. प्रत्याहार (अवाँछित चीजों से बचना अर्थात् सही काम करना) 6. धारणा (चित्त को एकाग्र करना) 7. ध्यान (ध्येय में चित्त लगाना) और 8. समाधि (सब क्लेशों से मुक्त होकर पूर्ण शक्ति पाना) ।

इसमें कोई दो मत नहीं हो सकते कि जो मनुष्य इन आठों सोपानों पर चढ़ जायगा, उसे सर्वत्र तथा सर्वदा **सत्यं शिवम् सुन्दरम्** की आन्दमयी वर्षा दिखायी देगी, जिसमें सब रोगशोक बह जायेंगे और सुखशान्ति का सागर उमड़ पडेगा। वस्तुतः योग वह **आधारभूत अस्पताल** है, जिसमें क्या शारीरिक और क्या माननसिक सभी आधिव्याधियों का उपचार मिलता है तथा सर्व प्रकार के सुख और स्वास्थ्य का लाभ प्राप्त होता है।



भाव भीनी विदाई

दिनांक 30 जुलाई 1978 को, श्री एस० एम० घोष, महानिदेशक, के सेवा अवकाश ग्रहण करने पर, के० रि० पु० बल के जवानों और अधिकारियों ने भावभीनी विदायी दी। ग्रुप केन्द्र झड़ोदाकलाँ में विदाई-परेड दी गयी, जिसमें दिल्ली स्थित बल की विविध यूनिटों के जवानों तथा अफसरों ने भाग लिया। इस परेड का नेतृत्व श्री चिन्तामणि पांडेय, कमांडैंट, ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली ने किया।

परेड को सम्बोधित करते हुये, श्री घोष ने बताया कि के० रि० पु० बल के सदस्यों को 45 दिनों के स्थान पर 60 दिनों के वार्षिक अवकाश देने के प्रश्न पर सरकार विचार कर रही है। ज़रूरी कामों के लिए, मुफ़्त रेल वारन्ट दूसरी बार देने का मामला भी विचाराधीन है। देश में स्थापित सभी 17 ग्रुप केन्द्रों में जवानों को, और अधिक पारिवारिक क्वार्टर तथा उत्तम शिक्षा की व्यवस्था कराने के लिये सरकार से अनुरोध किया गया है। कोशिश यह है कि हरेक ग्रुप केन्द्र में एक केन्द्रीय स्कूल खुल जाये।

कठिन परिस्थितियों में भी इस बल के उत्तम काम करने की उन्होंने सराहना की।

देश के विभिन्न भागों में निर्विघ्न चुनाव कराने में के० रि० पु० बल के सहयोग की प्रशंसा—क्या राज्य सरकार और क्या चुनाव आयोग—सभी ने की है। भाव-विभोर हो कर, उन्होंने कहा कि अपने लम्बे-चौड़े सेवाकाल में जितना आनन्द उन्हें के० रि० पु० बल से चार वर्ष में मिला है, उतना किसी अन्य संगठन से नहीं।

31जुलाई 78 को, ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली के अफसर मेस में विदाई के प्रीतिभोज के समय, श्री बी० वर्मा, महानिरीक्षक से० IV ने के० रि० पु० बल में श्री घोष द्वारा की गई सेवाओं का गुणगान किया। उनके शब्दों में, श्री घोष जवानों और अधिकारियों के लिये शक्ति-स्तम्भ थे, और उनके हितों के लिये चट्टान की भाँति खड़े रहे। अपने कठोर परिश्रम तथा सेवानिष्ठा के लिये, श्री घोष चिरस्मरणीय रहेंगे । सेवा-निवृत्ति के जीवन को तृतीय आश्रम की संज्ञा देते हुये, उसमें इस बल के सभी की ओर से, उन्होंने श्री घोष के लिए सुख-शान्ति की कामना की।

उत्तर में, श्री घोष ने कहा "बल के पिता होने के नाते, मैंने सब अधिकारियों से पुत्रवत् व्यवहार किया है। हो सकता है कि कभी कुछ कठोर आदेश देने पड़े हों, किन्तु वे किसी घृणा या मनोमालिन्य के कारण से नहीं दिये होंगे । कर्त्तव्य निभाने में कुछ ऐसा करना पड़ जाता है।" फिर गद्गद कन्ठ से, उन्होंने कहा "आप सबसे मुझे प्रेम है।"

• 1 अगस्त 78 को, महानिदेशालय तथा महानिरीक्षक और उपमहानिरीक्षक नई दिल्ली के कार्यालय कर्मचारी और अधिकारी वर्ग ने श्री घोष के हेतु विदाई-जलपान का आयोजन किया। श्री एस० डी० सहगल, उपनिदेशक (लेखा) ने उनकी गुणवत्ता की प्रशंसा की। उत्तर में, श्री घोष ने के० रि० पु० बल को उत्तम दल बताया। इसकी कार्यकुशलता, कर्त्तव्य परायणता तथा सेवा-भक्ति की भूरि भूरि सराहना की। लिपिक वर्ग की कठिनाइयों को वह जानते थे और यथाशक्ति उन्हें दूर करने की चेष्टा भी करते थे। इसीलिये, लिपिक वर्ग के एक संघ बनाने की सिफारिश सरकार से की है।

अन्त में, उन्होंने सबको शुभ कामनायें प्रदान की।

निर्वतमान महानिदेशक का संदेश

सेवा-निवृत्ति की पूर्वसंध्या पर, श्री एस० एम० घोष, महानिदेशक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, ने सभी अधिकारियों को यह संदेश दिया :—

'चौदह मास आपका प्रधान रहने के बाद, आज मैं सेवा से अवकाश ग्रहण कर रहा हूँ। आपसे मेरा सम्पर्क जुलाई 1974 से है, जब मैं पुलिस महानिरीक्षक सेक्टर II नियुक्त होकर यहाँ आया था। इन पिछले चार वर्षों में, आपने मेरे प्रति अत्यन्त स्नेह, सहयोग और स्वामि-भक्ति दर्शायी। अपने भावोद्गार के लिये, मेरे पास शब्द नहीं हैं; मुझे ऐसा लगा रहा है मानों अपने निकट के प्रिय जनों से मेरा विछोह हो रहा है।

'मेरे उत्तराधिकारी श्री आर० सी० गोपाल अपने विशद अनुभव तथा कार्य कुशलता के लिये विख्यात हैं, मुझे विश्वास है कि आप सबका वह सभी क्षेत्रों में

उत्तरोत्तर सफलता तथा गरिमा के मार्ग में निर्देशन देंगे। एक बार फिर, मैं के० रि० पु० बल के सभी जवानों, अधिकारियों तथा उनके परिवारों की सुख-समृद्धि की कामना करता हूँ।"

महानिदेशक के पद-ग्रहण करने के अवसर पर श्री आर० सी० गोपाल का संदेश

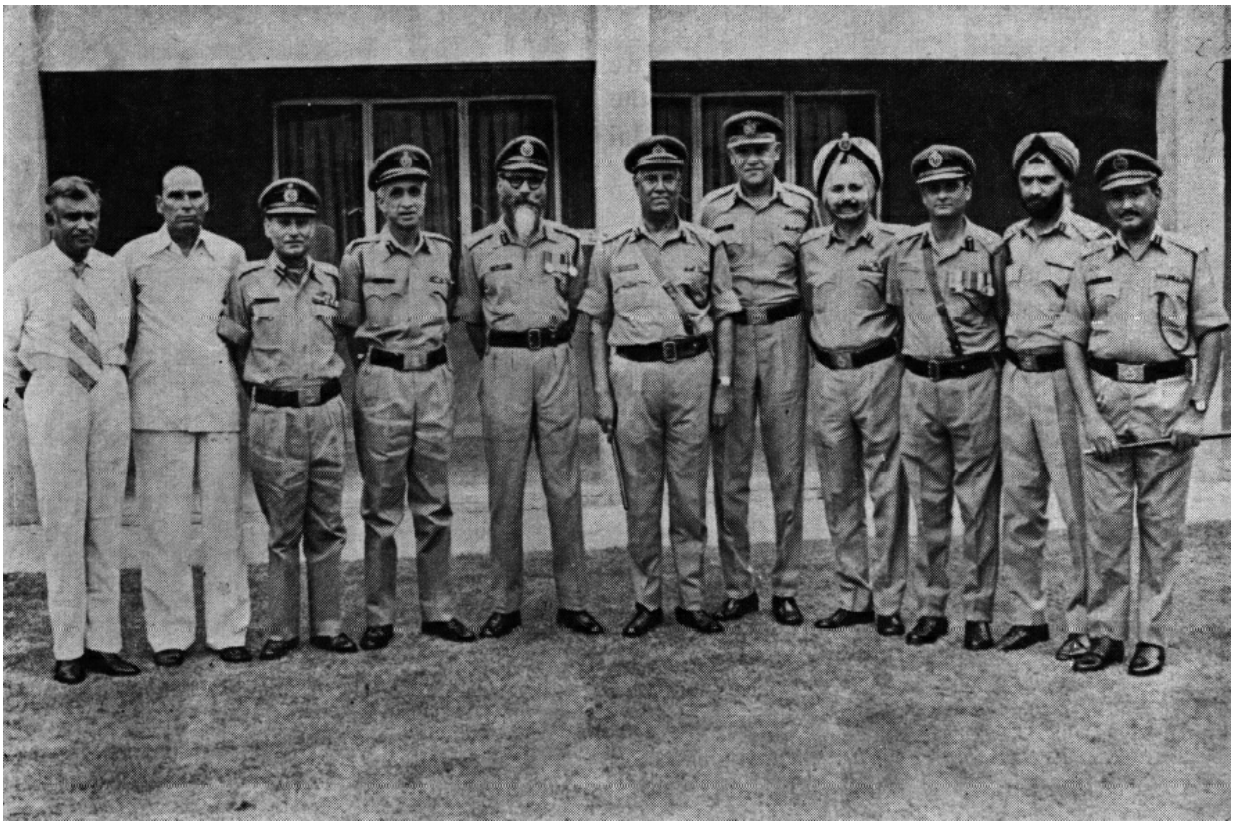
महानिदेशक, के० रि० पु० बल का पद-ग्रहण करने पर, श्री आर० सी० गोपाल ने सभी प्रतिष्ठानों को यह सन्देश भेजा :

मुझे आपके प्रधान बनने का गौरव प्राप्त हुआ है। प्रत्येक दिन सेवा करके, मैं इस प्रतिष्ठा के योग्य बनने की चेष्टा करता रहूंगा। आपका योगक्षेम ही मेरी मुख्य चिन्ता का विषय रहेगा।

'इस बल के आप सब चुनींदा जवान और अधिकारी हैं। अपने पूर्वाधिकारियों द्वारा नियत किये गये दक्षता के उच्चस्तर को बनाये रखने के लिये, हम सब को काम करना है; और उसके योग्य बन कर दिखाना है। हमें उस विश्वास का पात्र बनना है, जो हमें सौंपा गया है।

'मुझे विश्वास है कि सहकारिता द्वारा हम अपनी विरासत, के० रि० पु० बल की शान को, इतनी बुलन्दी पर ले जायेंगे, जितनी वह आज तक कभी नहीं पहुंची है।

जयहिंद !"



के० रि० पु० बल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ श्री एस० एम० घोष निवर्तमान, महानिदेशक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस कोई बन्दोरी नहीं

ले०—श्री टी० नाथ आई० पी० (रि०)

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, राज्य प्रतिनिधि रिजर्व दलों तथा केन्द्र शासित क्षेत्रों में भारत सरकार द्वारा नियुक्त जुझारू दल का संगम है । इसके पहले नाम सम्राट प्रतिनिधि पुलिस को अब केन्द्रीय रिजर्व पुलिस में इसलिये बदलना पड़ा कि हमारे संविधान के अनुसार राज्य सरकारें ही केवल पुलिस रख सकती हैं।

पैदल सेना डिवीजन (वाहिनी)—यह जुझारू दल खास तौर पर एक पैदल सेना डिवीज़न (वाहिनी) बनाया गया था, जिसका उद्देश्य न्याय-व्यवस्था के लिये पुलिस के कार्य में सहायता करना था। इस दल पर पुलिस जैसे अधिकार कुछ भी नहीं हैं तथा विभिन्न सेवाओं से, किन्तु मुख्यकर उच्च स्तरों पर, ज़रूर ही पुलिस सेवाओं के अफसरों को बुला कर इसका गठन किया गया है। निरन्तर ग़लती से 'पुलिस' दल, पुकारे जाने वाले, इस दल का अपना अधिनियम है, जिसमें संरचना, नियंत्रण तथा

परिचालन का इसी प्रकार प्रावधान है, जिस प्रकार राज्यों को सशस्त्र पुलिस के लिये अपने विशेष अधिनियम तथा साधारण पुलिस के लिये भारतीय पुलिस अधिनियम में व्यवस्था है।

तनिक सी व्यवस्था में गड़बड़ी उत्पन्न होते ही सेना को बुलाने के अनौचित्य को ध्यान में रखकर, के० रि० पु० बल को राज्य पुलिस दलों के सहयोग के लिये गठित किया गया है, ताकि सैन्य दलों को न बुलाना पड़े। **अतः विशेष स्थितियों में नियुक्त किये जाने वाले इस बल को सेना की पैदल यूनिट के रूप में तैनात किया जा सकता है; किन्तु वास्तव में इसे छोटी-छोटी टुकड़ियों (सेक्शनों) में लगाया गया है, जो सेना की पैदल यूनिट के मौलिक नियमों के विरुद्ध है।**

वर्तमान व्यवस्था में, किसी राज्य सरकार की प्रार्थना पर ही, के० रि० पु० बल वहाँ लगाया जा सकता है; फिर भी, राज्य सरकार से बिना पूछे, केन्द्रीय सरकार के प्रतिष्ठानों की रक्षा को यह दल नियुक्त किया जा सकता है। राज्य सशस्त्र पुलिस के समान वर्दी तथा विन्यास होते हुये भी, के० रि० पु० बल की भूमिका, उसकी वैधता और अनुपालन करने वाले प्रविस्तारण, आन्तरिक नियमों से मर्यादित हैं और यही बात इस बल के हथियारों पर भी लागू होती है।

विभिन्न परिस्थितियों से सुलझना—क़ानून तथा व्यवस्था पूरा पूरा राज्य-सूची का विषय होने के कारण, न्याय-शान्ति स्थापित रखने में के० रि० पु० बल की भूमिका बहुत कुछ सीमित हो गयी है । क़ानून-व्यवस्था से सुलझने के लिये बुलाये जाने पर, के० रि० पु० बल की बटालियनों को, प्रवेश का रोधन करना पड़ता है और पहरा लगाना पड़ता है तथा केवल राजद्रोहियों से ही नहीं, बल्कि आवेश में क्षणिक उन्मत्त नागरिकों की टोलियों से भी जुझारू दल की तरह निपटना पड़ता है। यह राजनीति-प्रेरित भी हो सकता है। अतएव न्याय-व्यवस्था से सुलझने के समय, इसे इस ढंग से लगाना चाहिये कि यह उन चुनौतियों का मुकाबला कर सके । साथ में, अधिकारियों को कुछ वध एवं संवैधानिक अधिकार भी ऐसी स्थितियों से निबटने के लिये दिये जाने चाहिये।

देश में थानाध्यक्षों को बड़े व्यापक अधिकार दिये हुये हैं और स्थिति से सुलझने के लिये वे गोली-चालन भी करा सकते हैं; किन्तु ऐसे कोई भी अधिकार के० रि० पु० बल के पास नहीं हैं, यद्यपि उसे ऐसी ही स्थितियों से निबटना पड़ता है। इसलिये, इसका विन्यास ऐसा होना चाहिये कि प्रहरी टुकड़ी में एक प्रथम पंक्ति के प्रबंध कर्ता के साथ दो तीन शस्त्रों से सुसज्जित क्षेत्रीय कर्मी हों। ऐसी दो-तीन टुकड़ियों का एक सेक्शन बनाना चाहिये । शायद, दो प्रहरी ग्रुपों को धरना पार्टी के रूप में नियुक्त करना ठीक रहेगा। ऐसे ग्रुपों को ठीक ठाक मिला कर जुझारू प्लाटून बन सकता है। ऐसे प्लाटूनों में सचेतक टुकड़ियों तथा विशेष यंत्र उपग्रुपों उदाहरणार्थ अश्रुगैस की पूरी यूनिटों आदि का गठन हो सकता है। स्वाभाविकतः नियंत्रण श्रेणी को, ज़रूरत के मुताबिक देना होगा तथा एक पैदल सेना की तुलना में इसकी उदार व्यवस्था करनी होगी।

विशेष अस्तित्व—अपने को कारग़र सिद्ध करने के लिये, एक सशस्त्र यूनिट की

अपनी परम्परायें होती हैं; मुख्यक र एक क़ानून प्रवर्तक दल में, (जिसे बाहरी शत्रुओं से नहीं लोहा लेकर कृतसंकल्प क़ानून भंजकों के गिराहों से निबटना होता है), नियंत्रण इस प्रकार का होना चाहिये कि नेतृत्व प्रभावशाली हो । सशस्त्र होने के कारण, उसकी अपनी परम्परायें होनी चाहिये, जिनका विकास कहीं की ईंट और कहीं के रोड़े को मिला कर नहीं हो सकता । अतः इसमें भर्ती का ढंग तथा फलस्वरूप प्रशिक्षण प्रक्रियायें भी अपनी अलग बनानी होंगी; साथ ही, इसकी वर्दी भी अलग और खास होनी चाहिये ।

प्रत्यक्ष रूप से, के० रि० पु० बल को राज्य सशस्त्र पुलिस की कमी पूरी करने के लिये प्रयुक्त नहीं करना चाहिये। इस प्रकार के प्रयोग के लिये प्रयत्न इस विकासशील उपयोगी दल के मार्ग में बाधा सिद्ध होंगें। इस प्रकार तैनात करने से अच्छे लाभ नहीं मिलेंगे। साथ में, जहाँ भी इसे लगाया जायेगा, इसे बदनामी ही मिलेगी।

क्यों कि साधारणतया भीतरी राजद्रोह की स्थिति तो होती नहीं है, बल्कि अनुशासन का स्तर गिराना मात्र होता है, इसलिये निरस्त्र हस्तक्षेप से काम चल सकता है। राज्य की सशस्त्र पुलिस तक की ज़रूरत नहीं होती; किन्तु के० रि० पु० बल को राज्यों की मदद के लिये ही बुलाना चाहिये और जैसे पहले किसी अप्रत्याशित स्थिति सुलझने के लिये सेना बुलायी जाती थी, जैसे ही इससे सहायता लेना चाहिये।

कोई बन्दोरी नहीं—इसलिये, इस केंद्रीय बल को बुलाये जाने पर स्थिति की पूरी पूरी जिम्मेदारी उसे सौंप देनी चाहिये; इसे कानून प्रवर्तन दल की बन्दोरी मात्र नहीं समझना चाहिये । केन्द्रिय बल की भूमिका एक उच्च स्तर की मदद की होनी चाहिये, जैसी कि स्थिति आजकल नहीं है।

जैसा कि आजकल है, क़ानून तथा व्यवस्था प्रत्येक राज्य में उसकी पुलिस का कर्त्तव्य है । शायद, राष्ट्रीय पुलिस आयोग और उसके गौण ग्रुपों द्वारा अध्ययन के अनुरूप, यह प्रणाली बदल जाये। इस परिवेश में, केन्द्रीय रिजर्व बल को सामान्य व्यवस्था बनाये रखने के लिये राज्य पुलिस का कार्य नहीं निभाना होगा; परन्तु पूरी ज़िम्मेदारी के साथ स्थितियों से सही सही सुलझना होगा।

डकैती जैसे अपराधों से भी राज्य पुलिस को ही निबटना चाहिये; किन्तु स्थिति बिगड़ने पर वहाँ राजद्रोह की संज्ञा घोषित कर, केन्द्रीय बल को बुलाना चाहिये। पर परिचालन कार्रवाइयों की सविधा के लिये, बारिकों में सेना के समान, इस बल की टुकड़ियाँ राज्यों में रहनी चाहिये । किसी भी दशा में, इस बल को राज्य पुलिस के तरकश में कमी को पूरा करने के सिद्धान्त पर आधारित नहीं होना चाहिये । इस कमी का कारण या तो बल की द्विरावृत्ति हो सकती है अथवा अपनी सामर्थ्य वाले कानून-व्यवस्था के दलों की यथोचित मात्रा रखने में आर्थिक कठिनाई हो सकती है । इस सब का विकल्प तो यही है कि सारे देश में कानून तथा शान्ति स्थापित रखने की पूरी पूरी ज़िम्मेदारी केन्द्र को लेनी चाहिये । परन्तु यह तो दूसरा ही मामला है, जिस पर पुलिस व्यवस्था के लिये सोचना होगा।

कहानी :

नौ दो ग्यारह

ले०—श्री जे० एस० शर्मा

'अबे, तू अच्छा खासा हट्टा कट्टा आदमी है बिशना । अगर ईमानदारी से रोटी कमाता तो भी मज़े से खा पी सकता था। फिर क्यों इस अड़दब में फँसा, जो हमें भी रोज चंचल गुडी से ग़लवर्गा तक कवायद कराता है'

'आप ही बताओ हवलदार साहब, कौन आदमी ईमानदारी की ज़िन्दगी बसर करना नहीं चाहता। मगर यह पाप की आवासदरी समाज उसे नेक रोज़ी कमाने दे तभी तो' हथकड़ी हिलाते हुए विशन ने कहा।

रात का वक्त था, जाड़े की ऋतु थी; प्लेट फार्म में सन्नाटा छाया हुआ था। रेल गाड़ी आने में देर थी; हवलदार ने समय काटने को विशन की चुटकी ली थी; विशन कुख्यात डाकू था; वह बड़ी कठिनता से पकड़ में आया था; उस पर कई मुक़दमे चल रहे थे, जिस की सुनवाई के लिए गुलवर्गा में उसे लाना पड़ता था। आज भी यही कैफ़ियत थी। कई सिपाहियों के साथ हवलदार विशन को पकड़े गुलवर्गा के स्टेशन पर चंचल गुडी की रेल की बाट जोह रहे थे । हवलदार ने उसे फिर कुरेदा, 'आखिर समाज ने कौन सा जुल्म किया था'

'छिः आप यह पूछिये कि कौन सा जुलम उसने नहीं ढाहा था। एक नेक किसान को दिन भर तेली के बैल की तरह जोता जाता। फिर भी वह अपने पेट को भर नहीं पाता। इधर साथ में सयानी बहिन थी चुनिया। उसके हाथ पीले करने थे । कहते है कि कमज़ोर की ज़ोरू, मुहल्ले की भाभी ।' विशना खिसियानी हँसी हँसा, 'सब ऐरा, ग़ैरा, नत्थूखैरा उसकी चढ़ती खुबसूरत जवानी पर बुरी दृष्टि डालते थे। भाँति-भाँति के प्रलोभन देते । परन्तु एक वह थी जो मरखनी गाय की तरह दुलत्ती मार देती थी। तभी एक धनिक मुंडे ने उसे बलात्कार की धमकी दी; उससे उसे पार विसाना मुश्किल था; अब बहन को मुझे बताना ही पड़ा। सुनते ही मुझे साँप सूंघ गया'

'तुझे और साँप सूंघे' कह कर हवलदार हँसा।

'नहीं, ईश्वर की सौगन्ध, मैं पहले बड़ा सीधा आदमी था। मगर यही ताना बहन ने मारा। लिए तो फिरता है भीम का सा जिस्म, मगर उस कीचक को मजा नहीं चखाया जाता'

'ठीक ही तो ताना मारा था'

‘कैसे ठीक था ? मैं एक खेतेहर मज़दूर और वह एक गुंडा महाजन । चार संड-मुसंडों को मेरे पीछे लगा सकता था। किन्तु मेरा खून अन्दर ही अन्दर खौल पड़ा। इस नीच समाज से बदला लेने की भावना तभी मेरे मन में जागी। सब से पहले तो बहन को उस नर पिशाच के चंगुल से बचाने की युक्ति सोची। मैं लखनऊ से दस कोस दूर एक गाँव में ले आया। वहाँ सब से बड़ी हवेली माता दीन साहू की थी। उसकी कई कोठियाँ और दुकाने लखनऊ में थीं। वह गिरवीगाठे का काम करता था और बड़े-बड़े अफसरों से उसका मेल था। इसलिए उसका दूर दूर तक दबदबा था, सब उसके नाम से काँपते थे । मैंने यही घर बहन के लिए ठीक समझा, फिर अपने भी मंसूबे थे’

‘बे, तेरे क्या थे ?’

‘वही तो बताने जा रहा हूँ। सायं काल का समय था। साहू खापी कर अपनी हवेली से बाहर निकला। वैसे तो वह वृद्ध था; किन्तु उसका दिल अब भी जवान था। इसका कारण यह भी था कि उसकी पत्नी को मरे कुछ वर्ष हो गये थे और काम पिपासा उसे सदा शालती रहती थी। किन्तु हवेली की दीवारों से भी ऊँची उसे समाज की दीवारें दीखती थीं। वह इज्जतदार आदमी था; दो दो पुत्र वधुयें थीं। ऐसी स्थिति में वह खुल्लमखुल्ला अपना मुंह काला नहीं करना चाहता था; परन्तु बहती गंगा में हाथ पखारने को कुछ बुरायी भी नहीं समझता था। जब उसने चुनिया को मुझ से झगड़ते देखा, तो उसकी ओर आकृष्ट हुआ और उसके रूप मकरन्द को नेत्रों से पीता रह गया। फिर पास आकर बोला ‘क्यों, सताते हो बेचारी को ?’

‘साहूजी, यह मेरी बहन घरवाले को छोड़कर चली आयी है । मैं इसे यही समझा .. रहा हूँ कि ऐसे तो बर्तन खटकते ही रहते हैं; घर को छोड़ना ठीक नहीं’ तभी चुनिया चिल्ला पड़ी; ‘मैंने कह दिया नहीं जाऊँगी, नहीं जाऊँगी; साहूजी, वह रोज़ दारू पीता है, दारू पी कर वह मुझे मारता पीटता है’ फिर वह रोने का स्वांग करने लगी। साहू का हृदय उसके करुण क्रन्दन से इतना द्रवीभूत नहीं हुआ था। जितना उसके मन मोहक रूप से मुग्ध । फौरन आकर बोला ‘क्यों बेचारी को बलि की बकरी बनाते हो ?’ ‘फिर कौन रख लेगा’

‘कोई बात नहीं। इतनी बड़ी हवेली पड़ी है । कहीं पड़ रहेगी। कुछ काम धाम कर लिया करेगी। और घर की बची खुची से पेट भर लिया करेगी’

‘और वह दाढ़ीज़ार कौन से मालपुये खिला देता है।’

‘तब तेरी मर्ज़ी । मगर साहूजी इसकी सारी ज़िम्मेदारी आप पर है’

‘क्यों फिक्र करते हो ?’ साहू ने छाती ठोकी और मैंने अतीव सन्तोष की सांस लेकर विदा ली।

मेरे जाते ही, साहू उसे हवेली में ले गया ‘लो छोटी बहु, तुम बहुत कहती थीं कि काम कर कर के थकी माँदी हो जाती हो । सो तुम्हारे लिए यह नौकरानी ला दी है”

छोटी बहु फूली नहीं समायी। वह शहर के एक धनी सेठ की पुत्री थी। उसके पिता के घर कितने ही नौकर-चाकर थे; किन्तु यहाँ का तो बाबा आदम ही निराला था। साहू

कंजूस-मक्खीचूस था। नौकरों को चोर डाकू बता कर सब काम बहुओं से कराता था और आज भी वह चुनिया को इतना काम के लिए नहीं जितनी कामुकता के लिए लाया था। परन्तु छोटी बहु को सचमुच में राहत मिली। चुनिया ने भी सेवा शुश्रूषा में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी।

बड़ी बहु के सम्मुख चुनिया धर्म की मूर्ति बनी रहती थी। पर वह काइयाँ थी। एक दिन गुसलखाने में जानकर वह जड़ाऊ हार छोड़ आयी, किन्तु चुनिया ने आँख उठा कर भी नहीं देखा। उस दिन से बड़ी बहु के दिल में चुनिया के लिये बड़ी जगह इस बात को सुनकर, छोटी बहु तो इतनी प्रभावित हुई कि अपने जेवर-कपड़े सब चुनिया से ही निकलवाती रखवाती थी। उसकी समवयस्का होने के कारण तथा चंचल स्वभाव के नाते, चुनिया शीघ्र ही छोटी बहु की नाक का बाल बन गई थी।

बृद्ध साहू को तो वह दिल बहलाने की चीज़ मिल गई थी। उसे बैठक खाने में जगह दे रखी थी। आते जाते वह सदा चुनिया को कामुक दृष्टि से ताकता था। इसकी ज़िम्मेदार चुनिया खुद भी थी। वह पहले तो चंचल बातों से वृद्ध का मन मोहती; किन्तु जब वृद्ध हाथ डालना चाहता, तो तुरन्त बिदक जाती थी-"ना बाबा, ई पाप है।" वह साहू को 'बाबा' कह कर पुकारती थी। शुरू-शुरू में साहू कट कर रह गया ; वह केशव दास की तरह अपने बालों को कोसता रहा "केशव केशन अस करी, जस अरि हु न कराय। चन्द्र बदन मगलोचनी "बाबा" कह कह जाय" । एक दो बार उसने चुनिया को हटका भी; किन्तु जब वह बाज नहीं आयी, तो उसने इसमें ही भला समझा। कम से कम टट्टी की ओट शिकार होगा । बहुतेरे बावा शब्द से वृद्ध पर शक नहीं कर पायेंगे। ऐसे वातावरण में, काम-लीला खेलने की उसे खुली छूट मिल गयी थी। वह वृद्ध से आँखें लड़ाती; उसे तड़पाती; तरसाती, पर वश में नहीं आती।"

"बड़ी चालाक थी" कह कर हवलदार हँसा।

"आखिर को मैंने उसे ऐसा ही पढ़ा सिखा रखा था"

"ठीक, फिर क्या हुआ ?"

'एक दिन तड़के ही किसी साधु ने अलख जगाई । बड़ी बहु ने चुनिया को 'चुटकी' देने को कहा । जैसे ही वह भीख देने देहली पहुँची, उसने एक जटाधारी साधु को मुस्काते देखा। कुछ दोनों की आँखों ही आँखों में बातें हुयीं; फिर चुनिया ने पंजा दिखा कर पाँच का संकेत किया। इतने ही में कुछ आहट हुयी; चुनिया ने झट से भीख साधु के कमंडल में डाली। तब तक देर होने के कारण जानने के लिये, बड़ी बहु ड्योढ़ी पर आ पहुँची। चुनिया ने तुरन्त त्यौंरी चढ़ाई और बड़ी बहु से कहने लगी-देखा बहु जी। आजकल के साधू क्या स्वादू हो गये हैं। चुटकी भर भीख से तो तृप्ति होती ही नहीं। हि हि, अरे अभी भी खड़ा है। जा नौ दो ग्यारह हो।'

साधु भौहें चढ़ा कर चला गया। बड़ी बहु डर गई। चुनिया को दस खरी खोटी सुनाई "तू गँवार, नहीं जानती। साधु वेष में भगवान परीक्षा लेते हैं। कहा है रमते राम फकीर किसी दिन फेरा करेंगे।

“हाय राम, मुझ से बड़ी ग़लती हुयी” कहती हुयी चुनेया ने बाहर झाँका, तो बड़ी बहु ने झिड़का “अब वह तेरे लिये बैठा है। कब का नौ दो ग्यारह हो गया” दोनों काफी देर तक साधुसंतों की चर्चा करती रहीं और यह सोच सोच कर डरती रहीं कि कहीं वह कोई साधु सच्चा न हो और कोई शाप न देजाये ।

‘बात आई गई हुयी; परन्तु चुनिया को नहीं। उसे पंजा याद था, फिर नौ दो ग्यारह । इसी कारण वह पाँचवीं रात को अधिक देर तक जागती रही। आज वह साहू की मन भर के टाँगें दाब रही थी; किन्तुं दृष्टि घड़ी पर लगी थी। शायद वह ग्यारह बजे की प्रतीक्षा कर रही थी, तभी तो पहले ही जाकर वह मुख्यद्वार की कुण्डी खोल आई थी।

‘ठीक ग्यारह बजते' ही एक व्यक्ति लोहबन्दा लिए घर में चुपके से घुसा और फुसफुसाया “सब ठीक है ना”

“बिल्कुल' चुनिया ने सैनों से कहा और हाथ से बर्जते हुये कहा “तुम यहीं ठहरो।”

‘उस प्रच्छन्न व्यक्ति को वहाँ ठहरा कर, चुनिया छोटी बहु के कमरे में गई; पर वह ठिठकी। पतिपत्नी गले में बाहें डाले सो रहे थे; तभी दोनों के खर्राटे सुनाई पड़े। अपनी मूर्खता पर हँस कर वह चारपाई के नीचे घूसी और लाखों के बहुमूल्य आभूषणों की एक सन्दूकची लेकर निकल आई और अपने साथी को पकड़ाई।

फिर चुनिया उस कमरे में गई, जहाँ आँख खुलने पर वृद्ध करवटें बदल रहा था। चुनिया को फिर देखते ही उसका मन बाग़ बाग़ हो गया। वह ऐसा प्रसन्न हुआ मानों स्वर्ग पा लिया हो। अब वह स्वयं को काबू में नहीं रह सका और कामांध कीचक की भाँति अपनी द्रौपदी पर जा लिपटना चाहा। पर यह क्या ? उसी समय कोई भीम उस पर कूद पड़ा और उसे धर दबोचा। साह के मूह को उसकी ही धोती से बाँध दिया। तभी चुनिया ने उसके हाथ पाँव बाँध कर उसकी कमर से चाबी निकाल ली। झटपट तिजोरी खोली गई; सारा ज़र जेवर समेटा गया। फिर अपना वचन पूरा करने के लिये दोनों उस रात को ग्यारह बजे नौ दो ग्यारह हो गये।”

“क्या खूब, जिस युवती पर उसने दिल लुटा रखा था, वही उसकी दौलत लूट कर ले गयी” कह कर हवलदार खूब हँसा और फिर बोला “तब यह थी तुम्हारी भीम शाही पहली करतूत”

इतने में गाड़ी आती दिखाई दी। विशन चिल्ला पड़ा “और यह है आखिरी करतूत”। सिपाही कुछ समझ नहीं सके। तब तक धड़ाधड़ाती रेल प्लेट फार्म पर आने लगी। सोते यात्री भाग खड़े हुये; हल्ला गुल्ला मच गया। सिपाही भी चढ़ने की फिक्र में आती हुई गाड़ी की ओर टकटकी लगाने लगे। तभी बिशन शेर की भांति उछला; बेड़ी को झटका दिया तथा तीर की तरह पटरी पार करता यह कहता चला गया “लो, वही अब नौ दो ग्यारह है।”

ट्रेन का इंजन पास आ चुका था। सब समझे कि विशन ने कूद कर आत्मा हत्या कर ली। गाड़ी बीच में आने से सिपाही कुछ नहीं कर सके। जब कहीं गाड़ी रुकी, तो उन्होंने छान मारा; पर विशन का दूर तक पता नहीं था। वह तो कब का नौ दो ग्यारह

हो चुका था।

उत्तर प्रदेश की सशस्त्र पुलिस के साथ मेरे वे दिन

ले०—श्री निगमेन्द्र सेन सक्सेना

मई 1973 से, सशस्त्र पुलिस के विषय में भारतीय समाचार पत्रों में बहुत कुछ छपता रहा है, जब उसकी कुछ टुकड़ियों ने अनुशासनहीनता का नग्न नृत्य दिखाया था। उसको सशस्त्र पुलिस के विद्रोह की संज्ञा दी गई थी, तदुपरान्त उत्तर प्रदेश में हुये कुछ उपद्रवों को दबाने तथा गोली चालन में, प्राय: सशस्त्र पुलिस को वर्वरता के लिये कुछ क्षेत्रों में बदनाम किया गया है। प्रारम्भ में, यह समझ लेना ज़रूरी है कि सशस्त्र पुलिस को साधारणतया तभी बुलाया जाता है, जब स्थिति जिला पुलिस के वश की बात नहीं रहती है, अर्थात्, जब अराजकता छा जाती है। ऐसी अधिकांश स्थितियों में, बल का प्रयोग अपरिहार्य हो जाता है। इस सशस्त्र पुलिस के विषय में निज विचार, मैं मई 1971 तक ही सीमित रखूँगा, क्योंकि उसके बाद इस दल से मेरा सम्पर्क नहीं रहा।

ब्रिटिश काल की सैनिक पुलिस को 11 बटालियनों में बढ़ाकर 1948 में तत्कालीन उपप्रधान मंत्री तथा केन्द्रीय गृह मंत्री सरदार पटेल की प्रेरणा पर सशस्त्र पुलिस का गठन हुआ । उनका ध्येय यह था कि व्यापक असैनिक उपद्रवों से निपटने के लिये, राज्यों पर अपने पास सैन्यतुल्य दल होना चाहिये, जिससे नागरिक अधिकारियों को सैनिक सहायता की आवश्यकता कभी बिरले ही अवसरों पर पड़े। कालान्तर में, ये ध्येय भुला दिये गये, मुख्यकर 1962 के उपरान्त । इसके ये दो कारण थे : 1. उत्तर प्रदेश में आन्दोलनों की गम्भीरता तथा पैमाने बढ़ गये; और 2. नागरिक पुलिस की उपयुक्त वृद्धि नहीं हुयी । अतः सशस्त्र पुलिस, दिन-प्रति-दिन जिला पुलिस की पूरक जन शक्ति के रूप में नित्य के कामों में लगाई जाने लगी। दुनियादारी में माहिर, जिला पुलिस के जवान और अधिकारी सशस्त्र पुलिस को सब से आगे रखने का स्वागत करने लगे और बढ़ावा देने लगे।

सशस्त्र पुलिस से सर्वप्रथम मेरा निकट का सम्पर्क लगभग 20 मास का रहा, जब मैं मेरठ रेंज में 8 अक्टूबर 1960 से 15 जून 1961 तक उपमहानिरीक्षक पुलिस रहा । उस अवधि में, सशस्त्र पुलिस निरन्तर छै-सात बार प्रधान मंत्री की यात्राओं, गढ़ मुक्तेश्वरके मेले, नौचंदी मेले, मेरठ के साम्प्रदायिक दंगों, मंसूरी मौसमी सेवाओं आदि में लगाई गई। इसकी सब से बड़ी तैनाती तो अप्रेल 1962 में हरद्वार के कुम्भ मेले पर हुई । रेंज उपमहानिरीक्षक के नाते तो, मैं उसके परिचालन का प्रभारी था, किन्तु मैंने जवानों से घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित किया, उनकी बारिकें व मैस देखे तथा उनके खेल

तमाशों में भाग लिया। उनको अत्यन्त स्वामीभक्त, परिश्रमी, नियंत्रित तथा सब से बढ़ कर, धर्मनिष्ठ पाया।

सबसे अधिक मैं उनकी इस बात से प्रभावित हुआ कि लगातार 18 से 24 घंटे कठोर सेवायें करने पर भी, वे प्रसन्न बदन दीखते थे । अप्रेल 1960 में ठीक उनके पास एक सप्ताह तक शिविर में, मैं हरिद्वार के कुम्भ मेले में रहा और घन्टे बार उनके काम का निरीक्षण करता रहा, विशेषतया 13 अप्रेल के मुख्य स्नान के पर्व पर, जब उन्हें 5 बजे पूर्वाह्न से रात के 10 बजे तक काम करना पड़ा। कितनों ही को तो 24 घन्टे हो कमर-कमर तक पानी में खड़ा रहना पड़ा। मैं यह देख कर अचम्भे में रह गया कि 1200 जवान होने पर भी, मद्यपान, महिलाओं से छेड़ छाड़ या अन्य प्रकार की अनुशासनहीनता आदि की कोई शिकायत उनके विरुद्ध नहीं मिली। अन्यों के साथ, हमें भी केन्द्रीय गृह मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री तथा तत्कालीन यहाँ के मुख्यमंत्री श्री चन्द्रभानु गुप्त द्वारा बधाई मिली। जन सेवा निष्ठा की इस भावना ने मुझे बहुत प्रभावित किया और तब से सशस्त्र पुलिस के प्रति, मेरा सहज स्नेह उभर आया।

जून 1962 से अप्रेल 1965 तक, मैं मुरादाबाद में उपमहानिरीक्षक (प्रशिक्षण) रहा, जहाँ 3 सशस्त्र पुलिस की बटालियनें थीं। वहाँ कमांडैंट से लेकर हेड कांस्टेबल तक सभी श्रेणियों के सदस्यों से विविध परीक्षाओं तथा परेडों के सम्बन्ध में मेरा मिलना जुलना होता था। मैंने यह पाया कि कुछ विषयों में, मुख्यकर दैनिक भत्ता तथा आवासों के मामलों में, जवान सन्तुष्ट नहीं थे।

अप्रेल 1965 से अगस्त 1968 तक जब मैं उत्तर प्रदेश में निदेशक (सतर्कता) रहा, तब मैंने देखा कि कुछ । नाकाबिल अधिकारी सशस्त्र पुलिस में केवल इस लिये पदासीन कर दिये गये कि वे कहीं अन्यत्र उपयुक्त नहीं बैठ रहे थे। उस इस प्रकार इस दल के नेतृत्व में कमजोरी आती चली गई।

19 फरवरी 1971 को, मैं उत्तर प्रदेश का महानिरीक्षक बना। इस पद को ग्रहण करने के एक ही घंटे में, मैंने सभी जवानों को यह सन्देश भेजा कि "निम्न श्रेणी के जवानों का कल्याण ही मेरी सेवा के प्रति दिन का ध्येय रहेगा।" मेरा मुख्य ध्यान सशस्त्र पुलिस की ओर था। असंतोष के अनेक कारण थे और सभी बड़े बड़े मामले केवल सरकार के हाथ में थे। अतएव, महानिरीक्षक के अधिकार में आने वाले प्रश्नों पर मैंने तुरन्त निर्णय लेने का निश्चय किया, यद्यपि सशस्त्र पुलिस के कुछ अधिकारी राज्य सरकार के विचारा धीन विषयों का ही राग-अलापते रहे ।

स्वतंत्रता के विगत 23 वर्षों में, प्रत्येक वर्ष रेलयात्रा अधिक खर्चीली होती जा रही थी और मार्च 1970 तक स्थिति यह हो गई थी कि कोई कांस्टेबल या हेड कांस्टेबल अपने परिवार के साथ दूर की यात्रा नहीं कर सकता था। क्यों कि जन्म-मृत्यु, विवाह, बीजारोपण, कटनी, बाढ़ आदि में, क्या हिन्दू क्या मुसलमान, सभी को उपस्थित होना ज़रूरी होता है, इस लिये प्रत्येक जवान को कम से कम वर्ष में दो बार घर जाना अनिवार्य होता है। यह तय हुआ कि किसी जवान को अपने घर से 250 मीलों से अधिक दूरी पर निरत नहीं किया जायेगा; जबकि उस समय कुछ सिपाही 500 मील

की दूरी तक पर लगाये हुये थे। जो तबादले चाहते थे, उनसे अर्जी देने को कहा गया। जून 1950 तक लगभग 650 कांस्टेबल और हेड कांस्टेबल अपनी मनचाही बटालियनों में बदल दिये गये और बिना सरकारी पैसा खर्च किये उन्हें खुश कर दिया गया, क्योंकि उन्हें कोई यात्राभत्ता नहीं दिया गया। यह तो पहली किश्त थी।

सशस्त्र पुलिस एक ऐसा दल है, जो सदा चलता रहता है। कितने ही कांस्टेबल, जो 45 वर्ष या उससे अधिक आयु के हैं, सदा सेवा में घूमने-फिरने से उकता जाते हैं और अनेक कम दौरे वाले पदों को पाना चाहते हैं, चाहे उन्हें क्यों नहीं विशेष वेतन भी न मिले। हमने कुछेकों को उनकी आयु, उत्तम सेवा, शिक्षा की गुणवत्ता के आधार पर अनेक सिपाही चुने और कुल 100 जवान की बदली जुलाई 1970 के अन्त तक जिले पुलिस में कर दी। उससे वे सब प्रसन्न हुये; और भी अनेकों में, इससे आशादीप जले।

1970 के मध्य में, जब राज्य सरकार के मुख्य मंत्री श्री चरण सिंह थे, उसने आवासों के लिये और अधिक धन राशि स्वीकार की और जब जवानों ने घरों को बनते देखा, तब वे प्रसन्न हुये, यद्यपि उनकी आवश्यकताओं के कुछ ही अंश को वे पूरा कर रहे थे।

सब से बड़ी शिकायत : इस विचार से सब सशस्त्र पुलिस अधिकारी सहमत थे कि सब से अधिक ज़रूरत थी सभी कांस्टेबलों और हेड कांस्टेबलों को 5 रु० के सम्मिलित दैनिक भत्तो को अच्छी तरह बढ़ाना। इसका इतिहास बड़ा सरल है। जब 1948 में सशस्त्र पुलिस का गठन हुआ, तब यह अनुमान लगाया गया था कि जवान मास में 15-20 दिन ही बाहर रहेंगे। उस समय छै आने (लगभग 30 पैसे) दैनिक भत्ते को दिये जाते थे। इस निश्चित भत्ते के दो लाभ थे- (1) इससे हिसाब-किताब लगाना नहीं पड़ता था; व (2) इससे लेखा विभाग की देरियों और दिक़ करने से जवान बच जाते थे। जैसे जैसे मूल्य बढ़ते गये, पुलिस के सभी कांस्टेबलों और हेडकांस्टेबलों का दैनिक भत्ता भी बढ़ता गया। इससे सशस्त्र पुलिस अत्यन्त ना खुश रहे। इस प्रश्न को कमांडैंटो के सभी सम्मेलनों में उठाया गया और उसका यही उत्तर मिला कि वह वित्त मंत्रालय में विचाराधीन है। मैंने उस मसले को हल करने में बड़ी दौड़ धूप की। जिस व्यक्ति ने सशस्त्र पुलिस के समेत उत्तर प्रदेश पुलिस की सब के सामने प्रशंसा करके सर्वाधिक सहानुभूति दिखायी थी, वह थे चौधरी चरण सिंह, तत्कालीन मुख्य मंत्री। 2 अक्टूबर 70 को, वित्त मंत्रालय ने कांस्टेबल और हेडकांस्टेबल के लिये इस भत्ते को बढ़ा कर 10 रु० प्रति माह कर दिया; जबकि थी, और वृद्धि की आवश्यकता। (इससे कुछ ही दिन पूर्व चौधरी जी का मंत्रीमण्डल खत्म हो गया था)। फिर भी जवान खुश हुये कि कुछ तो 23 वर्षों के बाद उन्हें बढ़ोतरी मिली। वे लोग मूलतः इतने अच्छे हैं कि तनिक से अनुग्रह को चौगुना मानते हैं। ऐसी आशा और चर्चा थी कि वर्ष भर में यह भत्ता और बढ़ाया जायेगा।

पुरस्कार : अपराधियों को पकड़ने या सशस्त्र गिरोहों से मुठभेड़ों में, सशस्त्र पुलिस को विरले ही उचित पुरस्कार मिल पाते हैं। कारण साफ़ है; सारी रिपोर्ट थानों में लिखी जाती हैं; स्वाभाविक रूप से वे अपने कारनामें तो बढ़ा-चढ़ा कर लिखते हैं।

जबाके दूसरों के कम । इसे तथा अन्य गड़ बाड़ेयों को रोकने के लिये, एक विस्तृत पुस्तिका (पैम्फलेट) तैयार की गयी। लगभग 2½ लाख से 8 लाख पुरस्कार राशि बढ़ाकर काम में लाने से, कांस्टेबलों और हेडकांस्टेबलों के मनोबल को वृद्धि हुयी। 8 मार्च 1970 को, मैंने स्वयं 500 के पुरस्कार मुरादाबाद मैं सशस्त्र पुलिस को वितरित किये । साथ ही, मैंने उसे यह बताया भी कि उसकी सारी समस्याओं से मैं परिचित हूँ और उनको हल करने की यथाशक्ति कोशिश करूँगा । यह अच्छा रहा क्योंकि मुरादाबाद या सीतापुर में कहे गये मेरे शब्द सभी जवानों पर पहुँच गये। उसी दृष्टान्त को अन्य स्थानों पर भी दोहराया गया।

सशस्त्र प्रशिक्षण केन्द्र : सशस्त्र प्रशिक्षण केन्द्र सीतापुर में किया गया कार्य, सशस्त्र पुलिस को महत्वपूर्ण रहा। यह वह स्थान था, जहाँ सभी पदोन्नति के कोर्स चलते थे और जहाँ से सशस्त्र पुलिस के समाचार सभी बटालियनों में पहुँचते थे। इस प्रशिक्षण केन्द्र को सुधारने की मेरी इच्छा थी। एक विशिष्ट प्रोजस्वी तथा सेवानिष्ठ अधिकारी के बिना (जिसने एक बड़े जिले के वरिष्ठ पुलिसाधीक्षक बनने की जगह यहाँ आना पसन्द किया), मुझे सफलता नहीं मिल सकती थी। इसी प्रकार के पाँच अन्य अधिकारी मुझे और मिले।

यह प्रश्न किया जा सकता है कि प्रशिक्षण कार्यक्रम किस प्रकार जवानों के मनोबल को प्रभावित करता है ? प्रशिक्षण के प्रथम चरण में वस्तुनिर्पेक्ष शिक्षा चुनी जाती है। अक्टूबर 1962 में चीनी धावे के बाद और फिर 1965 में भारत-पाक-युद्ध के पश्चात्, सशस्त्र पुलिस में अंधाधुंध जनवृद्धि हुयी तथा हेडकांस्टेबल के पदों पर ज्यादा और प्लाटून कमांडरों (सब इंस्पेक्टरों) के पदों पर कुछ कम । जवानों को तदर्थ पदोन्नतियाँ देकर लगाया गया। इसके अर्थ ये थे कि वे अपने इस पदों पर पक्के नहीं हो सकते थे और अपने पुराने पक्के पदों पर लौटाये जा सकते थे। यह तदर्थ पदोन्नति सदैव चिन्ता का विषय बनी हुयी थी। एक बार भी वे हेडकांस्टेबल का कोर्स पास कर लेते, तब वे हेडकांस्टेबलों के पदों पर पक्के हो सकते थे। यही स्थिति सब-इंस्पेक्टरों के पदों की थी। सशस्त्र प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षण पाने से जवानों का उन पदों पर पक्के या पदोन्नत होने का आश्वासन मिल जाता था, जिनकी प्रशिक्षा वे वहाँ पाते थे।

व्यापक आन्दोलन : कितने ही राजनीतिक कारणों से (जिनकी पररिचर्चा करना मेरे विषय के बाहर की वस्तु है) अनेकों राजनीतिक पार्टियों ने विविध मुद्दों को लेकर सरकार और मुख्य कर मुख्यमंत्री के व्यक्तिगत विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिये । जुलाई-अगस्त 1970 में, पुलिस को इन चार मुख्य आन्दोलन से सुलझना पड़ा-1. भारतीय साम्यवादी पार्टी द्वारा भूमि छीनने का आन्दोलन 2. समाजवादी पार्टी द्वारा विनम्र अवज्ञा आन्दोलन 3. छात्र आन्दोलन तथा 4. बिजली कर्मचारियों द्वारा हड़ताल । सरकार चारों ओर से घिर गई। विचार-विमर्श के समय, मैंने सरकार को स्पष्ट बता दिया कि सशस्त्र पुलिस समेत उत्तर प्रदेश की पुलिस, स्थिति से निबटने के लिये पूरी-पूरी सक्षम है वशर्ते कि (1) क़ानून को अपना काम करने दिया जाये, यानी खास अपराधों के लिये पकडे गये लोगों को न्यायिक निर्णय के लिये अदालतों में लाया जाये

और कोइ राजनीतिक दबाव नहीं पड़े; तथा (2) न्यायालय द्वारा दिये गये दंड को सरकार द्वारा कम नहीं किया जाये।

यह एक भाग्यशाली संयोग की बात थी कि 30 अगस्त 1970 को सीतापुर में हुयी दीक्षांत परेड में अन्य बातों के अलावा. श्री चरण सिंह ने यह कहा 'यह बताने में मुझे प्रसन्नता हो रही है कि भारत के सभी पुलिस दलों में उत्तर प्रदेश की पुलिस का सर्वोच्च स्थान है। दिल्ली की मेरी हाल की यात्रा में, केन्द्रीय सरकार ने तीन उत्तर प्रदेशीय सशस्त्र बटालियनें माँगी थीं। मैं इन्हें देने को तैयार हो गया और इस बात पर भी राजी हो गया कि आवश्यकता पड़ने पर और भी अतिरिक्त दल केन्द्रीय सरकार को उपलब्ध करा दिया जायेगा। जब भी राज्य से बाहर सशस्त्र पुलिस गई है, इसकी कार्यकुशलता ने इसका नाम ऊँचा किया है, जो एक गर्व का विषय है। दिल्ली में हुये विचार-विनमय में, उत्तर प्रदेश की पुलिस के काम. सारे देश में सराहे गये हैं और यह बताया गया है कि इसकी सेवा निष्ठा और उत्तर दायित्व की भावना बड़े ही उच्च स्तर की है।"

"हमारे राज्य में इन्ही दिनों कुछ प्रदर्शन हुये हैं। एक बार मुझ से यह पूछा गया कि क्या मैं उत्तर प्रदेश को पुलिस राज्य बनाना चाहता हूँ ? तब मैंने यही निवेदन किया कि कोई भी ऐसा स्थान बताया जाये, जहाँ पुलिस ने गोली-चालन या लाठी प्रहार या अश्रु गैस का प्रयोग किया हो । क़ानूनी अदालतों या विधान सभा के बिना ही कोई राज्य, पुलिस राज्य कहलाया जा सकता है। पर हमारे राज्य में, पुलिस अपने क़ानूनी कर्तव्य निभा रही है और न्यायालय इन्साफ़ दिला रहा है । पुलिस का यह कर्तव्य है कि वह क़ानूनों का कठोरता पूर्वक पालन करावें, क्योंकि जब चुने हुए प्रतिनिधियों के द्वारा बनाये गये कानूनों का ठीक-ठीक पालन नहीं होगा, तब जनता का बलशाली वर्ग कमजोर वर्ग का गला घोट देगा। इसके मायने 'जंगली राज्य' के होंगे, जहाँ क़ानून के स्थान पर बलवान पशु दुर्वल जानवरों को खा जाते हैं।

इस प्रकार 15 मास के मेरे महानिरीक्षक-काल में, विशेष महत्त्वशाली व्यक्तियों की यात्राओं, डाकू विरोधी कार्र बाइयों, मेलों तथा अन्य समारोहों के समय (जब भीड़ें इकट्ठी होती हैं) सशस्त्र पुलिस का खुलकर प्रयोग किया गया। और हरेक जगह, इसने उत्तम कार्य किये। कई व्यापक आन्दोलनों से; विना गोली चलाये, लाठी प्रहार या अश्रुगैस के, इसने भलीभाँति सुलझा।

महानिरीक्षक के रूप में, मेरा सर्वाधिक गर्वीला दिन 3 फरवरी 1971 का था, जब मैंने उन जवानों को कुल मिलाकर 60,000 रु० के पुरस्कार वितरित किये, जिन्होंने इलाहाबाद की अर्द्ध कम्भी के मेले में ऐतिहासिक सफलता पाई थी, केवल इसलिए नहीं कि वहाँ कोई दुघर्टना नहीं हुई थी। साथ ही, पुलिस की अनुकरणीय विनम्रता की प्रशंसा, क्या जनता और कमा समाचार पत्र, सभी ने की थी। जहाँ तक मुझे याद है, वहाँ तैनात किए गए दल में एक तिहाई भाग उत्तर प्रदेशीय सशस्त्र पुलिस का था । लोक सराहना उस बात से आँकी जा सकती है कि कोई राज्य सरकार सरलता से 60,000 रु० के पुरस्कार देने की स्वीकृति नहीं दे सकती।

यह आश्चर्य तथा प्रक्षोभ की बात है कि कैसे इतना सेवानिष्ठ, स्वच्छ तथा मनोज्ञ दल अनुशासनहीनता के अक्षम्य अपराधों का दोषी हुआ। वे जघन्य कार्य ना तो भुलाये जा सकते हैं और ना ही क्षमा किए जा सकते हैं; किन्तु यह सोचना भी ग़लत होगा कि अपराधी लोग केवल बारिकों में ही थे, बल्कि अनेकों अन्य स्थानों पर कितने ही वातानुकूलित कार्यालयों में उपस्थित थे। इस दुखद घटना के अनन्तर, महानिरीक्षक, सशस्त्र पुलिस का नया पद बनाया गया, जिसने उसको पूर्ण स्वस्थ बनाने के लिए एड़ी से चोटी तक पसीना एक किया। मुझे आशा है कि किसी दिन कोई व्यक्ति इसका सच्चा चिट्ठा लिखेगा।



‘गुंडेराज्य’ से हैदराबाद को छुटकारा

दिनांक 3 अप्रैल 78 को, हैदराबाद के युगल नगरों में अचानक उपद्रव, आग जनी तथा लूटपाट इस आरोप के कारण फैल गयी कि किसी पुलिस जवान ने एक महिला का शील भ्रष्ट किया है और उसके पति को पीटपाट कर मार डाला है। राजनीतिक दलों ने दूसरे दिन, ‘बंध’ का आह्वान किया, जिसने हिंसात्मक रूप धारण कर लिया। समाजविरोधी तत्वों, उग्रपंथियों तथा विपक्षी दलों ने इस गड़बड़ी का पूरा-पूरा लाभ उठाया। तुरन्त रोकथाम के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया और के० रि०पु० बल को बुलाया गया ।फल स्वरूप, 5 बटालियन की 6 कम्पनियाँ वहाँ तैनात करदी गई ।

उपद्रव और हिंसा के मूल स्थान रीन बाज़ार क्षेत्र में, 5 बटालियन की ‘बी’ कम्पनी

निरत थी। दूसरे दिन रात्रे के अंधेरे में एक आदमी को मार्ग स्थिति एक घर में तुरन्त घुसते देखा। पुलिस ने द्वार खट खटाया। चटखनी खोलकर उस आदमी ने । हमारे जवान शिशुपाल से छुरा दिखाकर उसकी रायफल छीननी चाही। पर वह जवान की पेटी से बंधी थी। इसी छीना झपटी में, शिशुपाल की अंगुली रायफल के घोड़े पर पड़ी। उसने झट फायर किया, जिससे वह गुंडा घायल होकर गिर पड़ा और दूसरे दिन मर गया । वह गुंडा सैयद बिन अली था। उसका गिरोह रीन बाज़ार, साईदाबाद, मुगलपुर, छतरोनाका थानों के अधीन क्षेत्र में शराब की दुकानों, सट्टों और जुओं के अड्डों से तथा वेश्यालयों से 'रुस्तम मामूल' वसूल करता था और जो भी मनुष्य ज़रा भी देने में हीलोहुज्जत करता था, उसके गुंडे मारपीट कर उसका कचूमर निकाल देते थे। इस तरह, हमारे बल ने हैदराबाद को गुंडा राज्य से छुटकारा दिलवाया।

<u>क्रीडा क्षेत्रे :</u>

तैराकी प्रतियोगितायें

राष्ट्र मंडल खेलों में हमारे 2 खिलाड़ी

अगस्त 78 में, एडमंटन (कनाडा) में खेले गए राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए, इ० एन. बी. भोंसले (जिम्नास्ट) तथा इ० ईश्वर सिंह (मल्ल योधा) के०रि०पु० बल से चुने गए।

भोंसले विक्रम विश्वविद्यालय की जिम्नास्ट टीम के कप्तान थे। 1972 में, उस विश्वविद्यालय की जिम्नास्ट प्रतियोगिता नीमच में हुयी। उसमें भोंसले के कारनामों से के० रि० पू० बल के केन्द्रीय खेल शिक्षक अतीव प्रभावित हुए और 1973 में भोंसले के० रि० पु० बल में भर्ती कर लिए गए। तब से वह पुलिस खेलों में इस बल की ओर से खेलते हैं और उन्हीं के कारण, हर वर्ष सिरमौर हमें मिलता है, तथा इन्हें सर्वोत्तम जिम्नास्ट की उपाधि 1975 से मिली हुई है। राष्ट्रीय जिम्नास्ट चैम्पियनशिप में भी, इन्होंने अनेकों स्वर्ण, रजत तथा कांस्य पदक जीते हैं।

ईश्वर सिंह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पहलवान छात्र हैं। 1971 में, के० रि० पु० बल में वह भर्ती हुए । राष्ट्रीय दंगल प्रतियोगिता में 1973 में, उन्होंने स्वर्ण पदक पाया; दूसरे वर्ष उसी प्रतियोगिता में रजत पदक जीता। 1975 में, फिर इन्होंने स्वर्ण पदक पाया। जिन्द और सोनीपत में, इन्होंने **'हरियाणा केसरी'** की उपाधि पायी । अनेकों अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भी इन्होंने अच्छा नाम कमाया है। **इडमंटन में भी, इन्होंने कांस्य पदक जीत कर, के० रि० पु० बल का नाम ऊंचा किया है।**

बास्केट बाल में अजमेर विजयी

12वीं अन्तरेंज बास्केट बाल प्रतियोगिता हैदराबाद ग्रुप केन्द्र के योहनान स्टेडियम

में 21 से 29 जून 78 तक खेली गयी । श्री एच० वीरभद्रैया, महानिरीक्षक से० I ने इसका उद्घाटन किया तथा श्री जे० एस० सलधाना, निदेशक आन्तरिक सुरक्षा अकादमी ने समापन समारोह के अध्यक्षता की और पारितोषिक वितरित किए। फाइनल में अजमेर और हैदराबाद रेंजों का मुकाबला हुआ, जिसमें 86-64 से अजमेर रेंज जीती । तृतीय स्थान पर गौहाटी रेंज रही।

वाई.एम.सी.ए. तैराकी में हमारी जीत

दिनांक 6 अगस्त 1978 को नई दिल्ली के राष्ट्रीय स्टेडियम के तरणताल में समाप्त हुयी प्रथम वाई० एम० सी० ए० खुली तैराकी प्रतियोगिता की टीम चैम्पियनशिप के० रि० पु० बल ने जीती।

हमारा दलीपसिंह (100 व 200 बैकस्ट्रोक) सीमा सुरक्षा दल के वी० एस० चौहान (400 व 1500 फ्रीस्टाइल) के साथ सर्वोत्तम तैराक घोषित हुआ। हमारे ही सोमशेखरन ने 100 मी० फ्रीस्टाइल को 58.7 से० में जीता। हमारे एस० लोचनन ने सी० सु० दल के चौहान का 1500 मी० तैराकी में जबरदस्त मुकाबला किया; किन्तु अन्त में, वह 2 मी० पीछे रह गया।

27वीं अ० भा० पुलिस तैराकी

दिनांक 18 से 20 अगस्त तक, राष्ट्रीय स्टेडियम दिल्ली के तरण ताल में खेली गई, 27वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल ने 206 अंक पाकर टीम चैम्पियनशिप जीती; जब कि इसके निकटतम प्रतिद्वन्द्वी सी० सु० दल ने केवल 146 अंक और भारत तिब्बत सीमा पुलिस ने 82 अंक ही पाकर क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाये।

इस प्रतियोगिता का उद्घाटन, दिल्ली के कार्यकारी पार्षद श्री केदारनाथ साहनी ने किया तथा समापन समारोह में, दिल्ली के उपराज्यपाल श्री दिलीप सिंह कोहली मुख्य अतिथि थे और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला कोहली ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये।

पहले ही दिन हमारे इस बल ने दो नये कीर्तिमान 100 मी० ब्रस्ट स्ट्रोक तथा 200 मी० फ्री स्टाइल स्पर्धाओं में स्थापित किये। 100 मी० बेस्ट स्ट्रोक में, बल के दिलीप सिंह ने पिछले रिकार्ड को भंग कर 1 मि० 25.5 से० में नया रिकार्ड क़ायम किया। 200 मी० फ्री स्टाइल में, इसी बल के० सोम शेखरन ने 2 मि० 13.2 से० में तैरकर नया पुलिस रिकार्ड बनाया।

दूसरे दिन, इस बल के चौगड्डे ने 40×100 मी० मेडले रिले में 4 : 337 से० का नया कीर्तिमान बनाया। हाईबोर्ड डाइविंग में, इसी बल के कपूर सिंह ने प्रथम स्थान तथा हरदयाल सिंह ने द्वितीय स्थान पाया। उसी दिन 200 मी० फ्री स्टाइल रिले में भी, हमारे चौगड्डे ने नया कीर्तिमान स्थापित किया तथा भारत तिब्बत पुलिस के आशिष चक्रवर्ती ने 200 मी० बटरफ्लाई में नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाया।

तीसरा और आन्तेम दिन तो एक प्रकार से के० रि० पु० बल का ही रहा। 400 मी० बैक स्ट्रोक में, हमारे पी० वी० पिल्लई ने 1 मि० 11.9 से० में तैर कर प्रथम स्थान पाया, जबकि दिलीप सिंह ने 200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक को 2 मि० 49.6 से० तैरकर नया पुलिस रिकार्ड कायम किया। स्प्रिंगबोर्ड डाइविंग में, हरदयाल सिंह ने 445.20 अंक लेकर प्रथम स्थान पाया।

श्री वी० एस० चौहान (सी० सु० दल) को 40 अंक पाने के आधार पर सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित किया गया, जबकि आशिष चक्रवर्ती (भा० ति० पु०), 36 अंक तथा दिलीप सिंह (के० रि० पु०) 33 अंक पाकर क्रमशः द्वितीय और तृतीय रहे।

छठी किरण सेठ स्मारक तैराकी

दिनांक 3 सितम्बर 78 को, राष्ट्रीय स्टेडियम के तरण ताल में समाप्त हुयी छठी किरण सेठ स्मारक तैराकी प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल के सोमशेखरन ने पुरुषों में व्यक्तिगत चम्पियनशिप जीती। उसने 50 मी० फ्रीस्टाइल को 26.04 से० में तथा 100 मी० फ्रीस्टाइल को 59.3 से० में तैर कर प्रथम स्थान पाया। इस बल का ही पद्मनाभन 100 मी० फ्री स्टाइल को 1 : 02.6 में पार कर तृतीय रहा।

सिंगापुर दौड़कूद प्रतियोगिता

सितम्बर 78 में खेली गयी ग्यारह देशों की दौड़कूद प्रतियोगिता में, के० रि० पु० बल के हरीचन्द ने 10,000 मी० दौड़ में 29 मि० 40.8 से० में एशियाई रिकार्ड भंग कर, ब्रिटेन के जे० गोटर के बाद दूसरा स्थान पाया। तारगोला फेंक में, रघुबीर सिंह ने भी 55.90 मी० की दूरी नाप कर दूसरा स्थान पाया।

पुलिस को चुनौती

ले०—श्री एम० एस० बावा

"पुलिस शब्द का उद्भव हाल का है; किन्तु पुलिस के काम तब से होते चले आ रहे हैं, जब से मानव जाति ने सुगठित रूप से तथा सामाजिक वर्गों में रहने की ज़रूरत महसूस की। यह कहना धृष्टता नहीं होगी कि चाहे कितना भी कोई समाज आदिजात क्यों नहीं हो, उस पर अपनी सामाजिक संरचना में आचरण विधिवत् रखने के लिए मनुष्यों का एक वर्ग होता था। आधुनिक समाजों में, आचरण के अनिवार्य नियमों को 'क़ानून' की संज्ञा दी जाती है और क़ानून पालन कराने के साधन हैं—पुलिस तथा न्यायपालिका।

पुलिस-तथा-न्यायपालिका : चाहे लोकतन्त्र हो या अधिनायकवाद हो, किन्तु शासन तन्त्र के ज़रूरी अंग पुलिस तथा न्यायपालिका के संस्थान हैं। परन्तु उनमें मौलिक भेद अवश्य है। सभी लोकतन्त्रात्मक देशों में राष्ट्रीय क़ानून के पालन कराने का साधन पुलिस है। उसके कर्त्तव्य और अधिकार क़ानून से परिभाषित तथा सौपे गये हैं और अपनी कार्रवाइयों के लिये क़ानून के आगे उसे सिर झुकाना पड़ता है। न्यायपालिका भी उसी प्रकार क़ानून की अभिकर्त्त है; किन्तु वह शासन के नियन्त्रण से पूर्ण स्वतन्त्र है। यह भौतिक अन्तर लोकतन्त्र विन्यास का है। अधिनायकवादी शासन में, क़ानून, पुलिस और न्यायपालिका उस कार्यकारी सरकार के केवल अधीन हैं, जो अपनी सुविधा के लिये क़ानून बनाती है, बदलती है, लागू कराती है तथा क़ानून तज देती हैं।

भारतीय संविधान के निर्माताओं ने निष्ठापूर्वक ऐसा संविधान देश को देना चाहा, जिसका उल्लंघन करना कठिन था। यह संविधान भारतवासियों के नाम पर लागू हुआ और लोकतन्त्र उसका ध्येय था। अपने संविधान के भारी भारी अनुच्छेदों की विपुल राशि में गणतन्त्रता को आधार-बिन्दु पाकर अब, हमें इसके लिये अन्यत्र नहीं खोजना पड़ता। परन्तु किसी खास तिथि तथा समय पर किसी संविधान को केवल लागू करने से, क्या हम अतीत को तिलांजलि दे सकते हैं ? पुलिस की प्रणाली भारत में दो शताब्दियों से प्रचलित रही है। ब्रिटिश लोगों ने कुछ आधुनिक पुट देकर उसे पुलिस अधिनियम 1861 में क़ानून का रूप दे दिया।

ज़िला मैजिस्ट्रेट (दण्डाधिकारी) का अधिराज्य : अधिनियम की धारा 4 से, ज़िला मैजिस्ट्रेट अपने जिले की क़ानून-व्यवस्था का सर्वेसर्वाधिकारी होता है और सो, उसके आदेशनिदेशों पर पुलिस को नाचना पड़ता है। शायद, एक व्यक्ति के हाथ सारी शक्ति रखना उस उपनिवेशवादी सरकार को उपयुक्त था, जिसके सारे यत्न ऐसी स्थितियों को पैदा करने के थे, जिनसे विदेशी उपनिवेशवादी साम्राज्य का गौरव अमर रहे।

आज के लोकतन्त्र में, क्या 1861 का पुलिस अधिनियम देशवासियों की आकांक्षाओं की पूर्ति करता है, जिनके नाम यह संविधान समर्पित किया गया है ? यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उभर कर आता है कि क्या स्वाधीनता के 30 वर्ष बाद भी, पुलिस उस प्रकार से काम कर रही है, जैसी जनता पुलिस से आशा करती थी ? यदि नहीं, तब क्या कमियाँ है और उनके क्या उपचार हैं ?

इसका उत्तर देना कठिन अवश्य है; परन्तु यह थोड़ा बहुत मानना पड़ेगा कि सर्वत्र पुलिस के प्रमुख कार्य एक जैसे हैं। आजकल महत्व इस बात का है कि पुलिस किस प्रकार अपना कार्य करती है; अपना व्यवहार रखती है। पुलिस का मुख्य कर्त्तव्य क़ानून तथा व्यवस्था को बनाये रखना है और पता लगा कर अपराध की रोक थाम करना है।

पुलिस की बरवशता : जब कि भारतीय संविधान ने न्यायपालिका को पूरी पूरी आज़ादी दी है, उसने पुलिस को अतीत की कुहेलिकाओं में ढका रखा है, जिनमें

भविष्य की आशायें छटपटा रही हैं। राष्ट्र के नेता उस क़ानून के पालन करने की शपथ लेते हैं, जिसे संविधान ने विहित किया है। उन्होंने केवल घोषणा ही नहीं की है; साथ में, न्यायपालिका को स्वतन्त्र रखने की सुनिश्चितता भी की है, जो आपात्काल में अलवत्तः खटाई में पड़ गई थी। किन्तु जो इस क़ानून के चालू नियम को रखने में मदद देती है, नामतः पुलिस, वह न तो आज़ाद है और न ही स्वतन्त्र। वह अनेकों जाने-अनजाने ज़ोर ज़बरदस्तियों के अधीन काम करती है, जहाँ उसे कार्य करने को स्वतन्त्र वातावरण ही नहीं मिल पाता है। इस बात को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि पुलिस देश की जनता के प्रति कर्त्तव्य निभाने में सर्वथा असमर्थ है। दो आधार-बिन्दु (जिनका सम्बन्ध पुलिस की संरचना से है) वे हैं :—

(I) इसका निर्माण क़ानून द्वारा हुआ है और क़ानून से इसे अधिकार मिले हैं तथा उसी के प्रति सारी ज़िम्मेदारी है; तथा

(II) उसका प्रशासनात्मक नियंत्रण कार्यकारी सरकार के हाथ में है।

हमने सरकारी काम में ब्रिटिश पद्धति को ही साधारणतः अपनाया है; केवल अपवाद है तो पुलिस। ब्रिटिश पुलिस के लिये, मार्गदर्शक सिद्धान्त हैं—

> **“क़ानून की नितान्त निष्पक्ष सेवा से; बिना आर्थिक या सामाजिक स्थिति का ध्यान किये सभी जनों की व्यक्तिगत सेवा तुरन्त करने से तथा मित्रता का हाथ बढ़ाने और विनम्रता एवं मैत्रीपूर्ण मनोविनोद से; तथा जीवन को परिरक्षित तथा सुरक्षित रखने के लिये तुरत निजी बलिदान से, लोकअनुग्रह खोजना तथा बनाये रखना”**

यह तो हर किसी को स्वीकार करना पड़ेगा कि ब्रिटेन जैसे देश तक में कथनी और करनी में अन्तर है; किन्तु वहाँ की पुलिस देश के राजनीतिक स्वामियों के सर्वथा अधीन नहीं है। उसे इसका ज्ञान है कि ऐसी स्थिति के परिणाम बड़े दुःखदायी होंगे। दुर्भाग्य से, हमारे देश की स्थिति आज यह है कि सत्तारूढ़ दल के लिये पुलिस दमन-चक्र का बना-बनाया यंत्र माना जाता है। हाल के आपात्काल ने तो इसे निस्सन्देह उजागर कर दिया है।

विभिन्न गठित आयोग ऐसी अविश्वनीय कथायें सामने ला रहे हैं, जिनमें पुलिस का दुरुपयोग हुआ था। इसमें हरियाणा सबसे बाजी मार ले गया है। राजनीतिक नेताओं को सुनने के लिये भीड़ें इकट्ठी करना, उनके लिए जयमालाओं के पहनाने के वास्ते धन इकट्ठा करना, बस अड्डों पर लोगों को घेरना या अपहृत करना तथा उनकी नसबन्दी करना—ये सब उन आदेशों के फलस्वरूप हैं, जो कार्यकारी अधिकारी से दिये गये थे, नाकि किसी न्यायमूर्ति से। सौभाग्य से, पुलिसतन्त्र से ये आदेश नहीं दिये गये थे; किन्तु इन्हें अनुपालन कराने में अवश्य पुलिसजन एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने में जुट गये थे।

दोषी कौन ? : इन दिनों समाचारपत्रों ने पुलिस को रक्त पिपासु दर्शाया है। दूसरे

के लिये अपने बलिदान के दृष्टान्त पुलिस में कम नहीं हैं और उनके अभागे दुर्व्यवहार तक के लिए, वह कोई अन्य ही व्यक्ति होता है, जो इन आदेशों को देता है।

फिर भी, पुलिसजनों को दोष का भागी बनना पड़ता है और शायद सब से अधिक मात्रा में। इन्हीं दिनों जो पुलिस दल अनुशासन की सौगन्ध खाता है, वही निर्जीव बन गया था तथा बिना आनाकानी के अवैध आदेशों का पालन करता रहा था। अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिये राजनीतिक स्वामियों को प्रसन्न करने के वास्ते, पुलिस में होड़ाहोड़ी पड़ी हुयी थी की कौन सबसे अधिक आदेशों का पालन करे। इसके लिये कुछ बेईमान पुलिस अधिकारियों ने अस्थायी लाभ भी कमाये।

प्रश्न यह नहीं है कि आज भारतीय पुलिस चौराहे पर खड़ी है; किन्तु बात यह है कि भारतीय पुलिस 19वीं शताब्दी में चली गई है व हमें आज की धारणा के अनुरूप उसे ढालना है। पर कैसे ? समस्या सरल है; पर समाधानों में सहस्रों अड़चनें खड़ी हैं। हल तो यह है कि पुलिस को नीचे की ओर नहीं देख कर ऊपर को देखना चाहिये; उसे पीछे नहीं मुड़ कर आगे बढ़ना चाहिये। उसमें आत्म-विश्वास जागना चाहिये और चाहिये उसे कठिन से कठिन काम के लिए कमर कसना।

समाधान सीधा है। पहले हमें स्वयं को सुधारना होगा और तब सरकार को बाध्य या सुनिश्चित करना होगा कि सरकार का सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह अंग, उन बाहरी प्रभावों से क़ानून का नियम पालन कराने में स्वतंत्र रहे, जिन्होंने हम सब को हानि पहुँचायी है। एक लोकतंत्रीय देश के नागरिक होने के नाते, हमें ज़िला मैजिस्ट्रेटों या राजनीतिज्ञों से क्यों रार मोल लेनी है। हमें उनके काम में टाँग नहीं अड़ाना है; पर साथ में, हम यह भी चाहेंगे कि हमें भी शांतिपूर्वक न्यायपालिका की भाँति, काम करने की छूट हो।

चुनौती : यदि इन प्रभावों तथा हस्त क्षेपों को दूर करने में हम सफल होते हैं, तब पुलिस और उसके अधिकारी, मुख्यकर पुलिस अधीक्षकों के सामने एक चुनौती मुँह फाड़ कर खड़ी होगी। दल के नेता होने के नाते, हमें उस चुनौती को स्वीकार करना होगा और जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप बनना होगा। न्यायपालिका की भाँति, कोई ऐसी पद्धति निकालनी होगी कि पुलिस को कैसे नियंत्रित रखा जाये। किन्तु वर्तमान और पिछली प्रतिक्रियाओं से डेढ़ हाथ का नमस्कार करना होगा और भविष्य की चुनौती का स्वागत करना होगा; और वह चुनौती है कि पुलिस की छवि को निखारना।

औसतन प्रत्येक नागरिक के दिमाग में पुलिस का मानसिक चित्र कोई खुश करने वाला नहीं है। यदि किसी पुलिसजन से स्थिति नहीं संभली तब सारे पुलिस विभाग के विरुद्ध द्वेष—जलन नागरिक रखने लगते हैं। विनम्रता तथा स्वच्छ और निष्पक्ष क़ानून पालन कराना, ये मंत्री तथा उत्तम साख के लिये कुंजी हैं। इस समय की मांग यह है कि हेड कांस्टेबल, सहायक उपनिरीक्षक, तथा निरीक्षक वाले निम्न प्रबन्ध स्तर पर पुलिस सेवा की गुणवत्ता उत्तम चयन स्तरों, अधिक औपचारिक शिक्षा तथा अच्छे प्रशिक्षण द्वारा सुधारी जाये और इसी क्षेत्र में क़ानून-प्रवर्तन के सभी स्तरों पर, सुधारने

के लिये ठोस कदम उठाने की भी सख्त ज़रूरत है।

आज के कार्यभार : हम परिवर्तन, चुनौती एवं संघर्ष के युग में रह रहे हैं। आज की सामाजिक क्रान्ति के प्रभाव दूरगामी हैं; इससे पुलिस अधिकारी को प्रमुख और कभी कभार प्रसिद्ध भूमिका निबाहनी पड़ती है। अल्पसंख्यकों तथा कमज़ोर वर्गों की रक्षा पर अधिकाधिक बल दिया जा रहा है। इस तीव्रगति के मौज़ूदा मुहाल में पुलिसजन की मांग बहुत बढ़ गई है। समुचित शिक्षा तथा नेतृत्व के अभाव में, पुलिस जन स्वयं को विभीषक समस्याओं से सुलझने में असमर्थ पाते हैं, जो समाज को आज घेरे हुये हैं।

कोई भी सूची तुरन्त ये तथ्य साफ़-साफ़ बता देगी कि अन्याय के बलि अधिकांश निर्धन, कमज़ोर तथा मौन वर्ग हैं, जो आर्थिक सामाजिक कठिनाइयों के कारण इन महाभयानक क्षेत्रों में रहते हैं और काम करते हैं। यह वह जाँच है, जिसे समुचित रूप से युक्तियुक्त नहीं किया जा सकता है और जिसे इस राष्ट्र का कोई नागरिक (चाहे वह अपने घर में कितना ही सुरक्षित क्यों न हो) सहन नहीं करेगा। हरिजन, आदिजाति, मुस्लिम तथा निर्धनों के बराबर, किसी अन्य वर्ग को पुलिस संरक्षण की आवश्यकता नहीं है। कमजोर वर्गों के साथ बड़ा शर्मनाक व्यवहार हुआ है, उन्हें उस न्याय, आदर तथा समानता से वंचित रखा गया है, जो भारतीय होने के नाते उनका जन्मसिद्ध अधिकार हैं। यह वह क्षेत्र है, जहाँ कुशल, न्यायसंगत, निष्पक्ष तथा सहानुभूतिप्रद क़ानून का पालन होना चाहिए।

युवकों से संपर्क—ऐसी अनेकों शिकायतें हैं, जहाँ पुलिसजनों ने युवकों से धृष्टतापूर्वक व्यवहार किया है। यह माना जा सकता है कि इने गिने पुलिस जनों के रवैये तथा घमंडी व्यवहार के कारण, पुलिस के खिलाफ विद्रोह की भावना उभरती है। वर्दीधारी पुलिस जवान को देखते ही तन वदन में आग लग जाती है।

निम्न स्तर के पुलिस जनों को अभी यह समझना है कि युवकों के हथकड़ी डालना, रस्सी से बाँधकर रखना या दुर्व्यवहार अनावश्यक है और प्रायः पुलिस के विरुद्ध आक्रोश पैदा करता है। यदि हमें क़ानून पालन कराने के लिये, युवकों के समर्थन की ज़रूरत है, तब हमें सोचना होगा कि तरुणों की दृष्टि में पुलिस की छवि सुधारने को क्या करना होगा। अगर देश में बढ़ती हुयी अराजकता की भावना को रोकना होगा, तो युवक-संगठनों से मधुर संबंध अवश्य स्थापित करने होंगे।

10 बटालियन का वार्षिकोत्सव

वह 11 जुलाई 1960 थी, जिस दिन रामपुर में 10 बटालियन का गठन हुआ था। इसके प्रथम कमांडैंट श्री आर० जे० लेफाऊचर थे।

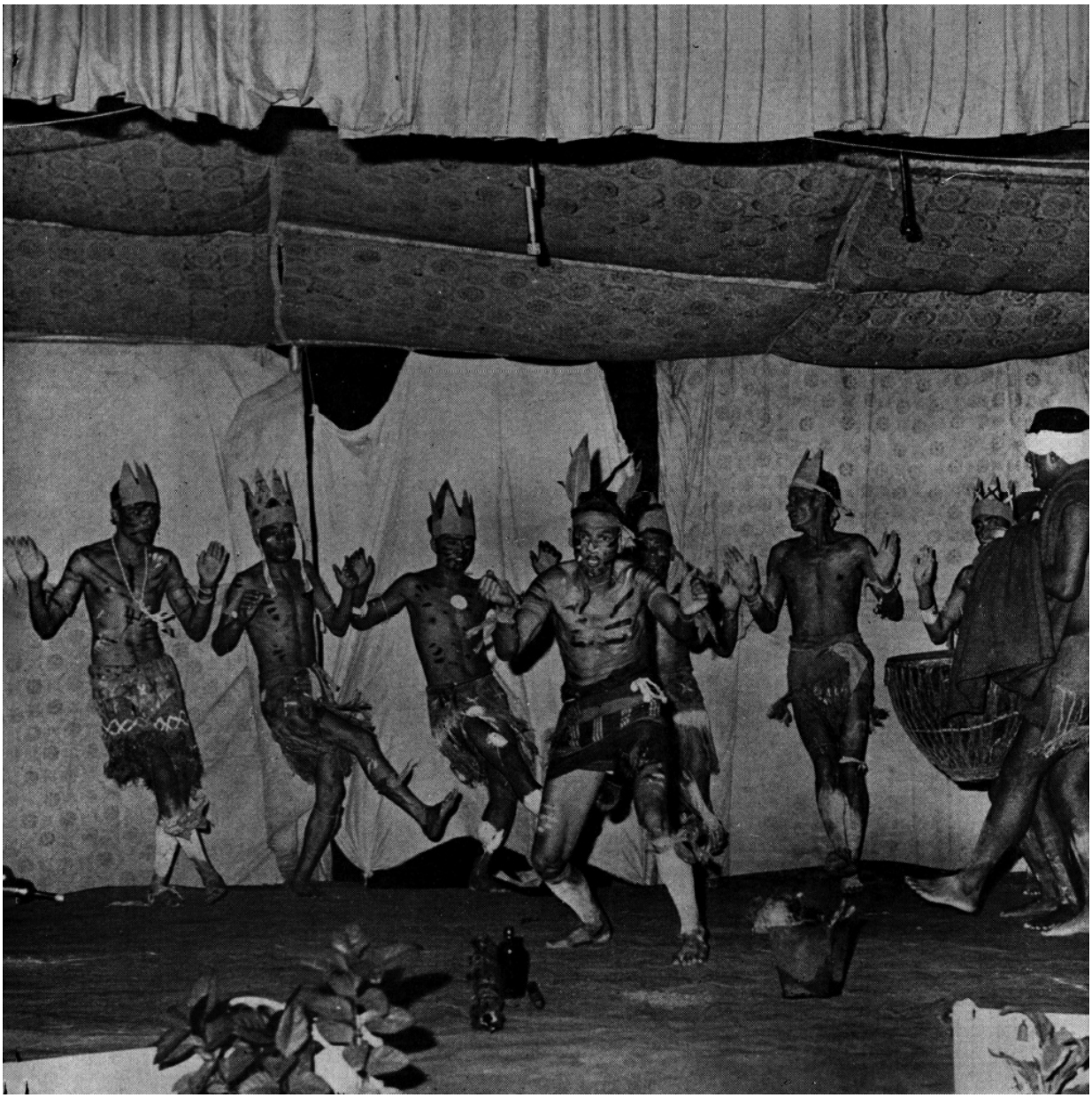
1965 के भारत-पाक युद्ध में, इसने उत्तम शौर्य दिखाया, जिसके उपलक्ष्य में, तोन पुलिस शौर्य पदक, अनेक नक़द पुरस्कार और कितने ही प्रशंसा-पत्र इसे मिले। 1971

से 1976 तक, नागा विद्रोहियों के विरुद्ध राजद्रोह-उन्मूलन की कारवाइयों में इसने भाग लिया, जिनमें 7 राष्ट्रपति के पुलिस तथा अग्निशमन शौर्यपदक, 5 पुलिस शौर्य पदक तथा 1 प्रधानमन्त्री जीवनरक्षा पदक इसने प्राप्त किया। इसने सर्वोत्तम यूनिट की मुख्यमन्त्री वाली परिचालक ट्राफी तथा महानिदेशक की उपविजेता ट्राफी 1974 में पाई।

मणिपुर में अपना पूरी सेवावधि पूरी कर, यह दुर्गापुर में विश्राम और प्रशिक्षा हेतु गई। फिर गुजरात और दिल्ली में निरत की गई। आजकल, यह बिहार में क़ानून तथा व्यवस्था का भार उठा रही है।

इसने अपना 19वाँ वार्षिकोत्सव मनोरंजन पूर्वक मनाया। अन्तः कम्पनी वालीबाल प्रतियोगिता हुई। शाम को, रंगारंगी सांस्कृतिक कार्यक्रम चला; जिसमें लोक नृत्यों तथा देश के विभिन्न भागों के गानों से समाँ बँधा। लगभग 5,000 स्थानीय निवासी इसे देखने आये, जिनमें अनेक गणमान्य अधिकारी भी थे। एक बड़े खाने का आयोजन भी हुआ।

इस अवसर पर, श्री एन० स्वेन, महानिरीक्षक, से०II के० रि० पु० बल, मुख्य अतिथि थे।



10 बटालियन के वार्षिकोत्सव पर उसके जवानों द्वारा नागा-नाच



श्री एस० एम० घोष, निवर्तमान महानिदेशक, के० रि० पु० बल की बाजेगाजे के साथ भव्य विदाई

श्रीमती जगदम्बा बाई



[रेजिस्टर्ड नं० 25627/74]

मुद्रक — सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली - 110072।
प्रकाशक —महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से एच० एस० सेठी।

सम्पादकीय कार्यालय :
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली - 110022।

श्रीमती हरबाई देवी



★ क्रैपलर ★

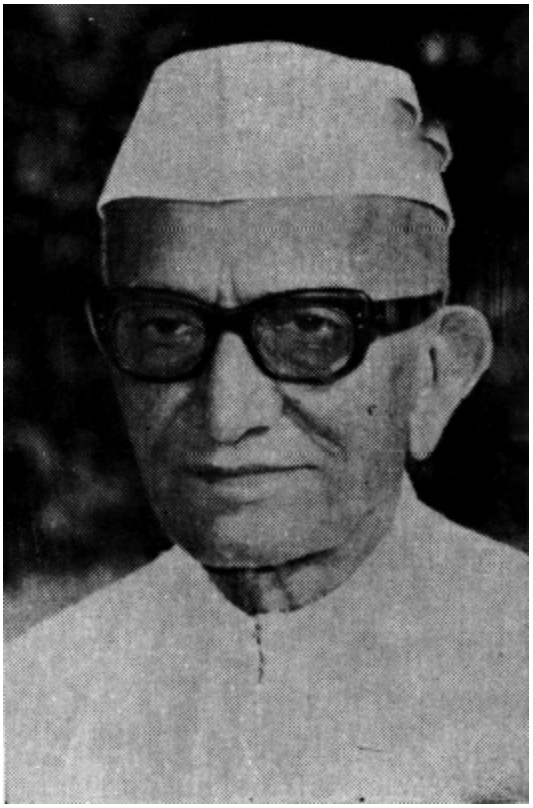
● केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का वृत्तपत्र तथा सचित्र पत्रिका ●

[द्वैमासिक—हिन्दी संस्करण]

30 नवम्बर, 1978] खण्ड VII अंक 5 [9 अग्राहयण, 1900



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 39वें वार्षिकोत्सव पर बधाई-संदेश

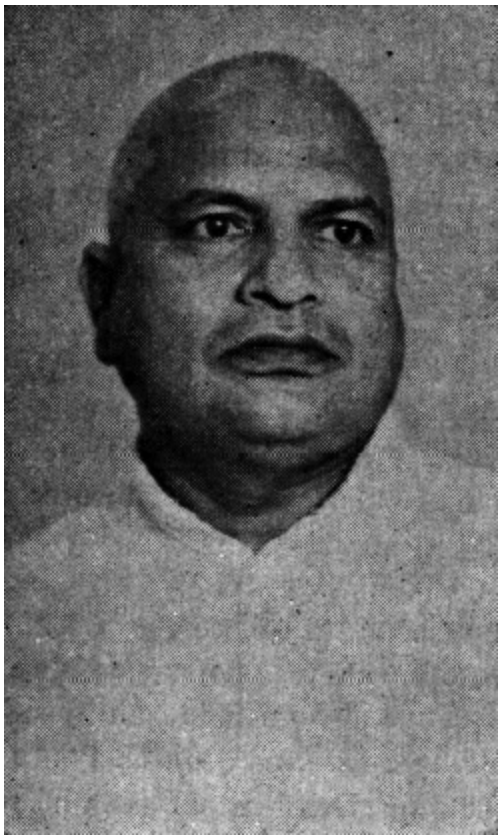


जब कभी भी उपद्रवों का रूप धारण करने वाले प्रचंड आन्दोलनों से देश की शान्ति को खतरा पैदा हुआ है या देश की अखंडता पर आँच आई है, तब केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने इन सब वर्षों में व्यवस्था बनाये रखने में मदद की है। इसके सदस्यों को अगणित दुःखदायी स्थितियों से जूझना पड़ा है; किन्तु उनके ही कारण, हमारे देशवासी निर्विघ्नतापूर्वक अपने काम-धंधे अविरत चलाते रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि के० रि० पु० बल, समाज-सेवा के उपयुक्त साधन बनने के लिये स्वयं को ढालने की चेष्टा करेगा और इस प्रकार, जनता की आशाओं-आकांक्षाओं के अनुरूप काम करेगा।

इस आशा के साथ कि जो विश्वास के० रि० पु० बल को सौंपा गया है, इसमें यह ख़रा उतरेगा, मैं इसके 39वें वार्षिकोत्सव पर, इसके सभी सदस्यों को बधाइयाँ तथा शुभकामनायें भेजना चाहूँगा।

मुरारजी देसाई (प्रधान मंत्री)



दिनांक 20 से 25 अक्टूबर 1975 तक, जो के० रि० पु० दल का 39वां वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है, उसमें मुझे सम्मिलित करने में प्रसन्नता है।

देश के सब से पुराने पुलिस दलों में से एक होने के कारण, के० रि० पु० बल को 1939 से देश के विभिन्न भागों में होने वाले उपद्रवों से जूझना पड़ रहा है। फलस्वरूप, क़ानून तथा व्यवस्था के सभी प्रकार की समस्याओं से सुलझने की विशेष योग्यता इस बल ने प्राप्त कर ली है; और इसी कारण से, जब भी किसी राज्य में शान्ति तथा व्यवस्था को ख़तरा पैदा होता है, तब वह के० रि० पु० बल की ही सेवाओं की प्रार्थना करता है। इस बल की कार्यकुशलता के लिये यह कोई छोटा-मोटा श्रेय नहीं है।

इस अवसर पर, नीमच तथा सारे देश में निरत के० रि० पु० बल के अधिकारीगण तथा जवानों को मेरी शुभ कामनायें हैं ।

धनिक लाल मंडल (गृहराज्य मंत्री)



केन्द्रीय रि० पु० बल के 39वें वार्षिकोत्सव पर मेरी बधाइयाँ हैं। इस बल ने क़ानून तथा व्यवस्था बनाये रखने में बड़ी प्रभावी भूमिका निबाही है। बाढ़ों में, देवी प्रकोपों में तथा सीमाओं पर चौकसी करने इत्यादि में, इसने प्रशंसनीय योगदान किया है।

मुझे आशा है कि ये लोग बल की परम्परायें बनाये रखेंगे और अपेक्षाकृत अधिक निष्ठा, राष्ट्रभक्ति तथा ओजस्विता से जनता तथा देश की सेवा करते रहेंगे।

एस० डी० पाटिल (गृहराज्य मंत्री)



क्रै पल र

हिन्दी संस्करण द्वैमासिक

खण्ड VII
अंक 5

30 नवम्बर 1978
9 अग्राहयरण 1900

मुख्य सम्पादक : **एच० एस० सेठी**

छाया चित्रकार : एस. के. खन्ना

हिन्दी सम्पादक :
जे० एस० शर्म्मा

I. संदेश

II. रिपोर्ताज—1. सरदार पटेल को श्रद्धांजलि

2. शाब्दिक चित्र—श्री आर. सी. गोपाल

III. लेख :

1. बाढ़ों से जूझता के० रि० पु० बल, ले०—श्री एच. एस. सेठी, जन सम्पर्क अधिकारी
2. एक चिर स्मरणीय यात्रा, ले०–श्री एस. बी. लाल
3. हम, आप और वे, ले०—सू० पी.वी. शर्मा 36 बटा०
4. दीमापुर का वह हिंसात्मक दिन, ले०—श्री भूपेन्द्र सिंह
5. भारत-दर्शन, ले०—श्री आई. एस. डागर
6. भारतीय पुलिस की ईतिभीति, ले०—श्री ए. के. मेहरा

IV. क्रीड़ा-क्षेत्रे

के० रि० पु० बल में खेलकूद, ले० श्री वी. के. साहनी

V. कविता : दिल्ली में बाढ़ और के० रि० पु० बल, रचयिता—श्री जे० एस० शर्म्मा, हिन्दी संपादक

VI. गौरवगाथा—पदक, प्रशंसा व पुरस्कार

VII. विज्ञान के चढ़ते चरण

VIII. स्वास्थ्य-सन्देश—अस्पताल में एक मित्र ले०—डॉक्टर जी० सी० सत्पथी

IX. विविध :

(i) सूक्तिसुधा

(ii) पहेलियाँ—प्र० दफ्तरी गणेश प्रसाद ग्रुप केन्द्र बन तालाब

(ii) कुशल ड्राइवर को पुरस्कार

(iii) यह भी खूब रही।



एक असहाय शिशु की जीवनरक्षा करता हुआ के० रि० पु० बल का एक जवान



श्री आर. सी. गोपाल, महानिदेशक की बधाइयाँ और शुभकामनायें

दिनांक 21 अक्टूबर को, के० रि० पु० बल अपना 39वां वार्षिकोत्सव मना रहा है। इस पुनीत अवसर पर, सभी जवानों और उनके परिवारों को मेरी बधाइयाँ हैं तथा मैं उनको शुभ कामनायें भेजता हुँ। पिछले वर्ष, क़ानून तथा व्यवस्था बनाये रखने में नागरिक अधिकारियों की सहायतार्थ याचनाओं की भारी वृद्धि होने पर भी, हमारे बल ने अपनी भूमिका बड़ी खूबसूरती से निबाही है।

यह देख कर मुझे प्रसन्नता होती है कि हमारे बल ने सब कामों को बखूबी अंजाम दिया है और सर्वत्र विजयपताका लहरायी है। इस दल का नेतृत्व तथा निदेशन, क्षेत्रकार्य में योग्य अधिकारियों द्वारा होता है और मुझे विश्वास है कि आगामी वर्षों में वे इस बल की छवि को और भी निखारेंगे।

क़ानून तथा व्यवस्था की स्थिति हमको सदा चुनौती देती रही है और हमें "सेवा तथा भक्ति" के अपने सिद्धान्तों को निभाना है। मुझे विश्वास है कि देश में शान्ति-भंग करने वाली तथा लोकतंत्रात्मक संस्थानों में बाधा डालने वाली राजनीतिक तथा आर्थिक प्रवृत्तियों से, हमारे अधिकारीगण सावधान रहेंगे। नागरिक अधिकारियों की उत्तरोत्तर सहायता के लिये सदा हमें तैयार रहना चाहिये। मांग के उत्तर में सहायता पहुँचाने के समय में कमी होनी चाहिये। इसे पाने के लिये, सेवा-रत प्रशिक्षण अनिवार्य है। पिछले वर्ष भारी सेवाभार उठाने के कारण, सेवारत प्रशिक्षण में कुछ रुकावट रही है। हमें ऐसा फिर नहीं होने देना है। सेवारत प्रशिक्षण को अत्युच्च प्राथमिकता देते हुये, जो कुछ भी विश्राम मिले, उसे इस प्रशिक्षण में लगाना होगा।

मुझे ऐसी आशा है कि कमांडेंट तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी अपनी-अपनी बटालियनों का प्रशिक्षण अपने निजी देख-रेख में करेंगे। इस प्रशिक्षण को केवल दस्तूरी और जीर्ण नहीं होने देना चाहिये। प्रत्येक स्थिति से, हमें नयी शिक्षायें मिलती हैं और उनको नये प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल करना चाहिये।

दिल्ली और बिहार में अभूतपूर्व बाढ़ों से उत्पन्न आपदाओं से जूझने में हमारी बटालियनों ने भगीरथ सेवा की है। अधिकारियों को इन अनुभवों को ध्यान में रखना चाहिये और भविष्य में ऐसे संकटों से कारग़र रूप से सुलझने के लिये, अभ्यास कराने चाहिये । इस प्रकार, लाभदायक उपलब्ध अनुभवों का एक अधिकोष बनाया जा सकता है।

अपने अधिकारियों तथा जवानों की समस्याओं से मैं परिचित हूँ। उनको मैं यथाशक्ति सुलझाने में कोई कोर-कसर उठा नहीं रखूँगा। मैं बटालियनों के कमांडेंटों से यह अनुरोध करूंगा कि हरेक दिन समय निकालकर उन्हें जवानों की शिकायतें तथा अन्य समस्यायें सुनना चाहिये और उनके परिवारों की योगक्षेम की चिन्ता करनी चाहिये।

मुझे विश्वास है कि वे कार्यकुशलता तथा प्रतिष्ठा का बहुत ऊँचा स्तर बनाये रखेंगे और आगामी वर्षों में इस बल की उच्च परम्पराओं को बनाये रखने का भरसक प्रयत्न करेंगे।

शाब्दिक चित्र :

श्री आर. सी. गोपाल

श्री आर० सी० गोपाल, नये महानिदेशक, के० रि० पु० बल का जन्म दिनांक 7 अक्टूबर 1922 को हुआ था। कर्नल ब्राउन कैम्ब्रिज स्कूल देहरादून में शिक्षा पाकर, आप द्वितीय विश्व महायुद्ध में मार्च 1942 को सेना में भर्ती हो गये । राजपूताना रायफल्स की सुविख्यात चौथी बटालियन के साथ, एक तरुण निर्भीक अफसर के रूप में, पश्चिमी मरुस्थल तथा इटली में आपने सक्रिय भाग लिया। इटली के माउण्ट केसिने के प्रसिद्ध रण में, आप बुरी भाँति घायल हो गये और जर्मनों द्वारा बन्दी बना लिये गये । महायुद्ध के उपरान्त भारत लौटने पर, आप भारतीय पुलिस सेवा के लिये मनोनीत कर लिये गये, जिसमें आप अप्रेल 1947 को भर्ती हो गये। पुलिस में, आपने मेरठ में प्रान्तीय सशस्त्र पुलिस की 1 बटालियन का समादेशन किया और अपनी प्यारी सशस्त्र पुलिस में लौटने से पूर्व, आप कानपुर, पीलीभीत, सुल्तानपुर तथा मिर्ज़ापुर ज़िलों के पुलिस अधीक्षक (सुपरिटेंडेंट) रहे । रुड़की, मुरादाबाद तथा इलाहाबाद में प्रान्तीय सशस्त्र पुलिस के कमांडेंट रहे। आप फ़ैज़ाबाद के दंगाग्रस्त ज़िले से सुलझने में अतीव सफल रहे और 1961 में वरिष्ठ पुलीसाधीक्षक (एस० पी०) के पद के लिये विशेषरूप से चुने गये। आप फिर खुफिया विभाग के प्रभारी पुलिसाध्यक्षक लखनऊ में रहे; तदुपरान्त डी० आई० जी० (उप महानिरीक्षक)

सशस्त्र पुलिस लखनऊ के बने; देश में डी० आइ० जी० के रूप में यह सब से बड़ा कार्यभार था। 26 जनवरी 1967 को सराहनीय सेवा के लिये पुलिस पदक तथा 1973 में राष्ट्रपति पुलिस तथा अग्निशमन पदक आपको विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में मिला। 1968 में, आपका चयन पुलिस महानिरीक्षक के रूप में सीमा सुरक्षा दल में हुआ और उस दल के सर्वाधिक जटिल कार्यभार के क्षेत्र जम्मू-कश्मीर में आपकी नियुक्ति हुई। वहाँ से आप का स्थानांतरण पूर्वीय हेडक्वार्टर्स में हुआ और शिलांग में आप निरत हुये, जहाँ सितम्बर 1977 तक रहे । उत्तर प्रदेश में कुछ मास रह कर, आपको भारत सरकार ने महानिरीक्षक, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के पद पर सुशोभित किया। जुलाई 1978 में, भारत सरकार ने आपको केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का कर्णधार चुना है।

गौरव गाथा :

आपको गुलाब के फूलों से बड़ा प्यार है और जहाँ भी आप रहे हैं, वहाँ अपने पीछे गुलाबों के उद्यान छोड़ आये हैं । अपने गुलाब-उपवन में आपको विचरते देखकर अतीव प्रसन्नता होती है। शिकार के शौक ने आपको सदा जवान बनाये रखा है। पर्यटन, फोटोग्राफी तथा टेनिस, स्क्वेश, मुक्केबाज़ी, तथा हाकी जैसे सभी बहिरंग खेलों में आपकी बड़ी रुचि है और इन सभी खेलों में आपने बढ़चढ़ कर भाग लिया है। उत्तर प्रदेश पुलिस खेल कूद तथा तैराकी टीम को प्रशिक्षित करने का श्रेय आप ही को है, जिसने 1967 में अखिल भारतीय पुलिस चैम्पियनशिप जीती थी।

वीरता पदक

दिल्ली के सदर बाजार में छै सशस्त्र डाकुओं से एक मुठभेड़ में वीरता दिखाने के उपलक्ष्य में के० रि० पु० दल के दो जवान, ला० ना० ठाकुर बहादुर तथा का० सुधीर चन्द पुलिस के वीरता पदक से पुरस्कृत हुए हैं। याद होगा कि जब एक दुकान को लूट कर तथा दुकानदार को घायल कर, वे डाकू एक चुरायी हुयी एम्बेसेडर कार में खचाखच भरे बाज़ार से निकल भागने की चेष्टा कर रहे थे, तब इन वीर जवानों ने कार रोक कर उन्हें पकड़ना चाहा । इस भिड़न्त में, कांस्टेबल सुधीर चन्द को मदन लाल नामक एक डाकू ने छाती में छुरा घोंपा। लां० ना० ठाकुर बहादुर भी तब घायल हुआ, जब उसने एक अन्य डाकू को कार से बाहर निकालने का यत्न किया। यद्यपि के० रि० पु० बल के जवानों पर रायफलें थीं, उन्होंने गोली इसलिए नहीं चलाई कि कहीं भीड़ में कोई अन्य व्यक्ति जख्मी या मारा नहीं जाये । ना ही मदनलाल के पकड़े जाने पर, उन्होंने उसे भीड़ द्वारा मारे जाने दिया।

इन्सपेक्टर पुरस्कृत

दिनांक 13 अगस्त 1978 को, किसान संघर्ष समिति के प्रदर्शन के समय, प्रधानमंत्री की कोठी पर 33 बटालियन के जवान निरत किये गए थे। जब अश्रुगैस

छोड़ जाने पर भी, भीड़ कोठी में घुसने की चेष्टा करने लगी, तब उस बटालियन के इ० जगदीश राम अपनी लाठी टुकड़ी के साथ उसे तितर-बितर करने को आगे बढ़ा; किन्तु सहसा एक पत्थर लगने से वह गिर गया और भीड़ ने उस पर लाठी बरसाना शुरू कर दी। उसके साथियों ने उसे उठा लिया और एम्बुलेंस तक ले आये, जिसके द्वारा वह चिकित्सा के लिये अस्पताल भेजा गया। अपने प्राणों की बिना चिन्ता किये, उसने भीड़ को छिन्न-भिन्न कर दिया। इस निर्भीक साहस तथा वीरता के उपलक्ष्य में पुलिस उपमहानिरीक्षक, नई दिल्ली ने इ० जगदीश राम को 100 रु० का नक़द पुरस्कार दिया है।

आठ जवान पुरस्कृत

धंगावन क्षेत्र में 1 अगस्त 1978 को जहामाँबाद नगरपालिका चुनाव में 17 बटालियन के ये आठ जवान शान्ति-व्यवस्था के लिये लगाये गये—हे० का० नंदन सिंह, ला. ना. ईश्वर दयाल सिंह, का० माघ सिंह, का० के० एस० मांडा, का० पी० गंगाधरन, का० राणा प्रताप सिंह, का० अशोक कुमार व क० गुरुचमन सिंह ।

इन्होंने लम्बी दौड़-धूप के बाद, चार कुख्यात गुंडों को देशी बन्दूकों के साथ पकड़ा। ज़िला मजिस्ट्रेट गया ने इन सब को उत्तम काम के लिये, 25-25 रुपये पुरस्कार में दिये हैं।

अग्निशमन

शिवसागर स्थित सतर्कता आयुक्त के कार्यालय में बिजली की खराबी से सहसा आग लग गई। कई घर उसकी चपेट में आ गये । नागरिकों तथा अन्य सुरक्षकों की सहायता से, के० रि० पु० बल ने दमकलों के आने तक आग को उग्र रूप धारण करने से रोके रखा।



सरदार पटेल को श्रद्धांजली

केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल का 39वां वार्षिकोत्सव 21 अक्टूबर 1978 से नीमच (मध्य प्रदेश) में मनाया गया।

यह 21 अक्टूबर 1959 था; जब लद्दाख में हाटस्प्रिंग के स्थान पर के०रि० पु० बल ने चीनी आक्रमणकारियों से जूझते हुये सबसे पहले अपना रक्त बहाया था। वहाँ कई पकड़े गये और दस ने तो प्रारणों की आहुति तक दे दी। उनकी उस वीरता के उपलक्ष्य में, 21 अक्टूबर को हर वर्ष सभी पुलिस दल 'शहीद दिवस' के रूप में मानते हैं।

वार्षिकोत्सव के समय, 22 अक्टूबर को स्व० सरदार वल्लभभाई पटेल की पूज्य स्मृति में पुष्पांजलि चढ़ाई गयी। यह सरदार पटेल की बुद्धिमत्ता तथा दूरदर्शिता थी, जिन्होंने के० रि० पु० बल को स्वतंत्रता के बाद बनाये रखने को ही नहीं, बल्कि अभिवृद्ध करने को भी सोचा। वास्तव में, इस बल के पुनर्जन्म का प्रमुख श्रेय श्रद्धेय पटेल को ही जाती है।

उसी दिन, के० रि० पु० बल के 39वें वाषिकोत्सव पर श्री धनिक लाल मंडल, केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री ने यह घोषणा की कि के० रि० पु० बल की कोई भी बटालियन आगे नहीं टूटेगी; यद्यपि पहले तीन बटालियनों के विघटित करने का विचार था। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने देश में शांति-व्यवस्था बनाये

रखने में के० रे० पु० बल को महत्वपूर्ण भूमिका को समझा है और कार्यकुशलता में सुधार लाने के लिये इसके पुनर्गठन पर विचार हो रहा है।

[विशद विवरण अगले अंक में]

स्वास्थ्य संदेश :

अस्पताल में एक मित्र

लेखक—डॉक्टर जी. सी. सत्पथी

हम जानते हैं कि आपके अनेकों मित्र तथा सम्बन्धी हैं। इनमें कोई इतना बीमार हो सकता है कि उसे अस्पताल में भर्ती कराना पड़े । वह आपका सम्बन्धी, परिचित, मित्र सहयोगी, साथी, अधीनस्थ या अधिकारी हो सकता है। जैसे आपको अपनी बीमारी में किसी की आवश्यकता पड़ती है, वैसे ही उसे अपने रोग में आपकी ज़रूरत पड़ सकती है। वह यह आशा करता है कि आप उसे रोगशय्याग्रस्त पाकर देखने आयें, उसके पास बैठें और कुछ मीठी-मीठी बातें करें। चाहे वह कोई दुर्घटना से ग्रस्त हो, या रोग ज्वर, दौरों, अथवा साधारण खाँसी से मुबतला हो, किन्तु आपकी दर्शनभेंट उसको शीघ्र स्वास्थ्य प्रदान करने में अचूक रामबाण औषध का काम करती है। कुछ क्षण को, वह अपनी पीड़ा, विपत्ति और उकताहट—सब कुछ भूल जाता है ।

भाँति-भाँति के रोगी होते हैं। अस्पताल में, आपको कुछ बेहोश, अत्यन्त विषाक्त, प्रक्रिया-शल्य के पश्चात्कालीन तथा मानसिक सन्तुलन खोये लोग मिलेंगे। क्या लक्षणों में, क्या व्यवहार में और क्या चिकित्सा में, ये रोगी भिन्न प्रकार के होंगे।

प्रत्येक रोगी, एक पुस्तक का अलग अध्याय होता है। डॉक्टरों और नर्सों की राय के ठीक अनुसार ही, उसका उपचार सावधानीपूर्वक होना चाहिये। मधुमेह, तपेदिक, रक्तहीनता आदि के पुराने रोगी अस्पताल में लम्बे समय तक नीरस पड़े-पड़े ऊब जाते हैं । वे अपने साधारण जीवन में लौटने के इच्छुक होते हैं और आपको देखते ही उनका दिल बाग़-बाग़ हो जाता है।

जब कभी भी आप अस्पताल में किसी मित्र या रिश्तेदार को देखने जायें, तब आप को कुछ आदर्शों का पालन करना होगा : —

वाच्यावाच्य : वैसे कोई सीमा नहीं है; परन्तु उन ही विषयों की चर्चा करनी चाहिये, जो रोगी को पसन्द हो । रोगी को उकताते पाकर, विषय बदल देना चाहिये। यदि अधिक बातचीत से रोगी चिढ़ता हो या कष्ट पाता हो, तब उसे तुरन्त रोक देना चाहिये। दफ्तर में उसकी अनुपस्थिति से दुखदायी स्थिति या किन्हीं की नुक़्ताचीनी जैसे विषय पर बात करना यदि आप चाहते हैं, तब उत्तम यह रहेगा कि आप

अस्पताल जायें हो नहीं। आप उसकी मुद्रा को पहचानें, साधारण समझ से काम लें और उसकी इच्छाओं को जानें।

समय—रोगियों से मिलने के समय का लिखा हुआ एक पट्ट हरेक अस्पताल के सामने आपने लगा देखा होगा। वह कोई बेकार नहीं लगा होता है । नहाने, खाने, वस्त्र बदलने या दन्तमंजन जैसे असाधारण समयों पर रोगी को देखने आप नहीं जाइये। जब कोई नर्स उसके शरीर को स्पंज से स्नान करा रही हो, आपको उसे देखने का कोई अर्थ नहीं। यदि रोगी महिला हुई, तब उसे पर्दा चाहिये । बच्चे को स्तनपान कराते समय, आपके मित्र की पत्नी कभी अपनी रोगशय्या के पास आपकी उपस्थिति नहीं चाहेगी। यदि डॉक्टर के दौरे का समय निकट आ रहा हो, तब रोगी के पास से तुरन्त चले जाना चाहिये।

सुबह तड़के या काफ़ी रात गये के समय, आपको रोगी देखने नहीं जाना चाहिये। आपके मिलने-जाने से, उसके विश्राम या नींद में, रक्त या द्रव्य देने में, अथवा प्रक्रियाशल्य की तैयारियों आदि में बाधा नहीं पड़नी चाहिये। आपके मन में कुछ भी हो, फिर भी आपको मुस्कराते तथा प्रसन्न दीखना चाहिये। स्वास्थ्य— लाभ कराने का सच्चा टानिक (शक्तिवर्द्धक) यही है। ना तो आपको वहाँ ठहरना बहुत ही क्षणिक होना चाहिये और ना ही उकताने वाला दीर्घकालिक । सभी प्रकार के रोगियों के पास बड़ी भीड़ नहीं लगानी चाहिये।

उपहार—चाहे आपके मित्र का परिवार एक ही स्थान पर क्यों न रहता हो, वह आपके हाथ में कुछ न कुछ उपहार अस्पताल में मिलते समय अवश्य देखना चाहता है। आप उसकी विपत्ति में केवल दर्शक ही नहीं बने रहें। आप कुछ पथ्य पदार्थ या अन्य कुछ ले जा सकते हैं। साधारणतया फल ले जाये जाते हैं। ये पौष्टिकता के लिये सर्वोत्तम हैं; किन्तु उसकी आवश्यकता की ओर ध्यान रखें। यदि हर कोई वही फल लायेगा, तब ना तो उसे वह खा पायेगा और ना ही फेंक पायेगा। यह बात देखनी होगी । साधारणतया पका हुआ भोजन आगन्तुकों को लाना मना है। कितना उत्तम हो, यदि घर बनी केक ले कर अस्पताल में आप अपनी पत्नी के साथ आयें। किन्तु नमक, चीनी आदि पर लगे प्रतिबन्धों को जानना ज़रूरी है। सभी विषयों में चिकित्सा करने वाले डॉक्टर या सेवा करने वाली नर्स से परामर्श अवश्य लेना चाहिये। अस्पताल में अपने मित्र को लेजाने वाले अन्य पदार्थ ये हैं—फूल, पुस्तकें, हल्के व्यंजन, तथा रोगी की भाषा की सचित्र कहानियाँ या पत्रिकायें।

विश्वासवर्द्धन : आपके वार्तालाप का ध्येय यह होना चाहिए कि आप रोगी को विश्वास दिला सकें कि वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेगा। इसी प्रकार के सभी रोगियों के उदाहरण आप प्रस्तुत कर सकते हैं, जो बिलकुल भले-चंगे हो गये हैं। रोग के दीर्घकालिक प्रभावों, चीरे की गम्भीरता, मृत्यु आदि अप्रिय बातों से उसके हृदय को खिन्न नहीं करिये । उसकी स्थिति में स्वयं को डाल कर आप अनुभव करिये।

अपने रोगी मित्र से कभी नहीं यह कहिये कि जो चिकित्सा हो रही है या जो डॉक्टर चिकित्सा कर रहा है, वह निम्न स्तर का है। इससे उसके मस्तिष्क में में

चिकित्सा की ओर से आशंका हो जायेगी। यदि किसी अस्पताल की स्वच्छता में गड़बड़ी है, तब भी अच्छे आगन्तुक होने के नाते, उस पर नुक़्ताचीनी नहीं करें तथा इस प्रकार आप अपने मित्र के घाव भरने या ज्वर उतरने में मदद कर सकते हैं।

लंदन के कुछ अस्पतालों में, किसी रोगी के सामान्य वृत्त-पत्र में, रोगशय्या के टिकट तक पर उसके मित्रों तथा सम्बन्धियों के नाम लिख दिये जाते हैं और उन को डाक या टेलीफोन द्ववारा सूचित कर दिया जाता है। उनके मिलने आने से चिकित्सा प्रक्रिया में बड़ी मदद मिलती है। यदि कोई रोगी विदेशी है या नगर में उसका कोई परिचित व्यक्ति वहाँ नहीं है, तब अस्पताल अधिकारी अल्पकालिक सवेतन आगन्तुकों का प्रबन्ध करते हैं। रोगी की आयु, व्यवसाय, रुचि तथा आदतों के अनुसार ऐसा प्रबन्ध होता है।

अस्पताल में और मुख्यकर महिलाओं, बच्चों, हृदयरोगियों आदि के वार्डों (विभागों) में, आपको अनुशासन रखना चाहिये। आगन्तुकों को रोगी की शय्या पर बैठने की अनुमति नहीं है। यदि आप अच्छे गायक हैं, तब आप बीमार मित्र की प्रार्थना पर गाइये; किन्तु उसी कष्ट के अन्य लोगों को शायद यह पसन्द न हो।

उपर्युक्त नियम स्वतः पूर्ण नहीं हैं। अस्पताल की व्यवहारशीलता ऐसे नियम बना कर ही लागू नहीं की जा सकती। रुग्ण मनुष्यों के हित की सदा देखभाल करना बड़ा ज़रूरी है।



बाढ़ों से जूझता के० रि० पु० बल

ले०–श्री एच० एस० सेठी

पिछले 5 सितम्बर को तड़के ही दिल्ली की शानदार कॉलोनी मॉडल टाउन के निवासी चारों ओर जल-प्रलय देखकर हक्के-बक्के रह गये। उन्हें स्वप्न में भी यह आशंका नहीं थी कि उनकी कॉलोनी कभी भी 12 फूट तक पानी में डूब सकती है। तभी तो, उन्होंने वहाँ से बच भागने की चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया था। सौभाग्य से, वहाँ के सब घर पक्के तथा कई मंजिले थे। वे बड़ी कठिनता से छतों पर चढ़ कर प्राण बचा सके । मूल्यवान सामान को बचाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था; किन्तु धीरे-धीरे नीचे की मंजिल से जो भी निकाल सके, उसे निकाला और ऊपरी छतों पर वह आपात् काल बिताने लगे। बहुत कम ही लोग कहीं और गये; क्यों कि उन्हें अपने घर गिरने का डर नहीं था। फिर भी, हर पल संशय में जा रहा था; किसी को कुछ नहीं पता था कि बाढ़ क्या रूप कब तक धारण करेगी और कब उनका संकट टलेगा?

सब की जुबान पर एक यह प्रश्न था कि जलस्तर के चढ़ने पर क्या होगा ? इसी लिये, कुछेकों ने समय रहते हुये और वहीं तो कम कम से बच्चे, महिलायें तथा वृद्धों को सुरक्षित स्थानों पर भेज दिया।

सब को दृष्टि जल-प्रलय पर लगी हुयी थी और सहायता के लिये आँखें फाड़ें वे वाट जोह रहे थे। और वह आ ही गई। के०रि०पु० बल की 14, 21 तथा 49– तीन बटालियनों के जवान उनकी सुरिक्षा को आ उपस्थित हुये।

एक मकान की पहली मंजिल पर, एक नन्हे बब्चे और उसकी माँ को निकाल बचाने के लिये एक परिवार आकुलता से सहायता के लिये प्रतिक्षण प्रतिक्षा कर रहा था। तभी उस घर के पास एक नौका पहूँची, एक पुलिस जबान खड़ा हुआ; और परिवार के सुकुमार फुल सा वह नन्हा –मुन्ना पकडा दिया गया।

के०रि०पु० बल के जवान उस परिवार को नहीं जानते थे । शायद उस परिवार के सदस्य भी नहीं जान पायेंगे कि कौन विपदा में उनके काम आये । परन्तु इतना अवश्य उन्हें मालूम था कि वे जवान के०रि०पु० बल के थे और उन जवानों को इतना पता था कि वह शिशु तथा उसकी माता, देश की पुण्य धरोहर थी।

इसी प्रकार असंख्य परिवारों की के० रि० पु० बल के जवानों ने सहायता की। क्यों कि बढ़ती हुयी जल-प्रलय की चेतावनी पहले ही मिल गयी थी, के० रि० पु० बल के अधिकारी उस चुनौती से जूझने को तैयार हो गये। पहला काम जो उन्होंने किया, वह था अपने सामान तथा उपकरणों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाना और कहीं कहीं तो केवल ऊपरी मंजिल पर ही उन्हें पहुँचा दिया। तब वे नागरिकों को सहायता देने के लिए निरत हो गए।

5 सितम्बर के स्वयं प्रभात में ही, 21 बटालियन के अधिकारी और जवान अपने प्राणपण सहयोग के लिए मॉडल टाउन पहुँच गए। तब उनपर बाढ़-बचाव का कोई भी संयंत्र नहीं था। अधिक से अधिक वे यह कर सके कि अपने 28 तैराकी जवानों को राहत कार्रवाई में लगा दिया। उस समय तक कोई अन्य मदद नहीं पहुंची थी। तैराकों ने जल-स्तर को पहले कूता और यथाशक्ति सहायता पहुँचाने लगे। बाढ़-पीड़ितों पर वे उनके सम्बन्धियों से सन्देश, भोजन तथा रसद पहुँचाने लगे। उनके इस छोटे से यत्न से सब में आशा किरण जगमगा गई।

बाद को, कुछ सेना की नौकायें घटना स्थल पर लायी गईं; किन्तु सेना पर उन्हें खेने के लिए शिक्षित माँझियों की कमी थी। के० रि० पु० दल के जवानों ने उन सैनिक नौकाओं को चलाने के लिए स्वेच्छा पूर्वक स्वयं को समर्पित किया और उन नौकाओं के द्वारा उन्होंने सहायता तथा राहत के कार्य प्रारम्भ कर दिये । जनता ने इस सहयोग की बड़ी सराहना की और एक प्रौढ़ बुद्धिजीवी ने तो केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के अंग्रेजी आद्याक्षर सी० आर० पी० को बढ़ा कर 'कोआपरेटिव रेसपांस टू पब्लिक' (जनता के सहकारी जवाब) पुलिस नाम रख दिया।

6 सितम्बर 1978 को, मॉडल टाउन क्षेत्र में 49 बटालियन के जवान भी जा पहुँचे और चार असनिक नौकाओं के द्वारा बाढ़ राहत-कार्रवाइयों में जुट गए।

इन बटालियनों के अधिकारी राहत-कार्य के निदेशन देते हुए घंटों पानी में खड़े रहे। जवानों ने केवल नौकाओं का ही प्रयोग नहीं किया; साथ में, कामचलाऊ बेड़े तथा हवा भरे ट्यूबों से भी काम लिया और जिन पर कुछ भी नहीं था, वे लोगों को अपने कन्धों पर बिठा कर लाये।

मॉडल टाउन तो एक दृष्टान्त मात्र है, वास्तव में, राजधानी के अन्य भागों में भी बाढ़-सम्बन्धी कार्रवाइयों में के० रि० पू० बल जुटा रहा। और उसकी भूमिका केवल राहत कार्य तक ही नहीं सीमित थी।

हरियाणा की जनता से पिछले वर्ष की भाँति ढासाबांध को जानबूझ कर तोड़ने से बचाने के लिए, 49 बटालियन का एक प्लाटून उस बाँध की दिनरात चौकसी करता रहा। राजधानी को पिछले वर्ष ही पता लगा कि बाँध में ज़रा सी दरार पड़ने पर क्या मुसीबत नाज़िल हुई थी।

बाढ़ के बाद, न्याय-व्यवस्था तथा यातायात के नियंत्रण की दो अन्य समस्यायें मुख फाड़े खड़ी थीं। अनेकों कॉलोनियाँ जल-निमग्न होने के कारण, समाज विरोधी तत्व, बाढ़ पीड़ितों की दयनीय दशा का नाजायज़ा फायदा उठा सकते थे। अतः 49 बटालियन के जवानों ने पुराना जमुना पुल, मॉडल टाउन, आदर्श नगर, क़िंग्जवेकैम्प, अलीपुर, मुकर्जी नगर तथा जहाँगीरपुरी का घेरा डाल दिया। रात को चोरियाँ, कुम्मल, तथा अन्य अपराधों को रोकने के लिए, वे बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में पहरा लगाते रहे । बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में जाने वाले स्थानों पर उन्होंने यातायात को नियंत्रित किया तथा जनता का मार्ग दर्शन किया।

खामपुरा, नागलिनपुरा तथा निरंकारी कॉलोनी में, 21 बटालियन के जवानों ने बूढ़ों, बच्चों, महिलाओं और रोगियों को ही नहीं निकाल बचाया; साथ ही साथ, उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण पुलों और आवश्यक प्रतिष्ठानों की चौकसी भी की।

बाढ़ में, 43 बटालियन के जवानों को महारानी बाग, कालिन्दी कालोनी, निज़ामुद्दीन तथा ओखला हेडवर्क्स निरत किया गया। कानून-व्यवस्था की गड़बड़ी रोकने के लिए, उन्होंने बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों पर पहरा दिया। निजामुद्दीन पर स्थित अन्तर्राज्यीय पुलिस बेतार स्टेशन को उन्होंने ही बचाया। जब उस स्टेशन के कर्मचारी स्थिति से निबटने में स्वयं को निस्सहाय पा रहे थे, तब के० रि० पु० बल के जवानों ने एक कीचड़ का बाँध बनाया और प्रेषक भवन में जल-प्रवेश को रोक दिया। उन्होंने ट्रांस-मीटरों (प्रेषित्रों) को उनके प्लेटफार्मों से उठा ले जाने में भी मदद की।

55 बटालियन के जवानों को अगस्त 78 के अन्त में पहुँचते ही सहायता तथा बचाव काम पर अविलम्ब लगा दिया गया। यद्यपि वे नगर से दूर, नज़फ़गढ़ के पास झड़ोदाकलां में ठहरे हुए थे, किन्तु बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए वे नित्य राजधानी खुशी-खुशी आते थे। राहत के अलावा, उन्होंने यातायात के नियंत्रण में भी मदद की।

14 बटालियन के जवानों ने बाढ़ से सर्वाधिक ग्रस्त अलीपुर के क्षेत्र में सहायता देने का कार्य किया। यहाँ के नागरिकों को छतों या पेड़ों पर शरण लेनी पड़ी थी। उन्होंने

यातायात नियंत्रण का सेवाभार भी उठाया।अन्य सभी बटालियनों की भाँति, 14 बटालियन के जवानों को भी दिन में सोलह सोलह घंटे काम करना पड़ा और जब रात को उन्हें अपने राजघाट शिविर में लौटना पड़ता था, तब उन्हें अपनी खाटों को घोर जलभरी भूमि पर बिछा कर सोना पड़ता था।

तो भी, सभी ने अपनी-अपनी सेवा प्रसन्नतापूर्वक तथा तत्परता से की, क्योंकि यह वह कार्यभार है, **जिसको उठाने में के०रि०पु० दल का प्रत्येक जवान सर्वाधिक चाव दिखलाता है।**

पुनश्च : ग्रुपकेन्द्र, नई दिल्ली की गृहणियाँ भी पीछे नहीं रहीं। उन्होंने बाढ़ पीड़ितों के लिये के आपस में 592 रु० . एकत्र कर सहायता कोषों में भेजने का प्रशंसनीय कार्य किया।-हि० सम्पादक

बंगाल की बाढ़ में हमारा सहयोग

पश्चिमी बंगाल के बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में सहायता तथा बचाव कार्रवाई में के० रि० पु० बल को पाँच बटालियनों ने राज्य सरकार को बड़ा सहयोग दिया। (विवरण आगामी संस्करण में देखिए।)

भूल सुधार

क्रेपलर के जुलाई 1978 के संस्करण के पृष्ठ 8 पर शीर्षक "घायलों को बचाना" के अन्तिम वाक्य "तथा...बचाया" को इस प्रकार पढ़िये "ग्रुप केन्द्र तथा 47 बटालियन के जवानों ने घायल यात्रियों को तुरन्त जा बचाया।"

एक चिरस्मरणीय यात्रा

ले०—श्री एस० बी० लाल

अरुणाचल प्रदेश के लोहित जिले में स्थित 60 बटालियन में अपनी नियुक्ति के आदेश आते ही, तनिक सा समय नष्ट नहीं करके, मैं उस वरिष्ठ अधिकारी पर गया जो उस क्षेत्र में तीन वर्ष रहा था और जहाँ के विषय में उसे पूर्ण जानकारी थी।

एक वृद्ध सिपाही की भाँति, वहाँ का एक सुन्दर चित्र उसने मेरे नेत्रों के सम्मुख खींचा। यद्यपि के० रि० पु० बल जैसे दल में किसी को भी किसी भी क्षेत्र में जाने को तत्पर रहना पड़ता है, तद्यपि इस अधिकारी के शब्दों ने मझे वहां की स्थितियां देखने को प्रेरित कर दिया।

निकटतम तिनसुखेया रेल स्टेशन पर तेज से तेज़ गाड़ी से पहुँचने में 4 दिन मुझे लग गये। अपने परिवार के साथ 7 बजे पूर्वाह्न मैं एक जीप में चल पड़ा। मेरा मार्गनिदेशक (एक सब इंस्पेक्टर) भी मेरे साथ था। 11 घण्टे चलने के बाद, लोहित की धारा से बनी एक लघु नदी धौला धार पर हम पहुँचे। हमें यह बताया गया कि मार्ग के निचले क्षेत्रों में पिछली रात मूसला धार वर्षा होने के कारण कीचड़ ही कीचड़ होने से, हमारी जीप नये सैखोवाघाट तक नहीं पहुँच सकेगी।

हमने एक छोटी देशी नौका द्वारा इस नदी को पार किया। आधे कि० मी० चलने के बाद, तीस फीट तक घुटने-घुटने पानी वाले एक नाले को हमने पार कर पहली बाधा जीती। दूसरी जलमयी बाधा दल-दल थी, जो टखने-टखने गहरी थी। इस दल-दल पानी को पार कर हम आगे बढ़ ।

जब हम विस्तृत नदी लोहित के किनारे पहुंचे, 'मार बोट' भोंपू ने सभी यात्रियों को नौका में चढ़ जाने की चेतावनी दी। हम घाट पर गए। उस विशाल नदी लोहित में, वह नौका लगभग 2 घण्टे चलती रही। सदियाघाट के निकट एक झटका लगा और तभी नौका ने बढ़ना रोक दिया। इंजन और बाँसों से, मांझी नौका को आगे-पीछे करने लगे । अन्य यात्रियों के साथ उनके वार्ता लाप से यह मेरी समझ में आया कि नौका नदीतल में फंस गई है।

15 मिनट की जद्दोज़हद के उपरान्त, नौका को पीछे धकेला गया और नदी-तट से उसका लंगर बाँध दिया गया। नौका के कप्तान ने यात्रियों को नौका से उतर जाने को कहा । पूर्व इसके कि नौका ऊपर उठे, 90% यात्री उतर चुके थे। वर्दीधारी होने के कारण, शायद मुझे नहीं उतारा गया । ऐसा पता लगा कि जो लोग उतर गये थे, उन्हें सदियाघाट तक पहुँचने में कोई एक कि० मी० चलना पड़ा।

असम के पुराने समृद्धशाली कस्बे सदियाघाट तक पहुँचने में, 15 मिनट लगे। उसकी पुराने वैभव-गाथा सुनाने को वहाँ अब कुछ पर्ण कुटीर ही खड़े हुए थे।

उस चैन की साँस लेकर, जो क्षणिक सिद्ध हुयी, हम नौका से उतरे । मेरा मार्गनिदेशक 'सकते' में पड़ा हुआ था, क्योंकि के० रि० पु० बल के साधारण रंग का वहाँ कोई वाहन नहीं था। जब वह दुकानदारों - से पूछताछ कर रहा था, तभी मैंने धारा से तट के पास दौड़ते हुए किसी वर्दी धारी व्यक्ति को देखा। उसने मुझे बताया कि कुडलाघाट से तेज़ तक के मार्ग में फिसलन होने के कारण, वाहन सदियाघाट तक नहीं पहुँच सकता है।

हमें धार के विरुद्ध 3 कि० मी० दूसरे घाट पर जाना पड़ा। वहाँ जाने को केवल एक छोटी देशी नौका के द्वारा हो जाने का मार्ग था। एक हेडकांस्टेबल को मार्गनिदेशक के रूप में लेकर हम नौका में बैठ गये। वह एक मनोरंजक यात्रा थी। जब एक मांझी नौका को चला रहा था, तब दो आदमी उस नौका को रस्सियों से बांधकर किनारे किनारे खे रहे थे।

जब हम घाट पर पहुंचे, तब 2 बजे (अपराह्न) थे। मेरे मार्गनिदेशक ने मुझे बताया कि यदि मुझे तेजू जाना है (जो कुछ और बाधा से परिपूर्ण 60 कि० मी० है), तब हमें

मार्ग में बिना रुके चलना होगा। अगले दिन यात्रा को कांठेनाइयों से बचने के लिए, मैंने अविराम चलने का निर्णय किया। मार्ग-यात्रा के लिए, हम एक जीप से चले। मार्ग अंशतः कोलतार वाला था और उसमें कई खड्ड थे। 60% मार्ग में कोलतार नहीं बिछा था और उसमें कितने ही लकड़ी के पुल थे। वह मार्ग ठेठ असमी ग्रामों तथा धानों के खेतों और कभी कभी घने वनों के बीच से जाता था।

एक घण्टे के बाद, हम एक जल-अवरोध पर पहुँचे, जो बन्द था। वहाँ से ही अरुणाचल प्रदेश की आन्तरिक रेखा प्रारम्भ होती है। किन्तु पड़ताली द्वार पर तैनात यूनिट चौकी । थी और वहाँ हमें के० रि० पु० बल का आदर सत्कार मिला । गर्मागर्म चाय क्षण भर में तैयार हो गई।

हमने जीप में यात्रा करना शुरू की। प्राध घण्टे चलने के उपरान्त, पानी से लबालब भरी 'काली-खोला' नामक नदी पर हम पहुँचे। हमें ज्ञात हुआ कि मुख्यालय एक हाथी का प्रबन्ध कर देगा। हाथी का नाम सुनते ही, मुझे अपने पुरातन बचपन की स्मृति प्रागई, जब राजस्थान के (जहाँ मेरे पिता सरकारी नौकर थे) एक 'राजा साहब' के हाथी पर उसके "महावत" के असीम । अनुग्रह से मैं सवारी गाँठता था। मेरी पत्नी तथा बच्चे हाथी की सवारी का ध्यान रखते ही उमंगित हो गए; उन्हें यह ध्यान नहीं रहा कि साधारण स्थितियों से सर्वथा भिन्न आज हाथी की सवारी में कितना अन्तर होगा?

हमने तुरन्त दोपहर का भोजन किया। तब तक दो हाथी आ गये, जिनमें एक पर 'हौदा' तथा के० रि० पु० बल का वर्दी धारी अफसर था। हम 'हौदे' वाले हाथी पर चढ़े; कालीखोला को पार किया और तीन नाले पार कर लगभग 2 कि० मी० चौड़े खुले मैदान में आ गये। महावत ने हमारी वायीं ओर संकेत करके पर्वतमाला दिखाई तथा उससे निकलती हुयी "हाजू" नदी के भी दर्शन कराये। हाज़ के दक्षिण में प्रसिद्ध 'दिगारू' नदी है। लगभग एक घण्टे हाथी पर यात्रा करके, हम 'दिगारू' पहुँचे । दिगारू को पहले पहल देखकर रोमांचित हो गये। किन्तु महावत को शान्त देखकर, हमारी कँपकँपी खत्म हुई। महावत के आदेश पर, हाथी नदी में घुसा और धार के विरुद्ध चलने लगा। जब हाथी मझधार में पहुँचा, तब वह तैरता सा लग रहा था, यद्यपि वास्तव में वह चल रहा था।

यह एक ऐसी बात है, जो अनुभव से सम्बन्ध रखती है। पन्द्रह मिनट के पश्चात्, हम दिगारू के दूसरे तट पर पहुँचे । हमने महावत और हाथी के स्वामी (जो वहां उपस्थित था) को धन्यवाद दिया और तेजू के लिए जीप पर सवार हुए।



क्रीड़ा क्षेत्रे :

27वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में के०रि०पु० बल चैम्पियन

दिनांक 20 अगस्त को राष्ट्रीय स्टेडियम के तरण ताल पर समाप्त हुयी 27वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल की धाक जमी रही। कितने ही नये कीर्तिमान स्थापित हुए। कम से कम तीन पिछले राष्ट्रीय रिकार्ड डूबे, जिनका मुख्य श्रेय के. रि. पु. बल के तैराकों को जाता है। इनमें उल्लेखनीय हैं 1. दलीपसिंह (100 मी. व 200 मी. ब्रस्ट स्ट्रोक); 2. के. सोमशेखरन (100 मी. व 200 मी. फ्री स्टाइल); 3. पी. वी पिल्लई (100 मी. व 200 मी. बैक स्ट्रोक.); 4. पद्मानाभन (100 मी. व 200 भी. व 400 मी. फ्री स्टा ल); 5. एस. लोचनन (400 मी. व 1500 मी. फ्रो स्टाइल); 6. कपूर सिंह (हाई बोर्ड डाइविंग); 7. हरदयाल (स्प्रिंग बोर्ड व हाई बोर्ड डाइविंग) तथा 8. ढाका सिंह (स्प्रिंग बोर्ड डाइविंग)।

पांरेणाम इस प्रकार रहे–

100 मी० की स्टाइल के० : सोनोवरन के० रि० पु०) I; वी० एस० चौहान (सी० सु० दल) II व पद्मानाभन (के० रि० पु०) III (नया पुलिस रिकार्ड)।

200 मी० फ्रीस्टाइल : के० सोम शेखरन (के० रि० पु०) I; वी० एस० चौहान (सी० सु० दल) II व पद्मनाभान (के० रि० पु०) III (नया रिकार्ड)।

400 मी० फ्री स्टाइल : वी० एस० चौहान (सी० सु० दल) I; एस० लोचनन - (के० रि० पु०) II व पद्मनाभन (के० रि० पु०) III (नया पुलिस रिकार्ड)।

100 मी० बटरफ्लाई; आशिष चक्र वर्ती (भा० ति० पु०) I; आर० एस० नायर (के० रि० पु०) II व बृजकांत (सी० सु० दल) III (नया पुलिस रिकार्ड न तथा राष्ट्रीय रिकार्ड से भी बेहतर)।

100 मी० बैक स्ट्रोक : पी० वी० पिल्लई (के० रि० पु०) I; पीतम्बरदास (के० रि० पु०) II व बाल किशन (सी० सु० दल) II.

200 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक : दिलीप सिंह (के० रि० पु०) I; निर्मल सेन (सी० सु० दल) II व तहसीलदार सिंह (उ० प्र०) III (नया पुलिस रिकार्ड)

4×100 मी० रिले : के० रि० पु०I; सी० सु० दल II व भा० ति० पु० III (नया पुलिस रिकार्ड)।

स्प्रिंग बोर्ड डाइविंगःहरदयाल सिंह (के० रि० पु०) I, ढाकासिंह (के० रि० पु०) II व घनश्याम सिंह (सी० सु० दल) III (नया पुलिस रिकार्ड)।

हाईबोर्ड डाइविंग : कपूर सिंह (के० रि० पु०) I, हरदयाल सिंह (के० रि० पु०) II व प्रह्लाद सिंह (उ० प्र०) III.

200 मी० बटरफ्लाई: ए० चक्रवर्ती (भा० ति० पु०) I; बृजकांत (सी० सु० दल) II, के० बी० सहाय (भा० ति० पु०) III (नया पुलिस तथा राष्ट्रीय रिकार्ड)।

1500 मी० बटरफ्लाई : वी० एस० चौहान (सी० सु० दल) I; एस० लोचनन (के रि० पु०) II व वी० महाजन (म० प्र०) III.

क्रीडा क्षेत्र:

4×100 मी० मेडले रिले : के० रि० पु० I; सी० सु० दल II व भा० ति० पु० II (नयारिकार्ड)।

100 मी० ब्रेस्ट स्ट्रोक : दलीप सिंह (के०रि०पू०) I; निर्मल सेन (सी०सु० दल) I; व पी०वी० पिल्लई (के०रि०पु०) III.

डालमिया तैराकी में सिरमौर

द्वितीय अखिल भारतीय डालमिया तैराकी प्रतियोगिता में के० रि० पु० बल ने भाग लिया और तैराकी तथा गोतेमारी में पुरुषों की चैम्पियनशिप जीत ली। इस प्रतियोगिता

का उद्घाटन श्री आर० सी० गोपाल, महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने किया।

ए० चक्रवर्ती (भा० ति० सी० पुलिस), एस० सोमशेखरन (के० रि० पुलिस) तथा दलीप सिंह (के० रि० पुलिस)–तीनों संयुक्त विजेता घोषित किये गये।

के० रि० पु० बल ने 22 अंक पाकर दक्षिणी पूर्वीय रेलवे को दूसरे स्थान पर ढकेल दिया। भारत तिब्बत सीमा पुलिस तीसरे स्थान पर रही।

क्रासकंट्री दौड़

प्रथम अखिल भारतीय पुलिस क्रास कंट्री दौड़ में, हरी चन्द ने नया रिकार्ड क़ायम किया। प्रथम नौ स्थानों में, हमारे इन धाबकों ने छै स्थान पा कर टीम चैम्पियनशिप हमें दिलाई हरीचन्द I; 2. प्रदीप कुमार II; 3. जसदेव V; 4. ए० जी० योहनान VI; 5. चन्द्रभान VIII तथा सी० बी० एस० राठौड़ IX.

गृह निर्माण को अग्रिम धन

सभी विभागाध्यक्ष भविष्य मैं गृह निर्माण अग्रिम धन के नियमानुसार, अपने कर्मचारियों को अग्रिम धन स्वयं स्वीकृत कर सकेंगे; किन्तु छूट मांगने वाले, अपवाद मामले अब भी महानिदेशालय द्वारा निर्माण तथा आवास मंत्रालय को स्वीकृति हेतु भेजे जाते रहेंगे।

फोटो प्रतियोगिता

फोटो प्रतियोगिता 1978 में इन्होंने प्रथम तृतीय स्थान पाये हैं तथा 100 रु० 80रु० व 60 रु० के क्रमशः न क़द पुरस्कार पाये हैं –1. स० इ० अभय सिंह (27 बटा०) शीर्षक 'समर सोलेस' (ग्रीष्म विश्राम); 2. स० इ० डी. एस. सजवान (35 बटा०), शीर्षक 'दी विक्टर एंड दी वैन्क्विड' (विजयी तथा पराजित) व 3. सूबेदार मेजर जी. एस. बाबा (ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम) शीर्षक 'ए मोमेंट टु हरसेल्फ' (स्वयं को एक क्षण)।

इनके अतिरिक्त, अन्य पुरस्कृत व्यक्ति ये हैं— 1. इ० के० के० मिश्रा, (13 बटा०) 50 रु० 2. स० इ० आर. पी. पाण्डेय (47 बटा०) 40 रु० व 35 रु० 3., डीवाई० एस० पी० यू. सी. मोखासी (ग्रुप केन्द्र नागपुर) 35 रु. 4. स० इ० जे. पी. सिंह (46 बटा०) 25 रु० 5. इ० इ० जे० न्यूटन (45 बटा०) 25 रु० 6. स० इ० एस. पी. सक्सेना (3 सिग बटा० 25 रु०।

क्रैपलर की कार्यंकारिणी समिति ने फोटो प्रतियोगिता हरएक वर्ष आयोजित करने का निश्चय किया है।

संयुक्त राष्ट्र बालीबाल

दिनांक 29 अक्टूबर 78 को, के० रि० पु० बल ने संयुक्त राष्ट्र खेल सप्ताह समारोह बालीवाल में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस को जुझारू संघर्ष के बाद पराजित किया। लक्ष्मणन, ए० जार्ज, रोहतास तथा कृष्णन के उत्कृष्ट खेल ने ही सरलता से बल को

शानदार ट्राफी दिलाई।

अन्तर्रेंज कुश्ती प्रतियोगिता

दिनांक 25 सितम्बर को, इस बल की अन्तरेंज कुश्ती प्रतियोगिता में दिल्ली रेंज ने 42 अंक पाकर टीम चैम्पियनशिप जीती । गौहाटी रेंज (39 अंक) द्वितीय तथा पटना रेंज (32 अंक) तृतीय रही। सर्वश्री सुखवन्त सिंह और दीवान सिंह को सुपर हेवी भार में संयुक्त विजेता घोषित किया गया।

अंतर्रेंज दौड़कूद प्रतियोगिता

नीमच में वार्षिकोत्सव पर आयोजित 12 वीं अन्तर्रेंज एथ्लेटिक प्रतियोगिता में अजमेर रेंज (173 अंक) ने चैम्पियनशिप जीती । दिल्ली रेंज द्वितीय और हैदराबाद रेंज तृतीय रही। इस प्रतियोगिता में ये प्रमुख कीर्तिमान स्थापित हुए—

1. चक्का फेंक—एच० एस० भुल्लर (दिल्ली) ने 44.10 मी० चक्का फेंक कर नया कीर्तिमान बनाया।

2. गोला फेंक—बी० सुशीलन (हैदराबाद) ने 65.92 मी० अपने ही पहले कीर्तिमान को सुधारा।

3. पोल वाल्ट—प्रेम चन्द्रन (श्रीनगर) ने 3.80 मी० का नया रिकार्ड बनाया।

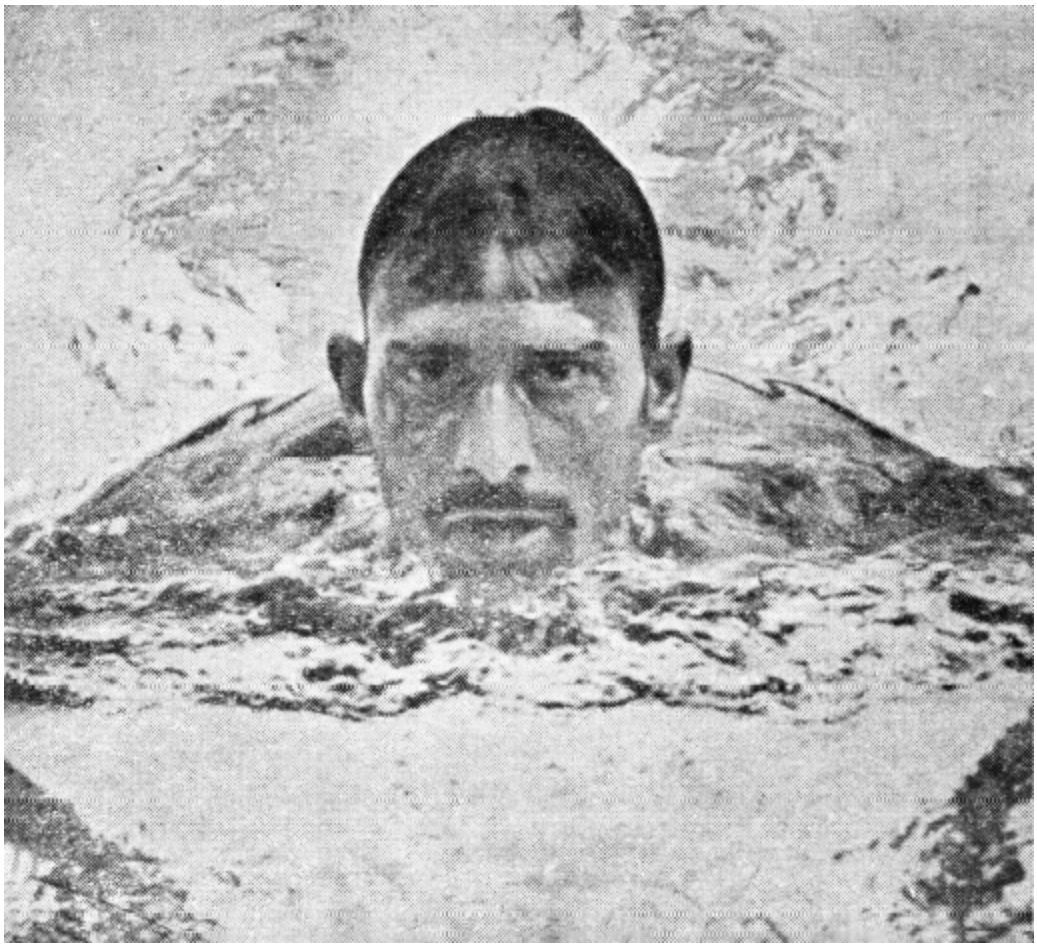
4. 3000 मी० स्टीपिल चेज—प्रदीप कुमार (श्री नगर) ने 9 मी० 29 से० में पूरी कर नया कीर्तिमान स्थापित किया।—

5. 10,000 मी० दौड़—हरीचन्द (अजमेर) ने पिछले वर्ष का अपना 30 मि० 29 से० वाला रिकार्ड, 29 मि० 59 से० में दौड़ कर तोड़ डाला।

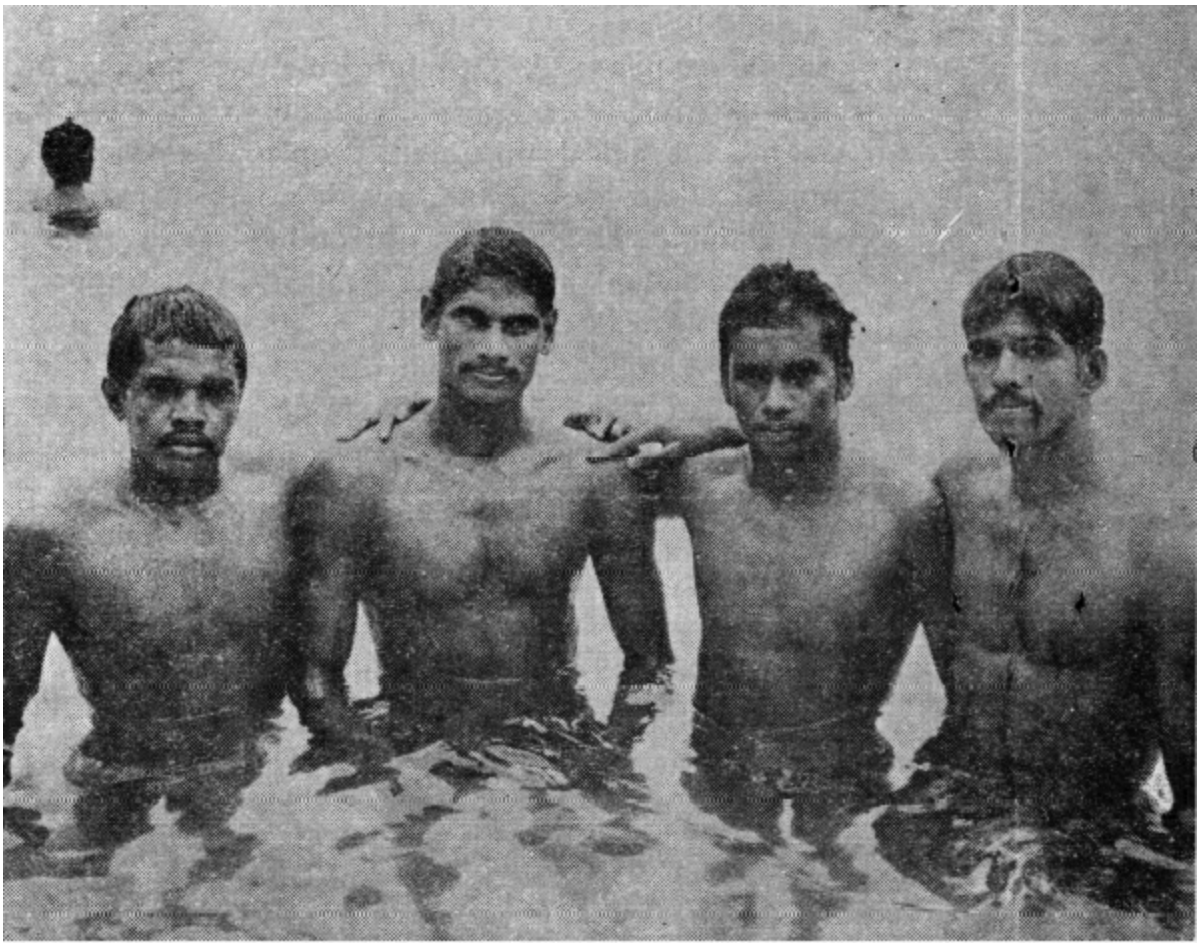


दिल्ली के उपराज्यपाल की धर्मपत्नी से शील्ड पाता हुआ हरीचन्द

27वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में ख्याति पाने वाले हमारे तैराक



दलीप सिंह



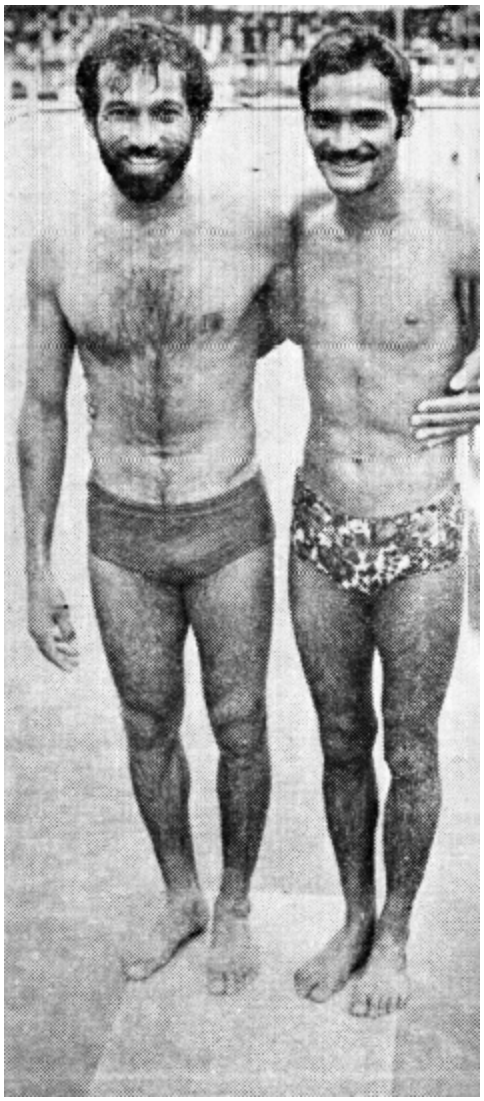
नायर, सोमशेखरन, लोचनन तथा पद्मनाभन



सोमशेखरन



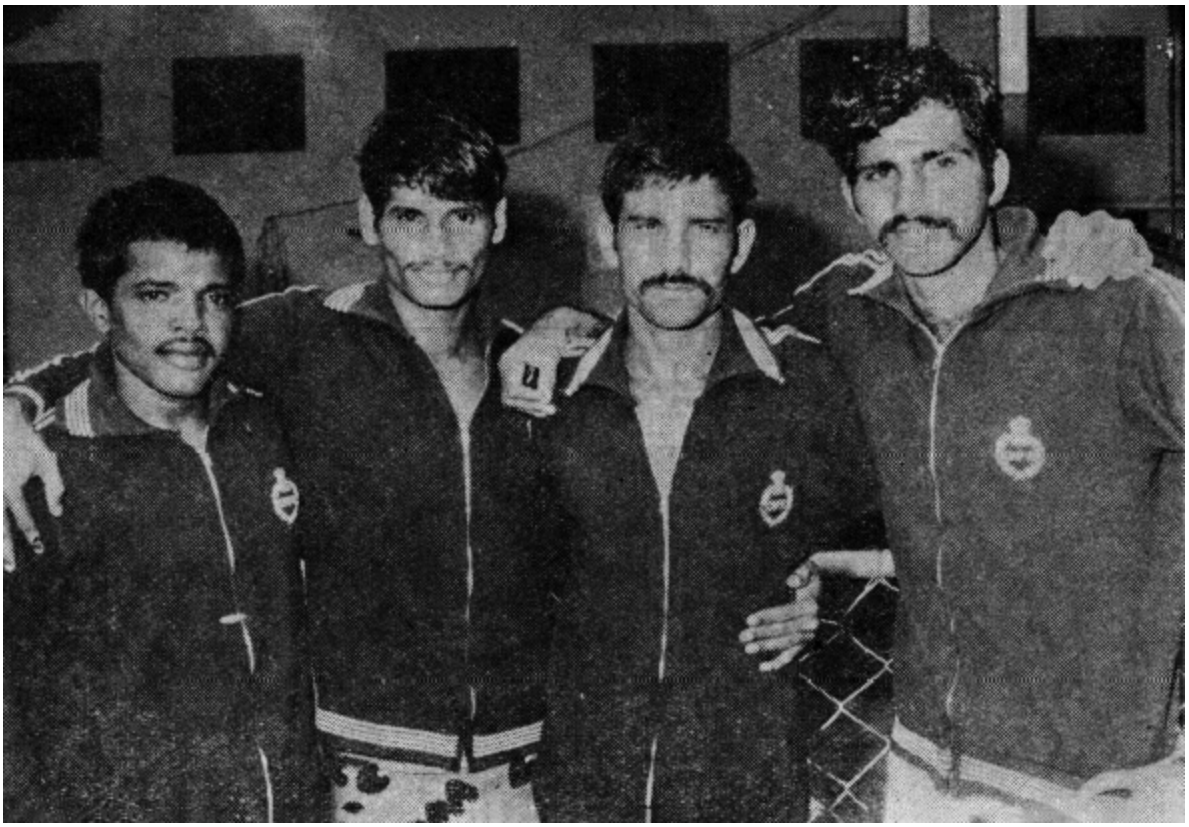
पिल्लई



हरदयाल सिंह और कपूर सिंह



के० रि० पु० बल के जाने माने तैराक



रिले तैराकी का चौगडडा—पिल्लई, दलीप सिंह, सोमशेखरन व नायर



तैराकों को मार्च पास्ट में सलामी लेते हुये दिल्ली के उपराज्यपाल श्री डी० आर० कोहल

हम, आप और वे

ले०—सू० पी० वी० शर्मा, 36 बटा०

आज हम को स्वतंत्र हुए 31 वर्ष हो गए हैं। क्या पुरानी, क्या नई, हमारी दोनों सरकारों का उद्देश्य यही रहा है कि अधिक से अधिक जनता शिक्षित हो। इस उद्देश्य को लेकर आज सरकार करोड़ों रुपये यहाँ तक की प्रौढ़ शिक्षा पर व्यय कर रही है। केवल हस्ताक्षर करना ही सीखना नहीं है; वरन् प्रत्येक के दिमाग़ को इतना विकसित करना है कि वह किसी कार्य को करने से अपना, और अपने राष्ट्र के हित या अहित के बारे में सोच सके।

आज हमारे फोर्स में, पूर्व की भांति अनपढ़ जवान नहीं भर्ती किए जाते हैं, क्यों कि पिछली गोरी सरकार की ज़ोर-ज़बर दस्ती के ग़लत उद्देश्यों से आज हमारे सम्बन्ध

जनता से उसी प्रकार के हैं जैसे एक बच्चे और हउवे के होते हैं । इस ग़लत धारणा को दूर करने के लिए, हम फोर्स में पढ़े-लिखे लोगों को ही भर्ती करते हैं।

फोर्स में भर्ती होने के लिए, जवान स्कूल छोड़ कर आता है। स्कूल में उसका उद्देश्य मुख्य कर प्रमाण-पत्र प्राप्त करना होता है, जिस से फोर्स में वह आसानी से भर्ती हो सके। इसके लिए, किसी प्रकार कछुवे और खरगोश, तथा वये और बन्दर की कहानियाँ जैसी चीजें रट कर, वह उत्तीर्ण हो जाता है; किन्तु उनका सार नहीं समझ पाता है। इसलिए, फोर्स में आने के बाद उसका दिमाग विकसित करना हमारा परम कर्तव्य हो जाता है ।

इस कार्य को करने का ज्यादा उत्तरदायित्व आज हमारे ऊपर है, क्योंकि जवान का जितना सीधा सम्बन्ध हम से होता है, उतना उच्च पदाधिकारी से नहीं। हम उसे भली-भाँति समझा सकते हैं कि उसे किन बातों को करना या किन को नहीं करना चाहिए, जिसमें उसके हित के साथ-साथ, फोर्स तथा राष्ट्र का हित भी निहित है। हम एक छोटे उदाहरण से अपनी बात स्पष्ट कर सकते हैं। मान लीजिए, किसी जवान को नशाबन्दी समझाना है। अगर आप उसे सीधे उच्च अधिकारी पर ले गए और सज़ा दिला दी, तो उस पर उतना प्रभाव नहीं होगा, जितना तब होगा जब आप उसे प्यार से समझायें "देखों, शराब पीने से जिग़र खराब होता है; इससे अनेकों और बीमारियाँ शरीर में प्रवेश कर जाती हैं, जिससे शरीर खोखला हो जाता है। फिर पैसा भी व्यर्थ में बर्बाद होता है। शराबी को उसके साथी भी अच्छी निगाह से नहीं देखते। बोलो, ऐसी हालत से क्या फायदा है ?"

अगर आप उसे इस प्रकार समझाते रहे, तो मैं समझता हूँ कि वह एक-न-एक दिन शराब पीना अवश्य छोड़ देगा। फलस्वरूप, हमारे फोर्स का एक मुख्य उद्देश्य पूरा हो जाएगा; उसमें **'एक सच्चे नागरिक'** होने की भावना जाग्रत होगी; इससे अनुशासनहीनता में कमी आयेगी। फोर्स का नाम ऊँचा होगा।

साथ ही, हमें जवान की मुख्य समस्याओं को समझना तथा दूर करना होगा। उसे कभी यह महसूस नहीं होने देना होगा कि उसके हित को देखने वाला कोई नहीं हैं। उसकी मुख्य समस्यायें कुछ इस प्रकार की हैं—

I. अवकाश—यह कोई समस्या नहीं है; किन्तु क्यों कि हम कर्त्तव्य पूरा नहीं करते हैं, इस लिए यह समस्या का रूप ले लेती है। यह किस प्रकार बनती है ? यदि हमारा कोई कर्मचारी छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र देता है, तो हम इतना लिख कर अपना कर्त्तव्य समाप्त कर देते हैं—'श्रीमान आप को अग्रिम कार्रवाई के हेतु प्रेषित है।' हम यह नहीं देखते कि क्या इस समय, उस व्यक्ति को जाना आवश्यक है ? वह पहले क्यों नहीं जा सका या उसके प्रार्थना-पत्र के साथ झूठा तार तो नत्थी नहीं है। यह हम क्यों नहीं देखते? क्यों कि हमें स्वयं यह मालूम नहीं है कि पहले वह कब छुट्टी गया था ? हम इतना कष्ट भी उठाना नहीं चाहते कि उसे समझायें कि अभी उसका नम्बर नहीं है; उसके नम्बर पर उसे भेज दिया जायेगा। इस कारण, उच्च अधिकारी को उसके बारे में सच्चा ज्ञान नहीं हो पाता और कभी कभार अनुचित आदमी छुट्टी पर चला

जाता है। फिर सच्चा आदमी भी धोखा धड़ी प्रारम्भ कर देता है और उच्च अधिकारी को एक समस्या बन जाती है।

II. खानपान—यह भी वैसे कोई समस्या नहीं है; परन्तु हमारे कर्त्तव्य नहीं निभाने से, यह मुख फाड़ कर खड़ी हो जाती है। मान लीजिए, हम बाज़ार से सामान खरीदने गए, तब यह सोच कर कि-पैसा कौन सा हमारी जेब से जाता है। हम दुकान पर चाय पीने बैठ जाते हैं, जब कि जवान सामान खरीदता है। अधिक तजुर्वा न होने के कारण, ठीक समान और उचित दर पर नहीं मिल पाता है। इससे 'कटिंग' भी अधिक होती है और खाना भी स्वादिष्ट नहीं बन पाता है। इधर विकसित दिमाग़ नहीं होने के कारण, जवान तना खाना ले लेता है कि खा भी नहीं पाता है और फेंक देता है । इससे 'कटिंग' भी बढ़ती है और खाना भी व्यर्थ जाता है। यह क्यों है ? क्योंकि उसे हम समय पर यह नहीं समझ पाते कि इससे उसी का नुक़सान है । अगर कोई उच्च अधिकारी समझाने का प्रयत्न भी करता है, तो हम यह कहते भी पाये जाते हैं कि उसकी जेब से क्या जाता है ? यदि हम व्यर्थ फेंके जाने वाले राशन को बचा लें, तो उतनी ही 'कटिंग' कम होगी और हम अधिक अच्छा खाना जवानों को खिला सकते हैं। परन्तु उन्हें समझाने का कर्त्तव्य नहीं निभाने के कारण, न 'कटिंग' ही कम हम कर पाते हैं और ना हम और अधिक उत्तम भोजन दे पाते हैं।

III. जवान की उन्नति—जवान तभी उन्नति कर सकता है, जब वह अपने विभाग के सब विषयों में निपुण हो । यह तभी हो सकता है, जब उसे ट्रेनिंग स्कूल में सब बातें अच्छी तरह समझाई जायें । परन्तु इनका ज्ञान देना तो दूर रहा; वल्कि यहाँ तक कहते सुना गया है कि यह सब आपको तंग करने के लिए है । बस हम एक ही हथियार जी हुज़ूरी का उठा लेते हैं, ताकि रिपोर्ट अच्छी मिल सके; परन्तु हम यह कभी नहीं सोचते कि अगर हम अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं करेंगे, तो हम कभी भी किसी उच्च अधिकारी के हृदय में उत्तम स्थान प्राप्त नहीं कर सकेंगे। चापलूसी से मेरा अभिप्राय किसी की इज़्ज़त करना या किसी की सेवा करना या आज्ञापालन करने से नहीं है; वरन् बेमतलब किसी के आगे पीछे फिरने या झूठी खुशामद करने से है।

IV. घरेलू समस्यायें—यद्यपि हम जवान की घरेलू समस्याओं का पूरा-पूरा समाधान नहीं कर सकते हैं, तद्यपि अगर हम उसकी समस्याओं को भली-भाँति सुनें और समझें, तब हम किसी हद तक उसको सांत्वना दे सकते हैं।

इसके अलावा, हम में अन्य भी कई कमियाँ व कमज़ोरियाँ हैं, जिन से अनुशासन हीनता को बढ़ावा मिलता है। उदाहरण के तौर पर, अगर किसी सन्तरी को हमने सुस्त या कर्त्तव्य-च्युत पकड़ लिया, तब उसे ना तो समझाना और ना ही उच्च अधिकारी को यह सोचकर सूचित करना कि कहीं उसे सज़ा न मिल जाए या अधिकारी के कुछ नहीं कहने पर, मैं क्यों बुरा बनूं ? इस प्रकार, उसे छोड़ देने से शह मिलती है और बर्ख़ास्तगी की पहली सीढ़ी पर वह क़दम रखता है। जवान का कहाँ इतना दिमाग़ विकसित होता है कि वह अपना हित और अहित सोच सके । वह तो इतना समझता है कि 'साहब, अच्छा है, जो कुछ नहीं कहता।' परन्तु इस भाँति, हमारे

द्वारा हो फोर्स में अनुशासन-हीनता पैदा होती है। हम चाहें, तब उसे दूर कर सकते हैं; किन्तु यह तभी सम्भव है जब हम यह सोचें कि सरकार ने हमारे कन्धों पर कितना बड़ा विश्वास रखा है और हमने कर्त्तव्य-पालन करने की पहले ही दिन कसम खाई है। मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ कि कर्त्तव्य-पालन से ही फोर्स में बढ़ती अनुशासन हीनता को हम समाप्त कर सकते हैं।

दीमापुर का वह हिंसात्मक दिन

ले०—श्री भूपेन्द्र सिंह

अन्य दिनों से भिन्न, 28 मई 1977 दीमापुर को एक दिल दहलाने वाला दिवस था। उपद्रवी नागा छात्रों ने दीमापुर नगर में पूर्ण 'बन्ध' का आह्वान किया था। झगड़े की जड़ थी बड़ी नाज़ुक—स्थानीय पुलिस द्वारा वोखा पर गोली-चालन । इसमें दो निर्दोष नागा छात्र मारे गये थे। राजनीतिक प्रेरणा की रंगत के कारण, इस घटना ने असाधारण महत्व पा लिया था । यद्यपि ऊपर से योजना केवल दुकानें बन्द कराने को थी; किन्तु भीतर ही भीतर नागा छात्र प्रदर्शनकारी एक खूंखार कार्यक्रम बना चुके थे।

असम से सटा हुआ, नागालैंड के पहाड़ी क्षेत्र की तलहटी पर दीमापुर स्थित है। यही रेल का प्रमुख स्टेशन है और व्यापार का बड़ा केन्द्र है। देश के विभिन्न भागों से आये लोग यहाँ मिलजुल कर रह रहे हैं। व्यापार अधिकतर उन ग़ैर-नागा लोगों के हाथ में हैं, जो यहाँ आकर बस गये हैं। सारा नगर दो प्रकार के दलों में विभक्त किया जा सकता है—एक तो केवल स्थानीय वासियों का, जो उग्र विचार रखते हैं और तनिक सी बात पर लड़ने-मरने को तैयार रहते हैं और दूसरा दल, हिंसा के प्रति अपेक्षाकृत सहनशीलता वाला है।

लगभग 12.45 अपराह्न को उस दिन, ब्रिगेड मुख्यालय से 16 बटालियन को यह सूचना मिली कि उसकी परिभ्रामी प्रशिक्षण वाली एक टुकड़ी को दीमापुर में बिगड़ती न्याय-व्यवस्था से सुलझाने के लिए नागरिक प्रशासन को सौंपने के हेतु रखना होगा। सम्बद्ध कम्पनी कमांडर को तैयार रहने का आदेश दिया गया। अपने जवानों को स्थिति से निबटने के लिए समझाने वह पिछले मुख्यालय को गया।

इसी बीच में, स्थानीय शांतिप्रिय तथा असहाय नागरिकों ने के०रि०पु० बल से सहायता के लिए आर्त्त पुकार की। नागरिक प्रशासन ने क़ानून-व्यवस्था को काबू से बाहर होती हुई स्थिति से सुलझने के लिए तुरन्त इस बटालियन की एक एक कम्पनी की मांग की।

इस बटालियन की 'एफ' कम्पनी अपना सामान लेकर पौंन घण्टे में दीमापुर थाने

पहुँच गई। कमांडेंट भी स्थिति को समझने के लिए घटना स्थल पर गये।

सारे नगर में, आतंक, घबड़ाहट तथा खलबली मची हुई थी। उस दिन दीमापुर एक युद्धक्षेत्र सा लगता था। पथराव हो हो रहा था; अनेकों बुरीभाँति घायल हो गये थे। कितनी ही दुकानों में आग लगी हुयी थी और जाज्वल्यमान ज़्वाला की लपटें नगर को भस्मीभूत कर रही थीं। ऐसा लगता था कि दीमापुर आज राख का ढेर हो जायेगा। ऐसी भगदड़ पड़ी हुई थी कि गुंडों और निरपराधियों का पहचानना कठिन हो रहा था। इस स्थिति से लाभ उठाकर, कुछ समाजद्रोही तत्व लूटपाट मचा रहे थे।

बंध के नागा छात्र आयोजकों ने बड़े साधन जुटा रखे थे, और छात्रों पर छात्र इकट्ठे हो रहे थे। ऐसी भी अफवाह थी कि ग़ैर-नागा दल ने इसके विरुद्ध साहस बाँध कर लड़ने की तैयारी कर ली थी। इससे न्याय-व्यवस्था की स्थिति ने और भी भैरव रूप धारण कर लिया था। दोनों ही ओर से कई मुठभेड़ें हो चुकी थीं और कितने ही लोग क्षत-विक्षत हो गये थे।

कम्पनी कमांडर ने इस चुनौती से जवानों को दृढ़तापूर्वक, सावधानी सहित तथा निश्चयात्मक ढंग से निपटने का आदेश दिया। उसने उन्हें इस प्रकार तैनात करने की योजना बनाई कि सभी दंगे वाले स्थल घिर जायें, जिससे जवान कारग़र रूप से दखल दे सकें। ध्येय यह था कि क्रांति को सीमित रखा जाए।

कम्पनी कमांडर ने ग़ैर-नागाओं को विश्वास दिलाया कि 'बन्ध' केवल एक दिन को है और फिर उन्हें पुलिस तथा सुरक्षा दलों पर रक्षा तथा हिज़फ़ात के लिए निर्भर रहना चाहिये । उन लोगों ने बुद्धिमत्ता दर्शायी और कम्पनी कमांडर को विश्वास दिलाया कि वे हिंसा पर नहीं उतारू होंगे।

दूसरी ओर, कम्पनी कमांडर ने नागाओं को होशियारी से यह समझाया कि आगजनी से वे नागालैंड की सम्पत्ति का नाश कर रहे हैं और अपनी प्रतिष्ठा खराब कर रहे हैं। तब नागा आन्दोलनकर्त्ता कहीं जा कर समझे; वे विभिन्न दलों में विभक्त हो गये और अन्त में, तितर-बितर हो गये । इस प्रकार बिना बल-प्रयोग के, ऐसी भयानक क़ानून-व्यवस्था की स्थिति पर काबू पा लिया गया।

दीमापुर के क्या नागा और क्या ग़ैर नागा—सभी निवासियों ने के०रि०पु० बल द्वारा दिखाई गयी उच्च दायित्व की भावना और किए गये उत्तम कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

भारत—दर्शन

लेखक—श्री आई० एस० डागर

मैं 1 दिसम्बर 1971 को के० रे० पु० बल में डी० वाइ० एस० पी० (उपाधीक्षक) के रूप में नियुक्त हुआ। केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज I नीमच में सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की मौलिक प्रशिक्षण करने के पश्चात्, मैंने 11 जुलाई 1972 को दिल्ली में 45 बटालियन का सेवा-भार संभाला । उस समय बटालियन संगरूर (पंजाब) से मद्रास जा रही थी; किन्तु अचानक दिल्ली में वह रोक ली गई। 15 जुलाई, 1972 को, इस बटालियन की 4 कम्पनियाँ आँध्र प्रदेश के ख़माम ज़िले को नक्सलपंथियों से लोहा लेने को भेजी गई और 4 कम्पनियाँ दिल्ली में क़ानून तथा व्यवस्था के लिए रह गईं। क्योंकि बटालियन का हेडक्वार्टर (मुख्यालय) संगरूर में था, मुझे वहाँ अनुवर्ती प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। मुख्यालय, जिन्दमहाराज की लद्दा कोठी में संगरूर से 4 कि० मी दूर पर स्थित था।

कुछ ही दिन्तीं में, मुझे एक कम्पनी का प्रभार लेने के लिए डिटैचमेंट (टुकड़ी) के मुख्यालय, ख़माम में बुलाया गया। 30 जुलाई 1972 को, मैं ख़माम पहुँचा और नक्सलपंथियों से घिरे घने जंगलों में 45 बटालियन की 'ई' कम्पनी का भार मैंने ले लिया। यह एक तरुण अधिकारी की मनभायी नियुक्ति थी और मुझे बहुत पसन्द आई।

सहसा 6 अक्टूबर 1972 को, मुझे युद्ध बन्दी शिविर, केन्द्रीय जेल, आगरा में निरत 'सी' कम्पनी का प्रभार लेने के लिए कमांडैंट का सिगनल मिला। यह कम्पनी दिल्ली से गई थी। उस कम्पनी का प्रभार लेकर, मैं वहाँ 26 अगस्त 1973 तक रहा। आगरे में कार्यभार बड़ा अच्छा लगा और वह था भी उत्तरदायित्व का काम । बंगला देश की कार्रवाई के सभी बड़े-बड़े बन्दी केन्द्रीय जेल आगरा में थे। उनके बच भागने की आशंका से, हमें बड़ा सतर्क रहना पड़ता था। मुझे हर रात्रि को तीन बार गार्डों की पड़ताल करनी पड़ती थी। उस समय मुझे सैनिक अधिकारियों के नीचे काम करना पड़ा। सेना से निवृत्ति पाकर, 45 बटालियन की 'ए' और 'सी' कम्पनी हैदराबाद विश्राम तथा प्रशिक्षण के लिए गईं; किन्तु विश्राम कहाँ भाग्य में लिखा था ? हमें तो वहाँ की क़ानून तथा व्यवस्था के लिए निरत होना पड़ा।

हैदराबाद तथा सिकन्दराबाद के युगल नगरों में तीन मास इस सेवा के उपरान्त, ये कम्पनियाँ 6 दिसम्बर 1973 को मद्रास भेजी गईं; जहाँ 19 दिसम्बर 1973 तक वे न्याय-व्यवस्था की सेवा करती रहीं। वहाँ हमें मद्रास बन्दरगाह (सागर) तथा स्नेकपार्क देखने का अवसर मिला।

19 दिसम्बर 1973 को रात के 9 बजे, के० रि० पु० बल दिल्ली के नियंत्रण-कक्ष से टंक कॉल द्वारा मद्रास पुलिस से निवत्ति तक नहीं पाकर, सब से पहली रेलगाड़ी से त्रिवेन्द्रम जाने का मुझे आदेश मिला। यह एक कठिन कार्य था। फिर भी मैंने दो रेल डिब्बे इन कम्पनियों के लिए जुटा लिये और रात के 11 बजे हम प्लैटफार्म पर आ पहुँचे । 21 दिसम्बर 1973 को हम त्रिवेन्द्रम पहुँच गए। केरल नारियल और धान के लहलहाते खेतों की भूमि है । कुछ समय के लिए, दोनों कम्पनियाँ रिजर्व में रखी गईं। इस कारण, मुझे कन्याकुमारी और कोवालम के मनमोहक तटों की झाँकी देखने को

मिली। क्यों कि इन दोनों कम्पानेयों के बीच, मैं ही सिर्फ राजपात्रेत अधिकारी था और केन्द्रीय गृह मंत्रालय के रिजर्व में होने के कारण, सदा अन्यत्र जाने का डर बना रहता था। उप-निदेशक (परिचालन) के कभी भी एतद्विषयक आदेश की प्रतीक्षा लगी रहती थी।

केरल में दो मास रहने के अनन्तर, हम हैदराबाद को 7 फरवरी 1974 को लौट आये। कठिनता से हम बोरिया-बिस्तर रख पाये थे कि 15 फरवरी 1974 की शाम को पहली रेलगाड़ी से गोआ जाने के आदेश पुलिस महानिरीक्षक से० I के वरिष्ठ स्टाफ अधिकारी से हमें मिले। अब तक जवान आने-जाने की कला के माहिर हो चुके थे। तभी एक घंटे के भीतर ही वे दोनों कम्पनियाँ सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन पहुँच चुकी थीं। पहली उपलब्ध गाड़ी सुबह को मिलनी थी और वह भी एक्सप्रेस गाड़ी थी। अब प्रश्न गोआ के लिये जगह पाने का था, क्यों कि सिकन्दराबाद से मरमू गाँव जाने को कोई सीधी गाड़ी नहीं थी। इस समय 'टुकड़ी के कमांडर' जैसे पदनाम से मुझे बड़ी सहायता मिली। मैंने इसी पदनाम से दक्षिणी केन्द्रीय रेल के मुख्य परिचालक सुपरिन्टेंडेंट को फोन किया। उसने मुझे बड़ा अधिकारी समझा होगा। कुछ भी हो, हम तात्कालिक आदेश पर जा रहे थे।

18 फरवरी 1974 को, वहाँ 'गोआ बन्ध' था और हमें उससे पहले पहुँचना था। हमें चार रेल डिब्बे मिल गये और 17 फरवरी 74 को, हम गोआ पहुँच गए। एक कम्पनी मरमूगाँव में निरत की गई तथा दूसरी वास्को में। इस मनोहारी क्षेत्र में हमें क़ानून-व्यवस्था तथा निर्वाचन सेवायें करनी पड़ीं। पुलिस महानिरीक्षक गोआ हमारे कार्य से अतीव प्रभावित हुआ और उसने इस उत्तम कार्य के उपलक्ष्य में हमें एक स्मारक चिह्न भी दिया।

हम 10 दिन के बाद 1 मार्च 1974 को, हैदराबाद लौट गये; एक बार फिर हैदराबाद तथा सिकन्दराबाद के युगल नगरों में क़ानून तथा व्यवस्था के लिये हमारी वे दोनों कम्पनियाँ निरत की गयीं। हमने तब वहाँ चारमीनार, गोलकुन्डा का दुर्ग तथा सालारजंग, अजायबघर देखे।

तब ये दोनों कम्पनियाँ ख़मान गईं, जहाँ इस बटालियन की अन्य 4 कम्पनियाँ भी नक्सलपंथी कार्रवाइयों के उन्मूलन में लगी हुयी थीं।

अप्रैल 1975 में, एक अन्य मनोमुग्धकारी स्थान, ग्रुप केन्द्र पुणे में मुझे भेजा गया। यह स्थान दक्खन कालेज, बुअद गार्डन के निकट स्थित है। मैंने वहाँ के प्रवास का आनन्द भोगा ही था कि वह ग्रुप केन्द्र फरवरी 1976 में इम्फाल चला गया। इस प्रकार मणिपुर की विदेशी सी राजधानी को देखने का मुझे सुयोग मिला। वहाँ मैं कुछ ही मास रहा; तब मेरा तबादला 8 बटालियन को हो गया। मैं उस बटालियन में दिल्ली में सम्मिलित हुआ; किन्तु कुछ ही समय दिल्ली रह कर, वह बटालियन 29 अक्टूबर 1976 को जम्मू चली गयी।

मार्च 77 के लोक सभा निर्वाचन में मेरी कम्पनी जाने माने नगर रायबरेली में निरत की गयी। लौटते समय, हम कुछ समय को लखनऊ और कानपुर में ठहरे।

चुनाव के बाद, हमारी यह कम्पनी माच 1977 के अन्त में श्रीनगर भेजी गई। श्रीनगर एक नयनाभिराम स्थान मुख्य कर ग्रीष्म ऋतु में लगता है । वहाँ के सभी पर्यटन-स्थल देखने का तब मुझे अवसर मिला। जुलाई 1977 तक, हम वहाँ की घाटी में रहे और फिर जम्मू को लौट आये।

आजकल जम्मू क्षेत्र के सुन्दर स्थल—'मन्वल-किसनपुर शरणार्थी शिविर' में मेरी कम्पनी निरत है।

संक्षेप में, के० रि० पु०बल की 6 वर्ष की सेवा-अवधि में, मैंने कन्याकुमारी से कश्मीर तक का पर्यटन किया है।

<u>कविता :</u>

दिल्ली में जल-प्रलय और के० रि० पु० बल

[रचियता : **श्री जे० एस० शर्म्मा]**

वह था पाँच सितम्बर का दिन, प्रलयंकर छाये थे बादल ।
मूसलधार बरस रही वर्षा, कहीं नहीं दृग्गत था भूतल ॥
दमक दामिनी दहलाती दिल, करे घनाघन थे घन गर्जन ।
कभी लखा ऐसा नहिं वर्षण, सिर धुन कहते थे जड़-चेतन ॥
कोई दिवस न ऐसा जाता, जब नहिं बरसा था वह पावस ।
मार्ग सभी अवरुद्ध हुये थे, अस्त-व्यस्त जन-जीवन वरवश ॥
बस भी होती थीं सब बेवश, रुकती थी मोटर की टर्-टर् ।
रिक्शा रक्षा थी नहिं करती, रहड़ी ताँगे करते घर्-घर् ॥
पर घर वालों की मत पूछो, हुये मनो बेघर वाले थे ।
कहीं चू रही थी छत छम्-छम्, छप्पर तोड़ बहे नाले थे ॥
जैसे मार्ग भरे थे बाहर, भीतर वैसे ही घर-आंगन ।
कहीं बैठने को था नहिं थल, ऐसा दारुण था जल-प्लावन ॥
बात हुयी इस सम्वत् ऐसी, तपा चंडकर चंड भयंकर ।
किरण हुयी रण चंडी जैसी, मार रही थी सब नारी-नर ॥
सिंह राशि का सूर्य सिंह सम, भयाक्रान्त जग को था करता ।
अग्नि बरसती चहुँधा धूँ-धूँ, तड़प-तड़प लू से भुव मरता ॥
झुलस गये थे सब वन-उपबन, सूख गये थे नद-नदिया-सर ।
नरक-कुण्ड सी तप्त भूमि थी, अनिल अनल-सर-सम चल सर्-सर् ॥

हॉफ-हॉफ कर पशु-पक्षी-जन, श्रान्त-क्लान्त जो तोड़ रहे थे।
भीष्म ऊष्मता नहिं सहने पर, कतिपय तन तक छोड़ रहे थे।
त्राहि-त्राहि सब ओर मची थी, कोठी, काल-कोठरी सम थी।
कण्टक-जाल कण्ठ सूखे थे, तृष्णा तो सचमुच ही यम थी॥
आर्त्तनाद करती जगती थी—'पाहिमाम्, अब मुझे बचायो।
काले मेघा अब आजाओ, जीवन लाओ, मत तरसाओ" ॥
जब यह टेर सुनी भगवन ने, ऐसा तब जीवन बरसाया।
ऊपर था जल, नीचे था जल, जल ही जल दहुँ दिशि था छाया ॥
बढ़ा जभी जल उमड़ घुमड़ कर, बाढ़ रूप तब उसने धारा।
एक बार जल-प्रलय मचा फिर, अगणित को यमपुरी सिधारा ॥
आखिर को, यमुना वैसे ही, यम-भागिनी नहिं है कहलाती।
भ्रातृलोक के सम्वर्धन-हित, भारत ग़ारत है कर जाती ॥
ऐसा ही इस वर्ष हुआ कुछ, यमुना ने की यों किल्लोलें।
हाहाकार मचा धरणी पर, रस में जब हालाहल घोले ॥
उस निशीथ की नीरवता में, कैसा था कोलाहल छाया।
मर्-मर् करती मिहिर-सुता ने, आज मर्सिया-मातम गाया ॥
कल्-कल् छल्-छल् कर कालिन्दी, छल-बल से जब बढ़ती आयी।
ग्राम-ग्राम में, नगर-नगर में, मृत्यु-नत्य करती मनु आयी ॥
चारों ओर जिधर देखो तो, दीखे था पानी ही पानी।
सारी संसृति कलप-कलप कर, सर्वनाश की कहे कहानी ॥
खेत हरी मनभरी दुशाला, ओढ़ खड़ी कृषि थी लहराती।
किया द्रोपदी-हरण किसी ने, निस्सहाय दृग-सिन्धु बहाती ॥
डूब गए पशु विपुल निराश्रित, विहग उड़े नभ में कर क्रन्दन।
द्रुम पर चढ़ कर प्राण बचाते, बाल-वृद्ध-नर-नारी सब जन ॥
दृग फाड़े जल-पल्लावन आता, पड़े हुए प्राणों के लाले।
सिर पर पद रख सभी भागते, जीवन अपना कहीं बचालें ॥
पर्ण-कुटीरों की गणना क्या, दृढ़ वस्ती तक डूब गयी है।
हाट-बाट नहीं पड़े दिखाई, जलामयी हो जलामयी है ॥
नष्ट हुमा सामान सभी का, मूल्यवान उपयोगी मनहर।
टेलीविजन रेडियो तक कुछ, बचा सके नहिं निज फ़र्नीचर ॥
सूटों में जल, बूटों में जल, आभरणों-आवरणों में जल।

खानों में पाखानों में जल, रक्त घूंट पीता मन जल-जल ॥
ऊँची-ऊँची सभी छतों पर, भूखे-प्यासे थे सब बैठे ।
आज दया के पात्र बने हैं, जो जन कल फिरते थे ऐंठे ॥
नीचे यमुना आँखें फाड़ें, रेले पर रेले थी लाती ।
उधर रुकी थीं सब रेलें अब, ना कोई आती, ना कोई जाती ॥
बना रहे दुखियों के लोचन, गंगा-यमुना के थे संगम ।
ग़म में डुबा हुआ सभी था, चेतन क्या जड़ एवम् जंगम ॥
यक ही छत पर कुत्ते-बिल्ली, बैठे हुए साध को वे दम ।
यक ही तरु पर नकल-नाग थे, साधु बने बैठे थे बेदम ॥
इन्सान बहे, हैवान - बहे, सज्जन अरु शैतान गये बह ।
गिरजे, गुरुद्वारे अरु मस्जिद, मन्दिर आलीशान गए ढह ॥
पटरी टूटीं, तारे टूटीं, टूटे संचारों के साधन ।
सड़कें फूटीं, किस्मत फूटीं, छुटी बाजारों की बन-ठन ॥
लक्ष-लक्ष लोगों के सिर पर, गिरा आज संकट का पर्वत ।
जीवित थे कहने को केवल, पर थे वे सचमुच में ही मृत ।
छिनी किसी माथे की बिन्दी, छिनी किसी की प्रिय सन्तानें ॥
उर को पीटें, कुन्तल खींचें, बिलख-बिलख कुछ रोदन ठानें ॥
चित्त विदीर्ण हुआ था जाता, मर्मान्तक पीड़ा सुन-सुन कर ।
निर्धन से निर्धन थे वे अब, यद्यपि सारा धन था उन पर ॥
बहता था जल सिन्धु चतुर्दिक, पर वे बिन्दु न सकते थे पी ।
नक्तन्दिव निर्जल व्रत करते, आज घोर सब नास्तिक जन भी ।
जहाँ जले थी बिजली प्रति पल, आज मोमवत्ती निशि जलती ।
जहाँ चले थे कल थल वाहन, जल-नौकायें थीं अब चलतीं ॥
बाढ़ग्रस्त बेचारों को वे, अब पहुँचाती थीं भोजन-जल ।
सच मानों तो वे देती थीं, म्रियमाणों को जीवन सम्बल ॥
वृक्ष-छतों से भी उतार कर, शरण-शिविर में जन थीं लाईं ।
जीवन दिया;—मृत्यु की जिन पर, नाचे थीं काली परछाईं ॥
ऐसी ही थी, अंक लिए शिशु, छत पर यक दुखियारी माता ।
नीचे का जल आनन-फानन, ऊपर था बढ़ता ही आता ॥
पर ऊपर दृग्गत नहिं आता, दूर दूर तक आज सहारा ।
आर्त्त हृदय सब टेर रहे—"प्रभु, ग्राह-गाल से गज उद्धारा ॥

जल शय्या पर सोने वाले, दृग खोलो मधुरेपु मुरमर्दन ।
तारण-तरण कहाँ सोये हो, जगो शरण-अशरण दुखभंजन ॥
संकट कौन हमारा है जो, तुमसे नहिं जाता है टारा ।
दूर करो हे जगन्नियंता, त्रांस-नाश सब आज हमारा ॥"
तभी दिखाई दी यक नौका, चली आ रही थी जो उन तक ।
पलक मारते पास आ गई, लगी विमान उन्हें वह पुष्पक ॥
देवदूत सम यक जवान ने, ऊपर को बाहें फैलाई ।
दिया तुरत शिशु मृदुल सुमन सम, माता ने ले विपुल बलाईं ॥
उसी भाँति उतरी नौका में, वह उद्विग्न-मना द्रुत माता ।
मिटा दिया आँखों का पानी, मिला लिया आँचल का नाता ॥
नहीं जानते हुए तनिक भी, उसने हमको माथ झुकाया ।
नहीं जानते हुए उसे भी, हमने बस कर्त्तव्य निभाया ॥
इतना केवल पता उसे था, **पवनपुत्र** से केन्द्र-पुलिस-चर ।
इतना केवल पता हमें था, वे दो थे निज **राष्ट्र धरोहर** ॥
यह तो एक दृष्टान्त मात्र था, रोगग्रस्त, शिशु अरु जन-जर्जर ।
प्राणों का भय नहिं कर हमने, बहुत बचाए थे नारी-नर ॥
मिली न नौका, काम रुका नहिं, लट्ठों के बेड़े बनवाये ।
ट्यूबों में भर वायु, नहीं तो, बिठा मनुज कन्धों पर लाये ॥
बाढ़-पीड़ितों पर मित्रों के, सन्देशे हमने पहुँचाए ।
कुल-जन से भोजन सामग्री, ले ले कर हम उन पर धाये ॥
जल-प्लावित हम सब क्षेत्रों में, रातों देते थे नित पहरा ।
जिससे चोर लुटेरे पायें, वार न कर दुष्कृति का गहरा ॥
अन्यों को पहुँचा सूखे थल, हम सोये दल-दल के ऊपर ।
सोलह-सोलह घन्टे प्रतिदिन, हमने की सेवायें हँस कर ॥
इसी हेतु तो हमें आपदा, पड़ने पर सब राज्य बुलाते ।
हम भी पहुँच **रामदल** सा द्रुत, शासन का नित हाथ बँटाते ॥
रसना थकती कह-कह, जनहित, सेवायें की इतनी अगणित ।
जहाँ बुलाये जाते हैं हम, **कण्ठहार** बनते सब के नित ॥



पहेलियाँ

(**प्रस्तोता**—दफ्तरी गणेश प्रसाद, ग्रुप केन्द्र बन तलाब)

आठों पहर, चौसठ घड़ी,
भक्तों को अमृत वह लगी।
कार्तिक में भक्तन से पुजी।
क्षत्राणी क्षत्री पर रुझी ॥1॥
एक खूटे पर नौ सौ गायें,
सींघ पूछ बिन जंगल खायें।
जिसको काटें खूब नचायें,
इनका रस अमरित बन जाये ॥2॥
एक इंच के मियां हैं बाले,
ढाई गज़ की पूंछ निकाले।
क़दम-क़दम पर करे सुरंग,
पूंछ से ढकते जग का अंग ॥3॥

उत्तर—1. तुलसीपत्ती 2. मधुमक्खी 3. सुई।

चिकमगलूर में के० रि०पु० बल

चिकमगलूर में लोक सभा के चुनाव अभियान में हिंसात्मक वारदातों के देखते हुए, केन्द्रीय सरकार ने निर्वाचन-आयुक्त के अनुरोध पर, वहाँ शांति-व्यवस्था बनाये रखने के लिए, के० रि० पु० बल की दो बटालियनें निरत की, जिन्होंने निष्पक्ष तथा शान्तिपूर्ण मतदान करने में प्रशंसनीय योगदान किया।

सूक्ति सुधा

भलाई करना कर्त्तव्य नहीं, बल्कि आनन्द है; क्योंकि वह तुम्हारे सुख और स्वास्थ्य में वृद्धि करता है।

—जरथुस्त्र

संसार में सुखी रहने का एक ही उपाय है और वह है यह कि अपनी ज़रूरतें कम करो।

—महात्मा गांधी

हिंसा ही दुर्गति का द्वार है, हिंसा ही पाप का सागर है, हिंसा ही घोर नरक है तथा हिंसा ही घना अंधकार है।

—ज्ञानार्णव

यदि दण्ड देने वाला न हो, तो जनता एक दूसरे को मछलियों की भाँति खाने लग जाये।

—महापुराण

ख़ुदा एक है और वह एकता पसन्द करता है।

—हजरत मुहम्मद

विज्ञान के चढ़ते चरण

*भारत में 'सेहुड़' नामक झाड़ी में हाइड्रोकार्बन बहुत होता है; उसे अलग कर पेट्रोलियम बनाने की चेष्टा की जा रही है । यह झाड़ी अपने आप उग आती है और मौसमी बुख़ार की दवा मानी जाती है।

*पश्चिमी जर्मनी के डाक्टरों ने परीक्षणों से सिद्ध कर दिया है कि पथरी पर छोड़ी गयी ध्वनि तरंगें पलक झपकने से भी कम समय में पथरी को पीस डालती हैं और फिर मूत्राशय की सामान्य प्रक्रिया से उसे बाहर निकाला जा सकता है।

*भारत में भी हाल में परखनली से कन्या का जन्म हुआ है।

*चीनी डाक्टरों ने कुसुम्भ, गंधरस, और रेड प्योनी नामक जड़ी बूटियों के प्रयोग से कैंसर के रोगियों से ठीक किया है। इनमें रिवोफ्लेविन और विटामिन-सी कैंसर

रोधी दवायें भी मिलायी जाती हैं।

क्रीड़ा क्षेत्रे :

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में खेलकूद

ले०-श्री वी० के० साहनी

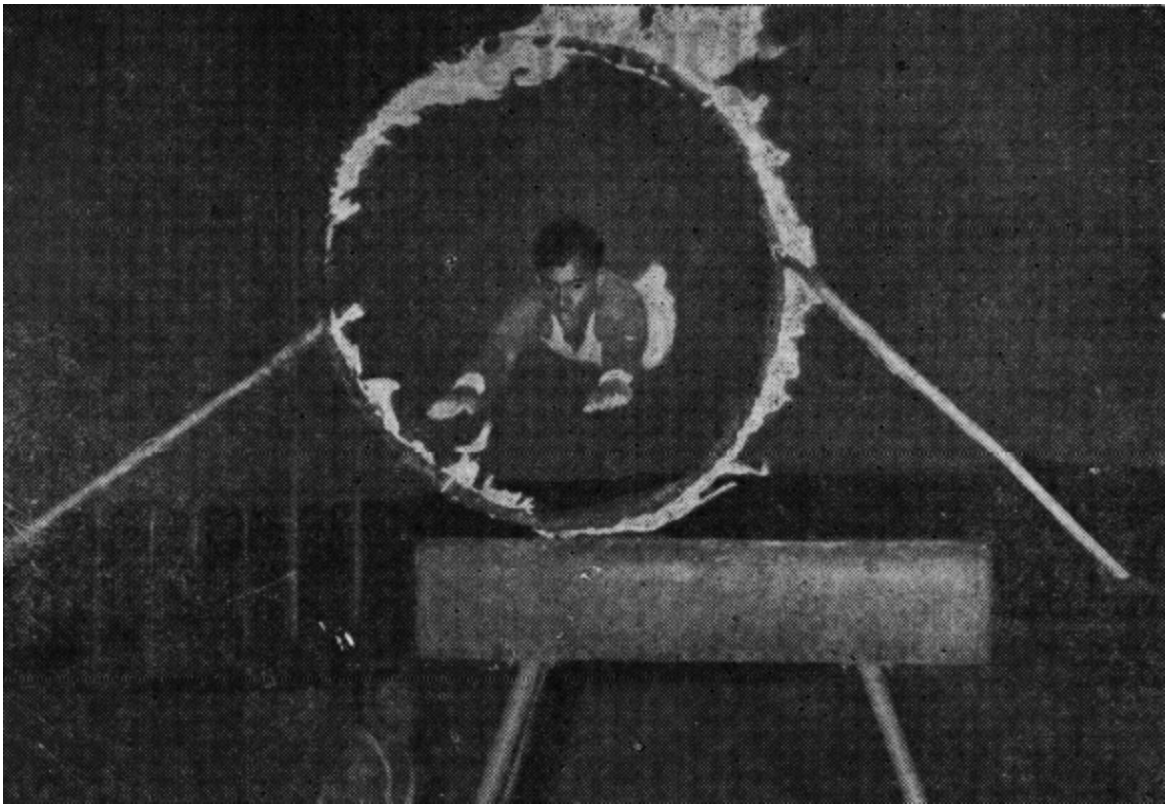
भारी न्याय-व्यवस्था को निभाते हुये भी, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने देश के खेलों के सामान्य विकास में बडी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। खेल तथा दौड़ कूद के० रि० पु० बल के प्रशिक्षण-कार्यक्रम में सम्मिलित किये गये हैं और सभी स्तरों वे पर नत्यिक कार्यों में माने गये हैं।

I. **हाकी**— देश के सभी 'ए' (सर्वोत्तम) टूर्नामेंटों में हमारी हाकी टीम खेलती रही है। अखिल भारतीय नेहरू स्मारक हाकी टूर्नामेंट, दिल्ली में, के० रि० पु० बल ने क्वार्टर फाइनल में स्पेनी टीम को 2-1 से हराया; किन्तु इन्डियन ब्लूज़ से अकेले एक गोल से यह हार गया। दुगने चरण के अर्द्ध फाइनल में, प्रथम तो सीमा सुरक्षा दल से 2-1 से यह परास्त हुआ; किन्तु दूसरे में, खेल अनिर्णीत रहा। गुरु नानक हाकी टूर्नामेंट दिल्ली; अजन्ता इन्वीटेशन हाकी औरंगाबाद; मोहन कुमार मंगलम भिलाई, और अखिल भारतीय हाकी टूर्नामेंट नागपुर, में हमारी टीम ने भाग लिया। जगमोहन हाकी टूर्नामेंट मुज्जफरनगर में, इस टीम को पंजाब पुलिस के साथ संयुक्त विजेता घोषित किया गया । वेटन कप, डी. सी. एम. हाकी टूर्नामेंट कोटा, ईश्वर सिंह स्वर्ण कप हापुड़ तथा गेटले कप में इसने उपविजेता की ट्राफियाँ जीतीं। सीनियर नेशनल हाकी चैम्पियन शिप, मदुरै में दिल्ली की ओर से हमारे छै खिलाड़ी खेले। पिछले ओलिम्पिक खेलों के शिक्षण शिविर में हमारे तीन खिलाड़ी सतीन्द्र सिंह, हबील कजूर तथा प्रमोद कुमार-सम्मिलित किये गये। दो रिजर्व में रखे गये । डीवाई० एस० पी० एस. एस. मान टीम के मनेजर व कप्तान थे। वह अर्हता प्राप्त शिक्षक हैं।

II. **फुटबाल**- के.रि०पु० बल का स्तर फुटबाल में कम है। आजकल, नये खिलाड़ी भरे जा रहे हैं और एक अनुभवी शिक्षक से शिक्षण दिया जा रहा है। डी. सी. एम, डुरंड, रोवर्स कप तथा ग्वालियर स्वर्ण कप टूर्नामेंटों हमारी फुटबाल टीम ने भाग लिया। 1977-78 में, हमने मोहन मीकन फुटबाल टूर्नामेंटों सोलन में और जयनारायण व्यास स्मारक फुटबाल टूर्नामेंट जोधपुर में चैम्पियनशिप जीती। संतोष ट्राफी 1977 में स० इ० एम. के. घेई और स० इ० एस. एस. थापा मध्य प्रदेश की ओर से खेले ।

III. **वालीबाल**- हमारी वालीबाल टीम में बहुत सुधार आया है। फिर भी वाँछित स्तर पाने के लिये, अभी बहुत कुछ करना है। अखिल भारतीय स्तर के 20 से भी

अधिक टूर्नामेंटों में यह टीम खेली और इसने उत्तम खेल दिखाया। नारायण स्मारक वालीबाल टूर्नामेंट शिकोहाबाद (उ० प्र०) में इसने सी० सू० दल को हरा कर चैम्पियनशिप जीती। स्वर्ण कप फिल्लोर तथा अखिल भारतीय वालीबाल टूर्नामेंट सिम्भावली में, यह उपविजेता रही।



एन० बी० भोंसले

IV. **बास्केटबाल**- अखिल भारतीय तथा पुलिस खेलों तथा दकन जिमखाना टूर्नामेंट में, हमारी बास्केटबाल टीम उपविजेता रही; परन्तु जयप्रकाश स्मारक टूर्नामेंट यमुनानगर (हरियाणा) और मास्टर पृथ्वी नाथ शर्मा स्मारक टूर्नामेंट दिल्ली में इसने सिरमौर जीता। बटलेरियन क्लब बास्केटवाल टूर्नामेंट दिल्ली, कक्कड़ स्मारक लखनऊ, अडवाणी स्मारक जयपुर, रायल क्लब बास्केट बाल टूर्नामेंट, दिल्ली भगत सिंह स्मारक खन्ना (पंजाब) तथा दिल्ली राज्य चैम्पियनशिप में हमारी टीम का खेल प्रशंसनीय रहा। 1977 में जमशेदपुर पर हुए नेशनल्स में, हमारे सात खिलाड़ी-वी० पी० सिंह, एस०पी० सिंह, गोकुल चन्द, दयाराम, बी०एस० राठोड़, हीरा सिंह तथा छेलू राम-दिल्ली, मध्य प्रदेश तथा चंड़ीगढ़ राज्यों की ओर से खेले।

V. **जिम्नास्टिक्स**- हमारी जिम्नास्टिक टीम राष्ट्रीय स्तर की है। इसने अखिल भारतीय पुलिस खेलों में सिरमौर जीता। **सूबेदार एन. बी. भोंसले सर्वोत्तम जिम्नास्ट घोषित हुआ।** इ० एल. एम. खन्ना और के. वी. पी. मेनन तथा स० इ० शंकर लाल अर्हता प्राप्त शिक्षक हैं। मई 1978 में, ला० ना० नासुरुद्दीन और का. सुभाष यारुणकर ने मध्यप्रदेश जिम्नास्टिक चैम्पियनशिप में भाग लिया और सिरमौर जीता। छै

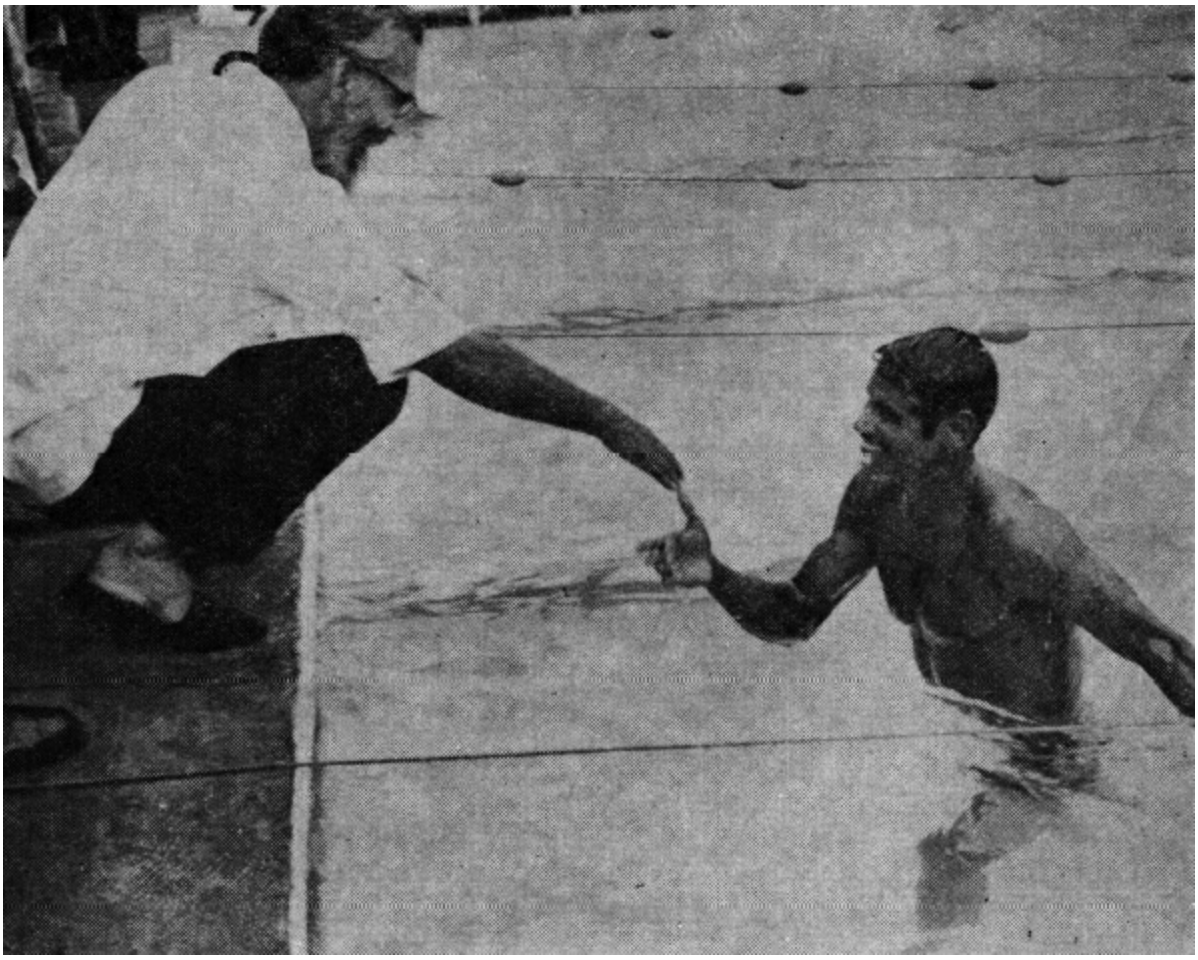
जिम्नास्ट-इ० एन. वी. भोंसले, स० इ० वी. के. भोंसले, स० इ० एस. भट्टाचार्यजी, स० इ० चमू सिंह, हे० का० जगन्नाथ सिंह और ना० देव प्रकाश ने अक्टूबर 1977 में चंड़ीगढ़ पर खेली गयी सीनियर नेशलन जिम्नास्टिक चैम्पियनशिप में मध्य प्रदेश राज्य की ओर से भाग लिया और 2 स्वर्ण, 3 रजत तथा 2 कांस्य पदक पाये। इ० एन. बी. भोंसले ने इन्हीं दिनों एडमंटन में हुये राष्ट्रीय मंडल खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और 60 प्रतिशत से अधिक अंक पाये।

VI. **दंगल**- के० रि० पु० दल में सुखवन्त सिंह, 'रुस्तमे हिन्द' ईश्वर सिंह, 'हरियाणा केसरी' तथा दीवान सिंह जैसे मल्ल योद्धा हैं। अखिल भारतीय पुलिस खेलों में, हमारी टीम ने उत्तम खेल का प्रदर्शन किया। करनाल में खेले गये **'नेशनल्स'** में, ईश्वर सिंह ने एक स्वर्ण कप तथा का० सन्त राज ने रजत पदक पाया।

हमारे मल्लयोद्धाओं ने उ० प्र० केसरी तथा दंगली चैम्पियनशिप में भाग लिया और 3 स्वर्ण, 7 रजत और 3 कांस्य पदकों के साथ-साथ, सिरमौर भी जीता।

11 से 20 मार्च 1978 तक करनाल में आयोजित राष्ट्रीय दंगल चैम्पियनशिप में, सुखवन्त सिंह ने सुपर हेवीभार में कांस्य पदक तथा इ० ओम प्रकाश ने लाइट हेवी भार में चौथा स्थान पाया।

इ. ईश्वर सिंह ने एडमंटन में हुये राष्टमण्डलीय खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और हेवीभार में कांस्य पदक जीतः।



तरणताल में महानिरीक्षक श्री वर्मा से शाबाशी पाता हुमा सोमशेखरन

VII. **कबड्डी**- हमारी टीम ने अखिल भारतीय पुलिस खेलों में इस वर्ष चैम्पियनशिप जीती। स्वर्ण कप हिंगनघाट तथा दिल्ली राज्य चैम्पियनशिप 1978 में भी इसने सिरमौर जीता। मेजर शैतान सिंह स्मारक टूर्नामेंट में हमारी टीम उपविजेता रही। 'नेशनल्स' में दिल्ली राज्य कबड्डी टीम की मोर से भाग लेने के लिये हमारे छै खिलाड़ी चुने गये; किन्तु इस बल के अन्तरेंज कबड्डी टूर्नामेंट होने के कारण, वे वहाँ भेजे नहीं जा सके।

VIII. **तैराकी**- हमारी तैराकी टीम अत्युत्तम है। इसने इस वर्ष अखिल भारतीय पुलिस तैराकी दिल्ली राज्य तथा केरल राज्य चैम्पियनशिप जीती। हमारे 7 तैराकों ने राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में दिल्ली और गुजरात राज्यों की ओर से भाग लिया और 4 तैराक भारत-लंका प्रतियोगिता के लिये चुने गये। हमारी टीम ने दिल्ली में हुई प्रथम वाई. एम. सी. ए. तैराकी प्रतियोगिता में इस वर्ष भाग लेकर 4 स्वर्ण, 5 रजत और 4 कांस्य पदक जीते तथा दिल्ली में ही हुई चेम्सफोर्ड क्लब इन्वीटेशन प्रतियोगिता में भी चैम्पियनशिप जीती। एशियाई खेलों की तैयारियों के लिये हमारे 4 तैराक प्रशिक्षण शिविर के लिये चुने गये हैं-1. पी. वी. पिल्लई 2. के० सोमशेखरन 3. दलीप सिंह तथा 4. पद्मनाभन।

XI. **दौड़ कूद (एथ्लेटिक्स)**- हमारी टीम राष्ट्रीय स्तर पर पहुँच गयी है। 1972 से 77 तक, अखिल भारतीय पुलिस खेलों में हम निरन्तर चैम्पियन रहे; किन्तु इस वर्ष दुर्भाग्य से सिरमौर हाथ से निकल गया। 18 से 20 अगस्त 1978 तक प्रथम अखिल भारतीय पुलिस क्रास कंट्री दौड़ में हमने चैम्पियनशिप जीती। 1 से 3 सितम्बर 1978 तक सिंगापुर में खेली गई **एस. ए. ए. खुली इन्वीटेशन प्रतियोगिता** में भारत की ओर से हरीचन्द तथा रघुबीर सिंह ने भाग लिया। एशियाई खेलों के लिये, हमारे तीन खिलाड़ी-इ० हरीचन्द, रघुबीर सिंह तथा स० इ० प्रभात सिंह चुने गये हैं और पटियाला में प्रशिक्षण पा रहे हैं।

हमारी टीम ने राजस्थान **एथ्लेटिक्स प्रतियोगिता** जीती। हमारे 20 खिलाड़ियों ने इस वर्ष क्विलन (केरल) में हुये नेशनल्स (राष्ट्रीय खेलों) में राजस्थान और उत्तर प्रदेश की ओर से भाग लिया। इसी प्रकार 26 से 28 मई 1978 तक खेले गये नेशनल्स में पुलिस टीम की ओर से हमारे 25 खिलाड़ी खेले।

मंगल कामनायें

श्री वी० जी० कनेतकर, सर्वप्रथम महानिदेशक, के० रि० पु० बल ने श्री प्रार० सी० गोपाल को वार्षिकोत्सव पर अपने भाव, इन शब्दों में प्रकट किये हैं —"यदि आपको कोई आपत्ति नहीं हो, तब शानदार बल–केन्द्रीय रिजर्व पुलिस (सी० पार० पी०) को, उसके सभी अफसर तथा जवानों को, मेरी सर्वोत्तम मंगल कामनायें दीजियेगा।"

कुशल ड्राइवरों को पुरस्कार

दिनांक मई 78 में हुये पुलिस महानिरीक्षकों तथा उपमहानिरीक्षकों के सम्मेलन में, यह तय हुआ है कि भविष्य में कुशल ड्राइवरों को नकद पुरस्कार दिये जाया करेंगे। उनकी स्थिति इस प्रकार होगी—

I पहाड़ी क्षेत्रों में

(क) पहले 3000 कि० मी० निर्विघ्न चालन के लिये -30 रु०

(ख) फिर 3000 कि०मी० ,, ,, ,, -70 रु०

(ग) फिर हरेक 3000 कि० मी० ,, ,, -100 रु० हर मामले में।

II मैदानी क्षेत्रों में

(क) पहले 5000 कि० मी० निविन्ध चालन के लिये-30 रु०

(ख) फिर 5000 कि० मी० ,, ,, ,, -70 रु०

(ग) फिर हरेक 5000 कि० मी० ,, ,, ,, -100 रु० हर मामले में।

जहाँ कोइ ड्राइवर दोनों क्षेत्रों में ऐसा सफल रहा हो, उसको आनुपातिक ढंग से दूरी निकाल कर पुरस्कार दिया जायगा।

50 रु० प्रति छमाही ऐसे ड्राइवरों को दिये जायेंगे, जो—

(I) अपने वाहनों को इतना ठीकठाक रखेंगे कि उनमें कोई बड़ी खराबी नहीं होगी और ना ही वे विभंग होंगे;

(II) विशेषज्ञ समिति द्वारा नियत किये गये-पेट्रोल उपभोग के बरा बर निरन्तर औसतन खर्च रख सकेंगे; तथा

(III) अपने वाहनों में तेल का खर्चा कम करेंगे।

भारतीय पुलिस की ईति-भीति

ले०–श्री० ए० के० मेहरा

इन दिनों, पुलिस के पुनर्गठन की बड़ी चर्चा चलती रही है। इसकी आवश्यकता को इतनी तीक्ष्णता से अनुभव किया गया कि पुलिस संगठन पर पूर्णरूपेण विचार करने के लिए तथा हमारे जैसे लोकतन्त्र का ज़िम्मेदार अंग उसको बनाने की सिफारिशों के हेतु, सरकार ने एक आयोग बना दिया है।

यह चेतना, स्वाधीनता के बाद शासन की संरचना में राजनीतिक परिवर्तन आने के कारण आई है तथा आपात्काल के कटु अनुभव के उपरान्त, एक गणतन्त्रात्मक ज़िम्मेदार पुलिस दल के गठन के प्रति यह उग्र जागरूकता जगी है। तब भी, प्रश्न यह उठता है कि आयोग के गठन मात्र से क्या समस्या हल हो जायेगी। स्वाधीनता के पश्चात्, पुलिस के कार्य की समीक्षा के लिए, कुछ राज्यों ने अपने आयोग बिठाये थे । दुर्भाग्य से, उनकी सिफारिशें कभी भी क्रियान्वित नहीं हुयीं। कुछ मामलों में तो, राज्य सरकारों ने उन सिफारिशों के ठीक विरुद्ध काम किये । अतः हाल के गठित इस आयोग के विषय में वैसी ही शंकायें तथा आशायें सिर उठाती हैं।

समाज का अंग– समाज के अंग के रूप में पुलिस दल की स्थिति तथा स्वतन्त्र अस्तित्व के विषय में विशेषतया शंकायें उठती हैं। पुलिस समाज का एक अंग है तथा उसकी कार्यविधि समाज की स्थिति उजागर करती है।

आखिर पुलिस में हैं कौन ? पुलिस जन आते कहाँ से हैं ? इन तथा इन्हीं प्रकारों के प्रश्नों का उत्तर, पुलिस के सुधार-सम्बन्धी विचार-विमर्श में खोजना होगा। पुलिस में अनेकों गड़बड़ियाँ इस बड़े समाज से ही आयी हैं और जब तक व्यापक सामाजिक व्यवस्था नहीं बदलेगी, ये खराबियाँ नहीं टल सकतीं।

इसके अर्थ ये नहीं हैं कि कुछ हो ही नहीं सकता। देश में एक उत्तम तथा

ज़िम्मेदार पुलिस को बनाने के लिए कुछ तो क़दम उठाये हो जा सकते हैं। इसके लिए ज़रूरी है कि हम मुद्दों तथा समस्याओं को साफ़-साफ़ पहचान लें। पुलिस की सामान्य आलोचना की दृष्टि से ऐसा किया जा सकता है।

आम शिकायत यह है कि कल्याणकारी राज्य में बदली हुई अपनी भूमिका को पुलिस समझ नहीं पाई है। किन्तु सूक्ष्म अध्ययन से यह पता चलता है कि ऐसी चेतना तो समाज में ही स्वयं नहीं आ पायी है । जनता के (सहयोग मात्र से नहीं, अपितु) सक्रिय भाग लेने के बिना, राष्ट्र निर्माण का उद्देश्य कभी पूरा नहीं हो सकता। सरकारी प्रतिष्ठानों तथा सामाजिक संस्थानों में इस चेतना की मात्रा परिलक्षित होगी।

इसी भाँति, जब हम यह शिकायत करते हैं कि पुलिस संगठन में बफ़ादारी के अपने जाल बिछे हैं या प्रशासनिक निर्णयों में आदिजात चाचा-भतीजावादों का हाथ रहता है, तब संगठन की नुक्ताचीनी के स्थानों पर हमें यह सोचना चाहिए कि ऐसा होता क्यों है ? गहन अध्ययन से हमें पता लगता है कि भारत के अधिकांश भागों में विभिन्न जाति तथा वर्गों के मनुष्य पुलिस में भर्ती हैं । भारतीय समाज में परम्परागत निष्ठाओं की जड़े बड़ी गहरी हैं। पुलिस दल में ऐसे वर्ग-चरित्र तथा क्षेत्रीय अधिकारियों के शिक्षा-स्तर को देखते हुए, प्रशासनिक निर्णयों में परम्परागत निष्ठात्रों के बड़े प्रभावों को नकारा नहीं जा सकता।

सामाजिक संघर्ष- पुलिस कार्रवाई के प्रति अनेकों तर्कवितर्क, सामाजिक संघर्षों तथा राजनीतिक हिंसा के चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं। संघर्ष के इन क्षेत्रों में पुलिस पहले इतनी नहीं फंसी थी। इन संघर्षों से प्रचलित मूल्यों तथा मापदण्डों पर तथा संस्थानात्मक रचना तक पर अंगुली उठती है। इन संघर्षों में भाग लेने वाले अनेक व्यक्ति (प्रायः जानबूझ कर) अपनी नकारात्मक भूमिका को ताक पर रखकर यह जताने की चेष्टा करते हैं कि वे तो सामाजिक परिवर्तनों के मसीहा हैं तथा पुलिस का बर्बर दल, परिवर्तन को दमन करने के लिए सरकार द्वारा लगाया गया है । ऐसी स्थितियों में पुलिस अपनी कार्रवाई करते समय, बड़ी द्विविधा में पड़ जाती हैं। राजनीति में पुलिस के अन्तर्ग्रस्त होने के लिए केवल पुलिस ही दोषी नहीं है । उसे राजनीतिक सरकार के अधीन काम करना पड़ता है और अपने राजनीतिक स्वामियों की आज्ञा माननी पड़ती है; उसका उल्लंघन करके आफत मोल लेना हर किसी पुलिसाधिकारी के वश की बात नहीं है। एक साधारण पुलिसजन एक सामान्य पुरुष है; वह कोई सत्याग्रही या बलिदान का प्रतिरूप नहीं है। सूक्ष्म चिन्तन से, यह पता लगता है कि सरकार के परिवर्तन से भी स्थिति नहीं बदलती है। जो नेता विपक्ष में होते हुए निजी तथा दलगत स्वार्थों के लिए पुलिस के प्रयोग की आलोचना करता है, वही सत्ता में आकर उसी प्रकार के प्रयोग के लिए नहीं हिचकिचाता है।

अपराधियों के साथ व्यवहार— पुलिस द्वारा अपराधियों के प्रति किए गए व्यवहार पर प्रायः बड़ी ची चिल्लपों होती रहती है। कुछ निराधार भी नहीं होती; किन्तु इसका उपचार गहरा है। अपराध के अनुरूप 'दण्ड' का पुराना सिद्धान्त अब अपराधियों के अनुरूप व्यवहार में परिवर्तित हो गया है। पुलिस के व्यवहार तथा रवैये

में परिवर्तन इससे ज़रूरी हो जाता है। फिर भी, यही प्रश्न उठता है क्या यह परिवर्तन केवल पुलिसजनों में ही होना चाहिए ? जब हम जेबकतरे को पकड़ते हैं; तब उसे पहले हम पीटते हैं, फिर कुछ पूछते हैं। **स्पष्टतया अब समाज का रुख** भी अपराध और अपराधियों के प्रति सुधार चाहता है।

संगठन में सब से महत्वपूर्ण शर्त मनोबल है । पुलिस के हर कार्य को राजनीतिक दलदल में कँसा कर, नेता पुलिस दल के मनोबल का नाश करते हैं। दूसरी ओर राजनीतिक कार्यकारी लोग पुलिस को अपने स्वार्थों में लगाते हैं। अतः क्षीण मन कर बचाव में खड़े रहने के अलावा, पुलिस को कोई दूसरा चारा नहीं रहता है। निरन्तर नुक्ताचीनी के कारण, उसमें दुराव छिपाव आ जाता हैं।

लोक-प्रतिकूलता- पुलिस के विरुद्ध लोक-प्रतिकूलता प्रथम तो ऐतिहासिक कारणों से है तथा दूसरे, इस भावना से है कि पुलिस समाज पर थोपी गई है। पुलिस के प्रतिकूल रवैये से यह और भी भीषण हो जाती है। तकनीकी कारणों से भी पुलिस को निष्कर्मण्य माना जाता है। कानूनी तथा अन्य तकनीकी दावपेंच के कारण, पुलिस को मामले सुलझाने में सतर्कता बर्तनी चाहिए। सामान्य जन आम तौर पर इन से परिचित नहीं हैं। पुलिस के कार्यक्षेत्र की ठीक-ठीक परिभाषा होनी चाहिए तथा जनता को उसकी जानकारी होनी चाहिए।

जैसा पहले बताया, पुलिसजन अनेक कारणों से अपने कार्य में कोई गौरव नहीं पाते हैं। इससे संगठन के उत्तम परिवर्तन का क्षेत्र सीमित हो जाता है, क्योंकि ऐसी स्थिति में अवसर मिलने पर भी कौन व्यक्ति पूलिस दल में भर्ती होना चाहेगा? इस से पुलिस कार्य की प्रतिष्ठा का प्रश्न उभर कर आता है। इस की सेवाशर्तों, वेतनों तथा प्रतिष्ठा में सुधार की आवश्यकता है। प्रार्थियों में से ही सर्वश्रेष्ठ चुनने के स्थान पर समाज भर में से सर्वोत्कृष्ट भर्ती करने की नीति होनी चाहिए और सर्वोत्तम जनों को आकर्षित करने के लिए अच्छे वेतनमान तथा बेहतर प्रतिष्ठा की आवश्यकता है।

मर्ती-नीति- निष्ठात्रों के मायाजालों को समाप्त करने के लिए, प्रतिनिधित्व के आधार पर भर्ती होनी चाहिए। समाज के किसी खास वर्ग या क्षेत्र से ही लोगों को भर्ती नहीं करनी चाहिए। किन्तु प्रतिनिधित्व पर अति बल देने से कार्यकुशलता खटाई में पड़ सकती है, अत : ज़ोर अभिरुचि पर देना चाहिए।

भर्ती के समय की कमी की पूर्ति प्रशिक्षण के समय की जा सकती है। हमारी भर्ती की नीति तथा प्रशिक्षण के कार्यक्रम तक भी, कुछ मामूली परिवर्तनों को छोड़ कर वे ही हैं, जो औपनिवेशिक हितों के लिए भारत में अंग्रेजों ने निर्धारित किए थे। पुलिस को सेना की भाँति संगठित करना उसका प्रमाण है। अब समय आ गया है कि पुलिस दलों को लोकतांत्रिक साँचे में ढालना होगा। भारत सरकार द्वारा गठित पुलिस प्रशिक्षण पर समिति ने कार्य नियन्त्रण से ध्यान हटा कर, सामाजिक तथा व्यावहारिक विज्ञानों एवं आधुनिक प्रबन्ध धारणामों के अध्ययन द्वारा समुचित रवैया अपनाने पर पुलिस प्रशिक्षण में बल दिया है । इसको सार्थकरूप से सुदृढ़ तथा क्रियान्वित करना चाहिए।

संगठनात्मक परिवर्तनों के बिना, भर्ती नीति बदलने पर भी तथा नया प्रशिक्षण कार्यक्रम चालू करने पर भी, पुलिस में सुधार पूरा नहीं होगा। पुलिस की मौजूदा संरचना ब्रिटिश की विरासत है । स्तूपाकार संरचना समाज के विभिन्न वर्गों को नौकरी दिलाने के हेतु बनायी गयी थी। योरुपवासी और गैर-योरुपवासी में लक्ष्मण रेखा खींची गयी थी। तभी तो, सहायक अधीक्षक पद के साथ-साथ (जो "भारतीय पुलिस" के नामवाले अखिल भारतीय संवर्ग का होता था तथा जो विभिन्न प्रान्तों में आवंठित होता था), उपाधीक्षक का पद भी उन भारतीयों के लिये बनाया गया (जो कम वेतन तथा कुछ नीची सेवाशर्तों पर प्रान्तों में भर्ती किये जाते थे)। यह पद्धति अब भी बिना किसी तर्कनावाद के चालू है (यद्यपि **भारतीय पुलिस** का नाम बदल कर **'भारतीय पुलिस सेवा'** हो गया है)।

नेतृत्व- भारतीय पुलिस का नेतृत्व अकुशल है, क्योंकि वह थोपा हुमा नेतृत्व है। सेवा के चार-छै वर्ष में ही, एक भारतीय पुलिस सेवा का अधिकारी एक ज़िले का सेवा भार ग्रहण करता है; किन्तु इतनी थोड़ी अवधि में उसे जिला-चलाने की ना तो पर्याप्त शिक्षा मिल पाती है और ना ही अनुभव। थानों में क्षेत्रीय प्रशिक्षण का प्रावधान है; किन्तु थानाध्यक्ष उस व्यक्ति पर अनुशासन नहीं चलाना चाहता, जो अगले पाँच वर्षों में उसका अधिकारी बन बैठेगा और उसकी आचरणनामावलि जिसके हाथ में होगी। नेतृत्व अन्दर से ही उभर कर आना चाहिये । आदर्श तो कांस्टेबल के स्तर पर ही केवल एक ही भर्ती का होना चाहिये और पदोन्नति कठोर परिश्रम तथा अनुभव पर होनी चाहिये । यदि ऐसा परिवर्तन सहसा आमूलचूल माना जाये, तब कांस्टेबल (आरक्षी) और सब इंस्पेक्टर (उपनिरीक्षक) के स्तरों पर भर्ती होनी चाहिये । सारी संरचना पर समीक्षा होना चाहिये एवं तदनुरूप परिवर्तन लाने चाहिये।

पुलिस की समस्यायें सारे समाज की समस्यायें हैं और हमें निम्नस्तर से इसका हल खोजना होगा। भर्ती, अन्तर्वर्गीय संबंध, प्रशिक्षण, पुनर्गठन, भ्रष्टाचार, सेवा-शर्तें आदि के प्रश्न एक दूसरे से बंधे हुये हैं और इनके उत्तर तभी मिलेंगे, जब एक-एक नहीं लेकर इन सब का सर्वांगीण विवेचन होगा। पुलिसदल की समीक्षा की, और फलस्वरुप उसके सुधार की आजकी तात्कालिन मांग है, और इन परिवर्तनों को स्थायी तथा सुदृढ़ बनाने के लिये, सामाजिक़ क़ानून मात्र से ही नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार आन्दोलनों से भी, सामाजिक सुधार बड़े ज़रूरी हैं, जिनसे वे चिरकालिक तथा पक्के बने रहें।

(इन्डियन एक्सप्रेस के सौजन्य से)

यह भी खूब रही

बच्चा : पिता जी, अपोलो सर्कस में और ओरियन्टल सर्कस में तो कई शेर बघेरे देखे, पर इस कनॉट सर्कस में कोई जंगली जानवर नहीं दीखता।

पिता : बेटे, इस सर्कस में तो सब ही जंगली जानवर हैं, पर आदमीका मुखौटा

ओढ़े फिर रहे हैं। यह बात तुम बड़े हो कर जानोगे ।

राम : श्याम, हाल में परख नली-शिशु ने जन्म लिया है।

श्याम : जा, जा, मुझे मूर्ख मत बना। शिशु ने हाल में कहाँ अस्पताल में जन्म लिया है।

पति : डार्लिंग, तुम ठीक ही सोचती हो कि मेरे मरने के बाद पुनर्विवाह नहीं करोगी। भला मुझ जैसा आदमी कहाँ मिलेगा?

पत्नी : नहीं डियर, मुझे डर है कि सभी पति तुम जैसे ही होते हैं।

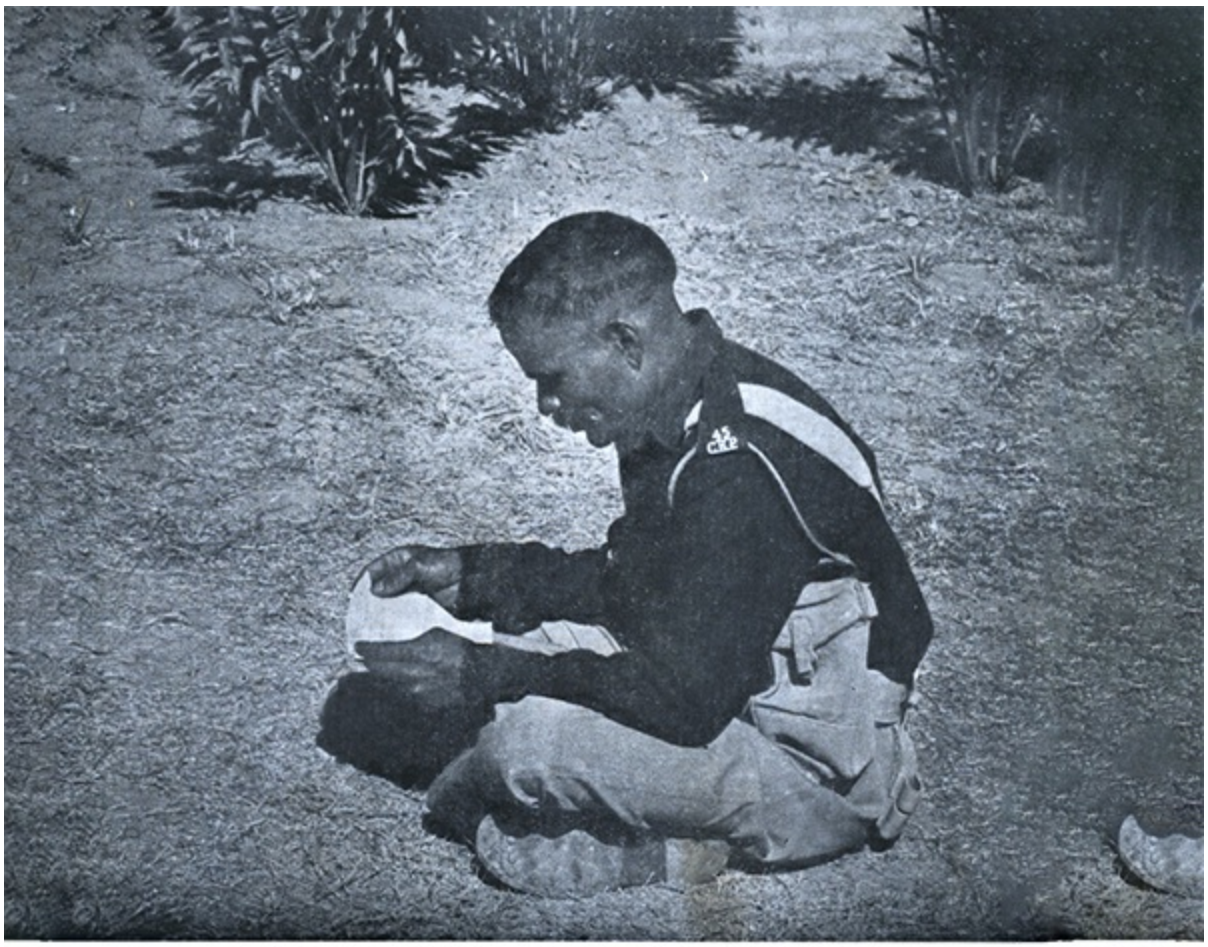
रंगा : रात अन्धेरी या उजाली तुझे कौन सी रात पसन्द है ?

बिल्ला : मुझे तो पसन्द है उस नाजनी के साथ बस सुहागरात ।

डॉक्टर की दुकान से एक पर्स की चोरी हो गई; पर दूसरे दिन उसे अखवार में पढ़ना पड़ा कि वहाँ एक नर्स की चोरी हो गयी।



उपराज्यपाल दिल्ली की धर्म पत्नी से चैम्पियन ट्राफी पाते हुये हमारे तैराकगरण



घर से मिले पत्र का वाचन

(छाया चित्र : जे. पी
एम्लोट रघुवंशी सिंह

मल्लयोधा ईश्वर सिंह



[रजिस्टर्ड नं० 25627/74]

मुद्रक — सी० आर० पी० एफ० प्रेस, नई दिल्ली - 110072 ।
प्रकाशक —महानिदेशक, के० रि० पु० बल की ओर से एच० एस० सेठी ।

सम्पादकीय कार्यालय :
द्वारा महानिदेशालय, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, पश्चिमी खण्ड 8, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली - 110022 ।

